मैथिली

साहित्य

जनार्दनझा 'जनसीदन'

रामदेवझा

भारतीय
साहित्यक
निर्माता

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जनार्दनझा 'जनसीदन'

Scanned by CamScanner

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

Scanned by CamScanner

भारतीय साहित्यक निर्माता

जनार्दनझा 'जनसीदन'

लेखक

रामदेवझा

साहित्य अकादेमी

Scanned by CamScanner

Janardan Jha 'Jansidan' : A monograph in Maithili by Ramdeo Jha on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1998), Rs. 25.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 1998

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014

जीवनतारा भवन, चौथा तल, 23 ए/44 एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053

304-305, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई 600 018

ए डी ए रंगमन्दिर, 109, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर 560 002

मूल्य : पचीस टाका

ISBN 81-260-0464-9

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली 110 032

मुद्रक : सुपर प्रिंटर्स, दिल्ली 110 051

Scanned by CamScanner

विषय-क्रम

पुरोवचन	७
अवतरणिका	११
जीवनिका	१५
साहित्य-साधना	३४
मैथिली साहित्यमे अवदान	४०
उपन्यास	४७
कथा	९०
निबन्ध	९६
काव्य	१०५
उपसंहार	१३१
परिशिष्ट :	
ताराक वैधव्य	१३५

Scanned by CamScanner

पुरोवचन

पण्डित जनार्दनझा'जनसीदन' सन विशिष्ट साहित्यकारक जन्म १८७२ इ.मे मधुबनी जिलाक वीरसायर गाममे भेल छलनि। शैशवकालहिमे पितृहीन भऽ गेलाक कारण माय लालवती देवीक अभिभावकत्वमे मातृक कुमर-बाजितपुर (वैशाली जिला) मे बाल्य ओ किशोरावस्था बितलनि। पितृहीनता ओ आर्थिक निरवलम्बताक कारण नियमित शिक्षा-प्राप्तिक सौविध्य नहि भेटि सकलनि। किन्तु अन्तःकरणमे उद्भूत शिक्षाविषयक महत्त्वाकांक्षाक बीजांकुर कुण्ठित नहि भेलनि। ओ जन्मजात प्रतिभा, स्वाध्याय ओ स्वावलम्बनक बलैँ संस्कृत भाषा, काव्य-शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि शास्त्रक ज्ञानार्जन करबामे सफल भेलाह। मैथिली तँ हुनक अपन मातृभाषे छलनि किन्तु कोष, व्याकरण ओ साहित्यक आश्रय लऽ स्वाध्यायहिक द्वारा ब्रजभाषा, खड़ीबोली हिन्दी, बंगला ओ अंगरेजी भाषाक सेहो नीक ज्ञाता भऽ गेलाह। संस्कृत, ब्रजभाषा, हिन्दी एवं मैथिलीमे सर्जनात्मक ओ बंगला-अंगरेजीसँ अनुवाद करबाक अजस्र क्षमताक अनवरत उपयोग कऽ काव्य, उपन्यास, कथा, निबन्ध, टीका ओ अनुवाद इत्यादिक अवदानसँ भारतीय साहित्यक श्रीवृद्धि करैत रहलाह। ओ उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकसँ साहित्य-सर्जनक अध्यवसाय आरम्भ कयलनि तथा बीसम शताब्दीक मध्य पर्यन्त, साठि वर्ष धरि संघर्षमय जीवनक निर्वाह करैत अविराम गतिसँ साहित्य-सृष्टिमे निरत रहलाह।

हिन्दी भाषाक साहित्यिक समृद्धि, संस्कार-परिष्कारमे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीक अनन्य सहयोगी; द्विवेदी युगक ब्रजभाषा ओ हिन्दी साहित्यक प्रसिद्ध-प्रतिष्ठित कवि-लेखक-अनुवादक जनार्दनझा'जनसीदन'क कतोक दर्जन ग्रन्थ हिन्दीअहुमे प्रकाशित भेल छलनि। परन्तु आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे जनार्दनझा 'जनसीदन' एक शलाका-पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठित छथि, अभिनव कथा-शिल्प, वास्तविक जीवनक वर्ण्यवस्तु, रोचक विन्यस्त वर्णन, मनोरम गद्य-शैली, गहन अन्तर्दृष्टि, नरीवर्गक उत्पीडनक प्रति संवेदना, यथार्थवादी सामाजिक चेतना ओ सुधारवादी विचारधारासँ

Scanned by CamScanner

सम्पन्न उपन्यास, कथा, कथाकाव्य, निबन्ध ओ तीक्ष्ण व्यंग्याघातपूर्ण काव्य-सर्जनक कारणे ।

आधुनक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालमे अपन साहित्य-सर्जनसँ अपन मातृभाषाक साहित्यकेँ अभ्युन्नत ओ समृद्ध कयनिहार महान् साहित्य-मनीषी लोकनिक श्रेणीमे जनार्दनझा'जनसीदन' उपन्यास विधाक पुरोधा, परिमार्जित- परिनिष्ठित ओ लालित्यपूर्ण गद्यशैलीक उद्‌भावक, कवि, कथाकार, निबन्धकार, राष्ट्रिय आनदोलनक एकटा महत्त्वपूर्ण धारा— सुधारवादी विचारधाराक मैथिली साहित्यमे प्रतिष्ठापक एवं गम्भीर विचारकक रूपमे शीर्ष स्थान रखैत छथि । प्रकाशित-अप्रकाशित, कीर्ण-विकीर्ण बहुशः कविता, कथा, निबन्धादिक अतिरिक्त हुनक पाँच गोट उपन्यास ओ एक गोट काव्य-संग्रह अत्यन्त प्रसिद्ध एवं प्रशंसित भेल छनि ।

आधुनिक मैथिली भाषा-साहित्यक समृद्धि, उपन्यास-परम्पराक संस्थापना, अभिनव गद्य-शैलीक उद्‌भावना, समाज-सुधारक चेतना-जागरण, नारी-मुक्तिक सन्देश, इत्यादिक दृष्टिएँ जनार्दनझा'जनसीदन'क अवदान तँ बहुमूल्य ओ चिरकालिक महत्त्वक अछिहे, एकरा संगहि साहित्य-सर्जनक आनुवंशिक परम्पराक जे गौरवास्पद अवदान हुनकासँ मैथिली साहित्यकेँ, समाजकेँ आ राष्ट्रकेँ प्राप्त भेल अछि, तकर सादृश्य क्वचित्-कदाचित् भेटि सकैत अछि ।

भारतीय साहित्यक निर्माताक रूपमे एहन साहित्य-मनीषीक जीवन ओ कृति-विषयक विनिबन्ध-लेखनक अवसर हमरा देल गेल, तदर्थ हम साहित्य अकादेमी एवं ओकर मैथिली-परामर्श-समितिक प्रति हृदयसँ आभारी छी । आभारी छियनि साहित्य अकादेमीक सदस्य एवं मैथिली-परामर्श-समितिक संयोजक डा. सुरेश्वरझाक जे जनार्दनझा'जनसीदन' विषयक विनिबन्ध-लेखनक प्रति न केवल वैयक्तिक अभिरुचि रखैत रहलाह अपितु लेखनक क्रममे अनेक परामर्श दऽ उपकृत कयलनि । एहि विनिबन्धक रचनामे मैथिली पत्र-पत्रिका—मिथिला-मोद, मिथिला-मिहिर, श्रीमैथिली, मिथिला, भारती, मिथिला ज्योति, स्वदेश (मासिक) इत्यादिक अति पुरान फाइल सबसँ सामग्री-संचयनक अतिरिक्त 'रजत जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ (पुस्तक भण्डार, लहेरिया–सराय, १९४२), मिथिला-भारती (मैथिली एकेडमी पटना, मइ-जून १९७९), 'प्रोफेसर हरिमोहनझा अभिनन्दन ग्रन्थ' (१९८३), जीवन-यात्रा (प्रो. हरिमोहनझा, मैथिली एकेडमी, पटना, १९८४), स्मृति सन्ध्या (मैथिली एकेडमी, पटना, १९८४) तथा 'जनार्दनझा जनसीदन कृत निर्दयी सासु पुनर्विवाह' (सम्पादक : रमानन्दझा 'रमण', १९८४) क अवलोकन-उपयोग यथा-प्रसंग कयल गेल अछि, तदर्थ कृतज्ञता-ज्ञापन करब हमर कर्त्तव्य थिक । कृतज्ञ छियनि श्री राजमोहनझा, प्रो.डा. मनामोहनझा ओ प्रो. डा. अरुणकुमारझाक जे कतोक उपयोगी सामग्री उपलब्ध करयबाक सौजन्य

Scanned by CamScanner

देखौलनि । अन्ततः आशीर्वादक पात्र छथि हमर ज्येष्ठ आत्मज श्रीकृष्णदेवझा, मध्यम आत्मज श्रीशंकरदेवझा ओ शोधप्रज्ञ श्रीअमलेन्दुशेखर पाठक जे पुरना फाइल सबसँ सामग्रीक संकलन करबामे ओ पाण्डुलिपिक वाचन-पुनर्वाचनमे एकाग्रता पूर्वक सहयोग करैत रहलाह ।

एहि विनिबनधक परिशिष्टमे जनार्दनझाक १९१७मे प्रकाशित कथा 'ताराक वैधव्य' अविकल रूपमे देल गेल अछि जकर उपयोगिता असन्दिग्ध अछि । एहि विनिबन्धसँ प्रवुद्ध ओ सहृदय पाठककेँ किंचितो आत्मतोष भऽ सकतनि तँ हम तकरा अपन महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानब ।

–रामदेवझा

विवाह पंचमी
४.१२.१९९७
कबिलपुर
लहेरियासराय
दरभंगा ८४६ ००१

Scanned by CamScanner

अवतरणिका

आधुनिक भारतक राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक ओ साहित्यिक इतिहासमे उनैसम शताब्दीकेँ नवजागरणक काल मानल जाइत अछि। भारतीय समाज विदेशी द्वारा शासित रहितहुँ पाश्चात्य समाजक विविध प्रकारक सम्पर्कमे आबि एकटा नवीन बौद्धिक चेतना ग्रहण कयलक आ मध्यकालीन रूढ़ आचार-विचारमे सार्थक परिवर्त्तन ओ नवीन दिशा-सन्धानक चेष्टा करऽ लागल, जकर अभिव्यक्ति विभिन्न प्रकारक सामाजिक ओ राजनीतिक आन्दोलनक रूपमे होबऽ लागल। एहि परिवर्तन-कामी चेतनाक गम्भीर प्रभाव भारतक विभिन्न भाषा-साहित्यहुपर पड़ल।

भारतक प्रत्येक भाषाक साहित्यमे देखल जाइत अछि जे उनैसम शताब्दीमे किछु एहन साहित्य-स्रष्टा लोकनिक आविर्भाव अवश्य भेल जे अपन-अपन साहित्यक सर्जनात्मक धाराकेँ नव दिशा ओ गति प्रदान कयलनि। मध्यकालीन काव्यक विषय, काव्य-रूप, छन्द, भाषा-प्रयोग ओ विचारधारामे महान् परिवर्तन आनि देलनि। पद्यक प्रवाहक स्थानमे गद्यक महत्ता बढ़ि गेल। पद्यहुमे परम्परित छन्दक स्थानमे नवीन छन्द सब प्रयुक्त होबऽ लागल। पारम्परिक भाषा-सरणिक परित्याग कऽ साहित्य लोक-प्रचलित भाषा-रूपकेँ आत्मसात करऽ लागल। आलंकारिकताक स्थानमे सहज-सरल अभिव्यक्तिक पद्धति प्रतिष्ठित भेल। भक्ति-भावनाक स्थानमे वैचारिकताक महत्त्व बढ़ल। पौराणिक ओ धार्मिक वर्ण्यवस्तुक स्थानमे लौकिक ओ सामाजिक विषय साहित्यक वर्ण्यवस्तुक रूपमे प्रमुखता प्राप्त कयलक।

साहित्यिक नवजागरणक ई युग-ज्योति बंगलामे सर्वप्रथम ओ सर्वाधिक जाज्वल्यमान रूपमे प्रतिभासित भेल जकर प्रभाव ओ प्रेरणा अधिकांश उत्तर भारतीय भाषामे उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक प्रथम चरणमे विशेष रूपसँ परिलक्षित भेल।

मिथिला उनैसम शताब्दी धरि सनातनी समाज-व्यवस्था ओ सामन्ती शासन-व्यवस्थामे जकड़ल मध्यकालीन जीवन जीबि रहल छल। मिथिला वास्तवमे एहन वायु-

Scanned by CamScanner

निरुद्ध बन्द डिब्बा जकाँ छल जाहिमे ने बाहरक स्वच्छ वायु प्रवेश कऽ सकैत छल आ ने भीतरक युग-युगसँ सड़ल विकृत वायु बाहर भऽ सकैत छल। विभिन्न प्रकारक गर्हित रूढ़ि, अन्धविश्वास, अशिक्षा ओ सभ्य समाजक मानदण्डक अनुसार ग्लानिपूर्ण सामाजिक आचार-परम्परासँ ग्रस्त मिथिलावासीकेँ पाश्चात्य जगतक साक्षात् सम्पर्क, नवीन आधुनिक शिक्षा-प्रणाली ओ अभिनव उदात्त विचारधारासँ सम्पर्क-सान्निध्यक सुयोग बड़ विलम्बसँ ओ बड़ मन्द गतिएँ प्राप्त भेलैक। अतः भारतक अन्य प्रान्त जकाँ कोनो प्रखर समाज-सुधारकक अथवा समाज-सुधार सम्बन्धी कोनो सुसंघटित, प्रभावी आन्दोलनक आविर्भाव नहि भऽ सकल। परिवर्तन तँ विलम्बित भेल परन्तु सामाजिक परिवर्त्तनक जे बसात उनैसम शताब्दीमे समग्र भारतमे विभिन्न रूपमे बहि रहल छल ताहिसँ सर्वथा असम्पृक्त ओ निरपेक्ष रहब सेहो सम्भव नहि छल।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ओ पश्चात् ब्रिटेनक भारतीय साम्राज्यक ओ बंगाल प्रेसिडेन्सीक राजधानी आरम्भसँ लऽ १९११-१२ धरि कलकत्ता छल। केन्द्रीय ओ प्रान्तीय प्रशासन, न्यायालय, शिक्षा ओ रोजी-रोटीक हेतु कलकत्ता महत्त्वपूर्ण केन्द्र छल। एहि दृष्टिएँ मिथिलाक भूमिपति, सामन्त, जमीन्दार, रईस लोकनिक ओ हुनक आश्रित शिक्षित कर्मचारी लोकनिक सम्पर्क कलकत्ता नगरसँ रहितहिँ छल; अन्यो बहुतो शिक्षित-अशिक्षित जन अपन जीवन-यापनक आधार तकबाक लेल कलकत्ताक आश्रय लैत छल। सम्पन्न परिवारक बहुतो व्यक्ति उच्च ओ आधुनिक शिक्षा-प्राप्ति हेतु क़लकत्ता-प्रवास करैत छल। कलकत्तासँ सम्पृक्त एहन जनसमुदाय बंगालक सुधारवादी आन्दोलन, राष्ट्रिय चेतना ओ बंगलाभाषामे अभिनव साहित्यिक प्रयोगसँ सहजहिँ परिचित भऽ जाइत छल। एहनेमे सँ अनेक संवेदनशील बुद्धिजीवी लोक मिथिलाक सामाजिक ओ साहित्यिक क्षेत्रमे अभिनव विचार ओ प्रयोगकेँ अवतारित करबाक प्रयास आरम्भ कयल।

मिथिलामे सामान्य शिक्षाक सौविध्य भने नहि रहल होउक, मुदा संस्कृत-शिक्षाक अत्यन्त समृद्ध परम्परा रहलैक अछि जकर सुयोग विशेषतः उच्च वर्णक लोककेँ प्राप्त होइत छलैक। संस्कृत-शिक्षाक एकटा विशिष्ट केन्द्र छल काशी। मिथिलाक विद्वान्-पण्डित लोकनि संस्कृत-शिक्षाक प्रति विशेष अनुराग रखैत छलाह। ओ लोकनि संस्कृत विषयक गम्भीर अध्ययन ओ अध्यापन हेतु काशीमे निवास करैत छलाह। बहुतो मैथिल पण्डित काशीक विभिन्न शिक्षा-केन्द्रमे अध्यापकक रूपमे बेस ख्याति अर्जित कयने छलाह। बहुतो मैथिल पूर्ण निष्णात भऽ मिथिलासँ बाहर विभिन्न देशी रियासत, अन्य प्रान्तीय विद्यालय, प्रयाग, बम्बइ, बड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद, जयपुर, कलकत्ता इत्यादि नगरमे जीविकापन्न होइत छलाह।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे काशीमे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रक नेतृत्वमे हिन्दी

Scanned by CamScanner

साहित्य ओ राष्ट्र-चेतनाक एकटा अभिनव पथ प्रशस्त भऽ रहल छल। काशीमे रहनिहार मैथिल जन ओहि ठामक साहित्यिक गति-विधिसँ अपरिचित नहि रहि सकैत छलाह।

अतः ओहन मैथिली भाषी जे मिथिलासँ बाहर रहि अन्य प्रान्तीय बौद्धिक जनसमुदायमे व्याप्त अभिनव चेतना देखबाक सुयोग प्राप्त कयलनि, ओ लोकनि मिथिलामे, मैथिली साहित्यमे परिवर्त्तन अनबाक ओ साहित्यक माध्यमे मन्दहु स्वरेँ समाज-सुधार, राष्ट्रवाद ओ स्वदेशी भावना जगयबाक प्रयास कयलनि। यैह कारण छल जे मैथिलीमे पत्र-प्रकाशनक आरम्भिक प्रयत्न ओ ओहि माध्यमसँ मैथिली साहितयकेँ समृद्ध करबाक प्रयास सर्व प्रथम मिथिलासँ बाहरे भेल। १९०५ इ.मे विद्यावाचस्पति मधुसूदनझाक निर्देशनमे जयपुरसँ 'मैथिल-हित-साधन' नामक प्रथम मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ भेल। एतऽ ई बात स्मरणीय जे विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा (१८६६-१९३९) पहिल मैथिल ब्राह्मण पंडित भेलाह जे समुद्र-यात्रा कऽ यूरोपक भ्रमण कयने छलाह। १९०५हिमे म. म. मुरलीधरझाक (१८६८-१९२९) सम्पादकत्वमे काशीसँ 'मिथिला-मोद'क प्रकाशन आरम्भ भेल। 'मैथिल-हित-साधन' तिनिए वर्ष चलि सकल मुदा 'मिथिला-मोद' अनेक अन्तरालक अछैतो १९४१ इ. धरि चलैत रहल। खास मिथिला-भूमिसँ 'मिथिला-मिहिर' नामक पत्रक प्रकाशन १९०९ इ.मे सम्भव भऽ सकल।

जेना कि पूर्वहि कहल अछि जे उनैसम शताब्दीमे प्रत्येक भारतीय भाषा-साहित्यमे किछु-किछु एहन साहित्य-मनीषी लोकनिक आविर्भाव भेल जे अपन विशिष्ट सर्जनात्मक प्रतिभासँ अपन-अपन भाषा साहित्यकेँ नव स्वरूप प्रदान कयलनि। एहिमे बंगालक बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय, माइकेल मधुसूदन दत्त, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर सन साहित्यकार तँ बंगले नहि, अन्यहु भारतीय भाषा-साहित्यकेँ अजस्र प्रेरणा प्रदान कयलनि।

मैथिलीयो साहित्यमे उनैसम शताब्दीमे अनेक विशिष्ट साहित्यकारक आविर्भाव भेल जाहिमे किछु तँ उनैसमे शताब्दीमे पूर्ण प्रौढ़त्व प्राप्त कऽ लेने छलाह मुदा बहुतोक जन्म उनैसम शताब्दीमे भेल अवश्य परन्तु हुनक साहित्यिक प्रतिभाक प्रतिफलन बीसम शताब्दीक आरम्भसँ दृष्टिगोचर होबऽ लागल।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक आरम्भिक दुइ दशक धरि कवीश्वर चन्दाझा (१८३१-१९०७), कविवर जीवनझा (१८४८-१९१२) ओ वैयाकरण-केसरी म. म. परमेश्वरझा (१८५६-१९२४)केँ मैथिली साहित्यक 'महत्त्रयी' मानल जाइत छलनि। कवीश्वर चन्दाझाक पद्य, कविवर जीवनझाक पद्य ओ गद्य उभय (नाटकक माध्यमे) तथा परमेश्वरझाक गद्यमे विशिष्ट स्थान मानल जाइत छलनि। वास्तवमे ई तीनू महानुभाव अपन-अपन कृतिसँ मैथिली साहित्यकेँ आधुनिक धरातल पर प्रतिष्ठित कयलनि। तथापि एहि तीनूमे कवीश्वर चन्दाक व्यक्तित्व बहुआयामी,

Scanned by CamScanner

काव्य-रचना-फलक बड़ विस्तृत, बड़ गम्भीर ओ अतिशय लोकरञ्जक छल जे, समकालिक ओ परवर्त्ती कवि-साहित्यकार लोकनिक प्रेरणादर्श बनल, तेँ हुनका आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत छनि ।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे आविर्भूत भेनिहार बहुशः मैथिली साहित्यकारक पंक्तिमे एकटा विशिष्ट नाम छनि पण्डित जनार्दनझा'जनसीदन'क जे प्रसिद्धिएँ कवि होइतो मैथिलीमे चटुल, सरल, सरस, गद्यक माध्यमे, सामाजिक चेतना ओ सुधारवादी दृष्टिकोणसँ सम्पन्न, सामाजिक जीवनक यथार्थ घटनापर आधृत उपन्यास ओ कथाक रूपमे सर्वथा अभिनव विधाक बीजारोपण ओ संवर्द्धन कयलनि जकर विकास आगाँ चलि कऽ विशेष रूपमे भेल ।

Scanned by CamScanner

जीवनिका

जनार्दनझा'जनसीदन'क जीवन-वृत्त एकटा निरन्तर संघर्षशील साहित्य-स्रष्टाक कथा कहल जा सकैत अछि । ने विधिवत् व्यवस्थित शिक्षाक क्रमबद्ध सुयोग भेटि सकलनि, ने स्थिर आजीविकाक साधन । अतः कतहु ओ दीर्घ काल धरि स्थिरता पूर्वक जीवन-यापन नहि कऽ सकलाह । ओ स्थिर एवं निश्चिंत भऽ सकलाह तखनहि, जखन हुनक ज्येष्ठ पुत्र प्रो. हरिमोहनझा पटनाक बी. एन्. कालेजमे दर्शनशास्त्रक व्याख्याता नियुक्त भेलाह आ अपन पिताकेँ आर्थिक दायित्वक भारसँ मुक्त करबामे समर्थ भऽ सकलाह ।

जनसीदनक जीवनक सबसँ महत्त्वपूर्ण संयोग ई रहलनि जे हुनक कार्य-क्षेत्रमे साहित्य ओ आजीविका एक-दोसराक पूरक अथवा कही जे विशेष रूपेँ अन्योन्याश्रित रहलनि । साहित्य-सृष्टिक क्षमता हुनका यदि अर्थोपार्जनक अवसर प्रदान कयलकनि तँ जतऽ कतहु आजीविकाक अवसर भेटलनि तँ ओ साहित्य-सर्जनहुक साधक बनि सौविध्य प्रदान कयलकनि । जाहि अवधिमे जनसीदन सक्रिय छलाह, ओहि कालमे एहन विरल लेखक भेलाह जनिक जीवन-यापन हेतु अर्थोपार्जनक मुख्य आधार साहित्य-लेखन रहल होनि । स्वभावतः ई तथ्य अनुमेय अछि जे जनार्दनझाकेँ आर्थिक चिन्तासँ मुक्ति हेतु निरन्तर सक्रिय ओ प्रयत्नशील रहऽ पड़ैत छल होयतनि ।

एहने जीवन-स्थितिमे ओ अपन मौलिक कृति ओ अनुवाद-साहित्यसँ मैथिली ओ हिन्दी साहित्यकेँ समृद्ध करैत रहलाह । अपन जीवन्त लेखनीसँ मैथिली ओ हिन्दी भाषाक अभिव्यक्ति-सामर्थ्यकेँ बढ़बैत रहलाह ।

पण्डित जनार्दनझा'जनसीदन' एकटा दीर्घजीवी साहित्यकार छलाह । हुनक जीवन-काल उनैसम शताब्दीक तृतीय चरणसँ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध पर्यन्त व्याप्त रहलनि । एहि रूपमे ओ भारतक इतिहासक आधुनिक परिच्छेदक महत्त्वपूर्ण भागक प्रत्यक्षदर्शी, साक्षी-सह-भोक्ता रहलाह । ओ अंगरेजक गुलामीमे जकड़ल छटपटाइत भारतकेँ देखलनि—

Scanned by CamScanner

पराधीनता परम पाप सब सुखक विनाशी ।

तँ भारतक निरन्तर जगैत मुखर-प्रखर होइत स्वातन्त्र्य-चेतना ओ स्वतन्त्रता दिस बढ़ैत डेगक प्रबल वेग सेहो देखलनि

भेटत शीघ्र स्वराज्य आब से समय अबै अछि ।

यदि ब्रिटिश साम्राज्यक अनस्त प्रखर प्रताप-सूर्यक उत्ताप देखलनि तँ पन्द्रह अगस्त १९४७कें भारतक आजाद होइतहि ओहि सूर्यक प्रभामण्डलकें क्षाम-म्लान होइत सेहो देखलनि । समग्र जीवन परतन्त्र भारतमे जीबियो कऽ अन्ततः स्वतन्त्र भारतमे स्वर्गारोहण कयनिहार विशिष्ट साहित्यसेवी प. जनार्दनझा'जनसीदन'क कोनो वृहत् व्यवस्थित जीवन-वृत्तकें लिपिबद्ध करबाक कोनो प्रयास हुनक जीवन-कालमे तँ नहिएँ भेल, पश्चातो काल ओहि दिशामे कोनो महत्त्वपूर्ण प्रयास नहि भेल ।

जनसीदनजी छलाह मुजफ्फरपुर जिलाक कुमर-वाजितपुरक निवासी जे सम्प्रति वैशाली जिलामे पड़ैत अछि । ई गाम शिक्षाक क्षेत्रमे विशेष उन्मुख छल । मैथिली साहित्यमे योगदान कयनिहार अनेक व्यक्ति एहि गामक छलाह । ओहिमे एक गोटे छलाह पण्डित कुशेश्वर कुमर । ओ १९३६ इ. अपन गाम कुमर-वाजितपुरक सम्बन्धमे एकटा संस्कृत प्रशस्ति-काव्य 'कुमर वंशावली' प्रकाशित करौने छलाह । ओहिमे जनार्दनझा'जनसीदन'क परिचय दैत हुनक साहित्य-सेवाक प्रशंसा एहि रूपें कयल गेल छनि—

चन्द्रमणेः कन्यायां झोपाख्यः श्रीजनार्दनोजातः ।
यजुआरे भरगामः सामः शाण्डिल्य गोत्रश्च ॥
सोऽयं गीतयशाः जनार्दनः कविः शास्त्रेषु लब्धोदयः ।
सत्काव्यामृतपान मोहित मनाश्चंचद् गुणालंकृतः ॥
नाना संख्यक पुस्तकानि सुमनोहारीणि सद्भाषया ।
हिन्दी भाषिकया अनूद्य नितरां साहित्यसेवां व्यधात् ॥

एहिमे जनसीदनजीक व्यक्ति-परिचयक संकेत मात्र दैत विशेषतः साहित्यिके उपलब्धिक प्रशस्ति देल गेल अछि । साहित्य-रचनाद्वारा मातृ-भाषा मैथिलीक जे सेवा कयलनि, हुनक साहित्यिक अवदानक मैथिली साहित्यक इतिहासमे जे महत्त्व अछि, तकर कोनो चर्चा नहि कयल गेल अछि । ध्यान देबाक योग्य तथ्य ई अछि जे १९३६इ. धरि ओ अपन कविता तथा मैथिली गद्यमे कथा-उपन्यासक अभिनव प्रयोगक कारणे पूर्ण प्रसिद्धि ओ प्रतिष्ठा लाभ कऽ लेने छलाह । उपर्युक्त प्रशस्ति-लेखन-कालमे ओ चौंसठि वर्षक आयुमे अपन समकालीन, समवयस्क मैथिली साहित्यकारक मध्य अत्यन्त श्रद्धास्पद स्थान प्राप्त कऽ लेने छलाह ।

१९४१ इ. मे जखन हुनक वयस उनहत्तरि वर्षक छलनि, कासश्वास रोगसँ ग्रस्त

Scanned by CamScanner

भऽ कृष्णाराधनमे रहऽ लागल छलाह, तखन ओ संस्कृत श्लोकमे अति संक्षिप्त आत्मपरिचयक रचना कयने छलाह। ओहिमे ओ मुख्य रूपसँ अपन विभिन्न आजीविका-आश्रयक उल्लेख करैत ओहि आश्रयमे कयल गेल साहित्यिक कार्यक सूत्रात्मक वर्णन कयने छथि—

सोऽहं श्रीजनार्दनो बहुविधं शास्त्रं समालोकयन्
काव्यञ्च प्रचुरं विरच्य सुकेवर्लब्धवा पदं ख्यातिमान् ॥
हिन्दी-संस्कृत-मैथिलीषु रचना-कार्याणि कुर्वन् मुदा
राज्ञः श्रीनगराधिपस्य कमलानन्दस्य सेवाश्रितः ॥
सरस्वती-सेवक बन्धुवर्य द्विवेदिनां सत्सुहृदां कृपाभिः
साहित्यसेवाऽवसरोपिलब्धो मया प्रयागे च तथा स्वगेहे ॥
पचगछियायां स्थित्वा विद्याभवने प्रियव्रताख्येऽहम्
व्याकरणस्याध्यापनकार्ये सर्वे प्रियो जातः ॥
दर्भङ्गाधिपतेः रमेश्वर हरेः राजत्वकाले चिरम्
स्थित्वा लेखनतत्परः प्रतिदिनं गत्वा च मुद्रालये ॥
प्रीत्या मैथिल भाषया सरसया राष्ट्रीय भाषादिभिः
संयुक्तं सम्पादयन् हि मिहिरं पत्रं तु साप्ताहिकम् ॥
गत्वा च कलिकातायामनुवादाः मया कृताः
वणिक्प्रेसे नगेन्द्रे च मम ग्रन्थाः प्रकाशिताः ॥
पञ्चाधिक पञ्चाशत वर्षोऽहं प्रवासभृत् कार्यम्
हित्वा स्वगृहे स्थित्वा अरचयं गिद्धौर नृपवंशम् ॥
कासश्वास व्यथितोऽहमून सप्ततितमे वर्षे
कृष्णपादाम्बुजभक्त्या कालं नेतुं प्रवृत्तोऽस्मि ॥

उपर्युक्त पद्यक अनुसार जनसीदनजी बहुविध शास्त्रक अध्ययन कयल। प्रचुर काव्य-रचना कऽ सुकवि रूपमे ख्यात भेलाह। हिन्दी-संस्कृत-मैथिलीमे साहित्य-रचना-कार्य करैत श्रीनगराधीश कमलानन्दक सेवाश्रित रहलाह। सरस्वती-सेवक (सम्पादक) महावीर प्रसाद द्विवेदी सन सुहृद्क कृपासँ साहित्य-सेवाक अवसर प्रयागमे ओ अपन घरहुपर प्राप्त भेलनि। पचगछियाक प्रियव्रत विद्याभवन (हाइ सकूल)मे व्याकरणक अध्यापक रूपमे सर्वप्रिय भेलाह। दरभंगाक महाराज रमेश्वरसिंहक आश्रयमे रहि मैथिली ओ राष्ट्रभाषा हिन्दीमे साप्ताहिक पत्र (मिथिला-)मिहिरक संयुक्त सम्पादन-कार्य कयलनि। कलकत्ता जाय बहुत रास अनुवाद कार्य कयलनि जकर प्रकाशन वणिक प्रेस ओ नगेन्द्र प्रेससँ भेलनि। पचपन वर्ष धरि प्रवासमे रहलाक पश्चात् अपन गाम अयलाह। गाममे रहैत 'गिद्धौर-नृप-वंशावली' नामक संस्कृत महाकाव्यक रचना

Scanned by CamScanner

कयलनि। उनहत्तरि वर्षक अवस्थामे दमासँ पीड़ित रहैत कृष्णाराधनमे समय बितबैत रहलाह।

ओ स्वयं अपन जीवन-संस्मरण लिखब आरम्भ कयने रहथि। कहिया, से ज्ञात नहि। मुदा ओहिमे १९०० इ. धरि मात्रक घटनाक विवरण आबि सकल, सेहो अद्यापि अप्रकाशित अछि।

हुनक पुत्र प्रो. हरिमोहनझा जनसीदनजीक एकटा संक्षिप्त जीवनी लिखलनि जे मैथिली एकेडमी, पटनाक पत्रिकाक जून, १९७१क अंकमे प्रकाशित भेल छल। पुनः एहि जीवनीकेँ अपन 'जीवन-यात्रा' नामक संस्मरणात्मक ग्रन्थमे यथावत् समाविष्ट कऽ देलनि। हुनक ई पोथी हुनक मृत्यूपरान्त १९८४मे प्रकाशित भऽ सकल।

एहि जीवनीमे १९०० इ. धरिक विवरण तँ जनसीदनजीक अप्रकाशित जीवन-संस्मरणसँ लेल गेल अछि, शेषमे १९१५ इ. धरिक घटनाक वर्णन संकलित सूचनाक आधार पर अछि। हरिमोहनझाक जन्म १९०८ इ. मे भेल छलनि। आठम वर्ष होइत-होइत हुनका बोध-शक्ति भऽ गेल छलनि। १९१६ इ. मे ओ पिताक संग पचगछियामे रहऽ लगलाह आ पश्चात् १९२३ इ. मे सकूलमे नामांकन धरि पिताक संगहि रहैत रहलाह। किन्तु दसो वर्ष धरि पिता-पुत्रक नियमित रूपसँ संग रहबाक अवसर नहि भेटलनि। १९३३ इ. मे हरिमोहनझा व्याख्याता नियुक्त भेलाह, तखन जनसीदन प्रवास-जीवनक परित्याग कयलनि। तकरा बाद पिता-पुत्रक नियमित सम्पर्क-सान्निध्य बनल रहलनि। अतः १९१६ इ.सँ मृत्युकाल पर्यन्तक जनसीदनजीक जीवनक जे विवरण हरिमोहनझा देने छथि से प्रत्यक्षदर्शी रूपमे। अतः एहि अवधिक जनसीदनजीक जीवन-वर्णन सामान्यतः प्रामाणिक मानल जा सकैत अछि।

'जीवन-यात्रा'मे पूर्वोक्त जीवनीक अतिरिक्त जनसीदनजीक पारिवारिक जीवन, दिन-चर्या, रुचि-आचार, स्वभाव-व्यवहार, अध्ययन-लेखनक प्रक्रिया इत्यादिक प्रसंगतः अत्यन्त सूक्ष्म ओ मार्मिक वर्णन कयल गेल अछि।

१९८३ इ. मे प्रकाशित 'प्रो. हरिमोहनझा-अभिनन्दन ग्रन्थ'मे जनसीदनजीक पौत्र ओ प्रो. हरिमोहनझाक कनिष्ठ पुत्र प्रो. मनमोहनझा 'चरैवेति-चरैवेति' शीर्षकसँ प्रो. हरिमोहनझाक जीवन-परिचय लिखने छथि। एकरा आरम्भमे प. जनार्दनझा 'जनसीदन'क सेहो संक्षिप्त जीवनी देने छथि। पिता ओ पुत्र दुहुक लिखल जीवनीमे सर्वथा साम्य रहितहुँ कोनो-कोनो तथ्यमे वैमत्य देखि पड़ैत अछि।

जनार्दनझाक सूचनानुसार (जयन्ती-स्मारक-ग्रन्थ, १९४२, पृ. १७-१८) 'हुनक प्रपितामह छलथिन कोइलखग्राम (मधुबनी)क निवासी दुर्मिलझा (उपाध्याय) जे व्याकरण, वेदान्त ओ न्यायशास्त्रक पूर्ण विद्वान् छलाह। मिथिलेश हुनक विद्यासँ प्रसन्न भऽ ब्रह्मोत्तर प्रदान कयने छलथिन।' ओ ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता ओ कवि सेहो छलाह।

Scanned by CamScanner

हुनक अनेक मैथिली गीत जनसमाजमे प्रचलित छनि। हुनक स्थितिकाल अठारहम शतीक अन्त ओ उनैसम शताब्दीक आरम्भिक समय कहल जाइछ। दुर्मिलझाक विवाह वीरसायर गाममे भेलनि। हुनका सन्तान जीबैत नहि छलथिन। अन्ततः एकटा पुत्रकेँ टोनाक रूपमे मातृकेमे बेचि देल गेलनि जाहि कारणे हुनक नाम बेचन पड़ि गेलनि। बेचन अपन मातृकेमे रहि गेलाह। बेचनझाक पुत्र भेलथिन नाथझा। वीरसायरवासी नाथझाक दोसर विवाह भेलनि कुमर-वाजितपुरक निवासी ओइनवार राजकुलक एकटा वंशधर श्रीसम्पन्न् पण्डित चन्द्रमणिकुमरक कन्या लालवती देवी (लालोदाइ)सँ। नाथझा ओ लालवती देवीकेँ एक पुत्र ओ तीन कन्याक पश्चात् जाहि पुत्रक जन्म भेलनि, तनिकहि नामकरण भेल जनार्दन जे समर्थ भेलापर पण्डित जनार्दनझा'जनसीदन' नामे प्रख्यात भेलाह।

डा. जयकान्तमिश्र जनार्दनक जन्म १८६९ इ. मे होयब कहैत छथि। परन्तु प्रो. हरिमोहनझा हुनक जन्मक तिथि-वर्ष शरद्ऋतुक कार्तिक कृष्ण तृतीया, १८७२ इ. कहैत छथि। हमरा विचारेँ पिताक सम्बन्धमे पुत्र द्वारा देल सूचनहिकेँ प्रामाणिक मानल जयबाक औचित्य अछि।

कहबी छैक तेतर बेटी राज लगाबय, तेतर बेटा भीख मङाबय। जनार्दन छलाह तेतर। से हुनकहु सम्बन्धमे ई कहबी चरितार्थ भऽ गेल। हरिमोहनझा अपन पिताक बाल्यावस्थाक सम्बन्धमे कहैत छथि—'जखन बाबूजी अढ़ाय वर्षक रहथि, हुनक पिता (नाथझा) परिवारकेँ अनाथ करैत विदा भऽ गेलथिन। तदनन्तर बाबूजी अपन मातृक (कुमर-वाजितपुर)मे बसि गेलाह।' (जीवन-यात्रा, पृ. १)।

हुनक पुत्र मनमोहनझा एहि परिस्थितिक वर्णन कनेक तथ्य विषयक भिन्नता सहित किछु विस्तृत रूपमे करैत छथि— 'ई नेना जखन अढ़ाइ वर्षक भेल तखने जेठ भाइ प्यारेलालझा, जे घर-गृहस्थीक सभ भार सँभारने रहथिन, असमयमे दिवंगत भऽ गेलथिन। आ पाँच वर्षक भेल त पिता सेहो अनाथ कऽ गेलथिन। वैमात्रेय भाइ अबोध नेना आ विधवा सतमायकेँ अकारण सतबय लगलथिन। एहना स्थितिमे दुनू माय-पुतक लेल ओतऽ रहब कठिन भऽ गेलनि। मामा पुरना जमीन्दार रहथिन आ जखन हुनका विपत्तिक हाल बुझल भेलनि त ओ हुनका सबकेँ बजबा पठौलथिन। आ एक दिन ओ नेना मायक संग विरसायरसँ अपन मातृक कुमर वाजितपुर आयल से ओतहि रहि गेल। (चरैवेति-चरैवेति, प्रो. हरिमोहनझा अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृ.९)।

सारांश ई जे जनार्दनक तेसरसँ छठम वर्षक वयसावधिमे, प्रायः १८७८ इ. धरि लालवती अपन बालककेँ लऽ नैहर अयलीह आ ताजिनगी एही ठाम रहि गेलीह। मायक संग जनार्दनक वाजितपुर आगमनक समय धरि मातामह चन्द्रमणि कुमरक प्रायः देहावसान भऽ गेल छलनि। जनार्दनकेँ सात गोट माम छलथिन जनिका सतभैया कहल

Scanned by CamScanner

जाइत छलनि। चन्द्रमणिकुमर समृद्धि-सम्पन्न जमीन्दार छलाह अवश्य किन्तु हुनक मृत्युक पश्चात् ओ जनार्दनक आगमनक समय धरि पुरना समृद्धि छीजि गेल छलनि। आर्थिक स्थिति पूर्व जकाँ सबल नहि रहि गेल छलनि। अतः सतभैया माम लोकनिक छत्रच्छाया मे जनार्दन ओ हुनक मायकेँ जीवन-निर्वाहक आश्रय मात्र भेटि सकलनि।

ओहि समयमे सामान्य जनक धिया-पुताक पढ़बाक हेतु आधुनिक शिक्षाक साधन सुलभ नहि छल। तखन धनिक लोकक सन्तानकेँ जाहि रूपेँ आधुनिक शिक्षाक व्यवस्था कयल जाइत छल से जनार्दनकेँ नहि प्राप्त भऽ सकलनि। कोनो स्कूलमे नाम लिखाय नियमित रूपसँ पढ़बाक सुविधा नहि भेटि सकलनि।

जनार्दनक माय लीलावती आभिजात्य संस्कारसँ सम्पन्न नारी छलीह। रामायण-महाभारतक कथा जनैत छलीह। जीवन-कालमे घटित सामाजिक घटनाक प्रति संवेदनशील छलीह। धनवान् पिताक पुत्री होइतो वैधव्य ओ विपन्नताक पीड़ाकेँ अङेजबाक तथा ओहिसँ मुक्ति हेतु संघर्षक आत्मबल छलनि। से जनार्दनक व्यक्तित्वक विकासमे मायक संस्कार सबसँ अधिक कारक तत्त्वक काज कयलकनि। दोसर दिस सातो मामा लोकनि सर्वथा सुशिक्षित छलथिन जाहिसँ जनार्दनकेँ शिक्षा-प्राप्तिक प्रेरणा भेटैत रहलनि। तेसर, जनार्दन स्वयं विशिष्ट प्राक्तन संस्कार ओ मेधासँ सम्पन्न छलाह। स्कूली शिक्षाक सौविध्य नहियो छलनि तथापि शिक्षाक परिवेश ओ प्रोत्साहन हुनका अवश्य भेटलनि।

आरम्भमे मिथिलाक्षरमे संस्कृत लिखबाक अवगति भऽ गेलनि। तदुत्तर स्वाध्यायक बल पर ज्ञानप्राप्तिक उत्साह भेलनि। हुनकहि गामक द्रव्येश्वरझा हाजीपुरमे कन्हौली स्टेटक शुकलाइनक मन्दिरमे अध्यापन करैत छलाह। जनार्दन हुनकासँ ज्योतिष शास्त्र पढ़ल। चौदह वर्षक अवस्थामे जखन ओ ज्योतिषशास्त्र पढ़ैत छलाह तखन अपनहि हाथसँ पत्रा लिखैत छलाह। ओतहि धर्मप्रचारिणी सभाक विद्यालयमे अध्यापन कयनिहार प. कीर्त्तिनाथमिश्र तथा प. रामलोचनमिश्रसँ व्याकरण ओ साहित्य पढ़लनि। स्वाध्यायक बलपर ब्रजभाषा ओ हिन्दीमे विशिष्टता प्राप्त कयलनि। अधिकसँ अधिक ज्ञान प्राप्त करबाक संकल्प ततेक दृढ़ छलनि जे प्रैक्टिकल इंगलिशक पोथी ओ अंगरेजी डिक्शनरीक सहायतासँ अंगरेजीयो पढ़ब-लीखब सीखि गेलाह। अध्यवसायहिक बल पर आयुर्वेद ओ बंगला भाषाक ज्ञान प्राप्त कऽ लेलनि।

एही क्रममे हुनक सर्जनात्मक प्रतिभाक विकास होइत रहलनि आ शनैः शनैः ब्रजभाषामे काव्य-रचना सेहो करऽ लगलाह।

अठारहम वर्षक वयस प्राप्त करैत-करैत शिक्षाक दृष्टिएँ युवक जनार्दन ततबा योग्य भऽ गेलाह, ततबा आत्मविश्वास भऽ गेलनि जे अपन क्षमतासँ १८९० इ. मे वैरगिनियाक अपर प्राइमरी पाठशालामे शिक्षकक पद पर नियुक्ति प्राप्त करबामे सफल

Scanned by CamScanner

भेलाह। किन्तु ओहि ठाम तीनिए-चारि मास धरि रहि सकलाह। ओहि ठाम मन नहि लगलनि। तखन हुनक स्थानांतरण सुरसंडक अपर प्राइमरी पाठशालामे भेलनि। एहि ठाम ओ दुइ वर्ष धरि कार्य कयलनि। सुरसंडसँ मधेपुराक निकटस्थ धुबौली गामक स्कूलमे चल गेलाह। १८९६मे मुजफ्फरपुर जिलाक जैतपुर नामक स्थानमे महंथ रघुनाथदासक संस्कृत विद्यालयमे शिक्षक नियुक्त भेलाह। एहि विद्यालयमे जनार्दनझा चारि वर्ष धरि कार्यरत रहलाह।

जैतपुरक कार्यकाल जनार्दनझाक जीवनमे एकटा महत्त्वपूर्ण मोड़ अनलकनि। एही ठाम रहैत हुनका साहित्यिक क्षेत्रमे प्रवेश करबाक ओ कवि रूपमे अपन परिचिति स्थापित करबाक अवसर प्राप्त भेलनि।

जैतपुरक महंथ रघुनाथदास सहृदय व्यक्ति छलाह। काव्यमे हुनका गम्भीर अभिरुचि छलनि। ओहि समयमे कानपुरसँ 'रसिक मित्र' नामक एकगोट साहित्यिक मासिक पत्र बहराइत छल। ओहिमे प्रत्येक मास साहित्यिक 'समस्या' सब देल जाइत छल जकर पूर्त्ति करबाक हेतु कवि लोकनिकेँ आहूत कयल जाइत छल तथा कवि लोकनि द्वारा प्रेषित समस्या-पूर्त्तिक पद्य सब प्रकाशित कयल जाइत छल। जनार्दन झाकेँ एहि ठाम 'रसिक मित्र' पढ़बाक अवसर भेटलनि। काव्य-प्रतिभा हुनकामे छलनि। ओ समस्या-पूर्त्ति कऽ पद्य सब ओहि पत्रिकामे पठाबऽ लगलाह। कवित्वपूर्ण ओ चमत्कारक होयबाक कारणे जनार्दनझाक ब्रजभाषामे रचित समस्या-पूर्त्तिक पद्य सब 'रसिक मित्र'मे छपऽ लगलनि। क्रमहि कवि जनार्दनझाक रूपमे ओ साहित्यिक समाजमे जानल जाय लगलाह।

ओहि समय धरि राज-दरबारमे पण्डित, विद्वान, कवि, गुणी लोकनिकेँ सम्मान ओ आश्रय देबाक परम्परा विलीन नहि भेल छल। उनैसम शताब्दीक अन्तिम भागमे श्रीनगर (पूर्णिया)क राजा छलाह राजा कमलानन्दसिंह (१८७६-१९१०)। ओ स्वयं कवि छलाह तथा छलाह साहित्य-संगीत-कलाक रसिक ओ मर्मज्ञ। एहि हेतु ओ मुक्त-हस्त भऽ दान करैत छलाह। ओ 'सरोज' उपमानसँ साहित्य-जगतमे प्रसिद्ध छलाह। गुण-ग्राहकता, साहित्यिकता ओ उदारता आदि गुणक कारणे साहित्य-सरोज, कविकुलचन्द्र, द्वितीय भोज इत्यादि उपाधिसँ हुनका अलंकृत कयल गेल छलनि। ओहि समयक प. अम्बिकादत्त 'व्यास', लछिराम कवि, यज्ञराजकवि, प. खुद्दी झा, प. श्रीकान्तमिश्र सन विद्वान्, कवि ओ गुणी गणसँ हुनक राजसभा सुशोभित छल।

राजा साहेबकेँ समस्या-पूर्त्तिक प्रति बड़ आवेश रहैत छलनि। एहि हेतु ओ अपन द्रव्य-साहाय्यसँ प. खुद्दीझा ओ प. श्रीकान्तमिश्रक सम्पादकत्वमे 'समस्या-पूरणाम्' नामक संस्कृत मासिक पत्रे प्रकाशित करबैत छलाह जे १९०० इ.क सन्निधिमे भागलपुरक एंजल प्रेससँ बहराइत छल। ओहिमे कवीश्वर चन्दाझा, प. गंगाधर शास्त्री, अम्बिकादत्त

Scanned by CamScanner

'व्यास', कविवर जीवनझा, म. म. मुरलीधरझा, म. म. चित्रधरमिश्र, म. म. रज्जेमिश्र, म. म. परमेश्वरझा, म. म. शशिनाथझा इत्यादि समकालिक विशिष्ट कवि-विद्वान् लोकनिक रचित समस्या-पूर्ति सब छपैत छल ।

'रसिक मित्र'मे राजा साहेबक कतोक समस्या-पूर्त्तिक पद्य सब छपल छलनि। से देखि जनार्दनझा राजा साहेबक दर्शनक हेतु उत्सुक भेलाह । एहि हेतु एकटा साहित्यिक सूत्र सेहो सृष्ट भेल । १९०० इ.सँ पूर्वहि 'रसिक मित्र'मे एकटा समस्या देल गेल छल 'गाय कै' । जनार्दनझा तावत अपन उपनाम 'जनसीदन' स्थिर कऽ लेने छलाह । से जनसीदनहिक नामसँ समस्या-पूर्त्ति कऽ 'रसिक मित्र'मे पठा देलनि । साहित्य-सरोज राजा कमलानन्दसिंह पर रचित ओ समस्या-पूर्त्ति निम्न रूपक छल—

भारत प्रसिद्ध बुधि विद्या गुन बाग जा में,
रसिक-सुमित्र सर सोहै सरसाय कै ।
सरस कबित्त जलपूरन बिराजि रह्यो,
सुकवि अनेक हंस जा में रहैं छाय कै ।।
विकच बिलोकि एक 'साहित-सरोज' ता में,
गुंजत मलिन्द मन मेरो हरषाय कै ।
धन्य रसिकेस[1] हैं दिनेस 'जनसीदन' जू,
कुकवि हिये को तम दीन्हों बिलगाय कै ।।

एही समस्याक दोसर पद्य छल—

जाती तजि कन्त को न दासिन बुलाती जऊँ,
ननदी रिसाती रहि जाती है चुपाय कै,
हीय हुलसाती ना सकाती 'जनसीदन' त्यों,
सखिन समाजहूँ सों रहति छिपाय कै ।
मैन-मदमाती अंग-अंग उमगाती रस-
वचन सुनाती सकुचाती मुसुकाय कै ।
धन्य जग जाहि ऐसी प्रेमरंग-राती सटि,
सोवै या हिमन्त राती छाती सों लगाय कै ।।

राजा साहेव 'रसिक मित्र'मे दुहू पद्य पढ़लनि तँ बड़ प्रभावित भेलाह । ओ अपन प्राइवेट सेक्रेटरीक द्वारा जनसीदनजीकेँ धन्यवाद-सूचक चिट्ठी लिखबा कऽ पठौलथिन। एहिसँ प्रभावित ओ प्रोत्साहित भऽ जनसीदन हुनक भेटक हेतु उत्कंठित भेलाह । ओ अवसर ताकि जैतपुर-महंथसँ किछु दिनक छुट्टी लऽ बनैलीक राजा पद्मानन्दसिंहसँ ओ

---

१. रसिक मित्रक सम्पादक प. मनोहर लाल शर्मा कवितामे अपन उपनाम 'रासिकेश' लिखल करैत छलाह । एहि पद्यमे हुनकहि उल्लेख 'रसिकेस' पदेँ कयल गेल अछि ।

श्रीनगरक राजा कमलानन्दसिंहसँ भेट करबाक लेल गेलाह ।

श्रीनगर गेला पर राजा साहेबसँ भेट भेलनि। ओ बड़ प्रसन्न भेलथिन । ओही ठाम अम्बिकादत्त व्याससँ एवं अन्य विद्वान्सँ परिचय भेलनि । जनसीदन राजा साहेबक काव्य-गोष्ठीमे अपन काव्यक पाठ कयलनि जे सूनि राजा साहेब बड़ आह्लादित भेलाह आ पुनः शारदीय पूजाक उत्सवमे अयबाक आग्रह कयलथिन ।

ओहि वर्ष शारदीय पूजासँ पूर्व राजा कमलानन्दसिंहक प्राइवेट सेक्रेटरी नरनाथझाक पत्र भेटलनि जनसीदनजीकेँ । ओहिमे पूजाक अवसर पर श्रीनगरमे ओ उपस्थित भऽ सकताह वा नहि तकर जिज्ञासा कयल गेल छल । राजा साहेबक जिज्ञासाक सम्मान करैत पूजोत्सवक अवसर पर ओ श्रीनगर गेलाह । एहि बेर श्रीनगरमे राजा साहेब जनसीदनजीकेँ अपना ओहि ठाम सवैतनिक रखबाक इच्छा व्यक्त कयलनि। ओ नरनाथझाक माध्यमसँ पुछबौलथिन जे यदि जनसीदनजीकेँ श्रीनगरमे रहब स्वीकार होनि तँ जे वेतन कवि लोकनिकेँ एतऽ भेटैत छनि से हिनकहु भेटतनि। विशेष इहो जे ई मैथिल छथि, तेँ हिनक भोजनक प्रबन्ध हमरहि भनसाघरमे भऽ जयतनि । हिनका फराकसँ भोजन-भातक झंझटि नहि उठबऽ पड़तनि ।

राजा साहेबक अपना प्रति एहन स्नेहभाव देखि जनसीदन राजा साहेबक आदेश स्वीकार कऽ लेलनि । ओ जैतपुरक संस्कृत विद्यालयक अध्यापन छोड़ि श्रीनगरमे राजा कमलानन्दसिंहक साहित्य-विषयक आप्त-सचिवक रूपमे कार्य करऽ लगलाह आ राजा साहेबक अत्यन्त विश्वासपात्र सहचर बनि गेलाह ।

राजा कमलानन्द सिंहक जनार्दनझाक प्रति केहन विचार छलनि तकर परिचय हुनका द्वारा १९०४ इ.मे प्रदत्त एकटा प्रशंसा-पत्रसँ भेटैत अछि, जाहिमे ओ कहने छथि जे 'पंडित जनार्दनझा हमरा एतऽ १९०० इ. सँ छथि । हिनका रहने बड़ उपकार भेल अछि, किएक तँ एक सङ्ग कवि, वैयाकरण, लेखक ओ मोसाहेबक काज हिनका रहने चलैत अछि । ज्योतिषीक काज सेहो ई नीक कऽ सकैत छथि आ हमरा एतऽ कहियो काल कयल करैत छथि । ई भाषा आ संस्कृतक नीक कवि छथि । आशु कविता सेहो कयल करैत छथि । हमरा हिनकासँ राजकीय कार्यमे विचार सेहो भेटल करैत अछि । ई परिश्रमी अत्यन्त छथि । हमरा एतऽ नित्य ७-८ घंटा काज कैयो कऽ अपन काज कयल करैत छथि । ई हमर परम विश्वासी छथि । हिनक स्वभाव ततेक नीक छनि जे एतेक दिन एतऽ हिनका रहैत भेलनि, परन्तु हिनक ककरहु पर अथवा ककरहु हिनकापर रुष्ट होइत नहि देखल । जँ हमरा एकहु गोटेकेँ रखबाक शक्ति रहत तँ हम सदा हिनका अपना लग राखब, कारण ई हमर ८-९ गोटेक काज एकसरे कयल करैत छथि । जहिया कहियो ई गाम जाइत छथि तँ हमरा बड़ परिश्रम उठबऽ पड़ैछ ।'

एहि उद्‌गारसँ जनार्दनझाक ओहि कालक व्यक्तित्वक विभिन्न पक्षक वैशिष्ट्यक

Scanned by CamScanner

नीक परिचय भेटैत अछि ।

श्रीनगरमे जनार्दनझा'जनसीदन'केँ अपन सर्जनात्मक प्रतिभाक विकास करबाक हेतु उपयुक्त परिवेश ओ प्रचुर अवसर प्राप्त भेलनि । क्रमशः हिनकहु समस्या-पूर्त्तिक पद्य सब 'समस्या-पूरणम्' पत्रमे प्रकाशित ओ प्रशंसित होबऽ लगलनि । विद्वद् मंडलीमे हिनकहु कवि ओ पंडितक रूपमे परिचिति स्थापित भेलनि । मान्यता ओ प्रतिष्ठा प्राप्त भेलनि ।

राजा कमलानन्दसिंहकेँ ओहि कालक शिक्षा ओ साहित्यिक जगतमे बड़ आदर कयल जाइत छलनि । स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपन काव्य-ग्रन्थावलीक एक प्रति समर्पित करैत राजा साहेबक प्रति लिखने छलथिन—

तुमि यदि वक्ष माझे थाके निरवधि ।
मुग्ध तोमार आनन्दमूर्त्ति नित्य हेरे यदि।।
ए नयन मोर परान वल्लभ ।
तोमार कोमल कान्त चरण-पल्लव ।।
चिरस्पर्श रेखे देय जीवन तरिते ।
कोनो भय नहि करि वाचिते मरिते ।।

एही सँ राजा साहेबक प्रतिष्ठाक आकलन कयल जा सकैत अछि । ओ कवि, विद्वान लोकनिक संगहि ओहि समयक साहित्यिक पत्र-पत्रिका सबकेँ प्रचुर आर्थिक साहाय्य प्रदान करैत छलाह । १९०३मे इण्डियन प्रेस, प्रयागसँ बहराइत प्रसिद्ध हिन्दी पत्रिका 'सरस्वती'केँ आर्थिक संकटमे पड़बाक सूचना पाबि ओ महत्त्वपूर्ण आर्थिक सहयोग कयने छलथिन । ओहि समयमे 'सरस्वती'क सम्पादक छलाह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी । राजा साहेबक दिससँ जनार्दनझा हुनकासँ विविध रूपक पत्राचार कयल करैत छलाह । ओही क्रममे जनार्दनझाकेँ द्विवेजीक संग आत्मीयता स्थापित भऽ गेलनि । द्विवेदीजी जनार्दनझा'जनसीदन'क शालीनता, सौजनय, पाण्डित्य, प्रतिभा, प्राञ्जल भाषा-प्रयोगसँ बड़ प्रभावित भेलाह । ओ जनार्दनझा'जनसीदन'क रचना सब सेहो 'सरस्वती'मे छापऽ लगलथिन । 'सरस्वती'मे हिनक 'शिक्षा-शतक', 'प्रार्थना-शतक', 'पश्चात्ताप-शतक', 'रसाल पञ्चक', 'मैथिलों की वैवाहिक परिपाटी' निबन्ध एवं अन्यान्य कतेको कविता, निबन्ध, जीवनी इत्यादि छपैत रहलनि ।

जनसीदनजीकेँ द्विवेदीजीक संग आत्मीयता बढ़लनि से पत्रहिक माध्यमसँ । से कोना ? १९०३ इ. मे जखन 'सरस्वती'क बन्द होयबाक स्थिति भऽ गेलैक आ राजा कमलानन्दसिंहकेँ ई बात ज्ञात भेलनि तँ ओ बड़ दुखी भेलाह । ओ अयाचिते आर्थिक सहायता हेतु अग्रसर भेलाह आ जनार्दनझाकेँ निर्देश देलथिन ज़े 'सरस्वती'क प्रकाशक इण्डियन प्रेसक मालिक बाबू चिन्तामणि घोषकेँ लीखि देल जाय जे 'सरस्वती'क

Scanned by CamScanner

प्रकाशनमे आब जे घाटा लागत तकर पूर्त्ति हम करब। 'सरस्वती' बन्द नहि कयल जाय।'

चिन्तामणि घोष एहि अननुमित सहायताक आश्वासनसँ बड़ आश्चर्यित ओ गद्‌गद् भऽ उठलाह। ओ सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदीक द्वारा पत्रोत्तर दियौलथिन जाहिमे सहायताक हेतु धन्यवाद ओ कृतज्ञता व्यक्त करैत तत्काल ग्राहक वढ़यबाक निवेदन कयल गेल आ राजा साहेब अपना दिससँ सरस्वतीक सैकड़ो ग्राहक बना देलथिन।

ओही दिनसँ महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं राजा साहेब ओ जनार्दनझाक मध्य पत्राचार होबऽ लगलनि। जनार्दनझा एहि विषयमे लिखने छथि जे 'राजा साहेब दिससँ हमरा जखन तखन द्विवेदी जीकेँ पत्र लिखऽ पड़ैत छल। कखनो कऽ हम अपना दिससँ सेहो हुनका किछु लीखि देल करैत छलियनि। फेर तँ हुनकर स्नेह हमरा पर ततेक बढ़ि गेलनि जे ओ हमरा अपन एक हार्दिक मित्र तथा छोट भाइक समान मानऽ लगलाह। हमरा दुनूमे पत्र-व्यवहारक घनिष्ठता दिन-दिन बढ़िते जाय लगल। पत्रक तत्काल समीचीन उत्तर देबामे द्विवेदीजीअपना तरहक एकसरे छलाह। हुनक हाथक लिखल सैकड़ो चिट्ठी हमरा ओतऽ आयल होयत।'

एहिमे चौंसठि गोट चिट्ठी 'रजत जयन्ती स्मारक ग्रन्थ' (१९४२)मे प्रकाशित भेल अछि। ई चिट्ठी सब यद्यपि एक पक्षीय अछि तथापि एहू सबसँ जनार्दनझाक व्यक्तित्व ओ द्विवेदीजीसँ हुनक पारस्परिकी पर नीक प्रकाश पड़ैत अछि। एहन आरोप लगाओल जाइत अछि जे 'एहि दुनू व्यक्तिक बीच भेल पत्राचारमे साहित्यकार जनसीदनजीक चर्चा कम भेटैछ। विशेष चर्चा अछि विभिन्न राजदरबारसँ 'सरस्वती' लेल चन्दा कोना प्राप्त हो। एहि सब कारणे जनसीदनजीक प्रतिभा आ परिचयक शोषण होइत छल।' हमरा लगैत अछि जे समग्र पत्रावलीकेँ गम्भीरतासँ बिनु देखनहि एहि प्रकारक धारणा बनाओल गेल अछि। ई बात सत्य जे 'सरस्वती'क आर्थिक प्रकरणसँ ई पत्राचार आरम्भ भेल छल। जनार्दनझा राजाकमलानन्दसिंहक आप्तसचिव छलाह। अतः ओ जे किछु लिखैत छलथिन से राजा साहेवक विचार बूझल जाइत छल। तहिना द्विवेदीजीकेँ राजा साहेवक प्रति जे निवेदन होइत छलनि से जनार्दनझाकेँ लिखैत छलथिन। मुदा ई कहब जे ओहि सबमे सरस्वतीक चन्दामात्र निहित रहैत छल, से समीचीन नहि।

आरम्भिक किछु पत्रमे औपचारिकता ओ 'सरस्वती'क विषय मुख्य छल अवश्य परन्तु पश्चात् जनार्दनझा ओ द्विवेदीजीक मध्य साहित्यिक बन्धुत्व ओ वैयक्तिक अन्तरंगता विशेष प्रगाढ़ भऽ गेल। द्विवेदीजी ओ जनार्दनझाक मध्य पत्राचार १९०३ इ. सँ १९३३ इ. धरि चलैत रहल। १९०९ इ.क जनवरी मास धरिक द्विवेदीजीक पत्रमे राजा कमलानन्दसिंहक चर्चा अछि मुदा तकरा पश्चात्‌क पत्र नितान्त वैयक्तिक

Scanned by CamScanner

अछि । राजा साहेबक प्रसंगवला पत्र सबमे द्विवेदीजी जनसीदनजीक साहित्य-सर्जनक प्रवृत्तिकेँ निरन्तर उद्‌बोधित करैत देखल जाइत छथि । सरस्वतीक हेतु रचना पठयबाक आग्रह वा रचना छपबाक सूचनाक संग प्रेषित रचनाक गुणावगुण पर टिप्पणी प्रायः प्रत्येक पत्रमे देखल जाइत अछि । जावत द्विवेदीजी सरस्वतीक सम्पादक रहलाह तावत धरि तँ निश्चिते रूपसँ जनसीदनक बहुशः रचना छपैत रहलनि आ जनसीदनजी साहित्य-संसारमे उच्च श्रेणीमे प्रतिष्ठित भेलाह । स्वयं द्विवेदीजी हिनका 'श्रीमान् कवि शिरोमणि पण्डित जनार्दनझा को बहुविध प्रणाम'क सम्बोधन पूर्वक पत्र लिखैत छलथिन । एहि सबकेँ 'जनसीदनजीक प्रतिभा आ परिचयक शोषण' कहल जाय वा पोषण से विचारणीय अछि । आगाँ देखब जे द्विवेदी जी जनार्दनझाक आजीविका प्राप्त करबामे कोन रूपमे सहायक भेलथिन ।

१९०६ इ.क अप्रैल मासमे लिखल द्विवेदीजीक पत्रोत्तरसँ आभास होइत अछि जे जनसीदनजीकेँ राजा साहेबसँ पूर्ण सम्मान ओ स्नेह प्राप्त होइतो श्रीनगरमे सेवारत रहबामे असौकर्यक अनुभव होइत छलनि । रियासतिक स्थिति अनुकूल नहि बूझि पड़ि रहल छलनि । एहि विषयपर ओ एक गोट कविता सेहो द्विवेदीजीकेँ पठौने छलथिन जकर किछु अंश एहि रूपक छल—

सरवर जल सूखन लग्यो पहुँचे सूकर वृन्द ।
लगे चवावन चाव सों खोदि कमल के कन्द ।।
खोदि कमल के कन्द मूल जँह लगि जो पायो ।
खाये भरि भरि पेट पंकमे लेटि अघायो ।।
जीवन जो कछु रह्यो बाँचि सो भयो कठिनतर ।
'जनसीदन' अब हंस जोग यह रह्यो न सरवर ।।

से द्विवेदीजी ३ अप्रैल १९०६क पत्रमे राजा साहेबक प्रसंगक अपन गप्पक पश्चात् जनसीदनजीक प्रति लिखने छलथित जे 'अहाँक पत्रकेँ पढ़ि हमरा अतिशय रंज भेल । सत्य तँ ई अछि जे सेवा वास्तवमे बड़े निन्द्य अछि । हम तँ २३ वर्ष एहि वृत्तिमे काटल । अहाँकेँ तँ सम्भवतः एते दिन नहि भेल होअय । तँ यदि आन कोनो अहाँक जीविकाक माध्यम नहि हो तँ जहाँ धरि भऽ सकय जमल रहू आ श्रीमानक शुभकामना करैत रहू आ यथासाध्य सदुपदेश दैत रहियौन । अहाँक कविताक गंभीर भाव आब हमरा बुझबामे आयल । आशा अछि श्रीमानो ओकर गूढ़ाशय बूझि लेने होयताह ।'

ओही समयमे जनार्दनझा देशी रियासति सभक कुप्रबन्ध ओ दुरवस्थापर एकटा लेख लिखऽ चाहैत छलाह (जाहिमे श्रीनगरहुक अवस्था व्यंजित होइत) । एहि विषय पर द्विवेदीजी वर्जनापूर्वक अपन विचार देने छलथिन—

Scanned by CamScanner

कानपुर
८.४.०६

प्रियवर

अहाँक कृपा पत्र आयल ।

अत्यानन्द भेल ।

जावत धरि अहाँ श्रीनगरमे छी तावत धरि ओहन लेख लिखबाक हम विचार नहि दऽ सकैत छी ; किएक तँ जे किछु अहाँ लिखब ओकर सम्बन्ध राजा साहेबक रियासतिसँ लोक जोड़त—और जकर आश्रयमे लोक रहय तकर प्रतिकूल किछु लिखब वा ओकर त्रुटि जनसामान्यमे प्रकट करब शुभचिन्तक सेवकक धर्म नहि । जतऽ हम एखन धरि नोकर छलहुँ ओतऽकेर सैकड़ो बात हमरा नजरिमे एहन आयल जे लोक सभक हजार कहलहु पर ओकरा प्रकाशित करब उचित नहि बूझल—यद्यपि ओकर प्रकाशनसँ बहुत लोककेँ लाभ होइतैक ।

परन्तु राजा साहेबकेँ जँ कोनो नकार नहि हो तँ अहाँ लिखि सकैत छी । छपयबाक पहिने लेख (हुनका सँ) देखा लेब । और तँ रियासति सभक दशा नुकायल नहि, सबकेँ जानले अछि, राजा प्रजा दुहू केँ ।

भवदीय
महावीर पसाद

द्विवेदीजीकेँ जनसीदनजी की कोना लिखने छलथिंन से ज्ञात नहियों रहने १९०६ ई०क मध्यमे श्रीनगरमे रहैत हुनक की मनोदशा छलनि तकर अनुमान उपर्युक्त दुहू पत्रसँ नीक जकाँ कयल जा सकैत अछि ।

लगैत अछि जे जनार्दनझा जनवरी, १९०९ धरि श्रीनगरक सेवामे रहलाह आ तकरा बद ओकर परित्याग कऽ देलनि । कारण जनवरी, १९०९मे लिखल जनार्दनझाक पत्रक उत्तर द्विवेदीजी ३१.१.०९ केँ देने छलथिन जाहिमे राजा साहेबक प्रसंग प्रभूत चर्चा अछि । किन्तु अगिला मासमे जनार्दनझा श्रीनगर छोड़ि देने छलाह, तकर कारण अन्य होइतो तात्कालिक कारण छल रुग्नता । से फरवरीक प्रथम सप्ताहमे ओ जे द्विवेदीजीकेँ पत्र लिखल ताहिमे अपन नीरोग होयबाक सूचना देलथिन मुदा ने राजा कमलानन्दसिंहक सम्बन्धमे किछु लिखलथिन, ने अपन श्रीनगर-परित्यागक सूचना देलथिन । अतः ९.२.०९क द्विवेदीजीक पत्रमे राजा साहेबक कोनो चर्चा नहि भेल अछि । केवल जनार्दनझाक नीरोग होयवाक खुशी व्यक्त करैत हुनक लेखमे आज्ञानुसार संशोधन करवाक सहमति ओ अन्यान्य उपयोगी लेख पठयबाक आग्रह कयल गेल अछि । फेर हुनक पोस्टकार्डक उत्तर १.३.०९केँ देलथिन जाहिमे जनार्दनझा द्वारा देखाओल

Scanned by CamScanner

औषधिक प्रति धन्यवाद, स्वस्थ भऽ जयबाक हेतु प्रसन्नता ओ लेख छपबाक चेष्टाक सम्बन्धमे कहल गेल अछि । एहूमे श्रीनगरक कोनो चर्चा नहि ।

आठ-नौ मासक अन्तरालमे जनसीदन जी आर्थिक कष्टक सामना करैत रहलाह । प्रायः पैराणिक वृत्ति सेहो कयल । द्विवेदीजीकेँ कहियो अपन स्थिति सूचित कयने छलथिन । से १८.१२.०९ केँ द्विवेदीजी पत्र लिखलथिन—

'बहुत दिनसँ अहाँक कुशल समाचार नहि भेटल । आशा अछि अहाँ स्वस्थ ओ प्रसन्न होयब । कहू एखन अहाँ कतऽ छी-की करैत छी ? जीविकाक की प्रबन्ध अछि ? पौराणिक वृत्तिसँ मन तँ ने अकछायल ? एक बेर अहाँ कहने छलहुँ जे हमं कतहु कोनो रजबाड़ामे अहाँक लेल प्रबन्ध कऽ दी । रजबाड़ाक नोकरी केहन होइत छैक, एकर तँ अनुभव अहाँकेँ भैए गेल अछि । हमर विचारमे यदि अहाँ किछु काज करऽ चाही तँ इंडियन प्रेसमे करी । प्रबन्ध हम कऽ देब । अहाँ एमहर-ओमहरक दौड़धूप सँ बचब । आरामसँ एक ठाम रहब । काज केवल १० बजेसँ ५ बजे धरि करऽ पड़त । काजो एहन जे अहाँ पसिन्न करब । अर्थात् सरस्वती-सम्बन्धी किछु काज तथा हिन्दी ओ संस्कृतमे प्रेसक औरो किछु काज जे भेटय । एकर अतिरिक्त यदि अहाँ घरोपर किछु काज करब पसिन्न करब तँ यथासंभव तकरहु प्रबन्ध भऽ जायत । ओकर पुरस्कार अहाँकेँ फराकसँ भेटत । प्रेसक मालिक बड़े उदाराशय, सज्जन, दयालु ओ उत्साही छथि । अहाँकेँ कोनो तरहक कष्ट नहि होयत । कहू कतेक वेतन पर अहाँ एतऽ आयब पसिन्न करब । हमर विचार जे अहाँ जरूर आबी । अहाँ एतऽ रहि कऽ प्रसन्न होयब । ई मौका बहुत दिनमे हाथ लागल अछि ।'

जनार्दनझाक सहमित भेटलापर द्विवेदीजी इंडियन प्रेसक मालिकसँ भेल गप्पक आधार पर प्रारम्भिक वेतन, प्रोन्नति, प्रेसमे कर्त्तव्य कोटिक अन्यान्य कार्यक प्रकृति इत्यादिक विवरण दैत हुनकासँ हुनक भाषा-ज्ञान, विशेषतः संस्कृत ओ अंगरेजीक सम्बन्धमे जिज्ञासा कयलथिन । एकरा उत्तरमे जनार्दनझा संस्कृतमे एकटा कविता लीखि पठा देलथिन । एहि पर ८.१.१०केँ द्विवेदी फेर लिखलथिन—

'प्रणाम, २ जनवरीक अहाँक कृपापत्र भेटल । अहाँक संस्कृत कविता बड़े मनोहारिणी अछि । अहाँक सरटीफिकेट हम इंडियन प्रेसकेँ पठा देल अछि । अहाँ फौरन प्रयाग चल जाउ । हम प्रेसक मालिककेँ लिखि देल अछि और अपनहुँ सब वात कहिए आयल छियनि । पहुँचिते अहाँकेँ जगह भेटि जायत । मिर्जापुरसँ हम अहाँकेँ प्रयाग जयवाक लेल लिखि चुकल छी ।'

एहि तरहेँ महावीरप्रसाद द्विवेदीक सत्यप्रयाससँ जनार्दनझा इंडियन प्रेस, प्रयागमे जीविकापन्न भेलाह आ १९१० इ.क जनवरी माससँ कार्य करऽ लगलाह । एहि ठाम सरस्वतीक सम्पादनगे सहयोगक संग बंगलाक बंकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ एवं अन्यान्य

Scanned by CamScanner

विशिष्ट लेखकक प्रसिद्ध उपन्यास ओ अन्यो विषयक ग्रन्थ सभक अनुवाद करऽ लगलाह। ओहिमे पहिल कृति छलनि 'राजर्षि' उपन्यास जकरा ओ एकहि मासमे तैयार कऽ लेने छलाह।

१९११मे जनसीदनजी रोगग्रस्त भऽ गेलाह। गामपर किछु अन्यो कोनो पारिवारिक बाधा उपस्थित भऽ गेलनि तेँ ओ गाम चल अयलाह। इंडियन प्रेसक मालिक हिनक व्यक्तित्व ओ कार्यक्षमताएँ ततबा प्रभावित ओ सन्तुष्ट छलाह जे एहन व्यवस्था कयलनि जाहिसँ जनसीदनजी गामो पर रहि अनुवाद कार्य कऽ सकथि। एहि हेतु प्रयागसँ डाक द्वारा मूल पुस्तक हिनका पठा देल जाइन। ई ओकर अनुवाद सम्पन्न कऽ पाण्डुलिपि डाकहि द्वारा पठा देल करथिन। ओकर नियमानुसार पारिश्रमिक यथासमय मनिआर्डरसँ भेटि गेल करनि। एहि रूपेँ गोट पचीसेक पोथी इंडियन प्रेससँ प्रकाशित भेलनि। ई क्रम १९१५ इ. धरि चलैत रहल।

१९१६मे पचगछियाक प्रियव्रत हाइ स्कूलमे संस्कृत-साहित्य-व्याकरण ओ हिन्दी शिक्षकक पद पर नियुक्ति भेलनि। ओहि ठाम जनार्दनझा एक सफल ओ लोकप्रिय अध्यापकक रूपमे यशस्वी भेलाह। परन्तु ओहि ठाम ओ तीनिए वर्ष धरि कार्यरत रहलाह।

ओहि समयमे दरभंगाक महाराज रमेश्वरसिंहक संरक्षकत्वमे दरभंगासँ मिथिला-मिहिर नामक साप्ताहिक पत्र हिन्दी-मैथिली (संयुक्त रूप)मे बहराइत छल। ओकर सम्पादक छलाह हुनकहि ममियौत भाइ प. योगानन्दकुमर। प्रायः हुनकहि अनुशंसापर जनार्दनझाक नियुक्ति १९१९ इ.मे मिथिला-मिहिरक संयुक्त सम्पादकक रूपमे भेलनि। सम्पादकक रूपमे तीन वर्ष कार्य कयलनि।

१९२२ इ.मे जनार्दनझा मिथिला-मिहिर छोड़ि कलकत्ता चल गेलाह। कलकत्ताक ७, दीदारवख्स लेनमे श्रीनगर ड्योढ़ीक अपन मकान छल जाहिमे राजा कमलानन्दसिंहक पुत्र ओ वाल्यावस्थामे हिनक शिष्य कुमार गंगानन्दसिंह रहि कालेजमे पढ़ैत छलाह। ओही ठाम कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली भाषा-साहित्यक प्रोफेसर प. बबुआजीमिश्र ओ प. खुद्दीझा सेहो रहैत छलाह। जनार्दनझा सेहो अपन आवास ओही ठाम रखलनि। कलकत्तामे ओ पाँच वर्ष रहलाह जाहि अवधिमे कलकत्ताक वणिक प्रेस (मिर्जापुर स्ट्रीट) ओ नगेन्द्रनाथ सेनक नगेन्द्र प्रेसक हेतु अनेक बंगला ओ संस्कृत ग्रन्थक हिन्दी अनुवाद कयलनि।

कलकत्तासँ जनार्दनझा १९२७मे पुनः गाम चल अयलाह। एहि ठाम अर्थोपार्जनक कोनो साधन नहि छलनि तेँ आर्थिक संकटसँ उबरबाक लेल ओ पुनः लेखन-वृत्तिक आश्रय लेलनि आ खड्गविलासप्रेस, पटना; पुस्तक-भंडार (विद्यापति प्रेस), लहेरियासराय; सुदर्शन प्रेस, दरभंगाक हेतु अनेक ग्रन्थक रचना कयलनि। गिद्धौरक महाराजक सम्पर्कमे

सेहो गेलाह आ हुनका आग्रहेँ हुनक राजवंशावली विषयक हिन्दी अनुवाद सहित उनैस सर्गमे संस्कृत महाकाव्यक रचना कयलनि। किन्तु एहिसँ ततबा आय नहि भऽ सकलनि जे अपन ज्येष्ठ बालक हरिमोहनझाकेँ एम्.ए.मे नाम लिखबाय आगाँ पढ़ा सकितथि। १९२७ क पश्चात् छओ-सात वर्षक अवधिमे अपन पिताक जीवन-स्थितिक वर्णन करैत प्रोफेसर हरिमोहनझा अपन संस्मरणमे लिखैत छथि—

'बाबूजी आब अधिकतर गामेपर रहैत छलाह। ओ गिद्धौर राज्यक वंशावली-काव्य प्रस्तुत करैत छलाह। बीच-बीचमे जा कऽ महाराजसँ भेटो कऽ अबैत छलाह। (एक दू बेर हमरो अपना संग लऽ गेल रहथि)। एकटा और वृहत् ग्रन्थ लिखैत छलाह 'चिकित्सा सागर' (जे खड्गविलास प्रेससँ छपलैन)। कहियो काल साप्ताहिक 'शिक्षा' ओ मासिक 'कल्याण' आदिमे लेख दैत छलथिन जाहिसँ यदा-कदा किछु आबि जाइत छलैन। परन्तु कोनो नियमित आय नहि छलैन। किछु पैंच-उधार सेहो भऽ गेल छलैन। सोनदाइ (हमर कनिष्ठा बहिन) क कन्यादानो करबाक छलैन। अतः चिन्तित छलाह। घरक आर्थिक स्थिति एहन नहि छल जे निश्चिन्त भऽ कऽ एम्.ए. करबाक हेतु पटना जा सकितहुँ। अतएव एक वर्ष पढ़ाइ स्थगित करय पड़ल। एहि बीच हम पुस्तक-भंडार (लहेरियासराय)मे रहि पुस्तक लिखलहुँ और ताहिसँ द्रव्योपर्जन कय एम्.ए. कऽ सकलहुँ।' (जीवन-यात्रा, पृ. ८३-८४)।

हरिमोहनझा १९३२ इ.मे दर्शन शास्त्रमे एम्.ए.क परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह आ प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान भेटलनि। १९३३ इ.मे ओ पटनाक बिहार नेशनल कालेजमे व्याख्याता नियुक्त भेलाह। एहि समय धरि जनार्दनझा साठि वर्षक आयु पूर्ण कऽ लेने छलाह। सुपुत्रक जीविकापन्न भऽ गेलासँ आर्थिक चिन्ता-भारसँ सर्वथा विमुक्त भऽ गामहि पर रहैत एकाग्र चित्तसँ साहित्य-साधनामे तल्लीन रहऽ लगलाह।

वयस जहिना-जहिना बीतैत गेलनि, तहिना-तहिना स्वास्थ्यमे सेहो ह्रास होइत गेलनि। ओ कास-व्याधिसँ पीड़ित रहऽ लगलाह। १९३९ इ.मे मरणासन्न भऽ गेलाह तँ ज्येष्ठ पुत्र प्रो. हरिमोहनझा द्वारा हुनका पालकीपर चढ़ाय पटना आनल गेलनि। ओहि ठाम कतोक मास धरि उपचार ओ सेवा-शुश्रूषा भेलासँ स्वास्थ्य लाभ कऽ पुनः गाम अयलाह आ गामहि रहऽ लगलाह। गामपर रहैत कहियो काल विशिष्ट कविसम्मेलन, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक समारोहमे गेल करैत छलाह।

जनार्दनझाक जीवन संघर्षमय रहितहुँ पारिवारिक परिवेश अत्यन्त सहयोगात्मक एवं किछु अपवाद छोड़ि सुखद ओ सन्तोषप्रद रहलनि। बाल्यावस्था ओ किशोरावस्था माय लीलावतीक अभिभावकत्वमे बितलनि जाहिमे माम ओ ममियौत लोकनिक सेहो सहयोग रहलनि। युवावस्था भेलापर जखन धनोपार्जनक योग्यता ओ परिस्थिति भेलनि तँ बाइसम वर्षक अवस्थामे १८९४ इ.मे नदौर ग्रामक निवासी (जे मूलतः बहेड़ी ग्रामक

Scanned by CamScanner

वासी छलाह) नचारीझाक कन्या जननीदेवीसँ विवाह भेलनि। जननीदेवी वयसमे हुनकासँ दस वर्ष छोट छलथिन। परन्तु पण्डित परिवारमे जन्म होयबाक कारणे अत्यन्त परिमार्जित आचार-व्यवहार, सुरुचि-शालीनता ओ पारम्परिक लूरि-भाससँ सम्पन्ने नहि छलीह अपितु शिक्षिता सेहो छलीह। उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे एकटा मैथिल कन्याक शिक्षिता होयब अद्भुत घटना कहल जा सकैत अछि।

जनार्दनझा विशेषकाल प्रवासमे रहैत छलाह। परिवारक व्यवस्थाक भार जननी देवीपर रहैत छलनि। अतः हाल-चाल ओ कुशल-समाचार जनबाक लेल पति-पत्नीमे पत्राचार बेसी काल होइत रहैत छलनि, से होइत छलनि हथौटी पत्र वा पोस्टकार्ड द्वारा। ओ अनकहु हाथमे पड़ि जाइत छल आ अन्तरंग वार्त्ता तेसर लग व्यक्त भऽ जाइत छल। अतः पति-पत्नी मीलि कऽ एकटा सांकेतिक लिपिक आविष्कार कऽ ओहीमे पत्राचार करऽ लगलाह। एहि लिपिकेँ ओ लोकनि 'बनौआ अक्षर' कहल करैत छलथिन।

प्रो. हरिमोहनझा जननीदेवीक व्यक्तित्वक वर्णन एहि रूपेँ कयने छथि—

'हमर माय पंडित-कन्या छलीह। ओ खाँटी (मिथिलाक) आचार-विचार, विधि-व्यवहार, ऐपन-पुरहर, मेही जनउ, सुपारीक कतरा आदिमे निपुण छलीह। गामक कन्यागण हुनकासँ सीकीक बुनिया और गीत-नाद (तिरहुत, नचारी, महेश-वाणी, समदाउनि आदि) सिखबाक हेतु अबैत छलथिन। माय खूब कोमल स्वरसँ विहाग गबैत छलीह 'आब हरि काहे को गोकुल ऐहें!' टोलक आइ-माइ सभ हुनका सँ चिट्ठी-पत्री लिखबैत छलथिन। ओ पतरा देखि कऽ एकादशीओ कहि दैत छलथिन। एहि सभसँ ओ स्त्री-समाजमे पंडिताइन कहबैत छलीह।' (जीवन-यात्रा, पृ. १९)

एक बेर जनार्दनझा जननी देवीक एकटा विशिष्ट कलाकृति बहुआरा कोठीक डैनबी साहेबकेँ देखऽ देलथिन। गुणक पारखी-प्रशंसक ओ अंगरेज साहेब कलाकृति देखि ततेक प्रसन्न ओ प्रभावित भेलाह जे जनार्दनझाक आवासक निकटक कलमबाग केर जमीन पुरस्कार स्वरूप लीखि देलथिन।

कहबाक तात्पर्य जे जनार्दनझाकेँ अपन साहित्यिक मनोवृत्तिक अनुकूल जीवन-संगिनी प्राप्त छलथिन जे हुनक साहित्य-साधनामे सतत अनुपूरक रहलथिन।

जनार्दनझाक वयस छत्तिस वर्षक भऽ गेल छलनि तथापि सन्तानक रूपमे दुइ गोट कन्यामात्र छलनि। पुत्रक लालसा तीव्र छलनि। एहि हेतु ओ कोनो धार्मिक अनुष्ठानो कयने छलाह। १९०८ इ.मे एक पुत्रक जन्म भेलनि जकर नाम 'हरिमोहन' राखल गेल। पश्चात् एकटा और कन्या एवं एकटा पुत्रक जन्म भेलनि। एहि तरहेँ माय, पत्नी, तीन कन्या, दुइ पुत्र, पुतोहु, पौत्र-पौत्री, दौहित्र-दौहित्री इत्यादिसँ भरल-पुरल परिवारक मध्य प. जनार्दनझा'जनसीदन' अपन जीवनक अवशिष्ट भाग शान्ति

Scanned by CamScanner

ओ सन्तोषक संग साहित्य-साधना ओ ईश्वराराधनमे बिताबऽ लगलाह ।

जनार्दनझा धर्म ओ ईश्वरमे आस्था रखनिहार नैष्ठिक व्यक्ति छलाह । अतः पूजा-पाठ हुनक नित्यकृत्यक अनिवार्य अंग छलनि । भोजनक विन्यासी छलाह । नव नव व्यंजन बनाय स्वयं खयबाक ओ इष्टमित्र कें निमन्त्रण दऽ भोजन करयबाक दिस विशेष प्रवृत्ति रहैत छलनि । काव्यक नवरस ओ भोजनक षट्रस, दुहूक प्रति समान प्रीति छलनि । तें हुनक सीरममे 'काव्य प्रकाश'क संग-संग 'पाक-प्रकाश' सेहो रहैत छलनि । विश्राम कालमे धिया-पुताकेँ लगमे बैसाय नव नव पिहानी बनाय ओकरा सबसँ बौद्धिक व्यायाम करबैत छलाह । हुनक गढ़ल पिहानीक किछु नमूना देखल जा सकैत अछि—

प्रश्न : एक हाथक ताखमे आठ हाथक दुर्गा अँटि सकैत छथि ?
उत्तर : हँ अष्टभुजा मूर्त्ति ।
प्रश्न : करौनाक गाछ पर अंगपोछा ओछाय सूति सकैत छह ?
उत्तर : गाछ पर अंगपोछा ओछा देबैक आ खाट पर सूति रहब ।
प्रश्न : हाथीकेँ गीत गबैत देखने छहक ?
उत्तर : हम गीत गबैत रही आ हाथी चल जाइत रहय ।

जनसीदनक जीवन-चर्याक एकटा प्रमुख भाग छलनि पत्र-लेखन । अपन सर-सम्बन्धीक अतिरिक्त समकालिक विद्वान्, कवि, साहित्यकार, सम्पादक, इष्ट-मित्र इत्यादिकेँ निरन्तर पत्र लिखैत रहैत छलाह । पत्रोत्तर देबामे कनेको विलम्ब नहि करैत छलाह । १९०३ इ. सँ १९३३ इ. धरि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीसँ जे पत्राचार होइत रहलनि, ओहिमेसँ अधिकांश नष्ट भऽ गेल तथापि द्विवेदीजीक चौंसठि गोट पत्र रजत जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ (१९४२)मे छपल छनि । दोसर दिस जनसीदनजी द्विवेदी जीकेँ जे पत्र सब लिखने छलथिन, ओहिमे सँ बहुतो पत्र काशी-नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका (वर्ष-७०, अंक-१, संवत् २०२३)मे प्रकाशित भेल छनि । ई पत्र सब आब हिन्दी साहित्यक बहुमूल्य ऐतिहासिक निधि मानल जाइत अछि । एकर सभक महत्त्व एहि बात लऽ कऽ विशेष अछि जे ई पत्र सब आधुनिक हिन्दी साहित्यक आरम्भिक कालक विकासक इतिहास अपनामे समेटने अछि ।

पत्र-लेखनमे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली ओ क्वचित् अंगरेजीयो भाषाक प्रयोग करैत छलाह । विनोद मुद्रामे किछु पत्र एहनो लीखि दैत छलाह जे आधा भारतीय भाषामे ओ आधा अंगरेजीमे रहैत छल । ककरा कोन भाषामे पत्र दी, ककरा गद्यमे दी आ ककरा पद्यमे, ककरामे साहित्यिक पुट रहय आ ककरामे सामान्य प्रयोज्य विषयक सरल वर्णन रहय, ताहि विषयमे बड़ सतर्क रहैत छलाह । पं. त्रिलोकनाथमिश्र (गोसपुर), ज्योतिषी षडानन झा (गिद्धौर) इत्यादि संस्कृत विद्वान्केँ श्लोकबद्ध पत्र लिखल करैत छलथिन जाहिमे श्लेष-यमकादि अलंकारक प्रयोग विशेष रहैत छलनि । जनार्दनझाक

Scanned by CamScanner

विशेष पत्राचार ममियौत भाइ राय बहादुर जयानन्दकुमर ओ नरहन स्टेटक स्नेही मित्र बाबू कामेश्वरनारायणसिंहसँ होइत रहैत छलनि ।

कहबाक प्रयोजन नहि जे जनार्दनझा 'जनसीदन'क समग्र पत्राचारक सामग्रीक संकलन कऽ प्रकाशित कराओल जाय तँ ओ पत्र-साहित्यक रूपमे अमूल्य निधि सिद्ध होयत ।

मृत्युसँ किछु वर्ष पूर्व जनार्दनझा'जनसीदन'कँ किछु दारुण दुःखक अनुभव करऽ पड़लनि । पहिने १९४९मे छओ वर्षक एकटा पौत्रक मृत्यु भऽ गेलनि । तकर दुइए वर्षक अनन्तर कनिष्ठ पुत्र इन्द्रमोहनझाक युवावस्थहिमे देहावसान भऽ गेलनि। पुत्रशोकसँ व्यथित जनसीदनजी अधिक समय धरि जीवित नहि रहि सकलाह आ उनासी वर्षक वयसमे २० जून, १९५१कँ ओ दिवंगत भऽ गेलाह ।

साहित्य-साधना

सर्जनात्मक अथवा अनुवाद साहित्यक निरन्तर लेखन जनार्दनझा'जनसीदन'क व्यसन ओ व्यवसाय दुहू छलनि। गामपर रहल होथि वा प्रवासमे, नित्य अनवरत लेखन-कार्य हुनक जीवन-चर्याक अविभाज्य अंग छलनि। हुनक जीवनक पूर्वार्द्धक लेखनक सम्बन्धमे किछु सूचना भेटैत अछि जे 'ओ अधिक काल लिखतहि रहैत छलाह। रतिगरे तेपाइपर लालटेम लेसि चौकीपर गेरुआ भरेँ ओठङि, बदामी रंगक कागजपर पृष्ठक पृष्ठ भरने जाइत छलाह। जखन मोसि खतम भऽ जाइत छलनि तखन हुनक माय लोहियामे हर्रे-कसीसक बुकनी आदि खदका कऽ मोसि बना दैत छलथिन।'

साठिम वर्षक वयसक पश्चात्, जखन प्रवासमे रहबाक प्रयोजन नहि रहि गेल छलनि, तखन यद्यपि लेखनसँ अर्थोपार्जनक प्रयोजन नहि रहि गेल छलनि, गामहि पर रहि समय बितबैत छलाह, तथापि ओ अपन कोठरीमे स्वान्तः सुखाय साहित्य-सार्जनमे निमग्न रहैत छलाह। कवित्त, सवैया, छप्पय, कुंडलिया, हरिगीतिका आदि छन्दसँ गेंटक गेंट कापी भरि जाइत छलनि। एहन काव्य सब औखन विकीर्ण रूपमे हुनक कागत-पत्रक बस्ता सबमे अनदेखमे पड़ल अछि आ कोनो मनस्वी सम्पादकक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि।

जनार्दनझाक साहित्यिक अध्यवसायक श्रीगणेश उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे आरम्भ भऽ गेल छलनि। ब्रजभाषामे समस्या-पूर्त्तिसँ काव्य-रचना आरम्भ कयलनि। स्वाभवतः काव्य-रचनामे पारम्परिक छन्दहिक प्रयोग करैत छलाह। परन्तु क्रमहि काव्यक रूप ओ भाषाक क्षेत्र विस्तृत होइत गेलनि। ओ आगाँ चलि खड़ीबोली हिन्दी, संस्कृत ओ मातृभाषा मैथिलीमे सेहो साहित्य-सृष्टि करऽ लगलाह। संस्कृतमे तँ पारम्परिक वर्णवृत्तमे प्रसिद्ध-प्रसिद्ध छन्द सभक प्रयोग करैत छलाह। किन्तु हिन्दी ओ मैथिलीमे आधुनिक प्रकारक मात्रावृत्तक सेहो प्रयोग करऽ लगलाह। बीसम शताब्दीक पहिल दशकमे जनार्दनझा पद्यक अतिरिक्त गद्यक क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि। फेर तँ ओ खड़ीबोली ओ मैथिलीमे परिनिष्ठित, परिमार्जित, सरल, सुबोध, चलित,

Scanned by CamScanner

लोकानुरंजक, चटुल गद्यक एकटा विशिष्ट शैलीक प्रणेता बनि गेलाह ।

जखन हिन्दीक स्वरूपक निर्माण-काल छल आ आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दीक एकटा मानक स्वरूप स्थिर करबामे दत्तचित्त छलाह, ओहि समयमे जनार्दन झा द्विवेदीजीकेँ हिन्दी भाषाक मानक स्वरूप स्थिर करबामे अपन विचार देल करैत छलथिन । जनार्दनझाक एहने एकटा विचारक उत्तर दैत द्विवेदी लिखने छलथिन—

'सरस्वतीक जे त्रुटि सब अहाँ देखाओल ओकरा लेल हम कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद दैत छी—अहाँक द्वारा देखाओल अनेको अशुद्धि ठीके अछि—'

दोसर पत्रमे जनार्दनझाक कृतिक सम्बन्धमे लिखने छलथिन जे 'अहाँक कृतिकेँ देखबाक की अछि, अहाँक पत्रक रचनहि देखि हमरा आनन्द होइत अछि, ग्रन्थ देखि कऽ और प्रमोद होयत ।'

जनार्दनझाक रचनात्मक प्रतिभासँ द्विवेदीज़ी ततवा प्रभावित छलाह जे ओ वारंवार सरस्वतीक हेतु लेख, कविता आदि पठयबाक आग्रह करैत रहैत छलथिन । हुनकहि तगादा पर जनार्दनझा अनेक दीर्घ कविता सब सम्पन्न कयने छलाह । एहि बातक सम्पुष्टि द्विवेदीजीक पत्र सभक अंश सब देखलासँ होइत अछि । द्विवेदीक आग्रह कोन रूपक होइत छल से द्रष्टव्य अछि हुनक विभिन्न तिथिक लिखल पत्रक किछु अंश मे—

६.१.०३ :...अहाँ अपन कविता ओ लेख पठाउ । कृपा होयत—

१२.२.०३ :...'शिक्षा-शतक'क तँ समाप्ति भऽ गेल आब 'पश्चात्ताप'क बेला अछि—कृपा कऽ कऽ ओकरहु समाप्त कऽ कऽ पठा दिअऽ तँ छपब शुरू भऽ जाय ।

१२.११.०३ :...अहाँक शिक्षा-शतक छपि रहल अछि— एही मासमे बहरायत । कृपा कऽ शेष सेहो शीघ्रे पठा दिअऽ । और पश्चात्ताप वला कविता सेहो समग्र पठाउ ।

१८.१.०४ :...शिक्षाशतकक शेषांश पहुँचनामा हम पठा चुकल छी, बहुत नीक, अहाँ यथावकाश प्रार्थना शतक आदिकेँ सम्पन्न करब—कोनो जल्दी नहि—तावत शिक्षाकेँ छपऽ दियौक—

...दीनबन्धुक चरित छपि गेल—हम प्रूफ देखि चुकलहुँ—परन्तु हमरा ओकर तर्ज पसिन्न नहि ।

३१.७.०४ :...कृपापत्र आयल । कवितहु भेटल–शिक्षाशतकक शेषांश सेहो पठाउ जाहिसँ हम ओकरा लगातार छपैत जाइ–बन्द नहि करऽ पड़य । कविता बहुत नीक अछि—रसालपञ्चककेँ सेहो कोनो समय प्रकाशित कऽ देबैक । पश्चात्तापशतक केँ अहाँ थोड़बहि अंश पठाय चुप भऽ गेलहुँ— किएक ?

...दीनबन्धु चरित संभव अगस्तमे छपि जाय—तसवीर नहि भेटल—

Scanned by CamScanner

२०.१०.०४ :...शिक्षाशतक छपऽ गेल। आब लगातार ओकर प्रकाशन होइत रहत, 'पश्चात्ताप'हुकेँ पूरा करू।

२०.१०.०४ :...प्रार्थना शतक पठाउ— हम छापऽ जा रहल छी—

२०.१२.०४ :...अहाँक पैघ पत्र आयल। ओहिमे अहाँ नीक कविता कयल।

१५.४.०६ :...प्रार्थनाशतककेँ पूरा करू—

१०.६.०६ :...शतकक उत्तरार्द्ध देखि लेल। बड़ उत्तम अछि। मन लागय तँ किछु और लिखू।

१३.६.०६ :...प्रार्थना-श[illegible]क संशोधन अयला पर कऽ देल जायत।

३.७.०६ :...प्रार्थनाक पूर्वार्द्ध भेटि गेल। आज्ञानुसार परिवर्त्तन जरूर कऽ देबैक।

२१.७.०६ :...एलेक्शनपर जे कविता अहाँ पठाओल, बड़ रोचक अछि। ई राजनीतिक विषय थीक.। तेँ 'सरस्वती'क नियमक अनुसार एकर प्रकाशनमे हम अक्षम छी। एकरा कोनो दोसर पत्रमे छपबाउ; मुदा छपबाउ जरूर।

२२.७.०६ :...अहाँक पत्र काल्हि भेटल। बड़ वेश; उत्तरार्द्ध आबि गेला पर हम अहाँक प्रार्थना प्रकाशित करब आरम्भ करब। माफ करब, अहाँक पहिल २५ पद्य जतेक सरस अछि ओतेक दोसर २५ नहि अछि।

७.३.०७ :...''दशरथक प्रति कैकेयी'' तँ हम मार्चमे छपऽ पठा देल। प्रार्थना-शतक सेहो मास दू मासमे शुद्ध करब। कोनो परिवर्त्तन आवश्यक नहि। एक-आध ठाम छल से पहिनहि भऽ गेल अछि।

साहित्य-लेखनक दृष्टिएँ जनार्दनझाक जीवनकेँ तीन कालखण्डमे बाँटल जा सकैत अछि। आरम्भसँ १९०९ धरिक अवधि हिनक साहित्य-सृर्जनक प्रवृत्ति काल थिकनि। एहि अवधिमे हिनक लेख, समस्या-पूर्त्ति, मुक्तक काव्य एवं दीर्घ काव्य सब रसिक मित्र, समस्या-पूरणम् सरस्वती, मिथिला-मिहिर, भारतमित्र इत्यादिमे छपैत रहलनि। जनार्दनझा भर्तृहरिक शतक-रचनाक अनुकरणपर तीन गोट शतक-काव्य—शिक्षाशतक, पश्चात्ताप शतक, प्रार्थना शतक नामसँ रचने छलाह जे १९०३ सँ १९०७क अवधिमे सरस्वतीमे क्रमशः प्रकाशित भेल छल। रसाल पंचक एवं अन्यान्य कविता ओ लेख सब सरसवतीमे प्रकाशित होइत रहलनि। अक्टूबर, १९०९ इ.क सरस्वतीमे 'मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी' शीर्षक निबन्ध प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे मैथिल समाजक कतोक रूढ़ परम्पराक आलोचना ओ विरोध कयल गेल छल.। एहि निबन्धक परम्परा-प्रेमी लोकनि द्वारा कटु आलोचनो भेल छल।

१९०९ इ.मे दरभंगासँ मिथिला-मिहिर नामक पत्रक प्रकाशन आरम्भ भेल छल। एहि पत्रक पहिल वर्षक आठम अंकमे चालिस गोट दोहामे ब्रजभाषामे 'शतरंज शिक्षा'

Scanned by CamScanner

प्रकाशित भेल छलनि ।

एही अवधिमे जनार्दनझाक प्रवृत्ति अनुवाद दिस भेलनि । सर्व प्रथम १९०३ इ. मे विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक अनुवाद संस्कृतसँ हिन्दीमे कयलनि । ई अनुवाद यद्यपि प्रकाशित भऽ सकल दुइ दशकक बादे परन्तु एहिसँ अनुवाद करबाक एकटा गहन आत्मविश्वास उत्पन्न भेलनि जे अग्रिम कालमे बड़ सहायक सिद्ध भेलनि ।

हिनक साहित्य-साधनाक दोसर आयाम आरम्भ भेलनि १९१० इ.सँ । एही वर्षक जनवरी माससँ इलाहाबादमे इंडियन प्रेसमे साहित्यिक कार्य करबाक हेतु सवैतनिक नियुक्ति भेलनि आ हिनक पोथी सभक प्रकाशनक अनवरत क्रम आरम्भ भेल । यद्यपि इंडियन प्रेसमे नियमित रूपसँ दू-अढ़ाइये वर्ष धरि रहलाह मुदा हिनक साहित्य-सर्जनक प्रतिफलन पुस्तक रूपमे १९३३ इ. धरि निरन्तर होइत रहलनि । एहि कालकेँ जनार्दनझा'जनसीदन'क कृतिकाल अथवा साहित्यिक उत्कर्ष काल कहि सकैत छी ।

एही कालावधिमे जनार्दनझाक साहित्य-साधनामे एक नवीन दिशाक सन्धान भेल आ ओ छल मैथिली साहित्यमे प्रवेश । मैथिली भाषामे अभिनव गद्यशैलीमे अभिनव साहित्य-विधाक प्रवर्त्तन कऽ आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे विशिष्ट स्थान पयबाक अधिकारी भेलाह । मैथिली साहित्यमे जनार्दनझाक साहित्यिक अवदान पर विस्तारसँ विचार करबाक अवसर आगाँ भेटत । एहि ठाम मैथिलीसँ भिन्न हिनक साहित्य-लेखनक परिचय देब इष्ट अछि ।

इंडियन प्रेससँ सम्बद्ध रहैत हिनक शक्ति विशेषतः अनुवादहि कार्यमे लागल रहलनि । एहि ठाम इंडियन प्रेसक अध्यक्ष चिन्तामणि घोष प्रयोगार्थ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक 'राजर्षि' नामक बंगला उपन्यासक हिन्दी अनुवाद करबाक भार देलथिन । जनार्दनझा द्रुतगतिसँ मासाभ्यन्तरे ओकर अनुवाद प्रस्तुत कऽ देलनि । अनुवाद अत्यन्त सुन्दर भेल छल आ प्रकाशित भेला पर ओ अत्यन्त प्रशंसित ओ लोकप्रिय भेल । अतःपर हिनका बंगलासँ आनो-आन प्रसिद्ध उपन्यास एवं अन्य अन्य ग्रन्थक अनुवाद करबाक हेतु सुविधा-सहयोग देल जाइत रहलनि । परिणामतः किछु वर्षक अवधिमे इंडियन प्रेससँ वंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रमेशचन्द्र दत्त, दीनबन्धु मित्र इत्यादिक बंगला कृतिक निम्नलिखित पचीस गोट हिन्दी अनुवादक पोथी प्रकाशित भेलनि :

१. अद्‌भुत कथा २. आदर्श महिला ३. आश्चर्य घटना ४. ऋद्धि ५. ग्रहनक्षत्र ६. गौर मोहन ७. चरित्र गठन ८. नवीन संन्यासी ९. नेपोलियन वोनापार्ट १०. पतिव्रता ११. पारस्योपन्यास १२. माधवी-कंकण १३. मुकुट १४. रत्न दीप १५. राजपूत जीवन सन्ध्या १६. राजर्षि १७. राबिन्सन क्रूसो १८. विचित्र वधू रहस्य १९ शुश्रूषा २०. षोडशी २१. स्वर्णलता २२. सम्राट अकबर २३. समाज २४. सिख जाति का इतिहास २५. सुशीला चरित ।

Scanned by CamScanner

१९२२ सँ १९२७क कलकत्ता-प्रवासक अवधिमे वणिक् प्रेससँ बंकिमचन्द्रक इंदिरा, देवी चौधरानी ओ विष वृक्ष नामक तीन गोट उपन्यासक हिन्दी अनुवाद ओ मनुस्मृति-टीका प्रकाशित भेलनि। कलकत्ताहिक नगेन्द्रप्रेससँ साहित्येतर विषयक तीन गोट ग्रन्थ 'द्रव्य गुण-शिक्षा', 'पाचन मुष्टियोग' तथा 'प्राणियों के अन्तःकरण की बात' एही अवधिमे प्रकाशित भेल छलनि।

१९२७मे जनार्दनझा'जनसीदन' देश आपस आबि गेलाह। एहि ठाम दरभंगा ओ पटनाक विभिन्न संस्थाक सम्पर्कमे रहलाह आ १९३३ धरि अनेक पुस्तक प्रकाशित भेलनि। एही अवधिमे दरभंगाक सुदर्शन-प्रेससँ 'मुष्टि योग संग्रह' (१९२८) नामक सरल चिकित्सा ग्रन्थ प्रकाशित भेलनि। पटनाक खड्गविलास प्रेससँ 'चिकित्सा सागर' ओ 'वाटिका-विनोद' नामक दुइ गोट ग्रन्थ प्रकाशित भेलनि।

जनार्दनझा जखन मिथिला-मिहिरक सम्पादक रूपमे १९१९-२१मे दरभंगामे अवस्थित छलाह, तखनहि आचार्य रामलोचनशरणसँ अपेक्षा बढ़लनि आ ओ अपेक्षा प्रगाढ़ मैत्रीमे परिणत भऽ गेलनि। एही मैत्री ओ स्नेह-सम्बन्धक परिणाम स्वरूप हिनक ज्येष्ठ सुपुत्र हरिमोहनझाकेँ आचार्य रामलोचन शरणक स्नेह ओ वात्सल्य प्राप्त भेलनि तथा ओहि समयक शीर्षस्थ साहित्यिक प्रकाशन-प्रतिष्ठान पुस्तक-भंडारक एकटा एहन मंच भेटि गेलनि जे हरिमोहनझाकेँ साहित्य-शीर्ष पर आसीन कऽ देलकनि। से पुस्तक-भंडार जनार्दनझाक अनेक पुस्तक प्रकाशित कयलकनि जाहिमे उल्लेखनीय अछि विद्यापतिक संस्कृत कथा-ग्रन्थ 'पुरुष-परीक्षा'क हिन्दी अनुवाद (१९२६), 'काव्य-निर्णय-टीका', ब्रजभाषामे 'अन्योक्ति मणिमाला' ओ खड़ीबोलीमे 'कलिकाल कुतूहल'। एहिमे अन्तिम दुहू मौलिक पद्यकाव्य थिकनि।

जनार्दनझाक साहित्यिक क्रिया-कलापक तृतीय आयाम १९३३क बाद आरम्भ होइत अछि। एहि काल खण्डमे मृत्यु पर्यन्त साहित्य-सर्जन तँ करैत रहलाह मुदा सर्वथा स्वान्तः सुखाय। अतः एहि कालकेँ जनार्दनझा'जनसीदन'क साहित्यिक जीवनक निवृत्ति काल कहि सकैत छी। अर्थक प्रयोजनसँ निश्चिन्त भऽ जयबाक कारणे अर्थलाभक दृष्टिएँ कोनो ग्रन्थ प्रकाशित नहि भेलनि। अवश्ये समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिन्दी-मैथिली रचना सब प्रकाशित होइत रहलनि। रजत-जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ (१९४२)मे हिन्दीमे तीन गोट हिनक विस्तृत निबन्ध 'मिथिला के पण्डित' 'द्विवेदी जी के पत्र' तथा 'सरोज-सौरभ' (राजा कमलानन्दसिंहक संस्मरण ओ जीवनी) प्रकाशित भेलनि। एही अवधिमे भक्ति-भावनासँ संबलित संस्कृत पद्यक एकटा संग्रह 'श्रीकृष्ण-विनयाष्टकम्' नामक पुस्तिका स्वयं छपबाय सौराठ सभामे निःशुल्क वितरण करबौने छलाह।

हिन्दी-संस्कृतमे कतबा पोथी जनार्दनझाक प्रकाशित भेल छलनि, तकर सभक

Scanned by CamScanner

विवरण उपलब्ध नहि। ई एकटा गहन अनुसन्धानक विषय अछि। मुदा कतोक विद्वान् लोकनिक अनुमानक अनुसार हिनक लगभग साठि-पैंसठि गोट अनुवाद कयल पुस्तक प्रकाशित भेल छलनि। जनसीदन जीक कतोक अप्रकाशित कृति सभक उल्लेख कयल जाइत अछि, यथा गिद्धौर-राजवंशावली नामक संस्कृत सानुवाद महाकाव्य, हिन्दूधर्म विवेक, मिथिला-माहात्मय, रससार, आदर्श बालक, जीवन-संस्मरण (आत्मकथा) इत्यादि। एहिसँ अतिरिक्तो हिनक बहुशः मुक्तक काव्य ओ निबन्धादि पाण्डुलिपिए रूपमे रहि गेल छनि।

जनसीदनजीक मृत्युक पश्चात् हुनक बहुतो लेख-सामग्री बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटनाक तत्कालीन निदेशक आचार्य शिवपूजन सहाय हुनक पुत्र प्रो. हरिमोहनझासँ माङि कऽ लऽ गेलथिन, एहि आश्वासनक संग जे ओकरा सबकेँ सम्पादित कऽ बिहार राष्ट्रभाषा परिषदसँ प्रकाशित कयल जायत। किन्तु ओतऽसँ कहियो किछु प्रकाशित नहि भऽ सकल। कारण जे रहल हो। अवशिष्ट पाण्डुलिपि सब कविक उत्तराधिकारी लगमे एखनहुँ सुरक्षित अछि। एहि तरहेँ जनसीदनजी सन महान् साहित्य-निर्माताक बहुतो अवदानसँ साहित्य-जगत एखनहुँ धरि वंचिते अछि।

Scanned by CamScanner

मैथिली साहित्यमे अवदान

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालमे जनार्दनझा'जनसीदन' कविसँ अधिक गद्यक प्रयोक्ता, अभिनव गद्यशैलीक निर्माता, समाज-दृष्टि-सम्पन्न उपन्यास ओ कथा–विधाक अधिष्ठाताक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। साहित्यिक जीवनक दोसर आयाममे हिनक मैथिली साहित्यमे पदार्मण भेल छल। जहिया ई मैथिलीमे साहित्य-सर्जन आरम्भ कयलनि तहिया हिन्दीमे अग्रणी साहित्यकारक रूपमे पूर्ण प्रतिष्ठा लाम कयने छलाह। समाजक बुद्धिजीवी वर्गमे एकटा गौरवक भाव सहजहि जाग्रत छल जे एकटा मैथिल राष्ट्रिय स्तरपर विश्रुत छथि। ई एकटा रहस्य बनल रहि जाइछ जे जखन मैथिली भाषा ओ साहित्यक उत्थान ओ समृद्धिमे कवीश्वर चन्दाझा, विद्याावाचस्पति मधुसूदनझा, कविवर जीवनझा, व्याकरण-कर्मकाण्डक दुर्द्धर्ष विद्वान् म. म. परमेश्वरझा, म. म. मुरलीधरझा, कविवर लालदास, मुंशी रघुनन्दनदास, यदुनाथझा 'यदुवर' सदृश विद्वान् दत्तचित्त छलाह, तखन जनार्दनझा मैथिली भाषामे सहित्य सर्जनसँ विमुख किएक रहलाह। १९१० इ.सँ पूर्व मैथिल-हित-साधन, मिथिला-मोद, मिथिला-मिहिर सन पत्रमे जनार्दनझाकेँ सर्वथा अनुपस्थित देखैत छियनि। किन्तु १९१० इ.सँ जखन मैथिलीमे लिखऽ लगलाह तँ हिनक लेखनी तीव्र वेगसँ चलऽ लगलनि।

विलम्बहुसँ मैथिलीमे सर्जनात्मक-साहित्य-लेखन दिस प्रवृत्त होयबाक पाछाँ हुनक कोन मानसिकता रहल होयतनि तकर व्याख्या अपेक्षित भऽ जाइछ। केओ-केओ अनुमानक आधार पर कतिपय कारण सव गनबैत छथि, यथा 'हिन्दीक विस्तारवादी गुट द्वारा' मैथिली भाषाक विरोध, हिन्दी क्षेत्रमे जनार्दनझाक साहित्यिक कार्यक समुचित वार्त्ता नहि लेल जायब तथा हुनक प्रतिभा आ परिचयक शोषणक अनुभव हुनका मैथिलीमे रचना करबाक प्रवृत्ति जगा देने होनि, तकर पूर्ण संभावना अछि।

परन्तु ई कारण सव काल्पनिक ओ असंगत। कारण, जहियासँ ओ मैथिलीमे लिखब आरम्भ कयलनि तकरा वाद जनार्दनझा खूब लिखलनि। हम पूर्वहि देखल अछि जे हिनक साहित्यिक जीवनक दोसर आयाम १९१० सँ १९३३ इ. पर्यन्त साहित्यिक

Scanned by CamScanner

क्रिया कलापक दृष्टिएँ अत्यन्त समृद्ध रहलनि । हिन्दी ओ मैथिलीमे समानान्तर रूपसँ हिनक लेखनी गतिमान रहलनि । यदि हिन्दी क्षेत्रमे कनेको विरक्ति ओ अप्रतिभताक अनुभव भेल रहितनि तँ ओ हिन्दीमे लेखन कार्यसँ विरत भऽ जइतथि वा लेखनक गति मन्द भऽ जैतनि । परन्तु देखल जाइत अछि जे १९१०क पश्चाते हिनक पुस्तक सभक सर्वाधिक लेखन-प्रकाशन भेल हिन्दी क्षेत्रमे ।

वास्तवमे मैथिलीमे साहित्य-सर्जनक प्रवृत्तिक पाछाँ दुइ गोट महत्त्वपूर्ण कारण छल । पहिल छल मातृभाषा मैथिलीक प्रति कर्त्तव्य-बोधक जागरण ओ दोसर छल मैथिल समाजक सुधारक तीव्र मानसिकता । मैथिलीमे जे साहित्य-रचना जनार्दनझा कयलनि से मनोरंजनार्थ मात्र हेतु नहि, अपितु ओकरा पाछाँ एकटा 'मिशन' छल ।

वर्त्तमान शताब्दीक प्रथम दशक धरि देशक विभिन्न भागमे समाज-सुधारक भावना बुद्धिजीवी वर्गमे व्याप्त भऽ गेल छल । ओ लोकनि अपन-अपन सम्पर्की समाजक कुरीति सभमे सुधार ओ सामाजिक परिवर्त्तनक सम्बन्धमे गम्भीरतासँ सोचऽ लागल छलाह। जनार्दनझा 'जनसीदन' सेहो अपन मैथिल समाजमे जड़िआयल रूढ़ि, परम्परा, घृणित प्रथा सभकेँ देखैत, अनुभव करैत रहल छलाह । विशेषतः वैवाहिक कुप्रथा— कन्या-विक्रय, बाल-विवाह, बहु विवाह इत्यादिसँ समाज ततबा ग्रस्त छल जे एकरा सभकेँ सनातन धर्म, शिष्टाचार, सामाजिक प्रतिष्ठाक आधार मानैत छल । एकरा सभक विपरीत आचरण करबाक साहस करब कल्पनातीत बूझल जाइत छल । एहि कुप्रथा सभक कारणे बहुशः वैयक्तिक, पारिवारिक ओ सामाजिक समस्या सभक आविर्भाव भऽ गेल छल जाहि तरमे समाज पिसा रहल छल । किन्तु ओकरा सभकेँ छोड़बाक स्थानमे पूर्वजन्मक पापक प्रतिफल, भाग्यक दोष, नियतिक परिणाम बूझि अन्ध भावसँ भोगैत रहबाक लेल अभिशप्त छल ।

जनार्दनझा मैथिल समाजक वैवाहिक परिपाटीक विकृतिकेँ उजागर कऽ समाजकेँ ओकर परिहार करवाक हेतु सन्नद्ध करबाक संकल्प कयलनि । ओ हिन्दीमे एकटा विस्तृत निबन्ध लिखलनि आ ओकरा महावीरप्रसाद द्विवेदीकेँ अवलोकनार्थ ओ 'सरस्वती'मे उपयुक्त भेलापर प्रकाशनार्थ पठौलथिन । ओहि निबन्धक शीर्षक छल 'मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी' । एहि निबन्ध पर आचार्य द्विवेदी अपन २७.११.०७क पत्रमे लिखने छलथिन—

'अहाँ अपना ओहि ठामक विवाह-प्रथाक जे बात सब लिखल से हमरा लेल सर्वथा नव अछि । परन्तु एहि प्रथाक कारणे बहुत किछु असुविधा जरूर होइत होयत । एहिमे परिवर्त्तनक आवश्यकता बूझि पड़ैत अछि । कन्याक लेल वर बहुत देखि-बूझि आ अनेक आगाँ-पाछाँक बातक बिचार कऽ निश्चित करबाक चाही ।'

ई निबन्ध सरस्वतीमे अक्टूबर १९०९मे प्रकाशित भेल । एकर प्रकाशन होइते

Scanned by CamScanner

मैथिल वैवाहिक परम्पराक अन्धभक्त लोकनिक मध्य जेना बिहाड़ि उठि गेल। जनार्दन झाक ओहि निबन्धक कटु आलोचना होबऽ लागल। सबसँ पहिने मिथिला-मोद (वर्ष-३, उद्‌गार-३६, आश्विन १३१७ साल)मे सम्पादकीय टिप्पणीमे म. म. मुरलीधर झा 'की अद्‌भुत' शीर्षकमे आलोचना कयने छलाह। यद्यपि उक्त टिप्पणीमे मैथिल समाजमे विद्यमान दोष सभसँ सहमति देखाओल गेल अछि जे 'कोन देश वा कोन एहन जाति अछि जाहि मध्य किछु ने किछु शास्त्र विरुद्ध व्यवहार प्रचलित एक आधा निन्द्य तादृश क्रिया नहिँ हो जकर परिणाम समाजकाँ दूषित नहिँकरैत हो।...के मैथिल एहन छथि जनिका (ई बोध) नहिँ जे ई अपना देशक बड़ अधलाह रीति अछि ओ ई दूर हो तँ उत्तम।'

परन्तु म.म. मुरलीधरझाक रोष एहि बात लऽ कऽ छलनि जे जनार्दनझा अपन निबन्धकेँ हिन्दीमे लीखि मैथिल समाजक दोषकेँ जगजाहिर कऽ देलनि। दोसर, हुनक मान्यतेँ, निबन्धमे मैथिल समाजक दोषकेँ बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल गेल। तेसर, समाज सुधारक जे उपाय सब निबन्धमे कहल गेल छल से सर्वथा ग्राह्य नहि छल। अतः ओ जनार्दनझाकेँ सावधान करैत लिखने छलथिन—'सावधान, कान पकड़ू, पुनः कहिऔ एना हिन्दी फिन्दीमेँ नहिँ लिखी।'

ओहि समयक मैथिलीक प्रखर लेखक पण्डित त्रिलोचनझा (बेतिया-वासी)क एक लेख 'भूल सुधार' शीर्षकसँ मार्च, १९१०क सरस्वतीमे प्रकाशित भेल जाहिमे जनार्दनझाक उक्त लेखमे प्रतिपादित विचारक कटु शब्दमे आलोचना कयल गेल। प्रतिक्रिया स्वरूप जनार्दनझा १९१०क ज्येष्ठक अंकक मिथिला-मिहिरमे निबन्ध लिखलनि 'भूल सुधार का प्रतिवाद' जाहिमे पण्डित त्रिलोचनाझाक विचारक कठोर शब्दमे आलोचना कयलनि। पुनः त्रिलोचनाझा मिथिला-मोद (वर्ष-४, उद्‌गार-४४, ज्येष्ठ, १३१७ साल, १९१० इ.)मे हिन्दीमे 'सरस्वती सेवक पण्डितजी से प्रार्थना' शीर्षक सँ जनार्दनझाक ओहि प्रतिवादक प्रत्यालोचना कयलनि। निष्कर्ष ई जे 'सरस्वती' मे जनार्दनझाक व्यक्त विचार-सरणिक आलोचना-प्रत्यालोचनाक एक पैघ शृंखला चलैत रहल जे दिनानुदिन तीव्रसँ तीव्रतर ओ कटुसँ कटुतर होइत चल गेल।

ठीक ओही समयमे मैथिल समुदायमे सामाजिक संगठन ओ समाज-सुधारक एक क्षीण चेतना जागल छल आ ओकरा क्रियात्मक रूप देवाक हेतु कोनो संस्था-निर्माणक चर्चा खूब चलऽ लागल छल। एहि अवसरकेँ अपन सुधारवादी विचारक प्रचारक हेतु प्रासंगिक बूझि तथा अपन विचारकेँ अपना समाज धरि पहुँचयबाक उद्देश्यसँ मैथिलीमे लिखब ओ अधिक उपयोगी बुझलनि। अतः मिथिला-मोदक आलोचना जे 'एना हिन्दी-फिन्दीमे नहि लिखी'केँ स्वीकार अवश्य कयलनि तथा आगाँ हिन्दीमे स्व-समाज-दोषाविष्करण विषयक कोनो लेख ओ नहि लिखल।

Scanned by CamScanner

एकर अर्थ ई नहि जे हुनक विचारमे कोनो परिवर्त्तन भेलनि । ओ अपन समाज-सुधार विषयक अवधारणाकेँ अभिधेय वा व्यंग्यरूपमे प्रस्तुत करबाक हेतु उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ कविताकेँ माध्यम बनाय मैथिलीमे लिखब आरम्भ कयलनि ।

मैथिलीमे सर्वप्रथम एकटा लेख लिखलनि 'मैथिल समाजसँ निवेदन' जे मिथिला-मोदक वर्ष-४, उद्गार-४१, फाल्गुन, १३१७ साल, १९१० केर अंकमे प्रकाशित भेल छल । लेख बेस पैघ छल तथा आगाँ कतोक अंकमे प्रकाश्य छल, किन्तु ओकर एकहि किश्त प्रकाशित भऽ आगाँ ओकर अग्रिम अंश 'मोद'मे कहियो प्रकाशित नहि भेल । बल्कि चिरकाल धरि 'मोद'मे जनार्दनझाक अन्यहु कोनो रचना प्रकाशित नहि भऽ सकलनि । एकर पाछाँ प्रायः जनार्दनझाक उपरिचर्चित निबन्ध विषयक आलोचना-प्रत्यालोचना जन्य कटुता ओ वैचारिक असहमति रहल हो, से संभव अछि । यदि सैह सत्य होइक, तथापि एतबा श्रेय मिथला-मोदकेँ अवश्ये भेटतैक जे ओहि समयक हिन्दी साहित्यक एकटा समर्थ, ऊर्जस्वल एवं प्रतिष्ठित लेखक जनार्दनझाकेँ मैथिलीमे साहित्य-सर्जन हेतु उत्तेजित-उत्प्रेरित करबामे सफल भऽ सकल ।

एखन धरिक गवेषणाक आधार पर कहल जा सकैछ जे पूर्वोक्त निबन्ध 'मैथिल-समाजसँ निवेदन' जनार्दनझाक मैथिलीमे लिखित पहिल रचना थिकनि । एहू निबन्धमे स्वभावानुरूप मिथिलाक सामाजिक दोष, कुप्रथा ओ कुरीतिहिक विस्तरेण आलोचना कयल गेल अछि । निबन्धारम्भमे कहल गेल अछि :

'बड़े हर्षक विषयक थिक जे किछु दिनसँ मिथिलादेशहुमे आब मैथिल जातीय सभा सङ्गठित होमै लागल अछि । यद्यपि उक्त सभाक यावत् उद्देश्यसँ हम पूर्ण रूपैँ परिचित नहिँ छी तथापि परम्परया जे किछु ज्ञात भेल अछि से सर्वथा उत्तमे बुझना जाइत अछि । अन्तमे सभाक परिणाम की होएत से ईश्वरक हाथ, परन्तु मैथिल लोकनिक एतद् विषयक उत्साहमात्रसँ सम्प्रति हमर हृदय आनन्दसँ आप्लावित भै रहल अछि । जा ईश्वरकैँ किछु देशक कल्याण करब अभीष्ट नहि छन्हि ता सभक मनमे एहि प्रकारक उत्साह किऐक जाग्रत भै रहल अछि । मिथिलामे सर्वव्यापी जे दोष सब देशकैँ सत्यानाश कै रहल अछि ताहि सभैक निवारणार्थ सभाक सङ्गठन होएब सर्वथा उचिते थिक । सभाक उद्देश्यकैँ सर्वतोभावैँ चरितार्थ करब मैथिलमात्रकाँ कर्त्तव्य थिकनि ।'

ओहि समयक सामाजिक मनोवृत्तिक आलोचना करैत ओ लिखने छलाह :

'सम्प्रति मिथिलामे एखन धरि तकने एहन व्यक्ति प्रायः बहुत थोड़ भेटताह जे मिथिलाक परिष्कार वा सामाजिक दोषोद्धारक हेतु हृदयसँ तत्पर होथि । कृत्रिम उत्साह देखौनिहार सभासदक सङ्ग 'हाँजी-हाँजी' कैनिहारे व्यक्ति अधिक भेटताह । तादृश लोक नियमक परिपालन कहाँ धरि करत से सभकैँ प्रत्यक्षे होएत, कहबाक प्रयोजन कोन ।'

Scanned by CamScanner

मिथिलाक तत्कालीन समाजमे व्याप्त दोषाधिक्य ओ गुणक अल्पता पर विचार करैत लेखक कहैत छथि :

'जाहि सुधारक हेतु सभा सङ्गठित भै रहल अछि से जँ असाध्य नहिँ, तँ देशक स्थिति पर लक्ष्य कैने दुःसाध्य धरि अवश्ये। मैथिल समाजमे गुण-दोषक तारतम्य कैला सँ दोष असंख्य ओ गुण संख्या अल्पतम दृष्टिगोचर होइत अछि। जाहि रूपेँ आकाश मे तारागण निमग्न अछि ताहि प्रकारेँ हमरा लोकनिक दोषराशिमेँ गुण निमग्न भै रहल अछि।'

लेखक आगाँ मैथिल समाजक चरित्र, स्वभाव, संस्कार, आचार, विचार, व्यवहार ओ परम्परा सम्बन्धी पन्द्रह गोट सामाजिक दोष ओ दुर्गुणक परिगणन-वर्णन करैत तत्काल ओहि दिस समाजक प्रबुद्ध वर्गक ध्यान आकृष्ट करबाक प्रयास कयलनि। परिगणित दोष ओ दुर्गुण सब छल—वैमनस्य, अन्धपरम्परावंश-विक्रयव्यापार, अपरिमित व्यय, सोपहासनिन्दा, हिंसा, ईर्ष्या, (अधिकतया स्त्रीगणक), दम्भ, आलस्य, दारिद्रय, कपट, स्वार्थता, मात्सर्य, जातीय गौरवोन्माद, अधर्म एवं अधर्मक पोषणार्थ दुराचार।

निबन्धक अन्तमे उपसंहार रूपमे अपन विचार एहि रूपमे रखने छथि— 'एहन अवस्थामेँ जँ आबहु सुधारक आन्दोलन नहिँ हो तँ हो कहिया ? बाबू ! ई समय आब आँखि मूनि कै चलबाक नहिँ थिक। एक बेरि आँखि खोलि कै तकबो तँ करू जे पैर कतै पड़ैत अछि, पथसँ कतबा विचलित भै गेल छी, ताहि दिशि दृष्टि दिअ ओ कर्त्तव्याकर्त्तव्यक गुण-दोषकैँ बुझिऔक। यथेच्छाचारक व्यवहारसँ कत गोट देशक हानि भै रहल अछि वा दिनानुदिन होइत जाइत अछि एकर विवेचना सभहि गोटाकाँ कर्त्तव्य थिक। हमरा लोकनि जा अपना स्वभावगत दोषक परित्याग नहिँ करब, जा अपना घरक रक्षा मर्यादा-पूर्वक नहिँ राखब ओ जा हम अपना चरित्रक संशोधन कै आदर्श नहिँ बनब ता हमरा प्रस्तावक पालन करबामेँ के साकाङ्क्ष होएत, तैँ हेतु मिथिलामेँ एखन जे क्यो प्रतिष्ठित धनवान् वा विशेष विद्वान् लोकनि छथि हुनका एहि विषय पर विशेष रूपेँ लक्ष्य देब उचित थिकन्हि, कियैक तँ—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते॥'

एहि निबन्धमे ओ अग्रिम समयमे प्रकाशित विभिन्न सामाजिक विषयक निबन्ध सबमे अभिव्यक्त विचार-धाराक निदर्शन रूपमे जनार्दनझा अनेकशः उपन्यासक रचना कऽ मैथिली साहित्यमे अभिनव विधाक प्रतिष्ठापक भेलाह जकर रूप, विषय ओ भाषाक अनुसरण कतोक दशक धरि होइत रहल।

उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ कविता सन सर्जनात्मक विधामे अपन अमूल्य योगदानसँ ओ आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि। ततबहि नहि, मैथिली

Scanned by CamScanner

पत्रकारितामे सेहो हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि ।

दरभंगासँ प्रकाशित पत्र मिथिला-मिहिरसँ जनार्दनझा विशेष एपैँ सम्पृक्त रहलाह । हिनक कविता, निबन्ध ओ कथाक अतिरिक्त चारि गोट उपन्यास धारावाहिक रूपमे एही पत्रमे प्रकाशित भेल छल । मिथिला-मिहिर आरम्भमे मासिक रूपमे बहराइत छल । पश्चात् ई साप्ताहिक रूपमे बहराय लागल । एहिमे प्रधानता रहैत छल हिन्दीक ओ मैथिलीक सामग्री आंशिक रूपमे रहैत छल । अतः एक समयमे मैथिली साहित्य-सेवी लोकनि अनुभव कयलनि जे एकटा मासिक पत्रक प्रकाशन होयबाक चाही । १९१३-१४ इ.क अवधिमे यदुनाथझा'यदुवर' विचार व्यक्त कयने छलाह जे मिथिला-मिहिरक एक मासिक संस्करण बहराय तथा एहि लेल श्रीमान् मिथिलेश (रमेश्वर सिंह)क ओतऽ अनुनय कयल जाय जकर सम्पादक वाजितपुरक प. जनार्दनझा होथि । ओहि समयमे एहि प्रकारक प्रस्ताव विचारेक स्तर पर रहि गेल । मिथिला-मिहिरक मासिक संसकरण तँ नहि बहरायल, मुदा जनार्दनझा आगाँ चलि साप्ताहिक मिथिला-मिहिरक सम्पादक अवश्य नियुक्त भेलाह ।

मिथिला-मिहिरक तत्कालीन सम्पादक छलाह जनार्दनझाक ममियौत भाइ पण्डित योगानन्दकुमर । हुनका पर मिहिरक सम्पादन ओ प्रबन्धन दुहूक दायित्व रहने कार्य भार अधिक रहैत छलनि । फलतः मिहिरक स्तरक निर्वाह नहि भऽ पबैत छल । अतः जनार्दनझाक सेहो नियुक्ति मिथिला-मिहरिक सम्पादकक पद पर भेलनि । जनार्दनझा १९१९ सँ १९२१ धरि तीन वर्ष मिथिला-मिहिरक सम्पादन करैत रहलाह ।

जनार्दनझा मिथिला-मिहिरक आभ्यन्तर स्वरूपमे महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन अनलनि । पुलकित लालदास मधुरक कथनानुसार 'प. जनार्दनझाजीक समयमे (मिथिला-मिहिर)मे मैथिली भाषाकेँ विशेष स्थान प्रदान कएल गेल छल' । जनार्दनझा अपन सम्पादन-कालमे विविध मनोरंजक गद्य-पद्य-रचनासँ मिथिला-मिहिरकेँ विभूषित कऽ देलथिन । १९२०मे हिनक हास्य-व्यंग्य पूर्ण रचना 'कलियुगी संन्यासी वा बाबा ढकोसलानन्द' धरावाहिक रूपमे मिथिला-मिहिरहिमे प्रकाशित भेलनि । एहि तरहेँ रोचक सामग्री द्वारा मिथिला-मिहिरक स्तरकेँ सुधारि लोकप्रिय बनौलनि तथा मैथिली रचनाकेँ पूर्वसँ अधिकतर स्थान दिआय बड़ पैघ उपकार कयलनि ।

मैथिली साहित्यकेँ पण्डित जनार्दनझा साहित्य-सर्जनक जे एकटा विलक्षण वंश-परम्परा देलनि ताहि हेतु मैथिली साहित्य चिर-ऋणी रहतनि हुनका प्रति । हिनक पुत्र प्रो. हरिमोहन झा (१९०८-१९८३) आधुनिक मैथिली साहित्यक एकटा महान् स्तम्भ छलाह । ई अपन रचनासँ मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ लोकप्रिय बनौलनि । लोकप्रियता मे हिनका अपर विद्यापति कहल जाइत छलनि । हास्य ओ व्यंग्यमे प्रो. हरिमोहनझा अद्वितीय छलाह, तैँ हिनका 'हास्य रसावतार' ओ 'व्यंग्य सम्राट' सन विरुदसँ विभूषित

Scanned by CamScanner

कयल जाइत छलनि। हिनक उपन्यास, कथा ओ कविता सब मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि अछि। हिनक प्रसिद्ध कृति सब छनि— कन्यादान, द्विरागमन, प्रणम्यदेवता, रंगशाला, चर्चरी, एकादशी ओ खट्टर ककाक तरंग। हिनक आत्मकथा 'जीवन-यात्रा' पर मरणोपरान्त साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कयल गेल छलनि। अतः आचार्य रामनाथझाक जनार्दनझा'जनसीदन'क सम्बन्धमे ई उद्‌गार सर्वथा समीचीन जे 'हिनक सबसँ बहुमूल्य सेवा ई अछि जे ई अपन सुपुत्र स्वनामधन्य श्रीहरिमोहनझाजीकेँ अपन मातृभाषाक अनुराग ओ साहित्यिक प्रवृत्ति दए गेल छथि।'

परन्तु ई 'मातृभाषाक अनुराग ओ साहित्यिक प्रवृत्ति' प्रो. हरिमोहनझा धरि सीमित नहि रहि अग्रिम पीढ़ीमे सेहो ओतबहि आवेगक संग अन्तरित भेल अछि। प्रो. हरिमोहनझाक पुत्र अर्थात् जनार्दनझा'जनसीदन'क पौत्र लोकनि, राजमोहनझा ओ मनमोहनझा समकालीन मैथिली साहित्यक अग्रणी कथाकारक पंक्तिमे प्रतिष्ठित छथि। राजमोहनझा कथाकार, कवि, समालोचक ओ सम्पादकक रूपमे आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ समृद्धि कऽ रहल छथि। हिनक 'एक आदि एक अन्त', 'झूठ-साँच', 'एकटा तेसर' इत्यादि कथा-संग्रह एवं अन्यान्य कतोक पुस्तक प्रकाशित छनि। 'आरम्भ' नामक साहित्यिक पत्रिकाक सफलता पूर्वक सम्पादन कऽ रहल छथि। हिनका 'आइ काल्हि परसू' नामक कथा-संग्रह पर साहित्य-अकादेमी पुरस्कार १९९६सँ सम्मानित कयल गेल छनि। हिनक अनुज प्रो. डा. मनमोहन झाक कथा-संग्रह 'घर घुरैत काल' कथ्य, शिल्प ओ शैलीक वैशिष्ट्यक हेतु वेश चर्चित भेल अछि।

एहि तरहेँ देखैत छी जे जनार्दनझा'जनसीदन'क तीन-तीन पीढ़ी समान रूपसँ सर्जनात्मक प्रतिभाक अवदानसँ मैथिली साहित्यकेँ अलंकृत करैत रहलनि अछि। एकहि वंशक दुइ पीढ़ीकेँ पूर्वापर अकादेमी-पुरस्कार सन राष्ट्रीय सम्मानसँ अलंकृत होयबाक गौरव प्राप्त भेलैक। एहन उदाहरण साहित्य क्षेत्रमे सर्वथा विरले कहल जा सकैत अछि।

Scanned by CamScanner

उपन्यास

जनार्दनझा'जनसीदन' आधुनिक मैथिली गद्य-साहित्यक लोकरंजक स्वरूप ओ उपन्यास साहित्यक अधिष्ठाता मानल जाइत छथि। अपन विविध उपन्यास-रचना द्वारा साहित्यकेँ एक नव दिशा देलनि। साहित्यकेँ समाजक कुसंस्कार ओ कुरीतिक परिहारक एकटा सुशक्त साधन ओ माध्यमक रूपमे उपयोग करबाक प्रेरणा लेखक समुदायकेँ प्रदान कयलनि। जनार्दनझाक समग्र उपन्यासक रचनाकाल ओ अधिकांशक प्रकाशन काल बीसम शताब्दीक दोसर ओ तेसर दशक रहल छलनि। अतः जनार्दनझाक उपन्यास-रचना-शीलतासँ पूर्व प्रथम दशकमे तथा रचना-काल दोसर-तेसर दशकमे औपन्यासिक गद्य साहित्यक मैथिली भाषामे की स्थिति छल तकर विहंगावलोकन कऽ लेब उपयोगी होयत। कारण, तखनहि जनार्दनझाक उपन्यास-रचनाक महत्त्वक आकलन करब सरलतापूर्वक सम्भव भऽ सकत।

बीसम शताब्दीक आरम्भिक तीन दशकमे जनार्दनझाक उपन्यास-व्यतिरिक्त मैथिलीमे औपन्यासिक गद्य-साहित्यक स्थिति अत्यन्त दुर्बल ओ लेखकगणमे उपन्यास विषयक अवधारणा अत्यन्त अस्पष्ट छल। तथापि, दुर्बलहु रूपमे तीन गोट क्षीण धारा अवश्य प्रवहमान छल। प्रथम धारा छल संस्कृत-परम्पराक अनुकरण पर लिखित आख्यायिका-उपाख्यान साहित्यक। मिथिला-मोदमे एहि रूपक साहित्य-रचनाकेँ विशेष प्रश्रय देल गेल। अनेक आख्यायिका ओ उपाख्यान सब क्रमिक रूपमे एहि पत्रमे निरन्तर प्रकाशित कयल जाइत रहल। एकर सभक कथावस्तु पुराण ओ संस्कृत वाङ्मयसँ ग्रहण कऽ स्वच्छन्द रीतिसँ एकर रचना कयल जाइत छल। कहि सकैत छी जे प्रख्यात वस्तुकेँ नवरीतिसँ प्रस्तुत कयल जाइत छल जाहिमे लेखकक यत्र-तत्र मौलिकता सेहो सन्निहित रहैत छल। एहि रूपक उल्लेखनीय कृति सब अछि—म. म. परमेश्वरझाक सीमन्तिनी आख्यायिका (१९०६-२३), हरिनारायण व्याकरणतीर्थक सुदर्शनोपाख्यान (१९०६), म. म. मुरलीधरझाक अर्जुन तपस्या (१९०९), त्रिलोचनझाक शकुन्तलोपाख्यान (१९०९) ओ ध्रुवचरित्र(१९१२), गंगाधरमिश्रक सुकन्योपाख्यान (१९११), तथा

Scanned by CamScanner

सत्यव्रतोपाख्यान (१९१९), फुलसरावासी मुकुन्दझाक कुमारी तपोव्रत अथवा गिरिजोद्वाह, जगतपुर निवासिनी श्यामादेवीक आदर्श सती (१९१२), गदाकरझाक सीताहरण (१९१३), मोहनमिश्रक अहिल्योपाख्यान (१९१५), (म.म.) उमेशमिश्रक नलोपाख्यान (१९१८-१९), श्रीवर्द्धनझाक सती सप्तकोपाख्यान इत्यादि। एहि सबमे किछु पूर्ण भेल, किछु अपूर्णे रहि गेल आ किछु दीर्घ कालमे पूर्ण भऽ सकल। परमेश्वरझाक सीमन्तिनी आख्यायिका जकर प्रकाशनारम्भ १९०६ मे भेल से १९२२-२३मे जा कऽ सम्पूर्ण भऽ सकल। एहि सबमे किछु तँ पश्चात्काल स्वतन्त्र ग्रन्थहु रूपमे प्रकाशित भेल मुदा विशेष तँ पत्रक फाइलेमे जाँतल रहि गेल।

दोसर धारा प्रचलित भेल छल बंगला ओ अन्यान्य भाषाक आधुनिक रीतिक उपन्यासक अनुवादक, विशेष रूपसँ बंगला उपन्यासक। ओहि समयमे बंगलामे सामाजिक ओ ऐतिहासिक घटना पर आधृत उत्पाद्य कथानकक संरचनापूर्वक मौलिक उपनयास-लेखन भऽ रहल छल जे बंगाले नहि बंगालसँ बाहरहु वेश प्रसिद्ध ओ लोकप्रिय भऽ रहल छल। अतः ओकर सभक अनुवादक परिपाटी मैथिलिअहुमे आरम्भ भेल। एहिमे कतोकतँ पाण्डुलिपिए रूपमे अप्रकाशित रहि गेल। किछु जे प्रकाशित भऽ सकल ताहिमे उल्लेखनीय अछि—जीबछमिश्रक रामेश्वर उपन्यास (१९१५-१६), शिवानन्द चौधरीक कपालकुंडला (१९१८-२१) ओ मृण्मयी (१९२६), काशीनाथझाक राजपूत जीवन सन्ध्या (१९२६) इत्यादि।

तेसर धारा छल मौलिक सामाजिक उपन्यासक। पौराणिक कथानकक आधार पर रचित आख्यायिका-उपाख्यानक पद्धतिसँ हटि सामाजिक जीवनक जीवन्त पात्र ओ घटनाचक्रक आधार पर कल्पित कथानकक संरचना करबाक पहिल प्रयासक प्रमाण भेटैत अछि प. जीवनाथमिश्र प्रसिद्ध पुलकितमिश्र काव्यतीर्थक 'मोहिनी मोहन' नामक कथात्मक कृतिक रूपमे। पुलकितमिश्र छलाह मंगरौनी (मधुबनी) निवासी तथा भागलपुरमे अध्यापक छलाह। हिनक 'मोहिनी मोहन' कृष्णप्रेस, न०६२ तुलापट्टी, कलकत्तासँ सन १३१५ साल (१९०७-८)मे प्रकाशित भेल छल। पहिल बेर एकर एक हजार प्रति मुद्रित भेल छल। एकर शीर्षकक नीचाँ एकरा 'मिथिला भाषाक उपन्यास' कहल गेल अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे मैथिलीमे उपन्यास अभिधानसँ पहिल प्रकाशित कृति 'मोहिनी मोहन' थिक।

एहिमे नायिका मोहिनी ओ नायक मोहनक मध्य प्रीतिक अंकुरण ओ विभिन्न बाधकताक पश्चात् दुहूक विवाहक वर्णन कयल गेल अछि। 'मोहिनी मोहन' उपन्यासमे परिवेश ओ वातावरणक प्रति उदासीनता, वर्णनक संक्षिप्तता, घटना सबकेँ द्रुतगतिएँ कहि देबाक आतुरता, वार्त्तालापक दीर्घता ओ आधिक्य, अविश्वसनीय घटनाक समावेश, तुरत तुरत घटना-स्थलक परिवर्तन, प्रत्येक नवीन स्थल पर पाठकक अनिवार्य

Scanned by CamScanner

उपस्थिति इत्यादि त्रुटि सभ यद्यपि सहजहि देखार अछि, तथापि कथानकमे चरम परिणति धरि पहुँचबाक औत्सुक्य छैक। जासूसी रहस्यमयता, तन्त्र-मन्त्र ओ ऐयारीक प्रयोग सब अविश्वसनीय होइतो कथानकक रोचकता ओ पाठकक उत्सुकताकेँ तीव्रतर करैत अछि। यद्यपि सामाजिक दोषक प्रति लेखक विशेष सजग नहि छथि तथा स्पष्ट आलोचना-विरोध करबाक साहस नहि देखबैत छथि तथापि सामाजिक दोष सभक किछु-किछु झलक अवश्य दैत छथि। वैवाहिक सम्बन्धमे जाति-पाँजिकेँ अनावश्यक महत्त्व, कुलीनताक अहंकार, घटक लोकनिक कौटिल्य, विवाहमे फड़क-निर्धारण ओ तदर्थ विशेष रूपेँ कन्याक प्रति टाका गनायब सन विकृतिकेँ कौचर्यक मानसिकताक संग उजागर कऽ अपन अस्वीकृति ओ विरोध भावक आभास दैत छथि।

'मोहिनी मोहन'मे विषय यद्यपि औपन्यासिक लेल गेल अछि जकरा विस्तृत ओ व्यापक रूप देबाक पर्याप्त संभावना छल मुदा कथानक अत्यन्त सोझ ओ दुर्बल रहि गेल अछि। मोहन ओ मोहिनीक विवाहक उद्देश्यसँ विभिन्न प्रयत्न ओ बाधक घटना सब विभिन्न स्थान पर ततबा क्षिप्र गतिसँ घटित होइत अछि जे अल्पावधिए मे न केवल कथानक सम्पन्न भऽ जाइछ अपितु पाठकहुकेँ एकरा पढ़ि सम्पन्न करबामे अधिक समय नहि लगैत छनि। एक तरहेँ किछु और जनबा-पढ़बा लेल पाठकक मन लुलुआयले रहि जाइत छनि। आकारक लघुता, घटना चक्रक क्षिप्रता इत्यादिक कारणेँ ई निर्णय करबामे तारतम्य होइत रहल अछि जे 'मोहिनी मोहन'केँ उपन्यास मानल जाय वा कथा।

पूर्वहि देखल अछि जे लेखक स्वयं 'मोहिनी मोहन'केँ 'मिथिला भाषाक उपन्यास' कहने छथि। ई पाँच अध्यायमे विभक्त कयल गेल अछि जकरा पाछाँ लेखकक किछु अभिप्राय सन्निहित अछि। लेखक 'मोहनी मोहन'क कथानकक संरचनामे औपन्यासिकताक हेतु शास्त्रीयताक आधार देबाक प्रयास कयने छथि, जे एकटा महत्त्वपूर्ण बात कहल जा सकैत अछि। नाट्यशास्त्रक अनुसार नाटक वा रूपकक कथावस्तुक संरचना मे पंच कार्यावस्था— आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति ओ फलागमक निर्वाह आवश्यक होइत अछि। पुलकितमिश्र तदनुरूपे 'मोहिनी मोहन'क कथानकक संरचना करैत पाँचो कार्यावस्थाक निर्वहण क्रमशः पाँच गोट अध्यायमे कयने छथि। अतः आकारमे लघु रहितहु संरचनाक दृष्टिएँ 'मोहिनी मोहन'केँ उपन्यासहिक कोटिमे परिगणित करब समीचीन होयत।

एकरा किछु वर्षक पश्चात् मैथिली उपन्यास-रचनाक क्षेत्रमे जनार्दनझाक अवतरण भेल। हिनकासँ इतर तेसर दशक धरि मैथिली उपन्यास-साहित्यक स्थितिपर विस्तार सँ विचार करबाक एतऽ अवकाश नहि अछि। हम एतबय कहि सकैत छी जे दोसर-तेसर दशकमे जे मौलिक उपन्यास सभक रचना भेल तकर बड़ अल्प भाग मुद्रित ओ

Scanned by CamScanner

प्रकाशित भऽ सकल, जाहिमे पुण्यानन्दझाक 'मिथिला दर्पण' (१९१४मे रचित मुदा प्रकाशित १९२५मे), रासबिहारीलाल दासक 'सुमति' (१९१८) तथा भोल (कुमार गंगानन्दसिंह)क 'मनुष्यक मोल' विशेष उल्लेखनीय अछि।

जनार्दनझाक पहिल उपन्यास जहिया प्रकाशित होबऽ लागल छल, तहिया ओ हिन्दी साहित्य-क्षेत्रमे कवि, लेखक ओ अनुवादकक रूपमे वेश ख्याति ओ प्रतिष्ठा अर्जित कऽ लेने छलाह। बंगलाक प्रसिद्ध उपन्यास सभक हिन्दीमे अनुवाद करबाक क्रममे बंगलामे मौलिक ओ अन्य भाषासँ अनूदित उपन्यास-साहित्यसँ नीक जकाँ परिचित भऽ गेल छलाह। अनुवाद करैत-करैत उपन्यास-रचनाक कौशल हुनका आत्मसात भऽ गेल छलनि। ओहिसँ प्रेरित-प्रोत्साहित भऽ अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ समृद्ध करबाक ओ साहित्य-सर्जनक माध्यमसँ अपन समाजकेँ मध्यकालीन रूढ़ि, कुप्रथा, कुत्सित परम्परा, अज्ञानता ओ अशिक्षासँ मुक्तिक दिशामे अग्रसर होयबाक सन्देश देबाक उद्देश्यसँ उपन्यास-लेखन आरम्भ कयलनि।

१९१४ इ.मे यदुनाथझा'यदुवर' मिथिला-मोदमे प्रकाशित अपन एक गोट दीर्घ परिचयात्मक निबन्ध 'मैथिली (भाषा) साहित्य दिग्दर्शन'मे मैथिली उपन्यास-साहित्यक सर्वेक्षणक क्रममे जनार्दनझाक उपन्यास 'सती सर्वस्व' ओ 'निर्दयी सासु'क उल्लेख करैत सूचित करैत छथि जे— हिन्दीक प्रसिद्ध लेखक प. श्रीजनार्दनझा अपन 'मि.(थिला) भाषा'मेँ प्रेमलता उपन्यास लिखैत छलाह किन्तु पूर्ण भै कतहु छपल की नहिँ से हमर बूझल नहिँ। पचगछिआ 'मि.(डल) स्कूल'क 'सेकेण्ड' प. श्रीजनार्दनझा एक सुमुखी उपन्यास लिखने छथि जे द्रव्याभावसँ नहिँ छपैत अछि।'

एहि ठाम दू गोट जनार्दनझाक उल्लेख भ्रमवशात् भेल अछि। एकर संशोधन यदुवर स्वयं मिथिला-मोदक अग्रिम अंकमे प्रकाशित निबन्धक अन्तिम किस्तमे कयलनि जे 'सुमुखी उपन्यासक लेखक पचगछिआ 'मि.(डल) स्कूल'क 'सेकेण्ड' प. श्री कुञ्जबिहारीझाक स्थानमेँ प. श्रीजनार्दनझा छपि गेल अछि, पाठक लोकनि सुधारि लेथि।'

एतावता ई सूचित होइछ जे जनार्दनझा 'प्रेमलता' नामक उपन्यासक सेहो रचना कयने छलाह किन्तु ओकर की भेल से ज्ञात नहि।

एहिना जनार्दनझाक एकटा और हास्य-व्यंग्यपूर्ण रचना 'कलियुगी संन्यासी वा बाबा ढकोसलानन्द'क चर्चा कयल जाइत रहल अछि। ओ जखन मिथिला-मिहिरक सम्पादन-कार्य करैत छलाह तखन एकर रचना कयने छलाह। मिथिला-मिहिरहिमे १९२० अथवा १९२१मे एकर क्रमशः प्रकाशन भेल छल। ई रचना उपन्यास छल वा प्रहसन, ताहि विषय पर ऐकमत्य नहि देखल जाइछ। डा. जयकान्तमिश्र 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर', भाग-२ (पृ. ३४)मे एकरा उपन्यास कहने छथि परन्तु प्रो. हरिमोहनझा अपन

Scanned by CamScanner

'जीवन यात्रा' (पृ. ८, १५)मे एहि रचनाकेँ प्रहसन कहने छथि। बहुत प्रयत्न कयलहुपर हमरा प्रत्यक्षतः एहि कृतिकेँ देखबाक सुयोग नहि भेटि सकल तेँ निष्कर्षक रूपमे निश्चयपूर्वक किछु कहब सम्प्रति सम्भव नहि अछि।

उपर्युक्त दुहू अनभिज्ञात कृतिक अतिरिक्त जनार्दनझाक पाँच गोट उपन्यास क्रमिक रूपमे प्रकाशमे अबैत रहलनि जे पूर्णतः अभिज्ञात अछि। सर्वप्रथम मिथिला-मिहिरमे एकक बाद दोसर, लगातार तीन गोट उपन्यास प्रकाशित होइत रहलनि जाहिमे पहिल छल 'सती-सर्वस्व' (१९१२), दोसर छल 'निर्दयी सासु' (१९१४) ओ तेसर छल 'शशिकला' (१९१५-१६)। दस वर्षक बाद १९२६ इ.मे चारिम उपन्यास 'पुनर्विवाह' मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी द्वारा मुद्रित ओ प्रकाशित भेलनि। हिनक पाँचम ओ अन्तिम उपन्यास थिकनि 'द्विरागम रहस्य' जकरा कतोक विद्वान् भ्रमवश 'द्विरागमन रहस्य' कहि दैत छथि। एकर प्रकाशन 'मिथिला-मिहिर'मे १९४५-४६ मे भेल छल किन्तु से एकर वास्तविक रचना काल नहि मानल जा सकैत अछि। एहि बिन्दु पर विचार करब अपेक्षित अछि।

'द्विरागम रहस्य'मे नायिका कलावतीक पिता भोल ठाकुरक उक्ति अछि 'दू सय टाका त हम सभा गाछीमे दू वंशक वरसँ लेबैन्ह, एखन हमरा कन्यादान करब तादृश आवश्यको नहि अछि। शारदा बिल पास होएबासँ पूर्वहि हम कन्यादान कै लेब।'

एहिसँ सहजहि सिद्ध होइत अछि जे 'द्विरागम रहस्य'क रचना बाल-विवाह-निरोधक शारदा बिलक कानून बनबासँ बहुत पूर्वहि भऽ चुकल छल। बिलक पास होयबासँ पूर्व वेश चर्चा ओ घनघोर विरोध भेल छल। ई बिल १० सितम्बर, १९२९ कें पास भेल आ अप्रैल, १९३० सँ कानूनक रूपमे लागू भऽ गेल छल। अतः अनुमानतः 'द्विरागम रहस्य'क रचना 'पुनर्विवाह'क पश्चात् परन्तु शारदा बिलक पास होयबासँ पूर्व १९२८ ओ १९२९क मध्य धरिमे भेल छल।

जनार्दन झाक उपन्यासक विषयवस्तु, रचना-शैली, पात्र-योजना, परिवेश ओ वातावरण तथा रचनाक उद्देश्य कोन रूपक होइत छलनि तकर सभक आकलन उपन्यास सभक सार-संक्षेपसँ अवगत भेलासँ बहुत किछु सम्भव भऽ सकैत अछि। एहि ठाम उपन्यासक रचना-काल-क्रमानुसार परिचय देब अधिक उपयुक्त होयत तेँ तदनुरूपे ओहि सबपर विचार कयल जाइछ।

सती-सर्वस्व

'सती सर्वस्व' जनार्दनझाक पहिल उपन्यास थिकनि।.नामसँ आभास होइत अछि जे एकर कथानक पौराणिक होयत। परन्तु से अछि नहि। एहिमे कथानकक रचना पारिवारिक कलह, परदेशमे नोकरी कयनिहारक कष्टमय जीवन तथा स्त्रीक अपन

Scanned by CamScanner

परिवार एवं पतिक प्रति कर्त्तव्यकेँ केन्द्रबिन्दु बनाय कयल गेल अछि । एहि उपन्यासमे एकटा एहन परिवारक कथा कहल गेल अछि जे पूर्वमे धनवान छल परन्तु पाछाँ विपन्न भऽ गेल । तथापि प्रयत्नपूर्वक अपन सन्तानकेँ योग्य बनयबाक प्रयास करैत अछि। ओहिमे किछु सफलता भेटैत छैक किन्तु परिवारक स्त्रीगणमे निरन्तर छोट-छोट बात पर कलह होइत रहैत छैक । एहिसँ शान्ति बाधित होइत रहैछ ।

एहि उपन्यासक नायक छथि रमाकान्तठाकुर । पिता छथिन कमलाकान्तठाकुर जे पूर्वमे पूर्ण सुखी-सम्पन्न छलाह । किन्तु 'कमलाकान्तठाकुरकेँ आब सम्पत्ति बहुत थोड़ बाँचि गेल छैन्हि । दू चारि बिघा ब्रह्मोत्तर ओ किछु खाप खेत छैन्हि । परन्तु ताहिसँ घरक खर्च चलब कठिन । जौँ आन ककरो एतेक खेत रहितैक तँ ओहीसँ ओ सुन्दर जकाँ अपना आश्रमक निर्वाह करैत । परन्तु पूर्वक जे धनिक रहै अछि से पश्चात् टुटियो जाइ अछि तथापि ओकर मन धनिकहिक रहै छैक । विभव चलि जाइ छैक परन्तु स्वभाव नहिं जाइ छैक । कमलाकान्तठाकुरकेँ एखनहु आमद विशेष भेला पर खाय-पीबमे पूर्वहिक समान खर्च भय जाइ छैन्हि । खर्च करऽ काल ई नहि सूझ रहै छैन्हि जे खर्चक संयम रखलासँ आगाँ केहन सुख सुभीता होएत । एतेक दिन यावत् शरीर निकेँ छलैन्हि तावत ज्योतिषारयसँ किछु उपार्जन कय लबै छलाह । ओहि ठामक केओ केओ विचारशील धनिक लोक सहायतो करै छलैन्हि । परंतु आब से शरीर नहि छैन्हि जे कतहु चलि फिरि करताह । ईश्वरक कृपासँ रमाकान्त बाबू आब सब तरहेँ योग्य भय गेलथिन्ह । कमलाकान्तठाकुर हुनका पढ़ौलथिन्ह तँ एहि वृद्धावस्थामे आबि हुनका सुख भेलैन्हि । रमाकान्त वावू बड़े आज्ञाकारी पुत्र, माइ-बापक बड़े भक्त, जेहन सुपुत्रकेँ होमऽ बूझ तेहन छथि । गम्भीर विचारपूर्ण भेलाक कारण लोकहुमे मान पूर्ण छैन्हि । बी.ए. धरि पढ़लो छथि ।'

'घरक झंझटि जौं नहि रहितैन्हि तँ ओ बी.ए. भेलाक उत्तर ओकालत पढ़ितथि, ओकील होइतथि परन्तु बी.ए.मे कइ प्रकारक विघ्न उपस्थित भय गेल रहैन्हि । पिता बहुत क्लेशित भय गेल रहथिन्ह तेँ पाठक्षति भय गेलाक कारण परीक्षा पास नहि कय सकलाह । घरक अवस्था एहन नहिं रहैन्हि जे पुनि पढ़ब आरंभ करितथि तेँ नोकरी मे लागि गेलाह ।'

'रमाकान्त वावू एखन पचास साठिक मास बरोबरि गाम पठबै छथि । ताहीसँ घरक खर्च चलै छैन्हि । किछु हो कमलाकान्तठाकुर दुहू प्राणी रमाकान्त बाबू सन पुत्ररत्न पाबि सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कय रहल छथि ।'

'परंतु आंगनमे स्त्रीगण सबहिक बीच समंजस नहि रहलाक कारण समय समय पर कलह होइतहिं रहै छैन्हि । रमाकान्त बाबूक स्त्री सतत एही लय फूललि रहै छथिन्हि जे हमर स्वामी एतेक कमाइ छथि परन्तु गहना, नीक नूआ अथवा रुपैया कोनो तरहेँ

Scanned by CamScanner

हमरा सुख नहि होइ अछि, जे कमाइ छथि से सभ आश्रमहिमे फुकने जाइ छथि। बहुतो काल ई कथा सुनाय सुनाय ओ बजैत छथि से सूनि सासुकेँ क्रोध होइ छन्हि। ताहि पर ओ नीक, अधलाह बहुतो कथा कहै छथिन्हि। एकरा कारण सासु पुतोहुमे कतेक बेरि झगड़ा भय जाइ छैन्हि। नाहरवाली जे छोटी जनी छथिन्हि से एखन नव आयलि छथिन्हि परन्तु ओहो घरक रुखि देखि थैह चाहैत रहै छथि जे हमरो स्वामी पढ़ब छाड़ि आब नोकरीए करितथि ताहीमे हमरा सुख छल।'

वास्तवमे कमलाकान्तठाकुरक परिवारक प्रति जेहन समान स्नेह भाव छनि, रमाकान्त बाबूकेँ अपना सब भाइमे जेहन सौहार्द ओ प्रेम छनि तेहन घरक लोक सबमे नहि छनि।

'रमाकान्त बाबू सब लोककेँ जेना अपनहि समान मानै छथिन्हि, घरमे भोजन वस्त्रक कोनो वैकल्य नहि छैन्हि तेना घर आनन्दमय रहितैन्हि परन्तु घरक दशा देखि हुनकहु मन सतत उद्विग्न रहै छैन्हि।'

रमाकान्त बाबू कतोक दिनसँ गामहिमे छथि। आब शीघ्रे कलकत्ता आपस जयबाक छनि। आङ्नक स्त्रीगणमे कलह होइते रहैत छनि। ओहि रातिमे पत्नी रमाकान्त बाबूकेँ दिन भरिक कलहक विवरण दैत छथिन्ह जे छोट देयादनी, ननदि ओ सासुक मध्य भरि दिन झगड़ा होइतहि रहलनि। पत्नी विस्तारसँ कहलथिन जे नाहरवाली छोटकी कनिआकेँ ननदि योगमाया दाइसँ चखचुख भेल छलनि।

'दाइ कहने छलथिन जे अहाँक नैहर एहन धोंछ अछि जे चारि मास द्विरागमन भेना भेल परन्तु एखन धरि कोनो कागो-कौआकेँ पुछारि करय नहि पठौलक। ताहि पर कनेयाँ कहलथिन्ह जे की करबैक, हमर नैहर गरीब अछि। कल्लर अछि। कहाँ सँ पठाओत। मां ई कथा सुनैत रहथिन्ह। ओ ताहि पर झझकि उठलथिन्ह जे चुप रहू। क्रिया चोर नहिं छैन्हि तँ गरीब अछि। एहि ठाम नहिं देखै छिऐक जे ओहि आंगनमे श्यामपुरसँ मसमे पन्द्रहमे बरोबरि भार अबितहि रहै छैक। कहिओ तोर नहिं खाइ छैक। और एकटा हिनका लोकनिक नैहर। वज्र पड़ौ। भगवान हमरा बेटा सभक सासुर एहने लिखने छलाह। एहना माइ बापक मुह झौंसि दी। एहि पर कनेयाँक आँखिसँ नोर खसय लगलैन्हि। दाइ ताहि पर मां केँ कहलथिन्ह— देखहुन्ह गय! नैहरक नाम लितहिं आँखिसँ नोर खसय लगलैन्हि। मां ई कहलथिन्ह— खसय दहून्ह। हम की कहलैन्ह अछि जे तकर डर राखू। माइ बापक दुलरी छथि तँ मन पड़लथिन्ह अछि। कनेयाँ ताहि कालसँ अपना घरमे जा कय कनितहि छथि। कए बेरि हम बुझाबहु गेल छलिऐन्हि, नहि बुझलैन्हि।'

एहि पर रमाकान्त बाबू ओ हुनक पत्नीक मध्य वार्त्तालाप होबऽ लगैत छनि। रमाकान्त बाबूकेँ काल्हि भेने कलकत्ता जयबाक रहैत छनि तँ वार्त्तालाप अत्यन्त गम्भीर,

Scanned by CamScanner

अन्तरंग ओ उपदेशात्मक रहैत अछि । ई वार्त्तालाप बेसी राति धरि चलैत रहैत अछि जाहिमे पति-पत्नी दुहू अपन अपन प्रतिक्रिया, धारणा, अनुभव, तर्क ओ विचार प्रकट करैत छथि । आजुक घटनापर रमाकान्त बाबू छोटकी कनियाँक पक्ष लैत छथिन । तर्क-वितर्कक क्रममे परिवारमे स्त्रीगणक मध्य कलहक विविध बिन्दु सभ लड़ी जकाँ अबैत जाइत अछि । एहि क्रममे स्त्रीवर्गक नैहर ओ सासुरमे स्वभाव ओ व्यवहारमे अन्तर, सासु-पुतोहु, ननदि-भाउजि, देयादिनी-देयादिनी, पति-पत्नी, मलिकनी बहिकिरनी, मालिक-नोकर इत्यादिक पारस्परिक सम्बन्धमे उभय पक्षक गुण-दोष, नीक-अधलाह प्रकृति ओ प्रवृत्तिक विवेचन करैत पारिवारिक कलहक निवारणक उपाय रमाकान्त बाबू अधिक राति धरि पत्नीकेँ बुझबैत रहैत छथिन । रमाकान्त बाबू स्त्री जातिक दुरवस्था पर खेदपूर्वक विचार व्यक्त करैत छथि— बड़े खेदक विषय थिक, जे स्त्रिगण घरक लक्ष्मी मानल जाइ अछि तकर स्वभाव एहन कलहकारी होइ छैक। ई सभ अविद्या तथा कुशिक्षाक फल थिक ।'

रमाकान्त बाबू गप्प करैत सूति रहैत छथि । मुदा हुनक पुनः आपस कलकत्ता जयबाक निश्चयसँ पत्नीकेँ मनमे उद्विंग्नता रहैत छनि । हुनका निन्न नहि होइत छनि । यद्यपि रमाकान्त आश्वस्त कयने छलथिन जे एखन कलकत्ता नहि जायब परन्तु पत्नी कें व्यग्रता ओहिना छलनि जे कखन ने कखन अकस्मात् चलि देथि । से ओहि राति ओ सूति नहि सकलीह ।

'भरि राति रमाकान्त बाबूकेँ हुनक स्त्री एकटक लगौने तकितहिं रहलथिन्ह । एतबा मध्य पछुआड़ दिस चड़इ सब चहचहा उठलैक । ओकर शब्द सुनितहिं हुनका मनमे खटकि गेलैन्हि जे आब राति नहि छैक । विहनसर भय गेलैक । खिड़किक मुह दिस ताकथि तँ किछु किछु इजोत ओम्हरसँ अबैत । अनन्तर पलंग परसँ उतरि मन्द मन्द चलि केबाड़ खोलि आंगनमे गेलिहि । ताधरि आंगनमे केओ जागल नहिं रहैक। नीक जकाँ प्रातःकालीन प्रकाशो नहि भेल रहैक । किछु अन्धकार बनले छलैक । उपर ताकथि तँ आकाश पूर्ण मेघाच्छन्न । एक दिस घनघोर कृष्ण घटा । बसातो तेज। टिप-टिप फूही पड़ैत । ई रङ्ग देखि शीघ्र ओ पुनि घरमे चलि गेलिहि ओ केबाड़ बन्द कय गोरथारीमे जा कय सूति रहलिहि । रमाकान्त बाबूकेँ बहुत सकाल उठबाक अभ्यास छलैन्हि परन्तु अधिक काल धरि जगबाक कारण ओहि दिन सबेर निन्द नहि टुटलैन्हि । वृष्टि पड़लासँ खिड़कीक मार्ग सुखद शीतल पवन घरमे अबै छलैक ताहिसँ खूब गाढ़ निद्रा पड़ि गेल छलैन्हि । तथापि किछु कालक उपरान्त ओ करौट फेरलैन्हि । पैर स्त्रीक देह पर पड़ैत गोरथारी दिस ताकथि तँ स्त्री । हुनका एना भय सूतलि देखि रमाकान्त बाबू कहलथिन्ह—अहाँ एना किऐक पड़लि छी ?'

पत्नी कहलथिन्ह—'आइ अहाँक निन्न टूटि गेल । एखन और सूतू । पानि पड़ैत

Scanned by CamScanner

छैक । आब उत्तम ठंढा भय गेल छैक ।'

रमाकान्त हाथ बढ़ाय उठबैत कहलथिन—'अहाँ एहि ठामसँ उठू आब हम नहि सूतब । बहुत अबेरि भय गेलैक । लगमे आउ ।'

पत्नी कहलथिन्ह—'आइ भगवान हमरा उपर सहाय भेलाह । पानि पड़ै छैक। आब तँ अहाँ आइ नहि गेलहुँ ।'

रमाकान्त बजलाह—'हम तँ कहनहि छलहु जे अहाँ कहै छी तखन हम नहि जाएब ।'

पत्नी एहि उक्तिपर उल्लसित भऽ बजलथिन्ह—'तकर कोन ठेकान । चलिओ जैतहुँ । हमर कहल कि करय लगितहुँ । हमरा के बूझत । भगवान करथि, खूब पानि बरसय ।'

दुहूक मध्य फेर वार्त्तालाप होबऽ लगैत छनि । दुहू एक-दोसराक प्रति अपन-अपन अजस्र एकान्त प्रेमक अभिव्यक्ति करैत· रहैत छथि । रमाकान्त कहैत छथिन जे 'गाम ककरा ने नीक लगै छैक । गाम·पर रहवाक हमरा अपना मन कि नहिं करै अछि । अहाँ सनि प्रिय सती स्त्री।'

स्त्री कहैत छथिन जे—अहींक हेतु निन्न नहि भेल । जाहि दिन अहाँ जाइ छी ताहि रातिमे हमरा कहिओ निन्न होइ अछि ? कहियो ने । अहाँक गेलो पर कय राति हमरा जगले बिति जाइ अछि ।'

वार्त्तालापक क्रममे रमाकान्त पत्नीकेँ यथार्थ प्रेमक स्वरूप, पुरुषक स्त्रीक प्रति, स्त्रीक पुरुषक प्रति, पुरुष ओ स्त्रीक परिवार-समाजक प्रति केहन कर्त्तव्य ओ व्यवहार होयवाक चाही आ समाजमे तकर विपरीत केहन निकृष्ट व्यवहार चलैत अछि, से सभ विस्तारसँ बुझबैत छथिन । विभिन्न प्रकारक व्यावहारिक पक्षक विश्लेषण करैत रमाकान्त अपन पत्नीकेँ अपन कलकत्ता जयबाक बात मना लैत छथि, संगहि मनमे इहो निश्चय करैत छथि जे एहि बेर पत्नी ओ धिया-पुताकेँ सेहो कलकत्ता लेने जाइ ।

पत्नी रमाकान्तक उदात्त विचार सब सूनि हृदयंगम करैत कहैत छथिन—'एहि सब विषयक शिक्षा स्त्रिगणकेँ नेनहिसँ देल जाइक तँ ओकरा कदापि एतेक अवगुण नहि रहतैक । परन्तु से तँ नहिं भेल । तैं किछु दिन अहाँक संग रहब तखन सभ किछु सीखि जाएब ।'

रमाकान्त अपन मन्तव्य कहैत छथिन जे 'काल्हि हम जाएब । अहूँ कैं संग लय चलब । आब सुतू ।'

'प्रात भेला पर रमाकान्त बाबू दरवाजा पर गेलाह । ओतय पितासँ भेंट कयलन्हि और बड़े नम्रतापूर्वक हुनका कहलथिन्ह जे हम भोजनोपरान्त कलकत्ता जाएब । नेनो लोकनिकेँ एहि बेरि किछु दिनक हेतु संग लेने जाइ छिऐन्हि ।'

'पिता ताहि पर हर्ष और विषाद संयुक्त भए उत्तर देलथिन्ह जे हमरा बहुतो दिनसँ इच्छा छल जे अहाँ अपना लोकवेदक संग ओतय रहल करी परन्तु मात्सर्यवश अहाँकेँ नहिं कहै छलहुँ। नेना सभक रहने मन बरोबरि प्रसन्न रहै छल। कतबो पीड़ा होइ छल, ओकरा सभक लगमे अबितहिं सभ दुःख बिसरि जाइ छल। एकटा विषय। अहाँक मायकेँ ई पसन्द नहि पड़तैन्हि। परन्तु तँ की करबैन्हि। हुनका लोकनिकेँ ओतेक ज्ञान नहिं छैन्हि। हम पश्चात् हुनका बुझा देबैन्हि। नेना लोकनिकेँ देखबैक, कोनो क्लेश नहिं होइक। सड़क पर असगर नहिं जाइक। शहर प्रभृतिमे नेना सभकेँ गाड़ी आदि तर पिचाय जयबाक बरोबरि भय रहै छैक। कुशल-क्षेमक पत्र बरोबरि पठबैत रहब। जाहि वस्तुक प्रयोजन पड़य से लिखब। आएब कहिआ ?'

'रमाकान्त ठाकुर ताहि पर कहलथिन्ह जे अपनेक रुचि हो तँ लय जैऐन्हि, नहिं तँ नहिं। किऐक तँ हम नहि चाहै छी जे कोनो कार्य अपनेक आज्ञाविरुद्ध करी।'

पिता कमलाकान्तठाकुर अपन सहमति देलथिन तखन रमाकान्त माय-बहीनिकेँ जाय प्रबोधलनि। स्त्री सेहो सासुक समीप जाय बहुतो प्रकारेँ हुनक मनोरञ्जनक चेष्टा कयलनि तँ ओ किछु नहि बजलथिन मुदा ननदि योगमाया दाइ बहुतो व्यंग्य ओ कटाक्ष कयलथिन। भाउजि एहि कटाक्षकेँ ध्यानमे नहि रखैत हुनका कहलथिन जे—'आइ नोकरी नहिं करैत रहितथि तँ हमरा संग जयबाक प्रयोजन किऐक पड़ैत। हिनका सेवासँ बढ़ि हमरा हेतु दोसर धर्म कोन होयत। परन्तु अपन कोन सामर्थ्य। विधाता हमरा लोकनिक अवस्था एही प्रकारक देलैन्हि जे रणे-वने घूमय पड़ै अछि।'

ई बात योगमायाकेँ नहि अपितु सासुकेँ बुझयबाक अभिप्रायसँ कहल गेल छल।

'रमाकान्त दुहू प्राणीक इच्छा रहैन्हि जे सभसँ छोट भाइअहुकेँ अपना संग लय जैऐन्हि, परन्तु से कयने गाम पर माय बापकेँ परितोष देनिहार नहिं केओ रहितैन्हि, तँ हुनका लय जयबाक विचार त्यागय पड़लैन्हि। पश्चात् ई खबरि गाममे सर्वत्र पसरि गेलैक जे आइ ओ स्त्री नेनाकेँ अपना संग लेने जाइ छथि। जे विचारक लोक छल तकरा तँ एहिमे किछु हानि नहिं बूझि पड़लैक परन्तु बहुतो स्त्रिगणकेँ ई विषय अप्रिय लगलैक। अन्ततः सभसँ हर्षपूर्वक मिलि जुलि रमाकान्त बाबू अपन लोकवेदक संग गामसँ विदा भेलाह।'

रमाकान्त स्टेशन पहुँचैत छथि। नोकर-साहीसकेँ सभ तरहेँ बुझाय सन्तुष्ट कऽ गाम आपस करैत छथि। अपने सब ट्रेन पकड़ैत छथि ओ दोसर दिन कलकत्ता पहुँचैत छथि। कलकत्तामे समय बितबैत स्त्री हुनक सभ प्रकारेँ सेवा करैत छथिन। जखन रमाकान्त घोर संकटमे पड़ि जाइत छथि तँ स्त्री तन-मनसँ हुनक सहायिका भऽ हुनका संकटसँ उबारि लैत छथिन।

Scanned by CamScanner

'सती सर्वस्व'क कथाभूमि अत्यन्त संकीर्ण अछि । एकटा छोट सन संयुक्त परिवारक पिता-पुत्र दुइ गोट पुरुष पात्र; सासु, पुतोहु, ननदि, भाउजि मिलाय चारि गोट स्त्री पात्रक लघु परिधिमे समेटल एहि उपन्यासमे परिवारक स्त्रीगणक मानसिकता, स्वभाव ओ व्यवहारक छोट छोट बिन्दु सभकेँ संग्रथित कऽ कथानकक एकटा सरल रेखा बनाओल गेल अछि । एहि कथानकमे, संयुक्त परिवारमे व्याप्त कटुता, कलह ओ अशान्तिक सबसँ प्रमुख कारणक रूपमे सत्री समाजक मध्य स्थित अज्ञानता ओ अशिक्षाक कारण उत्पन्न विभिन्न स्वभावगत दोषकेँ लेखक विविध रीतिसँ रेखांकित करबाक प्रयत्न कयने छथि ।

चरित्र-चित्रणमे लेखक आदर्शक निर्वाह करबामे विशेष सतर्क रहलाह अछि । कमलाकान्तठाकुरक चरित्रमे सौम्यता अछि तँ रमाकान्त ठाकुरक चरित्रमे आदर्श विचारक अतिरेक अछि । रमाकान्तक व्यक्तित्वमे आज्ञाकारी पुत्र, मर्यादित प्रेमासक्त पति ओ परिवारक विवेकवान् अभिभावकक समन्वित रूप देखल जाइछ । रमाकान्तक पत्नीमे सहज मानव-स्वभावक गुण-दोषक सन्तुलित अंकन अछि । सासु ओ ननदिक स्वभावमे कटुताक उपस्थिति रहितो उत्कट चारित्रिक वैगुण्य नहि अछि ।

उपन्यासमे यत्र-पत्र आकर्षक वर्णनक संगहि छोट-छोट संवाद सभ अर्थपूर्ण ओ रोचक अछि । परन्तु लेखक अधिक ठाम दीर्घ संलापक दोषसँ उपन्यासकेँ बचा नहि सकलाह अछि । पत्नीकेँ संबोधित रमाकान्तक कतोक संवाद सब उच्च ओ उदात्त विचार सँ संवलित रहितो अति दीर्घताक कारणे औपन्यासिक संवाद नहि रहि सुधारवादी नेताक प्रवचन सदृश भऽ गेल अछि । एहि सबमे लेखकीय चिन्ताधाराक अभिव्यक्ति नीक जकाँ भेल अछि अवश्य परन्तु अतिदीर्घता औपन्यासिक कथाशिल्पकेँ क्षति पहुँचवैछ। एहि दीर्घ संवाद सभक अन्तरालमे रमाकान्त ओ हुनक पत्नीक दाम्पत्य-जीवनक कतिपय हास-परिहास ओ मर्मसपर्शी प्रसंग एवं संवादक योजना एकरसताकेँ हल्लुक करबामे सहायक होइत अछि ।

एहि उपन्यासमे बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणमे मिथिलामे भेनिहार सामाजिक परिवर्त्तनक मन्थर प्रक्रियाक अवक्षेपण स्पष्ट देखि पड़ैत अछि । संयुक्त परिवारक विघटनक आरम्भिक स्थितिक आभास एकटा महत्त्वपूर्ण घटनासँ होइत अछि। ओहि समयमे परदेशमे नोकरी कयनिहार व्यक्ति अपना लोक-वेदकेँ संग लऽ जाय परदेश मे [illegible]व्रवाक साहस नहि कऽ पवैत छल । पारिवारिक असहमति ओ लोकनिन्दाक भय ओ आत्मसंकोच एहिमे बाधक होइत छलैक । रमाकान्त पूर्णतः व्यावहारिक दृष्टिकोणकेँ प्रश्रय दैत अपन पतनी ओ धिया-पुताकेँ कलकत्ता लऽ जाइत छथि जकरा तत्कालीन परिस्थितिमे एकटा क्रान्तिकारी डेग कहल जा सकैछ ।

एहि प्रकारक घटनाक संयोजनक पाछाँ लगैत अछि जेना लेखकक अपन अतृप्त

Scanned by CamScanner

आकांक्षाकेँ रूपायित करबाक स्पृहा प्रेरक बनल छलनि । जनार्दनझाक जीवन वृत्तमे देखल गेल अछि जे पचपन वर्षक वयस घरि जीवनक अधिकांश अवधि हुनका जीविकाक हेतु प्रवासहिमे अपन लोक-वेदसँ दूर रहि व्यतीत करऽ पड़ल छलनि । परिस्थितिक विवशताक कारणे पत्नीकेँ कहिओ संग नहि राखि सकलाह । छओ-छओ मास, बरख-बरख दिन परिवारक लोकसँ भेट भेला भऽ जाइत छलनि । १९०४ इ. मे महावीरप्रसाद द्विवेदीकेँ लिखल दुइ गोट पत्रमे जनार्दनझा अपन परिवार-विछोहक पीड़ाक वर्णन कयने छलाह । द्विवेदीजी एकरा उत्तरमे एकटा पत्रमे लिखने छलथिन जे 'छओ मास घरसँ फराक रहब अहाँ बहुत बुझैत छी । संभवतः अहाँ सस्त्रीक ओतऽ नहि रहैत छी । हम तँ तीन-तीन वर्ष घरक मुँह नहि देखल अछि ।'

द्विवेदीजीक संग हुनक पत्नी सेहो रहैत छलथिन तेँ गाम-घरसँ दूर रहबाक पीड़ाक बोध कम होइत छलनि । जनार्दनझाक परिस्थिति ओहिसँ भिन्न छलनि । से, ओ दोसर पत्रमे अपन स्थितिसँ जनार्दनझाक स्थितिक मिलान करैत लिखने छलथिन जे— '(हमरा संग पत्नीओ रहैत रहलीह), एहीसँ घरक वियोग दुःसह नहि होइत छल । स्त्रीए तँ घर थिक । अहाँक दशा विपरीत अछि । अहाँकेँ चाही जे अपना दिसक रूढ़िकेँ तोड़ि कऽ सकुटुम्ब रहब शुरू करी । देखू, एहि दिसक लोक सभ एना करब आरंभ कऽ देलक अछि । आ आरामो एहीमे छैक ।'

लगैछ जेना द्विवेदीजीक यैह पत्र 'सती-सर्वस्व'क प्रेरणा-स्रोत छल आ जनार्दन झा अपन जीवनमे जे रूढ़ि नहि तोड़ि सकलाह तकरा उपन्यासक माध्यमसँ टूटैत देखौलनि ।

निर्दयी सासु

'निर्दयी सासु' शीर्षकेसँ एहि उपन्यासक कथावस्तुक प्रकृतिक बोध भऽ जाइत अछि जे एहिमे पुतोहुक ऊपर सासुक निर्मम अत्याचारक कथा कहल गेल अछि । एहि उपन्यासक बीजक दर्शन 'सती सर्वस्व'हिमे करा देल गेल छल । ओहि ठाम सासु ओ पुतोहुक सम्बन्धक कटुताक सामान्य वर्णन रमाकान्त ओ हुनक पत्नीक वार्त्तालापमे देखल जाइत अछि । सासुक क्रूर स्वभाव ओ अमानवीय व्यवहार सभक विवरण दैत रमाकान्त सासुक मानसिकताक विश्लेषण करैत कहैत छथि जे '(सासु केँ) अज्ञानतासँ दुष्ट भाव हृदयमे उत्पन्न भय जाइ छैक । जा धरि घरमे पुतोहु नहि आइलि रहै छैक, ता धरि माय बुझै अछि जे बेटा एकटा केवल हमरहि मानै अछि । परंतु पुतोहुक अयला पर ओकरा अनुभव होमय लगै छैक जे पुतोहु हमर बेटाक मन अपना दिस आकर्षित कय लेलक । एकर ओकरा जरनी होमय लगै छैक । पुतोहु आनक बेटी रहै अछि । ओकर सुख मूर्ख सासुकेँ कोना सोहयतैक !'

Scanned by CamScanner

सासु-पुतोहुक कटु सम्बन्धक सन्दर्भमे सासुक स्वभाव ओ आचरणक सूक्ष्म पर्यवेक्षणक घटनात्मक ओ पल्लवित रूप 'निर्दयी सासु'मे देखाओल गेल अछि ।

रमाकान्त एकटा और महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष दैत छथि जे स्त्री जातिक 'दुरवस्था'क कारण थिक 'अविद्या ओ कुशिक्षा' । एकर यत्किंचित् निराकरण 'निर्दयी सासु'क नायिका यशोदाक उत्तम शिक्षाक रूपमे देखाओल गेल अछि । अतः कहि सकैत छी जे 'निर्दयी सासु'क कथा-योजना लेखक तखनहि बना लेने छल होयताह जखन ओ 'सती सर्वस्व'क रचना सम्पन्न कयने होयताह ।

ज्योतिषी चिन्तामणिझा विद्वान् लोक छलाह । ओ पश्चिम भारतक राजधानी मे नोकरी करैत छलाह । परन्तु जहियासँ नोकरी छोड़ि गाम रहऽ लगलाह तहियासँ एकटा उत्तम कार्य कयलनि जे अपन एक सन्तति यशोदाकेँ पढ़ब-लिखब सिखावऽ लगलाह आ दुइ वर्षक अभ्यन्तरे 'यशोदाकेँ तिरहुता, हिन्दी ओ मामूली देशी गणितक बोध उत्तम रूपेँ भय गेलैक ।...बहुतो काल अपन माय तथा पितामहीकेँ तुलसीकृत रामायण पढ़ि कय सुनाबय । अर्थ सेहो कहल करैन्हि । से सुनबाक हेतु टोलक बहुतो स्त्रिगण ओहि ठाम एकत्र होइत छलि ।'

कन्याक दशम वर्षक वयस भेलापर चिन्तामणिझाकेँ कन्यादानक चिन्ता होइत छनि मुदा कोनो उपयुक्त वर नहि भेटैत छनि । वर तकैत छथि सर्वगुण सम्पन्न । किन्तु देखैत छथि 'जे जाति श्रेष्ठ से धनिक नहि । केओ सुन्दर तँ पढ़ल नहि । पढ़ल तँ स्वरूपवान नहि ।' ओमहर पत्नी कहैत छथिन— जेहने हमर कन्या अछि तेहने वर चाही । हम जमाय सुन्दर ओ धनिक चाहै छी । तेहन जौँ नहि आनब तँ हम बेटीक विवाह नहि करब ।'

मायक विचार होइत छनि जे 'जे अपना निवहि सकय, जकर सत्कार यथा-विधि कय सकिऐक, सैह कुटुम्ब करब । जे अपना सामर्थ्यसँ बाहर हो, से नहि करी । पाछाँ क्लेशमे पड़ब ।'

'ज्योतिषी स्वयं प्राचीन कालक लोक रहथि । हुनका हरिसिंह देवीक उन्माद रोम रोममे भरल रहैन्हि । तेँ, हुनका विचार ओही दिशि झुकैन्हि जे विशेष पाँजि-पाटिवला लोक भेटल रहथिन्ह ।'

ओ एही तीन मानसिकतामे डूबल, अल्प शुद्ध-समय, आगाँ पड़निहार उनैस मासक अतीचारसँ चिन्तित ओ व्यग्र भऽ सौराठ सभा जाइत छथि । ओहि ठाम पिसिऔत भाइ लक्ष्मीदत्त भेटैत छथिन्ह । लक्ष्मीदत्त एकटा बिकौआ खटरूझाक बालकक कथा देखबैत छथिन । चिन्तामणिझाकेँ से पसिन्न नहि होइत छनि । वसुहामक घटक घूटर झा बेरमपुरक अयोध्यानाथमिश्रक बालक सीतानाथमिश्रक कथा देखबैत छथिन । ओ पंजीबद्ध नहि मुदा भलमानुस छथि । जातिमे न्यून होइतो वेश आस्था-पात-सम्पन्न ।

बालक सोलह वर्षक, सुन्दर, अंगरेजी पढ़ैत एफ. ए. (फेलो ऑफ आर्ट्स) वर्गक छात्र। चिन्तामणिकेँ ई कथा पसिन्न पड़ैत छनि मुदा जाति-न्यूनता देखि इतस्ततःमे पड़ि जाइत छथि। घटक हुनका जाति-पाँजिक निस्सारता देखबैत सहमत करैत छथि। ओमहर अयोध्यानाथकेँ सेहो घटक चिन्तामणिक कुलशील, विद्या, कन्याक शुचि-आचारक प्रशंसा कऽ अनुकूल करैत छथि। चिन्तामणिक पिसिऔत लक्ष्मीदत्तकेँ सहसा न्यून जातिमे उतरब पसिन्न नहि होइत छनि। ओ रुष्ट भऽ जाइत छथिन। परन्तु चिन्तामणि अयोध्यानाथक बालकक कथा विना कोनो लेन-देनक स्वीकार कऽ लैत छथि।

दोसर दिन चिन्तामणिझा वर सीतानाथ, वरक पिता अयोध्यानाथमिश्र, किछु अन्य व्यक्ति ओ खवास संग गाम शिवनगर पहुँचैत छथि। गामक लोक सुशील, सुभग, नम्र वर देखि प्रशंसा करैत छनि तँ प्राचीन बुद्धि-विचारक लोक न्यून ब्राह्मणकेँ कुटुम्ब बनयबाक हेतु आलोचना सेहो करैत छनि। तथापि विवाहक ओरिआओन होबऽ लगैत अछि। विवाह गीत-नाद, विधि-व्यवहार पूर्वक सम्पन्न होइत अछि।

ओमहर अयोध्यानाथक एक गोट खवास बेरमपुर जाय अयोध्यानाथक पत्नी अनूपरानीकेँ बालकक विवाह निश्चित होयबाक समाचार विस्तारसँ कहैत छनि। अनूपरानी समाचार जानि हर्षित होइत छथि। परन्तु विनु किछु लेने हाथ धऽ कऽ विवाह होइत अछि से जानि खिन्न भऽ बजैत छथि— जे जे हौसला छल, से तँ भेल नहि। कुटमैती गरीबे घर कयलैन्हि।' तथापि गीत-नाद, विधि-व्यवहार होबऽ लगैत अछि। आइ-माइ सब आबि रमन-चमन करऽ लगैत छथि। ओही मध्य अनूपरानी अपन अभिरोष सेहो व्यक्त करैत छथि जे 'आइ, बच्चा आन ठाम विवाह करितथि तँ चारि सय रुपैया लितिऐक।'

दोसर दिन अयोध्यानाथ किछु वेर झुकला पर गाम अबैत छथि। अनूपरानी ननदिकेँ हाल- समाचार पुछबाक लेल कहैत छथिन। अयोध्यानाथ कन्या, समधि, स्वागत-सत्कार, आचार-व्यवहार इत्यादिक प्रशंसापूर्वक वर्णन करैत सन्तोष ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत बहीन ओ पत्नीकेँ परितोष दैत छथि जे 'बेटा-बेटी बेचने ककरो सम्पत्ति भेलैक अछि ! मनुष्य नीक होयबाक चाही।' एहि क्रममे पुतोहुक रूप, गुण, शील, स्वभाव, शिक्षा इत्यादिक विस्तृत वर्णन करैत छथिन। अयोध्यानाथक माय से सब सूनि हृष्ट होइत छथिन। नगहरक विधि सम्पन्न होइछ।

चतुर्थीक नौत अबैत छनि। भार साँठल जाइछ। अनूपरानी एकटा नकमुन्नी ओ एकटा कर्णफूल दूटा गहना, जे अपना फाजिल रहैन्हि से पुतहुक हेतु भारक संग पठवैत छथिन। अयोध्यानाथ भारदोरक संग अन्य नोतहारी सहित शिवनगर पहुँचैत छथि। शिवनगरमे अयोध्यानाथक पूर्ण सत्कार होइत छनि। अयोध्यानाथ समधिसँ आग्रह करैत छथिन जे बालककेँ पढबा मे बाधा होयतनि तेँ विदा कऽ देल जाइनि।

Scanned by CamScanner

चिन्तामणिझाक आग्रह होइत छनि जे आब लगले मधुश्रावणी होयतैक तेँ तकर बादे वर विदा होथि से उत्तम । बात मानि लेल गेल ।

नागपंचमी ओ मधुश्रावणीक भारदोर विधि-बाधक बाद सीतानाथ सासुरसँ विदा भऽ गाम अबैत छथि । संगमे पूर्ण विदाइ, भारदोर, साँठ-राज देल जाइत छनि । बेरमपुरमे वर-विदाइक वस्तु जातक समीक्षा होइछ आ एक-एक वस्तुमे नोख बहार कयल जाइछ । 'सीतानाथक माय बुझैत रहथि, जे वस्तु ककरहु नहि गाममे देलकैक से हमरा बेटाकेँ सासुरमे देत । मन बहुत बढ़ौने रहथि तेँ कतोक वस्तु जे छुच्छ बुझि पड़लैन्हि से कहलथिन्हि भरिआ संग आपस कय दिऔन्हि । परन्तु स्वामी बहुत विचारक रहथिन्ह तेँ एहन विषय करब स्वीकार नहि कयलथिन्ह । तथापि जे खबास भारक संग आयल छल तकरा आंगनमे अनूपरानी संवाद कहाय पठौलथिन्हि जे ई सभ विषय जा कय ओतय कहिहथिन्ह ।'

पुछारी आ जितिआक भारक आदान-प्रदानक पश्चात् शिवनगरसँ कोजागराक भार ओ अन्य सामग्री उत्तमे कोटिक अबैत अछि । कोनो तरहेँ दुसबा योग्य नहि, तथापि ओहिमे बहुतो छिद्रान्वेषण कयल जाइछ । तिलासंक्रान्तिमे बेरमपुरसँ जड़ाउरक भार पठाओल जाइछ मुदा सीतानाथ सासुर नहि जा पबैत छथि । चिन्तामणिकेँ एहिसँ खेद होइत छनि । ओ अयोध्यानाथकेँ आ अपन जमाइयोकेँ पत्र लिखैत छथि । वसन्त-पंचमीमे सीतानाथ गाम अबैत छथि तेँ पिताक कहला पर सासुर जाइत छथि । जड़ाउरक वस्त्रादि ओ एकटा बड़द दऽ विदा कयल जाइत छनि ।

सीतानाथ जेठमे इमतिहान दऽ गाम अबैत छथि । बड़साइतमे सासुर जाइत छथि । एही बीच भागलपुरसँ तार अबैछ जे सीतानाथ प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह । गाम-सासुर दुहू ठाम आनन्दक लहरि पसरि जाइछ ।

सीतानाथ बी. ए.मे नाम लिखबैत छथि परन्तु बहुतो बेर दुःखित पड़ैत रहवाक कारणें पहिल वर्ष नष्ट भऽ जाइत छनि । दोसर वर्ष खर्चाक शिकस्तीसँ नाम नहि लिखा पबैत छथि । एही बीचमे हुनका इंजीनियर औफिसमे नोकरी भेटि जाइत छनि । आब ओ डेराक खर्चसँ बचा कऽ बाप-मायकेँ सेहो पठा दैत छथि तेँ दुहू बड़ प्रसन्न रहैत छथिन ।

विवाहक तेसर वर्ष सीतानाथक द्विरागमन होइत छनि। यशोदाक विदा होयबा काल वातावरण अत्यन्त कारुणिक भऽ उठैत अछि । सासुरमे द्विरागमनक यावन्ता विधि-व्यवहारक प्रक्रिया सम्पन्न होइछ आ ओहि क्रममे छोट छोट वस्तुक हेतु यशोदाक माय-बापक आलोचना सेहो होइछ । भरफोड़िएक बाद सीतानाथ नोकरी पर चल जाइत छथि । यशोदा सासुरमे जेना एकसरि पड़ि जाइछ ।

सासुरमे आबि यशोदाक पढ़बा-लिखबाक अभ्यास छुटि जाइत छैक । एहि ठाम

Scanned by CamScanner

केओ संगी नहि। ननदि अथवा गाम-घरक देयादनी प्रभृति से सभ मूर्खा। तेँ, कहिओ किछु पढ़ब नहि भऽ पबैछ। पढ़बाक हेतु पोथी बहार करैत अछि तँ ननदि सब उपद्रव करैत छैक। स्वामी परदेशमे रहैत छथिन। अपना विद्याक अनुराग छैक तेँ ओहिमे मोन लगाबऽ चाहैत अछि मुदा केओ कहियो पोथी छूबहि ने दैत छैक। यशोदा पराभव मे पड़ि 'जेना कौआक मंडलीमे हंस दुर्दशा पबै अछि, तहिना एहि मूर्ख मण्डलीमे आबि यशोदा कष्ट काटय लागलि।'

'रातिमे सासुक समीप बैसि बहुत काल धरि हुनक सेवा कयल करन्हि। गाम-घरक जे केओ जेठि श्रेष्ठ अबथिन्ह सभकेँ गोड़ लगैन्हि। काज-धन्धामे सेहो आलस्य नहि। बैसलि तरकारी छिललहुँ, बनौलहुँ, भेल तँ मसाला पीसि देलहुँ।' यशोदाक इच्छा जे भानस हमहि कय दिअन्हि।'

सीतानाथ आश्विनक छुट्टीमे गाम अबैत छथि। दू-चारि दिनक बाद यशोदाक माथमे दर्द होइत छैक तेँ सासुकेँ जाँतऽ नहि जाइछ। एहिसँ सासु मनहि मन कुपित भऽ जाइत छथिन। सीतानाथक दू-चारि दिन यशोदाक प्रति स्नेह अनूपरानी देखैत छथि से सह्य नहि होइत छनि।

एक दिन सीतानाथकेँ ज्वर भऽ जाइत छनि। माय हुनका दोसर घरमे लऽ जाइत छथिन। यशोदाक मन सीतानाथकेँ देखबाक हेतु छटपटाइत रहैछ। सीतानाथक ज्वर ठीक भऽ जाइत छनि। ओ गामसँ नोकरी पर विदा भऽ जाइ छथि। मुदा अनूपरानी यशोदा ओ सीतानाथकेँ भेट नहि होबऽ दैत छथिन। क्रमशः अनूपरानी अयोध्यानाथकेँ फूसि कथा गढ़ि गढ़ि निन्दा कहैत रहैत छथिन।

यशोदाक विदागरी होइत छैक। ओ नैहर जाइत अछि। यशोदा नैहरमे सासुक किंचितो निन्दा नहि बजैत अछि। आसिनक गेल सीतानाथ फागुनमे सासुर अबैत छथि। हुनक इच्छा होइत छनि जे एहि बेर यशोदाक विदागरी भेला पर सलोकहि नोकरी पर रही। परन्तु मायक भयसँ किछु बाजक साहस नहि होइत छनि। तीन दिन रहि नोकरी पर ओ चल जाइत छथि।

चारि मास नैहर अयलो पर यशोदाक सासुरसँ कोनो खोज खबरि नहि होइत छैक। यशोदाकेँ एहिसँ बड़ दुख होइत छैक। तकरा पश्चात् सासुरसँ विदागरीक दिन अबैत छैक। चिन्तामणि दिन नहि मानैत छथिन। अगिला आसिनमे सीतानाथ सासुर अबैत छथि। जमायक रुचि जानि अगहनमे विदागरीक दिन मानि लैत छथि। अगहनमे यशोदाक विदागरी होइत छैक। चिन्तामणिझा फेर विन्यास पूर्वक दऽ लऽ कऽ बेटीकेँ विदा करैत छथि। किछु नव गहना सेहो दैत छथिन। सासुरमे यशोदाकेँ नव गहना देखि सासुकेँ सन्देह होइत छनि जे अवश्ये सीतानाथ गहनाक हेतु रुपैया देने होइथिन।

कोनो पाबनिमे दूध औंटैत काल कराहीकेँ उतारबामे गरम दूध उनटि गेलासँ

यशोदाक हाथ-पैर पाकि जाइत छैक । ननदि सुदामा भाउजिक कोनो उपचारक बदला दौड़ि कऽ मायकेँ कहऽ गेलि जे भौजी सब दूध हेराय देलथुन । अनूपरानीकेँ सुनितहि तरबाक लहरि कपार पर चढ़ि जाइत छनि । ओ यशोदाक दुर्गंजन करऽ लगैत छथिन। एहिना छोट-छोट घटना पर, कहियो दहीमे जोड़न देब विसरला पर, कहियो बिलाड़ि दूध पीबि गेल ताहीपर यशोदाकेँ गारि-फज्जति होइत रहैत छलैक । सीतानाथ जखन-जखन गाम आबथि तँ अनूपरानी छिट्टा भरि निन्दा सुनाबथि । सीतानाथ सूनथि मुदा भयसँ किछु बाजथि नहि । यशोदासँ सब बात ज्ञात होनि तँ ओकरा यथासाध्य परितोष कयल करथि, मन यद्यपि सीतानाथक उद्विग्न रहैत छलनि । यशोदाक निन्दा-फज्झति अप्रिय लगितो कोनो उपाय नहि फुराइनि ।

द्विरागमनक तीन वर्ष बीति गेलहुपर यशोदाकेँ सन्तानक कोनो लक्षण नहि देखि अनूपरानी यशोदाकेँ सुना-सुना बाजथि जे 'आब हिनका सन्तान नहि होयतनि।'

ओ सीतानाथक दोसर विवाह कराबऽ चाहैत छथि । अयोध्यानाथोकेँ बेर-बेर कहैत छथिन । सीतानाथक विवाहक चर्चा जोर-सोरसँ चलऽ लगैत अछि । सीतानाथकेँ से अभीष्ट नहि मुदा बाजथु की तथापि ओ यशोदाकेँ कहि दैत छथिन— 'हम दोसर विवाह कथमपि नहि करब ।'

किछु हिनक पश्चात् यशोदाकेँ कल्याणक योग्यता होइत छैक । पुत्र जन्म लैत छैक । यशोदाक बाँझपनक दोष छुटैत छैक । सीतानाथक दोसर विवाहक गुनगुनाहटि शान्त होइत छैक । किन्तु तथापि अनूपरानी द्वारा यशोदाक प्रताड़ना आ सीतानाथ ओ अयोध्यानाथ लग निन्दा कम नहि होइछ ।

सन्तान भेलाक बाद यशोदाक शरीर क्षीण भऽ जाइछ, ओ बेसी काल रुग्न रहैत अछि । अनूपरानीकेँ बच्चाक प्रति बड़ दरेग मुदा यशोदाक मरणान्तको दुख-क्लेशकेँ वहाना मात्र बुझैत छथि । से एक बेर यशोदाकेँ ज्वर भऽ गेलैक । ओ सासुकेँ कहैत छनि । मुदा सासुक भितरिया इच्छा जे पुतोहु ज्वरमे संयम नहि करय आ कोनहुना एकर दुख बढ़ैक । से यशोदाकेँ कहैत छथिन जे 'अहाँकेँ भ्रम रहैत अछि । कफज्वर होयत, ओहिना छूटि जायत ।' यशोदा उपास करैत तँ टहल नहि कऽ सकैत । ओ किछु खा लैत अछि । ज्वर बढ़ि जाइत छैक आ जड़िया जाइत छैक ।

अनूपरानी अयोध्यानाथकेँ यशोदाक दोष देखबैत कहैत छथिन जे यशोदा कुपथ्य कयलनि तेँ रोग बढि गेलनि । पन्द्रह दिन धरि ज्वर जखन नहि उतरैत छैक तखन सीतानाथ केँ पिता गाम आवक हेतु पत्र दैत छथिन । सीतानाथ अवैत छथि तँ हुनकहु अनूपरानी अपन माथ-कपार पीटैत यशोदाक ज्वरक कारण ओकर कुपथ्य कहि निन्दा कहैत छथिन । फुसिये कहैत छथिन जे 'वैद्य आइ दस दिनसँ डेरा देने अछि ।'

यशोदा तँ सासुक सभ मर्म जनैत रहय । सीतानाथ यशोदाकेँ देखऽ जाइत छथि

Scanned by CamScanner

तखन घरमे लोक रहैत अछि तेँ यशोदा किछु कहि नहि पबैत छनि ।

एक मास जखन पूर होइत छैक तखन यशोदाक ज्वर उत्तरैत छैक । अनूपरानीक आन्तरिक इच्छा जे एही दुखसँ यशोदासँ फुरसति भेटि जाय, परन्तु दैवक कृपासँ यशोदा बाँचि जाइत अछि । सीतानाथ एहि खेप छुट्टी लऽ कऽ बहुत दिन धरि गाम पर रहैत छथि ।

'सती सर्वस्व'क अपेक्षा 'निर्दयी सासु'क कथा-फलक किछु अधिक विस्तृत अछि । एहि ठाम सभागाछीमे वैवाहिक सम्बन्ध निर्धारणक प्रचलित क्रिया-कलापक विस्तृत वर्णनक संगहि दुइ गामक दुइ परिवारक कथा कहल गेल अछि । स्वभावतः पात्रक संख्या किछु अधिक ओ घटना स्थलमे वैविध्यक समावेश भेल अछि । हम देखल अछि जे 'सती सर्वस्व'मे दीर्घ वार्त्तालापक कारणे कथा-विकास वाधित होइत अछि । 'निर्दयी सासु'मे वर्णन वैशद्य अछि जाहि कारणे कथाक गति आरम्भमे मन्थर भऽ जाइत अछि । हम देखैत छी, लेखक विवाह-निबन्धनसँ आरम्भ कऽ यशोदा ओ सीतानाथक विवाहसँ द्विरागमन धरिक समस्त विधि-व्यवहारक छोटसँ छोट विन्दुक सूक्ष्मतम अंशक विन्यास-पूर्वक रोचक वर्णन कयलनि अछि । मिथिलाक संस्कृतिक एवं ओहिमे आयल विभिन्न विकृतिक लालित्यपूर्ण वर्णन कथा-विकासक अवरोधक होइतो रोचक ओ आकर्षक अछि । एहि वर्णनमे घटनाशीलताक सन्निवेश रहने कथाक रोचकता तँ अछि परन्तु कथानक ठमकल रहिं जयबाक कारणे पाठककेँ उपन्यासक रस-बोधमे प्रतीक्षाक भार सहबाक हेतु विवश होबऽ पड़ैत छैक ।

चरित्र-चित्रणक दृष्टिएँ सेहो लेखककेँ सफल कहल जा सकैत छनि । यशोदाक पिता चिन्तामणिझा गम्भीर विचारक व्यक्ति छथि । ओ प्राचीन वैवाहिक परिपाटीक विकृतिक प्रति आसक्ति ओ विरक्तिक अन्तर्द्वन्द्वसँ ग्रस्त छथि किन्तु अन्ततः ओकरा प्रति विरक्तिएकेँ अंगीकार करैत छथि । तेँ अपन कन्याकेँ सामाजिक सामान्य व्यवहार सँ हटि शिक्षित बनवैत छथि । सभागाछीमे पिसियौत लक्ष्मीदत्तक रूढ़ विचारक उपेक्षा कऽ घटक घूटरझाक विचारक अनुसरण करैत जाति-पाँजिमे न्यून किन्तु अंगरेजी शिक्षा ग्रहण करैत छात्रावस्थाक बालक सीतानाथकेँ जमाय करव स्वीकार करैत छथि । सीतानाथक पिता अयोध्यानाथ सेहो शालीन चरित्र ओ उच्च विचारक लोक छथि । किन्तु ओहो अन्तर्द्वन्द्वसँ ग्रस्त छथि । ओ ने पत्नी अनूपरानीक क्रूर स्वभाव ओ पुतोहुक प्रति अत्याचारक प्रतिकार कऽ पबैत छथि, ने निरीह पुतोहु यशोदाक अवहेलना ।

सीतानाथ ओ यशोदा तँ जेना धैर्यक प्रतिमूर्त्ति बनि गेल छथि । सीतानाथ मायक अत्याचार ओ यशोदाक पीड़ाक अनुभव करैत छथि । माय द्वारा यशोदाक निन्दा नीक नहि लगैत छनि । परन्तु भयसँ ने किछु वजैत छथि ने किछु करैत छथि । एहि दृष्टिएँ सीतानाथक चरित्रमे सद्गुणक समावेश रहितो कुण्ठाक कारणे ओ मायक अत्याचारक

Scanned by CamScanner

विरोध नहि कऽ पबैत छथि। पत्नीक प्रति प्रेम ओ मात्सर्यक भावक अछैतो कहियो कोनो प्रेमालाप नहि कऽ केवल परितोष दैत छथि। अवश्ये जखन हुनक दोसर विवाहक चर्चा चलऽ लगैछ तँ अपन विरोध माय-बापक आगाँ नहि व्यक्त करैत छथि परन्तु यशोदाकेँ स्पष्ट कहैत छथिन जे हम दोसर विवाह नहि करब। दोसर ठाम जखन यशोदा मरणासन्न भऽ जाइछ तखन अधिक दिनक छुट्टी लऽ कऽ गामे रहैत छथि जे यशोदामे सुरक्षा ओ आत्मविश्वासक भाव अबैक।

यशोदाक चरित्रमे मिथिलाक नारीवर्गक निरीहता ओ विवशता नीक जकाँ प्रतिविम्बित भेल अछि। शिक्षाक सम्बल रहितो मूर्खामंडलीमे यशोदाक शिक्षाक कोनो उपयोगिता नहि रहि जाइछ। सासु ओ ननदिकेँ ओकर शिक्षासँ डाहे होइत छैक। ओतेक अत्याचार होइतो यशोदा कहियो एको शब्द बजैत नहि अछि। एते धरि जे नैहरहुमे अपन सासुक क्रूर व्यवहारक सम्बन्धमे मौन रहैत अछि। एहिसँ यशोदाक धैर्य ओ चारित्रिक शालीनताक परिचय भेटैत अछि।

सासु अनूपरानीक चरित्रमे व्यावहारिकताक जे स्वरूप आरम्भमे देखल जाइछ, पश्चात् तकर लोप भऽ जाइछ। क्रमशः हुनक चरित्रमे कुटिलता ओ क्रूरताक परिमाण बढ़ैत जाइत अछि जे पश्चात् यशोदाक मृत्यु-कामनामे परिणत भऽ जाइत अछि। ननदि सुदामामे सेहो मायक प्रवृत्तिक अनुरूपता देखबामे अबैत अछि। ओ यशोदाक प्रति अनूपरानीक रोषकेँ बढ़यबामे सहायिका बनलि रहैत अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे नारीक सामाजिक दुर्दशामे जँ पुरुष वर्ग द्वारा संचालित-पोषित समाज-व्यवस्था प्रधान कारण रहैत अछि तँ पारिवारिक स्तर पर नारिए नारीक शत्रु बनि ओकरा दुर्दशाग्रस्त करैत अछि।

शशिकला

'शशिकला' जनार्दनझाक तेसर उपन्यास थिकनि। एहि उपन्यासक विषयमे एकटा शंका होइत अछि जे ई वैह उपन्यास तँ ने थीक जकर उल्लेख 'प्रेमलता' नामसँ यदुनाथझा'यदुवर' कयने छलाह? संभव अछि जे 'शशिकला' नामकेँ ओ भ्रमवश 'प्रेमलता' लीखि देने होथि अथवा लेखके अपन उपन्यासक नायिकाक नाम ओ उपन्यासक शीर्षक 'प्रेमलता'सँ शशिकला कऽ देने होथि। एहन प्रवृत्ति जनार्दनझामे छलनि जकर पुष्टि 'द्विरागम रहस्य' क मूल पाण्डुलिपि ओ मुद्रित रूपक मिलान कयलासँ होइत अछि। निश्चित प्रमाणक अभावमे किछु कहब संभव नहि अछि। एहि उपन्यासक सम्बन्धमे एकटा और विवाद अछि। 'शशिकला'क सातहि परिच्छेद प्रकाशित भेल छल। किछु विद्वान् एकरा एतबहिमे पूर्ण मानैत छथि किन्तु कतोक विद्वान एकरा अपूर्ण मानैत छथि।

गंगेश्वरझा पण्डित ओ विद्वान् छलाह । कोनो देशी-नरेशक राज-दरबारमे सभापण्डित छलाह । हुनका शशिकला नामक कन्या छलनि । एकटा बालकक जन्म होइत छनि । एक दिस कन्यादानक चिन्ता होइत छनि आ दोसर दिस अपन नवजात पुत्रकेँ देखबाक हेतु उत्कट इच्छा होइत छनि । ओ गाम जाय चाहैत छथि । परन्तु ओहि ठामक नियम-कानून ओ राज-व्यवहारक कारणे ने केवल सेवावृत्तिमे असौकर्यक अनुभव करैत छथि अपितु पुत्र-दर्शनार्थ ओ कन्यादान हेतु गामो जयबाक अवकाश प्राप्त करबामे कठिनता होइत छनि । जेना-तेना मुक्त भऽ गाम अबैत छथि आ कन्या-दानक प्रयत्नमे लागि जाइत छथि । घटक सुन्दरठाकुर गंगेश्वरकेँ घटकैतीमे सहायता करैत छथिन । सुन्दरठाकुरक मध्यस्थतासँ नीक ठाम कथा स्थिर होइत छनि । 'शशिकला' उपन्यासक कथानक एही ठाम आबि समाप्त भऽ जाइत अछि ।

जनार्दनझा कतोक वर्ष धरि राज-दरबारसँ सम्बद्ध रहलाह, ताहिमे ओ अनुभव करैत रहल छलाह जे राजाक सेवावृत्ति कतेक कठिन ओ कष्टकर होइत छल । ओ अनुभूत यथार्थ एहि उपन्यासमे नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि । जे बात ओ मुक्त रूपमे नहि कहि सकैत छलाह तकरा उपन्यासक माध्यमसँ कहलनि अछि । दोसर बात अछि जनार्दनझाक स्त्री-शिक्षाक प्रति रुझान, जकरा ओ एहू उपन्यासमे स्थान देने छथि ।

एहि उपनयासक भाषा-प्रयोगक सम्वन्धमे सेहो विवाद होइत रहल अछि । 'मिथिला-मोद' (उद्गार-११०, अगहन, १९१५)मे 'शशिकला'मे प्रदत्त राड़िनिक कथोपथनमे वीभत्सताक आरोप लगबैत जनार्दनझाक प्रयुक्त कतोक शब्दक कठोर आलोचना कयल गेल छल ।

पुनर्विवाह

जनार्दनझा 'जनसीदन'क चारिम उपन्यास थिकनि 'पुनर्विवाह' । विवाह एहू उपन्यासक केन्द्रीय बिन्दु थिक । किन्तु एहि उपन्यासमे पुरुष पक्षक विवाह सम्वन्धी सामाजिक विकृतिकेँ उजागर कयल गेल अछि । एहि उपन्यासमे पुरुष द्वारा सन्तान अछैत प्रथम पत्नीक मुइला पर दोसर विवाह करवाक दुष्परिणामक संगहि अनमेल विवाह ओ वृद्धविवाहक विकृतिकेँ उजागर कयल गेल अछि ।

एहि उपन्यासक आरम्भ एकटा अभिनव रीतिसँ कयल गेल अछि । एहि ठाम नाट्य-साधन विष्कम्भकक शैलीक प्रयोग करैत कलाधर ओ दिवाकरक दीर्घ वार्त्तालाप द्वारा उपन्यासक सत्त्व-संकेत देल गेल अछि तथा दुहूक वार्त्तालापहिसँ कथानकक किछु व्यतीत घटनाक सूचना ओ भावी घटनाक संकेत देल जाइत अछि ।

कलाधर ओ दिवाकरमे तर्क-वितर्क होइत अछि जे रूप पैघ की गुण ? एहि विषय पर दुहूक मध्य पूर्वहु शास्त्रार्थ भेल छलनि जाहिमे कलाधर गुणक पक्षधर छलाह

Scanned by CamScanner

ओ दिवाकर रूपक। परन्तु अनुभवक आधार पर आइ दिवाकर कलाधरक मतक समर्थन करैत छथि आ अपन पूर्व धारणाकेँ भ्रमात्मक मानैत छथि। ओ कलाधरक एहि धारणा सँ, अपन रूपवती किन्तु कलहप्रिया पत्नीसँ प्राप्त अनुभवक आधार पर सहमत छथि जे—

'हम ई नहि कहैत छी जे. रूपवती स्त्री गुणवती नहि होइत अछि। जकरामे रूप-गुण दुहू छैक से तँ सर्वथा प्रशंसाक पात्र थीक। रूपक संग गुण होएब सोनमे सुगन्ध होयबाक बराबरिए बुझबाक थीक। तखन सौन्दर्य रहित गुणवती स्त्री गुणहीन रूपवती स्त्रीसँ अवश्य नीक, ताहिमे सन्देह नहि।'

'रूप सर्वदा स्थिर रहनिहार वस्तु नहि थीक। थोड़बहि दिनमे कुम्हिला कय ओ मलिन भय जाइछ। विकसित फूलक स्थिति और रूपमे किछु भेद नहि। जे फूल एक दिन अपन प्रफुल्लताक कारणेँ हृदयकेँ आकर्षित करै अछि, दुइ दिन उपरान्त मुरझा गेलापर चित्तकेँ आकर्षित करक स्थानमे केवल खेद प्रदान करै अछि। परञ्च गुणमे ई क्षमता नहि पायब। ओकर दिन-दिन उत्कर्ष होयबहिक सम्भावना।'

दिवाकरक एहि उक्तिपर जे 'एतबा दिनक बाद आब हमहुँ निश्चित रूपसँ बुझल जे गुणरहित रूप महकारीक फर छोड़ि आओर किछु नहि' कलाधर परतर दैत छथिन जे 'ज्योतिषी भाइक स्त्री कोन रूपवती छथिन्ह, परन्तु गुणक कारण सर्वत्र हुनक प्रशंसा होइ छन्हि।'

एहि क्रममे कलाधर सुनबैत छथिन जे एक दिन ओ काकी अर्थात् ज्योतिषी भाइक आङन गेल छलाह आ पुतोहुक शील-स्वभाव आदिक जिज्ञासा कयला पर काकी जेठकी पुतोहु अर्थात् ज्योतिषीक पत्नीक मुक्त कण्ठसँ प्रशंसा कयने छलथिन। दोसर दिस छोटकी पुतोहुक सम्बन्धमे कहने छलथिन जे 'देखय सुनयमे अधलाहि नहि परञ्च रंगल-ढंगल माँटिक मूर्त्तिये। खढ़क मूड़ीकेँ दुःख देतीह सेहो नहि। अपना फुरने किछु करतीह से सभ नहि। जखन देखवैन्हि तखन पड़ले। जखन अपना नहि फुरै छैन्हि दोसरक अढ़ौलो पर धन्नमधन्न।'

एही क्रममे कलाधरकेँ काकीसँ घर-घरक सासु-पुतोहुक कलहक चर्चा भेल छलनि। से सुनि दिवाकर अपन आङनक कलहक हाल कहैत छथिन जे कोना हुनक पत्नीक रूपवती होइतो हुनकहि कारणे परिवार अशान्त रहैत छनि। माय दोसर विवाह हेतु जोर दैत छथिन तथापि दिवाकर अपन अनिच्छा देखबैत छथि। कलाधर दिवाकरक एहि विचारक समर्थन करैत छथिन।

तीन मासक बाद कलाधर ओ दिवाकरकेँ फेर वार्त्तालाप होइत छनि। कलाधरक जिज्ञासापर दिवाकर सूचित करैत छथिन जे काल्हि काकीसँ भेंट करऽ गेलापर काकी कहलथिन जे ज्योतिषी भाइक पत्नी दुःखित छथिन।

Scanned by CamScanner

वर्णनक क्रममे सूचित होइत अछि जे ज्योतिषी भवनाथझा पढ़ल-लिखल विद्वान् लोक छथि। देवघरमे रहि अनुष्ठान ओ पुरश्चरणसँ अर्थोपार्जन करैत छथि। मासे-मास गामपर टाका पठबैत छथिन। गामपर माय, पत्नी विशेषरानी ओ अकटा छोट नेना छथिन। छोट भाइ जयनाथझा मूर्ख छथिन। गामेपर रहि खेती-बाड़ी डटि कऽ करैत छथिन। मुदा छथिन धरि महाकृपण। हुनक पत्नी घरक कोनो काज-धन्धा नहि करैत छथिन। परिवारक समस्त काज विशेषरानी सम्हारैत छथिन। से विशेषरानी रोगग्रस्त छथिन मुदा जयनाथ दस टाका खर्च कऽ नीक डाक्टर-वैद्यसँ चिकित्सा करयबाक हेतु तैयार नहि छथिन। माय कय गोट चिट्ठी भवनाथकेँ पठौने छलथिन। भवनाथ छओ मासक अनुष्ठानक भारा लेने छलथिन तेँ गाम अयबामे असमर्थ छलथिन। ई सब सूनि दिवाकर काकीकेँ बोल-भरोस दऽ कऽ आयल छलाह जे ज्योतिषी भाइकेँ चिट्ठी लिखबनि।

कलाधरकेँ ई सब जानि क्षोभ ओ क्रोध होइत छनि। दुहू भवनाथकेँ राजिस्ट्री चिट्ठी द्वारा सूचित करबाक निश्चय करैत जयनाथक चंठपनी ओ कृपणताक निन्दा करैत छथि।

विशेषरानीक हालत अधलाहे होइत जाइ छनि। ओ मरणासन्न भऽ जाइत छथि। मुदा तैयो जयनाथकेँ तकर कनेको चिन्ता नहि। ओ सतत भाउजि पर कुपथ्य कऽ रोग बढ़यबाक आरोप लगबैत रहैत छथिन। विशेषरानी दुइ बातक शोचसँ दग्ध होइत छलीह जे स्वामीक दर्शन तँ मरहु काल धरि नहि भेलनि मुदा हुनका परोक्ष भेलापर तीन वर्षक अबोध नेनाक के रक्षा करतैक। ओ स्वामीक बाट सकैत आन्हर जकाँ भऽ गेल छली।

भवनाथकेँ भाइ जयनाथ पत्र लिखि देने छलथिन जे 'भौजीआब निकेँ भऽ रहल छथि, कोनो अन्देशा नहि।' एहिसँ आवश्स्त भऽ दक्षिणाक लोभमे भवनाथ ओतहि रुकि जाइत छथि। जखन कलाधरक रजिस्ट्री चिट्ठी भेटैत छनि तँ गाम अयबा लेल व्यग्र भऽ जाइत छथि। ओही क्रममे स्वप्नमे विशेषरानीकेँ उपराग दैत देखैत छथि। भवनाथ गाम जयबाक सब तैयारी करैत छथि कि बाबू साहेब महेश्वरसिंहक प्यादा आबि हुनक देवघर अयबाक सूचना दऽ हुनक आवासक सब व्यवस्था करबाक आदेश सुना दैत छनि। भवनाथ व्यथित मनसँ यात्रा स्थगित करैत छथि।

साओनमे भवनाथक अबैया छलनि से कातिकक अमावस्यासँ तीन तीन दिन पूर्व गाम पहुँचैत छथि। विशेषरानी पतिक आगमन सूनि फुरफुरा कऽ उठैत छथि मुदा तलमला कऽ खसि पड़ैत छथि। भवनाथ पत्नीकेँ देखऽ जाइत छथि। पत्नी भवनाथक पैर पकड़ि कनैत छथि आ अपन जीवनसँ नाभरोस होइत पतिसँ अपन मरणोपरान्त दोसर विवाह नहि कऽ अबोध नेनाक पालनक करबाक वचन लैत छथिन। भवनाथ

Scanned by CamScanner

वैद्यनाथकेँ साक्षी राखि वचन दैत छथिन ।

दोसर दिन विशेषरानीक अवस्थामे लोककेँ किछु सुधार देखि पड़ैछ किन्तु अकस्मात् हुनक रोग बढ़ि जाइत छनि । दरभंगासँ मोटरसँ डाक्टर अबैत अछि । ओ विशेषरानीक जाँच कऽ निराश भऽ जाइछ । दीर्घकालीन बिमारीक समाचार बूझि जयनाथ इत्यादिकेँ फज्झति करैत परितोषार्थ किछु दवाइ लीखि दैत छनि । तेसर दिन भवनाथक पत्नी विशेषरानी तीन वर्षक नेनाकेँ छोड़ि सर्वदाक हेतु संसारसँ विदा भऽ जाइत छथि । ज्योतिषीजीक घर रमणीरत्नसँ शून्य भेलाक कारण अन्धकारमय भऽ जाइत छनि । भवनाथ स्त्रीक वियोग-व्यथासँ विकल तीन वर्षक नेनाकेँ अवलम्ब बनाय सब सुखक परित्याग कऽ दैत छथि ।

एहि ठाम उपन्यासक पूर्वार्द्ध समाप्त भऽ जाइछ । आगाँ उत्तरार्द्ध आरम्भ होइत अछि ।

तीस-एकतिस वर्षक वयसमे भवनाथ विधुर भऽ गेलाह । हित-अपेक्षित लोक सब पुनर्विवाहक बेर-बेर आग्रह करैत छनि तँ ओ विभिन्न प्रकारक नीति-वचन कहि विवाह नहि करबाक प्रतिज्ञानुसार आग्रह अस्वीकार कऽ दैत छथिन । दुराग्रह भेलापर घर छोड़ि चल जयबाक धमकी दैत छथिन । लोक भवनाथकेँ विवाह करबाक आग्रह सँ निवृत्त भऽ जाइछ । भवनाथ अपन नेनाकेँ किछु-किछु श्लोकादिक अभ्यास करबैत दिन भरि कोरमे बैसौने योगवासिष्ठ, पञ्चादशी आदि वेदान्त ग्रन्थ पढ़ि संसारक अनित्यता पर विचार करैत विरक्त जीवन बितावऽ लगैत छथि ।

पुत्र दयानाथक पाँचम वर्ष चढ़ैत छनि तँ मूड़न करयबाक विचार होइत छनि। पत्नीक स्मरण कऽ गह्वरित भऽ जाइत छथि। आँखि नोरा जाइत छनि। अबोध दयानाथ एहि पर हुनक आँखि फूकऽ लगैत छनि । तखनहि कलाधर अपन कन्यादानक प्रसंग विचार हेतु अबैत छथिन । भवनाथ अपन नोर नुकयबाक हेतु लोटा लऽ गाछी दिस चल जाइत छथि । कलाधर दयानाथसँ गप्प-सप्प करैत छथि। भवनाथ मुँह-हाथ धो कऽ अबैत छथि । दयानाथक कहुना मूड़न विधि सम्पन्न भऽ जाइन, से कहि भवनाथ कलाधरक संग विचार कऽ मूड़नक तिथि निश्चित करैत छथि । कलाधरो अपन कन्या भवानीदाइक विवाहक सम्बन्धमे विचार-सिचार करैत छथि ।

मूड़न होइत छैक । कोनो धूम-धाम नहि । कलाधरे ढोलियाकेँ बजा अनैत छथि तँ ओहो ढोल-पिपही बजैछ । ढोलिया सबकेँ भरि राति भुखले रहऽ पड़ैत छैक। भोरे कलाधर अबैत छथि तँ ढोलिया सब जयनाथक रुच्छ व्यवहारक प्रसंग कहैत छनि। कलाधर अपना संगसँ रोजक हिसावेँ एकटा टाका दैत छथिन आ आङनसँ सीधा पठवाय दैत छथिन । ढोलिया सब प्रसन्न भऽ जाइत अछि । ज्योतिषी अवेर कऽ रातिमे सूतल छलाह तँ ऊठल नहि रहैत छथि । कलाधर हुनक मायक संग अपन कन्यादानक प्रसंग

Scanned by CamScanner

गप्प करैत छथि । संग संग इहो कहैत छथिन जे सभागाछी जाय पड़त । भवनाथक माय कलाधरकेँ जेठकी पुतोहुक अभावमे होइत अपन कष्टक कथा कहैत भवनाथक पुनर्विवाह करा देबाक अनुनय करैत छथिन । कलाधर यद्यपि पुनर्विवाहक समर्थक नहि छथि तथापि भवनाथक मायकेँ कहैत छथिन जे 'जखन अहाँक इच्छा अछि जे ओ दोसर विवाह करथि तँ करताहे ।'

जयनाथक सारक उपनयन होइत छनि । जयनाथ स्वयं नहि जाइत छथि । भवनाथ केँ ओहिठाम पुरहितीक भारा रहैत छनि तँ भवनाथे जयनाथक सासुर नोत पूरऽ जाइत छथि । जयनाथक सासुर मोहनपुरमे जयनाथक ससुर बलभद्रझाक बहिन-बहिनोइ, भागिन-भगिनी सब सेहो आयल रहैत छथिन ।

उपनयनक दिन सबेरे बलभद्रझाक त्रयोदश वर्षीया कुमारिका भगिनी पार्वती मामीक कथनानुसार भवनाथकेँ भोजनक हेतु कहऽ अबैत छनि । बहिनोइक जेठ भाइ केँ बहिनोइ सदृश बूझि परिहास पूर्वक भोजन हेतु चलऽ कहैत छनि । भवनाथो तदनुरूपे गप्प करैत छथिन । पार्वती भवनाथकेँ अनेक प्रकारक कटाक्षपूर्ण परिहास करैत छनि जे—

'तृष्णा तँ बहुत वस्तुक होइत हैत, परंच फेर पचलो चाहे किने । चलू झट दय, अहाँ लेल पान थकुचि कऽ राखल होएत ।'

'अहाँ एक तँ ओझाक जेठ भाय, दोसर पंडित, तेसर बूढ़, अहाँक पैरो दबौने कोनो दोष नहि । परंच डर लथारक, आइ काल्हि जे जेहन बूढ़ से तेहन मरखाह ।'

भवनाथक ई पुछला पर जे 'बूढ़ ककरा कहै छिऐक', पार्वती कहैत छनि—जे अहाँक वयसक लोक अहीं सन व्यवस्थित होथि, हुनका ।'

एहि पर भवनाथ कहैत छथिन—तखन तँ हम अवश्ये बूढ़ छी, मरखाहो हैबे । परंच दोसर विवाह करबाक इच्छा नहि अछि ।'

पार्वती हुनक बात काटि दैत छनि जे—से तँ अहाँक मुँह नहि कहै अछि ।' आ कटाक्ष दृष्टिसँ हुनका दिस ताकि आङ्न चल जाइ अछि ।

तखन पार्वतीक सात-आठ वर्षक बहीन उमा बजाबऽ अबैत छनि । भवनाथकेँ उमासँ ज्ञात होइत छनि जे पार्वती पढ़लि-लिखलि अछि । पुनः उमासँ पार्वतीक विवाहक सम्बन्धमे जिज्ञासा करैत छथिन । उमा एहि विषयमे अज्ञानता देखबैत 'आङ्नमे चलि मामीसँ बूझि कऽ कहब' से कहैत छनि । भवनाथ भसिआयल जाइत छलाह, से सम्हरि जाइत छथि ।

आङ्नमे भोजन करऽ काल पुनः पार्वती चौलि करऽ लगैत छनि । एहिपर मामी गृहरानी कहैत छथिन जे— अहाँ बड़े बजै छी । एखन कुमारि–बारि छी, एतेक उताहुल नहि होइ ।' एहि पर पार्वती माय लग चल जाइछ आ मायक कोरसँ बच्चाकेँ लऽ

Scanned by CamScanner

कऽ मड़बा लग जाय खेलाबऽ लगैछ। मुदा मामीक गप पर कान पथने रहैत अछि।

उपनयनक विधि आरम्भ होइछ। भवनाथ मातृका पूजा करबऽ आङन जाइत छथि तँ हुनक दृष्टि ककरो तकैत चारू दिस दौड़ि जाइत छनि मुदा फल किछु नहि भेटैत छनि। ज्योतिषी भवनाथ चूड़ाकरण हेतु मांडब पर अबैत छथि, हुनक 'दृष्टि एक बेरि फेरि ककरो ताकक हेतु चोर जकाँ स्त्रीगणक गोलमे प्रवेश करैछ। परंच पुनः दर्शनक अभाव।'

उपनयनादि सम्पन्न होइत अछि। भवनाथकेँ भोजन हेतु कहल जाइत छनि। भूख नहियो रहैत 'ओहि मधुर भाषिणीक रूपावालोकनक आशासँ भोजन करक हेतु आंगन गेलाह। परंच, ओ आशा बनले रहलैन्हि।'

रातिमे भवनाथ स्वप्नमे विशेषरानीकेँ देखैत छथि जे हुनका दोसर विवाह नहि करबाक प्रतिज्ञा मोन पाड़ैत कहैत छथिन जे 'आइ भोरसँ ककरा लय बेहाल भेल छी?' 'पार्वतीसँ विवाह करबाक मन होइ अछि।'

भवनाथ एकर प्रतिवाद करैत छथि परन्तु विशेषरानी असन्तुष्ट भऽ नेनाकेँ खाट पर राखि बहरा जाइत छथि।

भवनाथ धड़फड़ा कऽ आँखि मुननहि विशेष रानीकेँ घुमबऽ जाइत छथि कि चौकठिमे चोट लगैत छनि आ निन्न टूटि जाइत छनि। कपारसँ शोणित बहऽ लगैत छनि। अन्हार घरमे हुनका चोर बुझि लगमे सूतल भरोसी खवास निन्नहिमे हुनका पकड़ि चोर-चोर कऽ हल्ला करऽ लगैछ। बलभद्रझा इत्यादि लालटेन लऽ कऽ आबि भवनाथकेँ भरोसीसँ मुक्त करैत छथिन।

रातिमसँ पूर्वहि भवनाथ गाम विदा होइत छथि। बलभद्रझा थोड़ेक दूर घरि अरियातऽ जाइत छथिन। ओही क्रममे भवनाथझासँ हुनक पुनर्विवाहक प्रसंग अभिमत जनबाक चेष्टा करैत छथि तथा ओ फेर विवाह करथि ताहि पक्षमे तर्कहु दैत छथिन। भवनाथ अपन सिद्धान्त सुनबैत एतबा कहैत छथिन जे कलाधर बाबूक कन्यादानक प्रसंगमे सभागाछी जाइ से संभव।

बलभद्र अरियाति कऽ अबैत छथि तँ बहिनोइ महेशमिश्र भवनाथक विवाह विषयक विचारक सम्बन्धमे जिज्ञासा करैत कहैत छथिन जे जँ स्वीकार होइन्ह तँ करबामे क्षति की?

बलभद्रझा समग्र परिस्थितिक अवलोकन कयलाक पश्चात् सहमति दैत छथिन जे 'उचित व्यवस्था देथि तँ कय लेल जाय।'

स्पष्ट अछि जे महेशमिश्रक कन्या ओ बलभद्रझाक भगिनी पार्वतीक प्रति भवनाथक कथाक उपन्यास करबाक चेष्टा कयल जाइत अछि।

कलाधर बाबूक संग ज्योतिषी भवनाथझा सभा पहुँचैत छथि। ओमहर बलभद्र

Scanned by CamScanner

झा सेहो बहिनोइ महेशमिश्रक संग सभागाछी पहुँचैत छथि । बलभद्रझा कलाधर झाकेँ अपन मन्तव्य कहैत छथिन । कलाधर अपन कन्यादानक चिन्ता छोड़ि भवनाथकेँ पुनर्विवाह कराबऽमे लागि जाइत छथि । ओ ज्योतिषीकेँ सभ समाचार कहैत छथिन ।

'ज्योतिषीजी तँ पूर्वहिसँ एकर बाट ताकि रहल छलाह परंच बाजि नहि होइन्ह ।' ओ कलाधरकेँ कहैत छथिन जे 'जखन अहाँ लोकनिक एतेक आग्रह अछि तखन हम एतेक ब्राह्मणक बीचमे नहि कोना कहू ।'

कलाधर कन्याक प्रति व्यवस्थाक सम्बन्धमे बलभद्रझाक विचार सेहो सुना दैत छथिन जे कयले कुटुम्ब रहने जैह व्यवस्था देल जयतनि सैह लऽ लेताह । जयनाथक विवाहमे एक सय एकावन टाका बलभद्रझाकेँ पड़ल छलनि । भावनाथहुक पुनर्विवाह मे ओतबे राशि दातव्य होइत अछि । कथा स्थिर होइछ ।

ज्योतिषी भवनाथझा अपना डेरामे चुपचाप मुँह झाँपि सूति रहैत छथि । ओ पुनः स्वप्नमे अपन दिवंगता स्त्रीकेँ माथपर हाथ दऽ कनैत देखैत छथि । ओ भवनाथकेँ पुनर्विवाह नहि करबाक प्रतिज्ञा ओ नेनाक मोहक स्मरण करबैत छथिन । भवनाथ 'भावी सर्वोपरि' कहि समाधान करऽ चाहैत छथि । विशेषरानी अनेक प्रकारक अभिरोष-अनुरोध पूर्ण वचनक संग 'आब हमरासँ भेट नहि होएत' कहैत आकाश दिस उड़ि जाइत छथिन । भवनाथ 'अय ई की ?' कहि चेहाइत छथि कि कलाधर उठा दैत छथिन ।

बलभद्रझा, महेशमिश्र इत्यादि कलाधर ओ विखिया भवनाथक संग गाम पहुँचैत छथि । विवाहक ओरिआओन, गोसाउनिक गीत होबऽ लगैछ । 'पार्वतीकेँ देखले सुनल वर तैं कोन तरहक केहन, एकर चिन्ता नहि भेलैन्हि । स्थिर भै भनसाघरमे दूटा पटिया ओछा सूति रहलीह ।'

भवनाथ पुनर्विवाह कऽ जे सुखक आशा कयने छलाह से नहि भेलनि । फागुनमे द्विरागमन होइत छनि आ चैतमे माय शान्त भऽ जाइत छथिन । आश्रम चलयबाक लेल बहिनिक विदागरी करा अनैत छथि । परन्तु सासुक मुइने दुनू देयादनी स्वतन्त्र भऽ जाइत छथि । घरक सब काज तहस-नहस होबऽ लगैछ । बहीन दुनू देयादनीक स्वभावसँ अकच्छ भऽ कोनो व्याजेँ सासुर चल जाइत छथिन । पितामहीक मुइने दयानाथ बिलटि जाइत अछि । ब्राह्मी मुहुर्त्तमे उठनिहार भवनाथ सात बजे धरि सुतले रहैत छथि । पार्वती कोना प्रसन्न रहथिन तकरे चिन्तामे दिन-राति लागल रहैत छथि । दयानाथ मूर्ख भेल जाइत अछि तकर चिन्ता पित्ती जयनाथकेँ होइत छैक । भवनाथकेँ दयानाथ लय फुरसति नहि आ जयनाथ अपने मूर्खे । 'पार्वती यद्यपि पढ़लि-लिखलि छलीह परंच सतौत कदाचित् मुद्दइ भै ठाढ़ने हो, तैं कथी लय ओकरा एको अक्षर सिखौथिन्ह । जे दयानाथ ज्योतिषीक आँखिक पुतरी छलैन्हि, से आब आँखिमे काँट जकाँ गड़य

Scanned by CamScanner

लगलैन्हि ।'

ज्योतिषी भवनाथझाक व्यवहार ओ दयानाथक दशा देखि एक दिन कलाधर ज्योतिषीकेँ कहैत छथिन— 'भाइ, दोसर विवाह नहि करितहुँ सैह नीक छल ।'

एही निष्कर्षक संग उपन्यास समाप्त भऽ जाइछ ।

पूर्वापेक्षा एहि उपन्यासमे लेखक पूर्ण आत्मविश्वासक संग अपन उपन्यास-शिल्पक प्रौढ़ता प्रदर्शित कयलनि अछि । 'पुनर्विवाह'क कथानक पूर्वक उपन्यास जकाँ सोझ-सपाट नहि अपितु विकासक क्रममे वेगवती धारा जकाँ अनेक मोड़ लैत अछि । आधिकारिक कथाक संग कतिपय प्रासंगिक उपकथा सभक संयोजन आधिकारिक कथाकेँ पुष्ट ओ चारु बनबैत अछि । दिवाकरक कथा, कलाधरक कन्यादानक प्रसंग, ढोलियाक घटना, भवनाथकेँ अन्हार रातिमे चोर बुझल जयबाक घटना सब आधिकारिक कथानकमे रोचकता अनैत अछि ।

परिस्थिति ओ परिवेशक सूक्ष्म, तथ्यात्मक ओ विस्तृत वर्णन करबाक हेतु अवसर ताकि लेब जनार्दनझाक लेखनक प्रधान विशेषता थिकनि । से एहि उपन्यासमे मूड़न ओ उपनयनक वर्णन वेस विस्तारसँ कयलनि अछि ।

उपन्यासक पात्र सभक चरित्र-निर्माणमे स्वाभाविकताक रक्षा करैत मानव-स्वभावक दुर्बलता ओ मानसिक ऊहापोहक अभिव्यंजना कौशल-पूर्वक कयल गेल अछि। जयनाथक जड़ता ओ कृपण स्वभाव, विशेषरानीक शालीनता ओ पतिभक्ति; भवनाथक चारित्रिक उच्चता ओ रूपक आकर्षणसँ क्रमशः ओहिमे क्षरण, पार्वतीसँ प्रथम वार्त्तालापक पश्चात् ओकरा पुनः पुनः देखबाक लालसा इत्यादि सहज ओ विश्वसनीय लगैत अछि । सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि चरित्र-सृष्टिमे मनोवैज्ञानिकताक संस्पर्श । भवनाथक चारित्रक व्यक्तित्वक विखंडन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व ओ अपराध-बोधक अभिव्यंजना हेतु स्वप्नक आयोजन लेखकक मनोवैज्ञानिक दृष्टिक परिचायक थीक । पार्वती पढ़लि-लिखलि शिक्षिता होइतो आदर्श नारी नहि बनि सकलि तकरहु पाछाँ ओकर अनमेल विवाहक मनोग्रन्थिए सक्रिय रहैत अछि । भवनाथक संग वार्त्तालापमे पार्वती द्वारा हुनका बूढ़ कहि बूढ़क लथारक कुचेष्टा करब, विवाहक राति वरक रूपमे आगत भवनाथक प्रति उदासीनता ओ भनसाधरमे सूति रहबाक क्रिया ओकर मानसिक अस्वीकृतिक प्रतीक कहल जा सकैत अछि जे पश्चात् अहंकार ओ सौतिनियाँ डाहक रूपमे परिणत होइत अछि ।

सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि उपन्यासक सोद्देश्यता । उपन्यास एहि प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि जे 'रूप पैघ की गुण' । गुणक प्रतिनिधित्व करैत छथि भवनाथक पहिल स्त्री विशेषरानी आ रूपक प्रतीक छथि पार्वती । गुणक संग रूप हो तँ सोनामे सुगन्ध । परन्तु से नहि भेला पर रूपसँ गुणे पैघ थिक से लेखक प्रमाणित करबाक चेष्टा कयलनि

Scanned by CamScanner

अछि। एही संग लेखक अपन सामाजिक सोच ओ सुधारवादी विचारधाराकेँ आनुषंगिक रूपमे व्यंजित करैत रहलाह अछि। स्त्री-शिक्षाक प्रति रुझान, कन्या-विक्रयक उपहास, वयसक दृष्टिएँ अनमेल विवाह ओ वयसस्थ पुरुषक पुनर्विवाहक दोष-दर्शन इत्यादि एहि उपन्यासक मुख्य सुधारवादी बिन्दु सब अछि। एकटा और महत्त्वपूर्ण प्रसंग एहि उपन्यासमे देखबामे अबैत अछि, से ओ थिक सामाजिक अन्यायक। अछोप वर्गक पौनी-पसारीक प्रति सामाजिक दृष्टिएँ उच्चवर्गक केहन दुर्व्यवहार होइत रहल अछि ओकर प्रतिक्रिया निम्नवर्गक लोकमे केहन होइछ तकर मार्मिक प्रसंग 'पुनर्विवाह' मे दयानाथक मूड़नमे आयल अछि। हम ओहि प्रसंगकेँ यथावत् रूपमे उद्धृत करबाक लोभक संवरण नहि कऽ पायब।

भवनाथक पुत्र दयानाथक मूड़नमे भवनाथ स्वयं उदास ओ अन्यमनस्क छथि। जयनाथकेँ खर्चक दुआरेँ गाजा-बाजाक इच्छा नहि। तथापि कलाधर टूटा ढोलियाकेँ बजा अनैत छथि जे दिन भरि ढाकतासा बजबैत अछि। रातिमे टोल लऽ कऽ भोज-भात होइत छैक।

''पहरेक राति बाँकी रहैक तखन दुहू ढोलियाकेँ भात आओर बड़ीक झोर देबय गेलथिन्ह। ओ कहलकैन्हि-बाबू कुकुरकेँ खोआ दिऔक। जेना तीन पहर राति काटल तेना एक पहर आओर काटि जाएब। एहि जाड़मे ठरल भात खाएब तँ देह दलका देत। घूरो नहि जे आगि तापब।'

'ई कहि ओ दुहू चमार मुँह झाँपि सूति रहल। जयनाथ कतबो उठौलथिन्ह, ओ नहि उठलैन्हि। तखन करताह की, भात गाइक आगाँ रखबा देलथिन्ह। जखन ओ चल गेलाह, तखन ठोर पटपटा कय ढोलिया बाजय लागल—हम डोम ने जे सभक ऐँठ उठा कय देबय आएल छलाह।'

'भिनसर भेने दाइ-माइ सभ ढोलियाकेँ कहय लगलथिन्ह जे—ढोल बजबह। आब निछाउर लेबाक बेर भेलहु।

ढोलिया—दाइ हम निछाउर भरि पाओल। ओतेक लोक भोज खैलक, हम दुहू गोटे भरि राति भुखले रहलहुँ। ओहिना दू हाथ बजा कय घर जाइ छी।'

ई कहि आगिसँ ढोलककेँ सेदि डिबिर-डिबिर करय लागल।

जयनाथ कहलथिन्ह जे ढोल बजेबाक विधि काल्हि छलैक। आब तोहरा लोकनि घर जाह।

ढोलिया—हमरा लोकनिकेँ किछु बकसीस भेटतैक की ओहिना जाउ ?

जयनाथ—आन गामक तँ छहे नहि, घूरि कय अबिहह, लय जैहइ।

ढोलिया—बाबू, हम इनामीसँ सन्तोष कयल। हमर जे रोजी-मजूरी हो से दय दिय। हमरा दोसरो ठाम जयबाक अछि।

Scanned by CamScanner

जयनाथ बटुआसँ एकटा चरिअन्नी बाहर कय ढोलियाक आगाँमे फेकि देलथिन्ह।

ढोलिया—ई की हमरा भीख दैत छी। काल्हि भिनसरेसँ दू गोटे ढोल बजाओल अछि। ताहिमे रातुक भुखल छी, इहो राखि लिय।

ई कहि ढोल कान्हमे लटका दुहू गोटैं विदा भेल।''

दलित वर्गक प्रति अमानवीय व्यवहार ओ ओकर यन्त्रणाकें लेखक अपन दृष्टिकोणसँ पर्यवेक्षण करैत कलाधरझाक माध्यमे अपना संवेदना ओ सहानुभूतिकें स्वर देलनि अछि।

''एतबामे कलाधर बाबू पहुँचलाह। पुछलथिन्ह—की रौ निरसूआ ! तौं भोरे-भोरे रूसल सन क्रम कैने विदा भेल जाइ छैं ?

ढोलिया—की कहू बाबू ! जयनाथ बाबू भोरे आबि कहलन्हि जे तौं आब घर जो, ढोल बजैबाक विधि काल्हिए भै गेलैक। पहरेक राति बाँकी रहैक तखन पात पर बूझि परल जेना पाहुन सभक ऐंठ रहैन्ह भात, उठबौने ऐलाह। ओतेक रातिकें ओ भात कोना खैतहुँ। कहलिऐन्हि—कुकुरकें खोआ दिऔक। राति भरि भुखले छी। नर-निछाउरिक कोन कथा, मजूरी मंगलिऐन्हि तँ एकटा सिलपट चरिअन्नी आगामे फेकि देलन्हि। हम कहलिऐन्हि—इहो राखि लिय। भूख लागल अछि, जाइ छी, मुँह-हाथ धो कऽ किछु पानि पीयब।

कलाधर—धुर, हम दिने तोरा आबक हेतु कहने छलियौक। तोहर कतबा रोज भेलौक।

निरसूआ— बाबू ! आन ठाम तँ एक टाकासँ कम नहि लितिऐक। अपना गामक विषय तैं अपने जे खुशीसँ दी।

कलाधर— डाँड़सँ एक टाका बहार कय देलथिन्ह और कहलथिन्ह चल हमरा संग, रातुक सीधा लय ले तखन जैहैं।

ढोलिया हुनका पाछाँ-पाछाँ चलल। कलाधरकें अबैत देखि जयनाथ किम्हरो टरि देलन्हि।

कलाधर ढोलियाकें कहलथिन्ह जे तौं ढोल बजा, हम आँगनसँ सीधा मंगबा दैत छिऔक। चूड़ा लेबैं की चाउर ?

ढोलिया— बाबू ! जैह भेटत सैह लेब।

कलाधर आँगन जाय दू सेर चाउर-दालि, एक सेर चूड़ा एक रारिन द्वारा पठबा देलथिन्ह। ढोलिया खूब प्रसन्न भै ढोल बजबैत घर गेल।''

द्विरागम रहस्य

'द्विरागम रहस्य' जनार्दनझा'जनसीदन'क अन्तिम उपन्यास थिकनि। एहि

Scanned by CamScanner

उपन्यासक कथानक विवाहसँ लऽ द्विरागमन धरिक घटनाक विभिन्न परिस्थितिकेँ, विभिन्न प्रक्रिया ओ व्यवहारकेँ समेटने अछि । पूर्वक उपन्यासमे लेखक एहि प्रसंगक जाहि जाहि अंशक वर्णन नहि कऽ सकल छलाह तकरा एहि उपन्यासमे विस्तृत रूपमे देबाक सफल प्रयत्न कयने छथि ।

कथा आरम्भ होइत अछि एकटा विधवा माय द्वारा अपन जेठ पुत्रकेँ विवाह करबाक आग्रहसँ । माय-बेटाक विस्तृत वार्त्तालापसँ पूर्व घटित घटना ओ परिवारक विस्तृत परिचय पाठककेँ देल जाइत अछि ।

एहि वार्त्तालापसँ जानल जाइत अछि जे बुद्धिनाथ फलित ज्योतिषक अद्वितीय विद्वान् छलाह । कलकत्तामे रहि ज्योतिषीक व्यवसायसँ नीक आस्था-पात अर्जित कयने छलाह । हुनक आकस्मिक देहावसान भऽ गेलनि । परिवारमे छथिन विधवा पत्नी विराजमनि, तीन गोट बालक महावीर, मनोहर ओ मुकुन्द, एकटा कन्या सुधा जनिक कन्यादान भऽ गेल छनि, किन्तु द्विरागमन नहि भेलनि अछि । जमाय शशिकान्तझा काशीमे व्याकरणक आचार्यमे परीक्षा दऽ उत्तीर्ण भेल छथिन ।

महावीरकेँ पढ़बामे मोन नहि लगलनि तेँ किछु हिन्दी ओ लघु सिद्धान्त कौमुदी पढ़ि, पढ़ब छोड़ि देलनि । आब अपसोच होइत छनि जे ओहो ज्योतिष पढ़ने रहितथि तेँ पिताक स्थानापन्न कलकत्तामे पुजबैत रहितथि । मनोहर ओ मुकुन्दकेँ संस्कृत-शिक्षाक प्रति अभिरुचि नहि छनि । ओ अंगरेजी शिक्षाक पक्षपाती छथि । मनोहर आ मुकुन्द शिक्षाक सम्बन्धमे कहने छलथिन जे— 'संस्कृतमे आब की धैल छैक । संस्कृत पण्डितकेँ आब के पुछै छैन्ह ? तीन-चारि शास्त्रक आचार्य कै प्रिन्सिपल भेलो पर संस्कृत विद्यालयमे ५०) ६०) मासिक वेतन भेटैत छैन्ह । हम दुहू भाइ अंगरेजिये पढ़ब, अंगरेजी स्कूलमे नाम लिखा दिय । विदेशी विद्वान् जे केवल संस्कृत व्याकरण मात्र जनैत छथि, हुनक विलायतमे सम्मान पुरस्सर एक हजार टाकासँ कम मासिक नहि भेटैत छैन्ह । विदेशी विद्वान्क आदर एहू देशमे पूर्ण रूपेँ होइत छैन्ह । परन्तु देशी विद्वान्क दिसमे केओ दृक्पातो आब नहि करैत अछि । बाड़ीक पटुआ तीत ।'

तेँ मनोहर ओ मुकुन्द मधेपुरक अंगरेजी स्कूलमे पढ़ैत छथिन । महावीरक पिता कलकत्तामे रहि सैकड़ो टाका मासिक कमाइत छलथिन । ओहिसँ बेस जमीन-जथा अरजने छलथिन । पिताक संचित तीन हजार टाका छलनि से हुनकहि श्राद्धादिमे खर्च भऽ गेल छलनि । हाथ पर किछु मात्र टाका महावीरकेँ बचल छलनि ।

माय जखन महावीरकेँ विवाह कऽ लेबाक प्रस्ताव करैत छथिन तेँ महावीर आर्थिक समस्याक विवरण देबऽ लगैत छथिन । महावीर छथि शुद्ध जयवार । उच्च जाति-पाँजिमे विवाह हो से हुनक ओ हुनक मायोक प्रबल आकांक्षा छनि । योग्य ओ पंजीबद्धमे तेँ नहिएँ, दू-तीनहु वंशक कन्यामे जँ विवाह करथि तेँ कन्याक व्यवस्था देबामे,

Scanned by CamScanner

विधि-व्यवहारमे, सोझे वर्षे द्विरागमन करयबामे आ अपन बहीन सुधाक द्विरागमनमे पाँच सयसँ कम खर्च नहि होइतनि। अढ़ाइ बिघा ब्रह्मोत्तर, पाँच बिघा मौरूसी ओ पिताक कीनल दस बिघा—कुल साढ़े सतरह बिघासँ परिवारक भरण-पोषण होइत छनि। ओहो जँ बेचिए लेताह तँ परिवार कोना चलतनि।

माय सुझाव दैत छथिन जे— 'खेत किएक बेचबह ? एक बिघा खेत तीन सयमे भरना राखि लैह, एक सय हमरा हाथ पर अछि, शेष एक सयमे हमर सोनक सूति बन्हकी राखि काज चलाबह।'

महावीरकेँ अपनहु दू सथ टाका हाथ पर छलनि। अतः ओ विवाह हेतु सहमत होइत छथि।

विराजमनि अपन पतिक मित्र ओही गामक घटक भिखारीझाकेँ बजबाय महावीर केँ नीक वंशक कन्यामे विवाह करबा देबाक प्रस्ताव दैत छथिन। घटक भिखारीझाकेँ कुसुमपुरक भलमानुष भोलठाकुरक कन्याक कथाक प्रस्ताव पूर्वहिसँ जानल छलनि। भिखारीझा महावीरक हेतु उपयुक्त कथा बूझि ओहि दिस प्रयत्नशील होइत छथि।

भोलठाकुरकेँ वर-घरक गुणक वर्णन करैत महावीरक ओहि ठाम कथा करबाक विचार दैत छथिन। जयबारक नाम सुनितहि भलमानुष भोलठाकुर चुप भऽ जाइत छथि। भिखारीझा द्वारा बहुत बुझौला पर ओ पिउसि परेखमनिकेँ सब बात बजबाय कहैत छथिन।

पिउसि अनुभवी आ व्यावहारिक बुद्धिवाली वृद्धा महिला छथि। ओ कहैत छथिन— 'वर, वरगुन नीक छैन्ह। सुखी छथि। प्रसिद्ध ज्योतिषी बुद्धिनाथझाक बालक थिकाह। क्रिया-मर्यादावला घर छैक। करबामे क्षति की ? कन्या सुखमे रहति। लगेमे ई काज होइत अछि। एकटा रारीनिओकेँ पठा कऽ कुशल-क्षेम बुझबा मंगाएब। वंशक लोक बहुत भेटत परंच स्थितिगर नहि भेटत। दरिद्रक घरमे कन्याकेँ कोन सुख भेटतैक ! जाति लै क की धो धो चाटब ! हम तँ पंजिबद्धहिक घरमे देलि गेलि छलहुँ। आइ अहाँक द्वारि अगोरने छी। आब समय बदलल जा रहल छैक। कन्याकैं सुयोग्य वरक हाथमे देबक चाही। आब लोक केवल विद्या और धन देखि काज करैत अछि। जातिक दिस जे लोकक धारणा पहिने छलैक से क्रम क्रमसँ आब उठल जा रहल छैक।'

घटक भिखारीझाक तर्क ओ पिउसिक विचारसँ प्रभावित भऽ भोलठाकुर जयवारमे कथा करबासँ सहमत होइत छथिन। परन्तु तीन सय टाकासँ कम व्यवस्था स्वीकार नहि होइत छथिन। भिखारीझा दू सय दिया देबाक वचन दैत बुझबैत छथिन जे 'तीनवंशक वरमे कथा करब सेहो २०० टाकासँ अधिक नहि देत। हँ, जँ मूर्ख हैत, घरक दरिद्र हैत से खेतो बेचि क ३०० टाका दय देत। परन्तु ओहना घरमे कन्याकैं देने आजीवन पछताइत रहब। अहाँ तँ अपन लोक छी। जाहिमे अहाँक नीक

Scanned by CamScanner

होएत, हम सैह करब। पिउसिक विचार बड़ उत्तम छैन्ह। तखन कन्या अहाँक थीक। जँ अहाँकैं ई कथा पसिन्द नहि हो तँ अन्यत्र जतय पसिन्द हो, ओत्तहि करब। कन्या तँ शतंवरा होइत अछि। कथा अनेको ठाम होइत छैक परन्तु हयतैक तँ कतहु एके ठाम।'

कथा गड़बड़ाइत देखि भोलठाकुर गप्पकेँ आगाँ बढ़बैत छथि। ओ घर-वर अपना आँखिसँ देखि कथा करबाक हेतु सहमत होइत छथि।

भिखारीझा ओतऽसँ आबि विराजमनिकेँ कथाक प्रगति सूचित करैत छथिन। कन्यागत कोनो दिन घर-वर देखबाक हेतु अओथिन सेहो कहैत छथिन।

एक दिन भोलठाकुर अपन पिसिऔत भाइ भैरवझा ओ एक बहियाक संग सन्ध्याकाल मदनपुर पहुँचैत छथि। मदनपुरमे महावीर कन्यागतकेँ देखि आङन चल जाइत छथि। मनोहर ओ मुकुन्द हुनका लोकनिक विनम्रता पूर्वक स्वागत-सत्कार करैत छथिन। मुकुन्द भिखारीझाकेँ बजा अनैत छथि।

भोलठाकुर महावीरकेँ बजाय परिचय पात पुछैत छथिन। घर-वर देखि सन्तुष्ट होइत छथि। कन्यागत लोकनिक हेतु असिद्ध भोजनक वृहत् विन्यास पूर्वक व्यवस्था होइत छनि। सब भोजन कऽ विश्राम करैत छथि। दोसर दिन कथा-निश्चय करबाक प्रक्रिया होइत अछि। भिखारीझा विराजमनिसँ विचार करैत छथि। पुनः भिखारीझा भैरवझासँ एकान्ती करैत छथि। भैरवझा भोलठाकुरसँ एकान्तमे गप्प करैत छथि। भैरवझा महावीरक कथा करबाक हेतु कहैत छथिन— 'लगमे एहन सुखित घर भेटब कठिन। तँ घटक एखन जे व्यवस्था देआ रहल छथि से मंजूर कय अगहनहिक शुद्धमे इ कार्य कै लिय।'

'व्यवस्था कतेक देआ रहल छथि ?' भोलठाकुरक एहि प्रश्नक उत्तरमे भैरव झा कहैत छथिन— २००) टाका व्यवस्था, ५०) टाका चतुर्थीक हेतु आओर विवाहक राति जे विधि होइत छैक से पृथक्।' एहि पर तैयार नहि होइत छथि भोलठाकुर। भैरव हुनका अनेक तरहेँ बुझबैत छथिन जे— 'टके दिश वा जाति दिश ध्यान नहि दिऔक। कन्याक सुखहु दिश दृष्टि देब उचित थीक। कन्याक माय जीवित नहि छैक। एहि घरमे एलासँ ओकरा कथुक दुःख नहि रहतैक।'

भोलठाकुर भैरवझाकेँ विवाहक खर्चा जोड़बऽ लगैत छथिन 'दू सय टाकामे जमायकैं नीक जकाँ कोना विदा करबैन्हि ? २ टाका रोज त हुनका भोजने कराबय मे लागत। कदाचित झट दै विदा नहि भेलाह त कमसँ कम १००) टाका भोजन-जलपानेमे उड़ि जाएत। कहुना १००) बाँचत। कपड़ा पर दाम बढ़ि गेल छैक। एतबामे अहाँ जे हुनका विदा कै सकिऐन्ह तँ अहाँ मानि लिऔन्ह। परंच हम अपना घरसँ एको टाका देब नहि। न्यून काज करब और घरक टको बरबाद करब, ई हमरासँ

Scanned by CamScanner

नहि हैत । जातियो गमौलहुँ स्वादो ने पौलहुँ । एखन चमक-दमक देखैत छिऐन्ह से कायम रहतैन्ह की नहि से के जानै । तीनू भाइ पढ़ल-लिखल एहने-ओहने छथि । यदि अहाँक पूर्ण विचार एहि कार्यमे हो तँ ५०) टाका और व्यवस्था देथु ।'

भैरवझा ई बात घटककेँ कहैत छथिन । घटक विराजमनिसँ विचार पुछैत छथिन । विराजमनि २५) टाका मात्र और देबाक सहमति दैत छथिन, सेहो विदाइक रूपमे । भोलठाकुर ततमत करैत मुँह विधुऔने कथा मंजूर कऽ लैत छथि । अगहनेमे कथाक दिन स्थिर भऽ जाइछ ।

निश्चित तिथिकेँ विवाह सम्पन्न होइछ । दोसर दिन बरियातीक विदाकाल भोल ठाकुर चतुर्थीक हेतु निर्धारित टाका मङैत छथिन । मनोहर सूटकेस खोलि पाँच गोट दसटकिया नोट दऽ दैत छथिन ।

मदनपुरमे चतुर्थीक भारदोर, साँठ-राजक विस्तारसँ व्यवस्था कयल जाइत अछि । भारदोर देखि मदनपुर ओ कुसुमपुर दुहू ठामक लोक छकित भऽ जाइत अछि ।

अगहनक पूर्णिमाकेँ महावीरकेँ सासुरसँ विदा कयल जाइत छनि । नोतपुरिया लोकक संग वर-विदाइ लऽ महावीर गाम अबैत छथि । विधि व्यवहार सम्पन्न होइछ ।

महावीरक बहीन सुधाक विवाहक तेसर वर्ष छनि । बहिनोइ शशिकान्तझा बनारस मे व्याकरणक परीक्षा उत्तीर्ण भऽ गाम आयल रहैत छथिन । से शशिकान्तझा सासुर मदनपुर अबैत छथि । हुनक स्वागत सत्कार होइत छनि । शशिकान्तझा सुधाक द्विरागमनक दिनक प्रस्ताव करैत छथिन । शशिकान्तक मायक आग्रह विशेष छलनि । सुधाक द्विरागमन तेसर वर्षमे नहि भेलासँ पुनः आगाँ पाँचम वर्षक प्रतीक्षा करऽ पड़ितनि । सब परिस्थिति पर विचार कऽ वैशाख शुक्ल दशमीकेँ द्विरागमनक दिन निश्चित होइछ । शशिकान्तकेँ एक जोड़ धोती, एक रेशमी चादरि ओ पन्द्रह टाका विदाइ भेटैत छनि । नोकरकेँ एक खण्ड धोती, एक टाका भेटैत छैक । शशिकान्त प्रसन्नचित्त गाम आबि माय ललितमनिकेँ ई सुखद संवाद कहैत छथिन । ललितमनि केँ दूटा कन्या सत्यभामा ओ सुनन्दा छलथिन । दुहूक विवाह एकहि गाममे भेल छलनि । से ओहि दुहू बहिनिक विदागरीक दिन तकाय, दिन मनयबाक लेल आदमी पठबैत छथिन । दुइ बहीनमे एकटा भाइ, से भाइक द्विरागमनक संवाद ओ विदागरीक दिन जानि बड़े आह्लादित होइत छथि । ब्रजमोहन ओ शिवनाथ दुहू साढ़ू परस्पर विचार-विमर्श कऽ दिन मानि लैत छथिन आ निश्चय करैत छथि जे दुहू बहीन एके सवारी सँ अपन नैहर पिलखबाड़ जाथि । उक्त तिथिकेँ शशिकान्त अपनहि जाय दुनू बहीनिकेँ लेआओन करा अनैत छथिन ।

एमहर विराजमनि सुधाक दिन मानि लेलथिन तखन महावीर पशोपेशमे पड़ि जाइत छथि । हुनक विचार रहनि जे पहिने हमर द्विरागमन भऽ जाय तखन सुधाक

Scanned by CamScanner

द्विरागमन होइक। मायोक सैह विचार छलनि। अतः सुधाक द्विरागमनक दिनसँ पूर्वहिक दिन तकाय डोर-सिन्दूर लऽ नौआकेँ कुसुमपुर पठाओल जाइछ। ओहि ठामसँ डोर सिन्दूर आपस भऽ जाइछ। तखन महावीर स्वयं दिन मनाबऽ जाइत छथि। सासुर मे अपन परिस्थिति कहि द्विरागमनक दिन मानि लेबाक आग्रह करैत छथिन। पिउसि परेखमनि एकरा पक्षमे विचार प्रकट करैत छथिन। परन्तु भोलठाकुर कोनो रूपेँ राजी नहि होइत छथिन। ओ अपन नाना तरहक व्यवधान सुनबऽ लगैत छथिन— 'सोझे वर्षे द्विरागामन कय देबामे हम अक्षम छी। अगहनमे विवाह और वैशाख द्विरागमन! एहिसँ उत्तम तँ होइतैन्ह, विवाहहिक यात्रामे द्विरागमानो कय लितथि। हम दिन कदापि नहि मानि सकैत छिऐन्ह। एहि वर्ष हम सब तरहेँ सिकस्त छी। तेसर वर्ष रौदी भ गेलासँ धानक फसिल मारल गेल। गत वर्ष दाहर आबि गेलैक, सभ धान दहा गेल। हम मर्यादावला लोक छी। खर्च रूकैवाला नहि। हम स्वयं लोककेँ कर्ज दै छलिऐक, से समय तेहन आबि गेल, अगत्या दू सय टाका हैन्डनोट पर कर्ज लेबय पड़ल। महाजन बीच-बीचमे एक-दू बेर तकादा कैलक। हम कहलिऐक, एखन हमरासँ टाका नहि भ सकत। ओ खिसिआ क असल मै-सूद तीन सय कइएक टाकाक नालिश कै देने अछि। एकतरफा टिगरी भ गेल छैक। आब इजराय कराओत। जेहो दू चारि बिगहा खेत अछि सेहो नीलाम भ जाएत। साध्य की?'

महावीर विचार दैत छथिन जे गामक सबसँ धनिक हरिनन्दनझासँ अपेक्षा छनि तेँ हुनकासँ हैन्डनोट पर दूसय टाका लऽ लेथि ओ एक सय हमहूँ देबनि। तीन सय टाका अदालतमे जमा कऽ देथि। भोलठाकुर गद्‌गद् भऽ जाइ छथि जे 'आधा काज तँ सिद्ध भेल, आब सोड़हो आना काज सिद्ध भऽ जाय।'

महावीर श्वसुरक खेतक नीलामीसँ सोचमे पड़ि जाइत छथि। ओ कोनो प्रबन्ध कऽ हुनका चारि सय टाका देबाक निश्चय करैत छथि। श्वसुरकेँ अपन मन्तव्य कहि गाम विदा होइत छथि।

एहि यात्रामे महावीर अपन नवपरिणीता पत्नीकेँ बहुत रास नीति-वचन कहि अपना अनुकूल कऽ लैत छथि। पति-पत्नीक प्रेमक सम्बन्धमे अनेको पौराणिक गल्प कहि ओ कलावतीक हृदयमे पतिभक्तिक बीज-वपन करऽ मे सफल-प्रयत्न होइत छथि।

गाम आबि महावीर मायकेँ सब वृत्तान्त कहैत छथि। माय कहैत छथिन— '४००) टाका वेत्रेक हुनक खेत नीलाम नहि होमै देबैन्ह। परञ्च पहिने बूझक चाहि जे कोन महाजनसँ ओ रुपैया कर्ज नेने छथि। कहिया हुनका पर नालिश दायर भेलैन्ह। एहि सभ बातक पहिने गुप्त रीतिसँ पता लगा लिय तखन चारि-पाँच सय टाकाक प्रबन्ध हैब कोन भारी बात छैक।'

भोलठाकुर महावीरकेँ महाजनक नाम कहने छलथिन मधुबनीक मिट्ठू साहु।

Scanned by CamScanner

विराजमनि मनोहरकेँ एकर पता लगाबऽ कहैत छथिन। मनोहरकेँ मधुबनीमे मिट्ठूसाहु नामक केओ महाजन नहि भेटैत छनि। तखन कचहरीमे जा कऽ पता लगबैत छथि। मुनसिफक सिरिश्तेदार ओ पेशकारकेँ एक-एक टाका दऽ नालिशी मोकदमाक पता लगबैत छथि। ओ सब सिरिश्ता देखि कहैत छनि जे भोलठाकुरक उपर कोनो मोकदमा नहि भेल छनि।

मनोहर मायकेँ सूचित करैत छथिन। माय महावीरकेँ कहैत छथिन जे 'तोहर ससुर तोहरासँ ठकि कै ४००) टाका लेबाक प्रपंच कैने छथुन। आब एक आत्मीय कैं कुसुमपुर पठा क बूझक चाही जे की विषय छैक। कर्ज नेने हयताह तँ गामक लोक बुझनहि हयतैन्ह।'

महावीरक पिताक शिष्य यदुनाथझा ज्योतिषीकेँ बजाय विराजमनि हुनका भोलठाकुरक कर्ज-बर्जक सम्बन्धमे कुसुमपुर जाय पता लगाबऽ कहैत छथिन। यदुनाथझा कुसुमपुरसँ पता लगा कऽ अबैत छथि आ विराजमनिकेँ कहैत छथिन जे— महावीरक ससुरकेँ कोनो कर्ज नहि छनि। ओ गामक एकटा मसोमातकेँ ठकि-फुसिचा कऽ दू बिगहा खेत लिखबाबऽ चाहैत छथि। ओहि हेतु जमायसँ चारिसय ठकऽ चाहैत छथि।

विराजमनिकेँ पूर्णरूपेँ विश्वास भऽ जाइत छनि जे भोलठाकुर छली व्यक्ति छथि। एहना लोकेँ छकाबक चाही। बेटाकेँ ओ कहैत छथि—'तोँ एक बेर फेर सासुर जाह, जेना होहु हमरा पुतोहुकैं आनि दैह। तोहर ससुर छथुन्ह लोभी, ठक। हुनका रुपैयाक लोभ देबहुन तँ ओ वैशाखमे द्विरागमनक दिन अवश्ये मानि लेथुन्ह।'

महावीर मनोहरकेँ किछु बुझा-सुझा कऽ सासुर जाइत छथि। ससुरकेँ कहैत छथि जे एक सय टाका संगमे अनने छी आ तीन सय टाका लऽ कऽ मनोहर पूर्णिमा दिन औताह। भोलठाकुर मने मन अपन गोटी लाल बुझैत बड़ प्रसन्न होइत छथि।

महावीर रातिमे अपना संग आनल रेशमी साड़ी, सोनक दू टा गहना, चानीक काड़ा कलावतीकेँ दैत छथिन। कलावती बड़ आनन्दित होइत छथि। महावीर कलावतीसँ अनेक प्रकारक वार्त्तालाप करैत हुनक मनक थाह लैत छथि। कलावती अनेक प्रकारेँ महावीरकेँ विश्वास दिअबैत छथि जे हम सतत अहाँक अनुगामिनी ओ आज्ञाकरिणी रहब। महावीर एहि पर कहैत छथिन जे 'काल्हि हम परीक्षा लेब। हमर बात मानब तखन हम बूझब जे अहाँ अवश्य सत्य भाषिणी छी।' महावीरकेँ कलावतीक वचन ओ मनोदशासँ विश्वास भऽ जाइत छनि जे कलावती हुनकासँ कहियो अन्यथा नहि कऽ सकैत छथिन ने आज्ञाक उल्लंघन करथिन।

प्रात भेने चैतक पूर्णिमा रहैत छैक। गामक धनाढ्य हरिनन्दनझाक ओतऽ सत्यदेवक पूजामे भोलठाकुरकेँ सबजना नोत-हकार रहैत छनि। महावीर परेखमनि पिउसिसँ कहि कलावतीकेँ ओहि आङन जयबासँ मुक्त करा लैत छथि। तखन अपन

Scanned by CamScanner

बिलटा खवासकेँ मनोहरक नामे पत्र लीखि गाम पठबैत छथि आ उतारा लऽ कऽ आइए आबऽ कहैत छथिन। सूर्यास्तसँ दू घड़ी पूर्वे बिलटा उतारा लऽ कऽ आबि जाइछ। आब महावीर मनोहरक अएबाक बाट ताकऽ लगैत छथि। भोलठाकुर सहित हुनक आङनक ओ टोलक अधिकांश स्त्री-पुरुष हकार पूरऽ हरिनन्दन बाबूक ओतऽ चल जाइछ। केवल कलावती रहि जाइत छथि।

गामक दक्षिण एकटा पुरैनदहा पोखरि छैक, एकदम निर्जन। महावीर बिलटाकेँ ओही पोखरिक घाट पर जा कऽ बैसऽ कहैत छथिन। दू घड़ी राति बितलापर मनोहर ओ धर्मनाथ बाबू महफा-कहार लेने पोखरिपर पहुँचैत छथि। बिलटा ई खबरि महावीर केँ पहुँचबैत छनि।

महावीर कलावतीकेँ अपन आनल साड़ी-गहना झटसँ पहीरि कलम बाग घरि चलऽ कहैत छथिन। कलावती तहिना कऽ कुलदेवताकेँ प्रणाम कऽ केबाड़मे बाहरसँ ताला लगाय कुंजी चक्कापर राखि महावीरक पाछाँ चलि दैत छथि। टोल तँ लोक सँ शून्य छल तेँ केओ देखैत नहि छनि। सड़कपर महफा राखल देखि महावीर कलावती केँ ओहिमे चढ़ि जाय कहैत छथिन। महावीरक आज्ञा मानि कलावती महफामे चढ़ि जाइत छथि। महफा चलि पड़ैछ। महावीर मनोहरक साइकिल लऽ महफाक संग चलैत छथि। मनोहर, धर्मनाथ बाबू ओ बिलटा दोसर बाट धऽ गाम विदा होइत छथि।

गामपर विराजमनि द्वारपर बैसि बाट तकैत छथिन। महफा सहित महावीरक अयला पर चुपेचाप वर-कनियाँक चुमाओन कऽ घर लऽ जाइत छथि। प्रात भेने एहि द्विरागमनक समाचार टोलक लोक बूझैत अछि।

ओमहर भोलठाकुर सपरिवार हकार पूरि अबैत छथि तँ घरमे ताला लागल देखैत छथि। बेटी आ जमाय निपत्ता। पहिने कलावतीकेँ नाम धऽ कऽ सोर करैत छथि। चक्का पर कुंजी भेटैत छनि। घर खोलल जाइत अछि। जयदेव लालटेम लऽ कऽ बहीनकेँ घरे घरे तकैत छथि। मुदा केओ कतहु नहि भेटैत छनि। कन्या-जमाय दुहू चुपचाप पड़ाय गेलाह, की जमाय कलावतीकेँ परतारि कऽ कतहु लऽ गेलाह से गुनधुन करैत भोलठाकुर क्षुब्ध भऽ उठैत छथि। मर्यादाहानि ओ अपमानक अनुभव कऽ क्रोधित होइत जमायक निन्दाक कथा बजैत छथि। परन्तु दोसर दिन, बेटी-जमाय पड़ाय मदनपुरे गेलथिन वा अन्यत्र, तकर सत्यापन हेतु जेठ बेटा जयदेवकेँ सत्यदेव भगवानक प्रसाद पहुँचयबाक लाथेँ मदनपुर पठबैत छथिन। जयदेवक मदनपुरसँ आपस अयला पर सन्देहक निवारण होइत छनि। ओ अनुभव करैत छथि जे 'जमाय हमरा खूब छकौलनि।'

महावीर तीनू भाइ आब अपन बहीन सुधाक द्विरागमनक इन्तजाममे लागि जाइत छथि। विराजमनि बेटीकेँ देबाक हेतु साँठ-राज, पौती-पेटार, गहना-गुड़िया सैंतऽ-सम्हारऽ लगैत छथि। वैशाख शुक्ल नवमीकेँ बरियाती-खवास, महफा-कहारक संग

Scanned by CamScanner

शशिकान्तझा मदनपुर अबैत छथि। हुनक स्वागत-सत्कार, विधि-व्यवहार होइछ। दोसर दिन सुधाक द्विरागमन होइत छनि। मुकुन्द संग जाइत छथिन। विराजमनि अपन कन्याक ओ महावीर अपन बहीनक जेहन विदाइ करैत छथि से प्रायः धनिकोसँ होयब संभव नहि। सुधाक सासुरमे शशिकान्त-सुधाकेँ देल गेल दान-दहेज, वस्तु-जातक बड़े प्रशंसा होइछ।

सुधाक सासुरमे महावीरक ससुर भोलठाकुरक वृत्तान्त ओ महावीर द्वारा गुप्त रूपेँ कनियाँकेँ अपन गाम लऽ अनबाक बड़ चर्चा होइछ। मुकुन्द ओ शशिकान्त एकर यावन्तो वृत्तान्त कहैत छथिन तँ लोक कौतूहल ओ रस लऽ लऽ सुनैत अछि आ कहैत अछि—'एहना ससुरकेँ एही तरहें छकैबाक चाही।'

सतयभामा आ सुनन्दा अपना भाउजिकेँ कौखन कऽ परिहासमे कहैत छथिन—अहींसँ भेट कराबक हेतु अहाँक भाइ चोर जकाँ कनियाँकेँ चुपचाप मदनपुर लऽ अनलनि। बहिनिक प्रति भाइक एहन प्रेम होयब, बहिनिक एहि तरहें मनोरथ पुरायब की सबसँ भऽ सकैत छैक?'

सुधा सुनि कऽ केवल मुसका दैत छथि।

एही ठाम उपन्यास समाप्त भऽ जाइत अछि।

'द्विरागमन' एकटा रूढ़ शब्द थिक जकर अर्थ होइछ नव परिणीता कन्याक प्रथम बेर सासुर जायब जकरा पाछाँ परम्परित परिपाटी, लोकाचार ओ विविध विधि-व्यवहारक अर्थ सेहो समाविष्ट अछि। सब नव परिणीता कन्याकेँ एकर मनोरथ रहैत छैक। किन्तु यदि कनियाँ सोझे सासुर चल आबय तँ ओकरा द्विरागमन नहि कहल जा सकैछ, द्विरागम भने कहि देल जाय। जनार्दनझाक एहि उपन्यासमे अन्ततः यैह देखाओल गेल अछि।

'द्विरागम रहस्य' उपन्यासमे वास्तवमे दुइ गोट द्विरागमनक कथा कहल गेल अछि, जकरा माध्यमसँ दुइ प्रकारक सामाजिक परिवेशक श्रेय–हेय स्वरूपक समानान्तर वर्णन कयल गेल अछि। एकटा अछि, जातिमे उच्च, कुलीनता आ मर्यादाक पाषण्डसँ आवृत्त भलमानुष भोलठाकुरक कन्या कलावतीक ओ दोसर अछि, जातीय श्रेणी-विभागमे सबसँ न्यून, सब दिनसँ सामाजिक स्तरपर तिरस्कृत-उपेक्षित शुद्ध जयवार वर्गक महावीरक बहीन सुधाक। दुहू कोटिक द्विरागमनक विन्यस्त वर्णन कऽ दुहूक तुलनात्मक दृष्टिएँ श्रेय–हेय होयबाक निर्णय करबाक दायित्व पाठकें पर छोड़ि देल जाइत अछि।

द्विरागमनक जे अर्थ, जे परम्परा रहल अछि, तदनुरूप कलावतीक द्विरागमन नहि होइछ। पिता भोलठाकुरक धूर्त्तता, ठकपनी ओ फरेबसँ जमायसँ टाका ठकबाक प्रवृत्तिक कारणे मातृहीना कलावतीकेँ महावीर द्वारा चोर जकाँ रहस्य-पूर्वक नैहरसँ सासुर आनल जाइछ। सासुरमे कलावतीक द्विरागमन नहि, आगम मात्र होइछ। सेहो रहस्यमय

Scanned by CamScanner

रीतिसँ तेँ उपन्यासक नाम 'द्विरागम रहस्य' सार्थक ओ समीचीन लगैत अछि।

'द्विरागम रहस्य'हुक कथा-फलक पूर्वक उपन्यासक अपेक्षा किछु विस्तृत देखल जाइत अछि । यद्यपि एकरहु परिवेश परिवारहि धरि सीमित अछि, तथापि विभिन्न गामक अनेक परिवारक घटनाकेँ मुख्य कथाक संग कौशलपूर्वक जोड़ल गेल अछि । मुख्य कथा थिक मदनपुरक महावीरक, कुसुमपुरक भोलठाकुरक कन्या कलावतीसँ विवाह ओ द्विरागमन, परन्तु पिलखबाड़क शशिकान्तझा-ललितरानीक परिवार, तरौनीक सत्यमामा-ब्रजमोहनक ओ सुनन्दा-शिवानाथक परिवारक घटनाक संग्रथनसँ कथानक मे मुख्य कथाक सम्पोषक प्रासंगिक कथाक संयोजन संभव भेल अछि जे उपन्यासमे विविधता ओ रोचकताक सृष्टि करैत अछि। कथानकक विकास एहि उपन्यासमे वक्रगति सँ होइत अछि जे निरन्तर पाठकक औत्सुक्यकेँ जगौने रहैत अछि । उपन्यासक चरम बिन्दु तखन अबैत अछि जखन महावीर सासुरसँ कलावतीकेँ महफामे चढ़ौने गाम अबैत छथि आ माय विराजमनिक पैर छूबि प्रणाम कऽ कहैत छथिन—'अहाँक आशीर्वाद सँ सभ कार्य निर्विघ्न सिद्ध भेल । पुतोहुकेँ आनि देलहुँ ।' एहि बिन्दु धरि पहुँचबाक हेतु पाठकक उत्सुकता जाग्रत रहैत अछि। एकर बादक घटना सब वास्तवमे कथानकक समावर्त्तनक रूपमे योजित भेल अछि। महावीर-कलावतीक गुप्त रूपसँ पलायनक पश्चात् भोलठाकुर सन कन्याक पिताक प्रतिक्रिया ओ क्रोध सर्वथा स्वाभाविक अछि । एहिसँ पाठककेँ कौतूहल मिश्रित सान्त्वना भेटैत छैक । अन्तमे सुधाक सविधि ओ विन्यस्त द्विरागमनक आयोजन कऽ लेखक पाठककेँ कलावतीक द्विरागम(न)क संग तुलना करबाक अवसर प्रदान करैत छथि ।

'द्विरागम रहस्य'मे पुरुष ओ स्त्री पात्रक संख्या अधिक अछि अवश्य परन्तु ओहिमे किछुए पात्र सभक चरित्र अधिक व्यंजित भऽ सकल अछि, शेष पात्र गौण रहि जाइत अछि । परन्तु जे पात्र मुख्यता प्राप्त कऽ सकल अछि तकर चरित्र-चित्रणमे लेखक अत्यन्त सजग छथि । पात्रक अपन आचरण, अपन कथन, अन्य पात्रक उक्ति ओ लेखकीय वर्णन द्वारा पात्रक व्यक्तित्वकेँ उरेहबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

पुरुष पात्रमे भोलठाकुर कथानकक विपरीत ध्रुव छथि जे ओहि वर्गक प्रतीक-पुरुष छथि जे जातीय उच्चता, कुलीनता ओ मर्यादाक पाषण्डपूर्ण परम्पराक दोहन करैत कन्या- विक्रय, जमाय सन कुटुम्बोसँ शठता ओ धूर्त्ततापूर्ण आचरण करबामे संकोच नहि करैत छथि । भिखारीझा घटकमे युगानुरूप वैचारिक गतिशीलता देखि पड़ैत अछि। महावीर मायक आज्ञाकारी पुत्र, बुधियार ओ संवेदनशील छथि परन्तु सहृदयताक कारण ससुरक धूर्त्ताचरणकेँ परेखबामे असफल रहैत छथि । महावीरक भाइ मनोहर चंचल प्रकृतिक अछि तथापि अछि तीव्रबुद्धि ओ कार्यपटु ।

नारी पात्रमे महावीरक माय विराजमनिक व्यक्तित्व सबसँ विशिष्ट छनि । ओ

Scanned by CamScanner

उपन्यासक समग्र घटना-चक्रक धुरी छथि। उपन्यासक समग्र कथानकक सूत्रधार विराजमनि सन वितपन्नि, व्यावहारिक, बुद्धिमती, चतुर ओ शठताक समीचीन उत्तर देनिहारि नारी पात्र अपन समय ओ सामाजिक परिस्थितिक दृष्टिएँ अविस्मरणीय छथि। एहिना लघु भूमिकामे रहितो भोलठाकुरक पिउसि परेखमनि अनुभवक गाम्भीर्य, यथार्थपरक दृष्टिकोण ओ मुखर विचारसँ सम्पन्न नारी छथि। ओ अपन एक गोट मार्मिक उक्ति 'जाति लै क की धो धो चाटब ? हम तँ पंजिबद्धहिक घरमे देलि गेलि छलहुँ। आइ अहाँक द्वारि अगोरने छी' द्वारा मिथिलाक नारी-वर्गक दुर्दशाक समस्त इतिहास कहि दैत छथि। कलावती सज्ञान, शीलवती ओ पतिक आज्ञाकारिणी छथि। विराजमनिक कन्या सुधाक चरित्रकेँ प्रस्फुटित होयबाक प्रचुर संभावना होइतो हुनका एकर अवसर नहि भेटैत छनि। सुधाक पति शशिकान्तकेँ थोड़ेक अवसर अवश्य भेटैत छनि। शशिकान्तक माय ललितरानी, बहीन सत्यभामा ओ सुनन्दाकेँ कथानकक अनुकूल चरित्र विकासक उपयुक्त अंश प्राप्त भेल छनि।

एहि उपन्यासमे ओहन अवसरक वर्णन विशेष मानेयोग ओ चित्रमयताक संग कयल गेल अछि जकर वर्णन जनार्दनझाक पूर्व रचित उपन्यासमे नहि भेल छल वा अल्प भेल छल। जतऽ प्रसंगक पुनरावृत्ति भेल अछि ततहु वर्णन अभिनवत्वपूर्ण अछि। एहि उपन्यासमे सेहो विवाहेक प्रसंग अछि मुदा से घरकथा द्वारा ओकर संपादन होइछ। घरकथामे कन्यागतक स्वागत-सत्कारक विस्तृत मनोरम वर्णन अछि। कन्याक व्यवस्था-निर्धारणक जीवन्त-वर्णन अछि। एहि सँ इतर परिछनि, विवाह, चतुर्थी ओ द्विरागमनक बरियातीक स्वागत-सत्कार, भार दोर, बेटीक विदागरी इत्यादिक वर्णन आकर्षक भेल अछि। एहि वर्णन सबसँ कथानकमे रंजकता आयल अछि, ततबहि नहि, अनेक स्थल पर कथानक-विकासमे ओ चरित्र-रंजनामे अत्यन्त सहायक होइत अछि। एहि दृष्टिएँ उदाहरणार्थ एकटा प्रसंग देखल जाय।

चतुर्थीक व्युत्पन्न भार देखि कुसुमपुरक लोककेँ आश्चर्य होइछ जे नव फैशनक साड़ी सब कतऽसँ कीनि कऽ विराजमनि पुतोहुकेँ पठौलनि। एहि ठाम उपन्यासकार एकर रहस्यक उद्घाटन एहि रूपक वर्णन द्वारा करैत छथि—

'विषय ई छैक जे ज्योतिषी बुद्धिनाथझा कलकत्तासँ जखन गाम आबय लागथि तखन सेठानी सभ हुनका गृहणीक लेल साड़ी, चूरी, बड्डी, ब्लाउज, अधबाँही आदि दैन्ह। सभ बेर दस-पाँचटा कीमती साड़ी ओ अनै छलाह। जकरा हुनक स्त्री विराजमनि बड़े हिफाजतिसँ पेटीमे बन्द कय राखि दै छलीह और मामूली साड़ी पहिरथि। केवल कोनो पर्व-तिहारमे पेटीसँ मोनक योग्य साड़ी और सोनक गहना बहार कै पहिरथि। पुनः ओरिया क पेटीमे राखि देथि। बेटी-पुतोहु लेल नीक नीक साड़ी पेटीमे भरि क रखने छलथिन, हुनका जे रंग-विरंगक साड़ी सभ ताहि दिनक राखल छैन्ह से टोलमे

Scanned by CamScanner

ककरो जनलो नहि छलैक । ...जँ ओ साड़ी सभकैं देखय दितथिन्ह तँ काज-प्रयोजनमे पहिरय लेल टोलक घरकटनी सभ मंगितैन्ह, परन्तु बदलामे दितैन्ह एहने ओहन साड़ी। तैं ओ कहियो ककरो देखय नहि देलथिन्ह । नुआ सभकैं रौद देखेबाक होइन्ह तँ अगुआड़-पछुआड़ दुहू दिसक केबाड़ बन्द कै क सुखाबथि । आङनक कमैनिहारिनिओ कैं कहियो सभ वस्त्र देखबाक अवसर नहि देलथिन्ह । केवल कन्या ओ तीनू बालककैं जानल रहैन्ह । हुनका लोकनिकैं बुझा क कहि देने छलथिन्ह जे कतहु बाजी जनु ।'

संवादक दृष्टिएँ देखब जे एहूठाम 'पुनर्विवाह' सदृश विराजमनि, महावीर ओ घटक भिखारीझाक दीर्घ संवादसँ उपन्यासक आरम्भ होइछ जाहिमे कथानकक पूर्वपीठिकाक परिचय देल जाइछ । जे बात सब एहि तीनू पात्रक द्वारा कहबाओल जाइछ, से लेखकीय वर्णन द्वारा सेहो सम्पादित भऽ सकैत छल, आ सैह नीक होइत। एहिसँ इतर सर्वत्र छोट-छोट, प्रसंगोपयुक्त ओ अर्थपूर्ण संवादक प्रयोग भेल अछि जे कथा-विकास ओ चरित्र-वैशिष्ट्यकैं व्यंजित-रंजित करबामे सहायक होइत अछि ।

जाति, वंश, कुलीनता ओ मर्यादाक प्रति सामाजिक व्यामोह तथा एहि नाम पर वर्ग विशेष द्वारा शोषण-दोहन, कन्याकैं मानव नहि भोग्य वस्तु मानि ओकर मूल्य-निर्धारण करब, कन्याक जीवनक सुख-दुःखक उत्तरदायित्वक प्रति स्वार्थपूर्ण उदासीनता-उपेक्षा, आत्मीयताक स्थानमे जमाय सन सम्बन्धीअहुक संग व्यावसायिक चातुर्य ओ शाठ्यपूर्ण व्यवहार इत्यादि सामाजिक विकृतिक उपहास-आलोचनामे लेखक अत्यन्त साहस ओ मुखरताक परिचय दैत छथि । सामाजिक परिवर्त्तनमे शिक्षाक महत्त्व, संस्कृत शिक्षाक महत्त्वक प्रति ह्रासोन्मुख समाज-दृष्टि, आधुनिक शिक्षाक प्रति उन्मुखताक अवक्षेपणक संगहि लेखकक नारी-शिक्षाक प्रति अतिशय आवेशक सहज प्रतीति एहि उपन्यासमे देखल जाइछ । से एही तथ्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे 'द्विरागम रहस्य'क प्रायः समग्र स्त्री-पात्र किछु ने किछु अवश्ये पढ़ऽ लिखऽ जनैत अछि ।

एतावता उपन्यासक कथानकक रोचक संघटना, विश्वसनीय चरित्र-चित्रण, प्रभावी संवाद-योजना, चित्ताकर्षक वर्णन-विन्यास, सामाजिक सुधार-दृष्टि इत्यादि तत्त्वक सम्यक् ओ कलात्मक समन्वयक दृष्टिएँ 'द्विरागम रहस्य' जनार्दनझा'जनसीदन'क सफलतम उपन्यास मानल जा सकैत अछि ।

जनार्दनझा 'जनसीदन'क उपन्यास सब देखलासँ ओहि सम्बन्धमे किछु सामान्य अवधारणा सब बनैत अछि । हुनक उपन्यासक कथावस्तुक घटना सब सामाजिक जीवन सँ गृहीत, स्वानुभूत, यथार्थ ओ विश्वसनीय रहैत छनि । कथा-फलक बहुत व्यापक नहि, परिवारक परिधिमे निबद्ध रहैत छनि । बहुत बेसी तँ सभागाछी धरि ओकर विस्तार भऽ पबैत अछि । जतऽ कतहु कलकत्ता वा देवघरक प्रसंग अबैत अछि, ओ कथा-विकासमे नगण्य योगदान कऽ पबैत अछि । जनसीदनक आरम्भिक उपन्यासक कथानक

Scanned by CamScanner

सोझ-सपाट देखल जाइछ परन्तु परवर्ती उपन्यासमे प्रासंगिक कथा-उपकथाक संयोजन दिस उपन्यासकारक प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होइछ । जनसीदनक उपन्यास सभक आरम्भ तँ बड़ प्रभावकारी रीतिसँ होइत अछि । परन्तु समापनक प्रभाव ओतेक गम्भीर नहि भऽ पबैत अछि ।

उपन्यासक पात्र-योजना ओ ओकर चरित्र-चित्रणमे लेखक अवश्ये सजग एवं सावधान रहैत छथि । कथावस्तुक अनुरोधेँ कोनो पात्रक चरित्र, स्वभाव ओ आचरणमे गुण, दोष, मानवीय दुर्बलता इत्यादिक समावेश स्वाभाविकता ओ विश्वसनीयताक सीमा धरि करैत छथि । जनसीदनक उपन्यासमे पात्रक जे अवतरण होइत अछि, ताहिमे किछुए पात्र प्रमुख भऽ पाबैत अछि । प्रत्येक उपन्यासक पुरुष पात्रमे प्रमुख स्थान रखनिहार, जयदेवझा सन अपवाद छोड़ि, प्रायः सब शिक्षिते देखल जाइछ । एकटा इहो विशेषता ध्यातव्य जे सब उपन्यासक एकटा प्रमुख पात्र ज्योतिषी अवश्य होइत अछि । प्रत्येक उपन्यासमे दू-एक पात्र रूढ़ि ओ कुप्रथाक विरोधी रहितहि अछि ।

जनार्दनझा'जनसीदन'क समग्र औपन्यासिक कृतिकेँ समग्रतामे देखला उत्तर नारीपात्रक तुलनामे पुरुष पात्र गौण प्रतीत होइत अछि । नारी-पात्रक सक्रिय भूमिका ओ ओकर चरित्रक विविध पक्षक अंकनमे लेखकक मनोयोग विशेष देखल जाइत अछि । अतः नारीक विविध रूपक दर्शन हिनक उपन्यासमे होइत अछि । एक दिस जँ नारी-स्वभावमे निहित अशिक्षा-कुशिक्षा जन्य जड़ता, कलहप्रियता, निष्ठुरता उत्पीड़कता, दम्भ इत्यादिक निदर्शन दैत छथि तँ दोसर दिस अपन अधिकांश नारी पात्रमे शालीनता, स्त्री-सुलभ सौकुमार्य, धैर्य, सहिष्णुता, चातुर्य, व्युत्पन्नता, व्यावहारिकता, वात्सल्य, शिक्षाक प्रति रुझान इत्यादि गुणक सन्निवेश करैत छथि । पहिल वर्गमे रमाकान्तक माय, अनूपरानी, पार्वती अबैत छथि तँ दोसर वर्गमे रमाकान्तक पत्नी, यशोदा, शशिकला, विशेषरानी, विराजमनि, कलावती, ललितरानी, सुधा, सत्यभामा, सुनन्दा, परेखमनि पिउसि इत्यादि अबैत छथि । उपन्यासकार नारी वर्गक विभिन्न सम्बन्ध सासु-पुतोहु, ननदि-भाउज, माय-धी, माय-पूत, भाइ-बहीन, पति-पत्नी इत्यादिक क्रिया-प्रतिक्रियाक वैविध्य पूर्ण वर्णन कयने छथि । ओकर सूक्ष्मसँ सूक्ष्म तन्तुकेँ रेखांकित कयने छथि जे हुनक परिवेशसँ निकटतम परिचय ओ पर्यवेक्षण-शक्तिक परिचायक थिक । परन्तु नारी-पात्रक शील-स्वभावक विस्तृत वर्णन करितो उपन्यासकार ओकर बाह्य सौन्दर्यक वर्णनसँ सर्वथा विरत रहैत छथि । कतहु नारी-पुरुषक नैसर्गिक प्रेमक अभिव्यक्ति नहि भऽ पबैत अछि । दाम्पत्य प्रेम पर्यन्तक अभिव्यक्तिमे लेखक जेना कुण्ठाग्रस्त भऽ जाइत छथि । पति-पत्नीक अन्तरंग-एकान्त क्षणमे जँ कखनो दाम्पत्य-प्रेमक स्वर फुटितो अछि तँ ओ नीति-उपदेश एवं प्रेमक शास्त्रीय परिभाषाक भारसँ

Scanned by CamScanner

मूक भऽ जाइत अछि। निर्दयी सासुमे यशोदा-सीतानाथकेँ तँ अन्तरंग संवाद-सम्पर्कक अवसरे ने देखाओल गेल अछि किन्तु रमाकान्तक स्त्री संग एकान्त वार्त्तालाप, विशेषरानी संग भवनाथक अन्तिम संवाद, महावीर-कलावतीक अन्तरंग वार्त्तालाप एहने प्रसंग सब अछि जाहिमे पाठककेँ निराशामात्र भेटैत छैक प्रेमाभिव्यक्ति-जन्य आनन्दक स्थानमे।

परिस्थिति, परिवेश, वातावरणक गहन पर्यवेक्षणक आधार पर ओकर विशद ओ विन्यस्त, रोचक ओ विश्वस्त वर्णनमे जनार्दनझा अद्वितीय छथि। एहि वर्णन सबसँ उपन्यासक कथानकक कलेवर मांसल भऽ उठैत अछि। एहि वर्णनक माध्यमसँ मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक बहुरंगी स्वरूपक परिचय सहज रूपमे पाठककेँ भऽ जाइत छैक। मिथिलाक सांस्कृतिक आचार, व्यवहार, लोकाचारक वर्णन करैत ओहिमे निहित रूढ़ि, विकृति ओ कुप्रथा सभक परिहारहुक दिशामे उपन्यासकार साकांक्ष देखि पड़ैत छथि।

जनार्दनझा'जनसीदन' जखन मैथिलीमे उपन्यास-लेखन आरम्भ कयने छलाह तखन मैथिली गद्य मध्यकालीन ओ आधुनिक कालीन स्वरूपक संक्रमणक स्थितिमे छल। हुनका समक्ष कथा-उपन्यासक हेतु उपयुक्त कोनो आदर्श, सर्वमान्य मानक स्वरूप छलनि नहि, जे छलनि से कृत्रिम, अस्वाभाविक आ श्लथ छल। अवश्ये कविवर जीवनझा अपन नाटक सभमे लौकिक गद्यक प्रयोग कऽ ओकरा मानकता प्रदान करबाक सफल प्रयास कयने छलाह। कविवर जीवनझाक गद्य-शैलीकेँ आदर्श मानि जनार्दनझा अपन उपन्यासक गद्यक स्वरूपकेँ स्थिरे नहि कयलनि अपितु ओकरा निरन्तर निखारबाक सफल प्रयास कयलनि। मैथिलीमे लेखन दिस प्रवृत्त होयबाक समय धरि जनार्दनझा हिन्दी साहित्यमे परिनिष्ठित ओ परिमार्जित गद्यक लेखकक रूपमे पूर्ण प्रतिष्ठित भऽ गेल छलाह। परन्तु हुनक मैथिली उपन्यासक भाषामे हिन्दीक प्रकृतिक लेशमात्र छाप नहि देखि पड़ैछ। अवश्ये किछु ठाम कोनो-कोनो पात्रक मुँहसँ हिन्दी (यद्यपि मैथिली भाषीद्वारा प्रयुक्त विकृत रूप)मे संवाद बजवाओल गेल अछि, किन्तु से पात्र ओ प्रसंगक अनुकूल स्वाभाविकता ओ रंजकताक सृष्टि करबाक उद्देश्येँ। प्रसंगानुकूल ओ पात्रक अनुकूल भाषा-प्रयोगमे उपन्यासकार अत्यन्त सतर्क रहैत छथि। एहि दृष्टिएँ जनार्दन झाक उपन्यास सभमे भाषाक तीन गोट स्तर देखबामे अबैत अछि : लेखकीय भाषा, पुरुषपात्रक भाषा ओ स्त्री-पात्रक भाषा। स्त्री-पात्रक भाषा सर्वथा चलित, सहज, स्वाभाविक ओ उच्चारण-भंगिमा सापेक्ष होइत अछि। पुरुष-पात्रक संवादक भाषा सामान्यतः गरिष्ठ ओ पण्डिताह रहैत अछि। लेखकीय भाषा लौकिक स्वरूपक अनुरूप, सरल, सुबोध, प्रचलित वागधारासँ सम्पन्न रहैत अछि। जनार्दनझा लोक-समाजमे सामान्य रूपमे प्रचलित तत्सम, तद्भव ओ देशज शब्दावलीक संगहि लोक-व्यवहारमे समरस भेल अरबी, फारसी ओ अंगरेजीयो शब्दक प्रयोगमे संकोच नहि करैत छथि।

Scanned by CamScanner

एहि प्रकारेँ ओ परिमार्जित, परिनिष्ठित ओ साहित्यिक गद्यक मानक ओ आदर्श रूपक रचना करबामे समर्थ भेलाह। एक वाक्यमे कही तँ ललित ओ चलित गद्यक सन्तुलित सामंजस्य जनार्दनझाक उपन्यासक विशेषता थिकनि।

जनार्दनझा 'जनसीदन'क उपन्यासक मुख्य उद्देश्य छलनि समाजमे व्याप्त रूढ़ि, अन्धविश्वास, कुरीति, कुप्रथा, अशिक्षा ओ तज्जन्य सामाजिक दुर्दशा ओ पतनशीलताक प्रति जागरूकता उत्पन्न कऽ ओकर परिहारक हेतु समाजकेँ प्रेरित करब। जनार्दनझाक साहित्य-सर्जन कालक आरम्भिक चरणमे समाज-सुधारक राष्ट्रिय आन्दोलनक प्रवाह चलि रहल छल ताहिसँ जनार्दनझाक विचारधारा कोन रूपेँ प्रभावित भेल छल ताहि पर विचार करबाक अवसर आगाँ भेटत। एहि ठाम स्मरण दियाबऽ चाहब जे 'सरस्वती'मे प्रकाशित समाज-सुधार विषयक निबन्धक मैथिल समाजमे केहन विरोधी प्रतिक्रिया भेल छल। एकर उत्तरमे जे मैथिलीमे पहिल निबन्ध ओ लिखलनि ताहिमे पन्द्रह गोट सामाजिक दोषक परिगणन कऽ ओकर परिहार-परिष्कारक आवश्यकता देखौने छलाह। हुनक उपन्यासमे ओहि दोषक घटमान रूप ओ ओकर दुष्परिणामक निदर्शन देखाओल गेल अछि। समाजमे गर्हित-कुत्सित आचार, व्यवहार, परम्परा ओ नीच मनोवृत्तिक विरोध ओ ओकर परित्याग करबाक प्रयत्न जनार्दनझाक उपन्यासमे सर्वत्र देखल जाइछ।

समाजक अधःपतनक ओ दुर्दशाक मुख्य कारण रहल अछि अशिक्षा, तेँ उपन्यासकार शिक्षा-प्रचार, ताहूमे अंगरेजी-शिक्षाक प्रचारकेँ अत्यधिक महत्त्व दैत छथि। ओ नारी-जातिक सामाजिक उत्पीड़नक प्रति अत्यधिक संवेदनशील छथि आ एहि उत्पीडनक निराकरण हेतु नारी-शिक्षाक प्रति विशेष आग्रहशील देखल जाइत छथि। विभिन्न प्रकारक परम्परासँ चल अबैत कुरीति, कुप्रथा, सामाजिक अन्यायक प्रति लेखकक विचार-धाराक अभिव्यंजना उपन्यासक घटनाक माध्यमसँ भेले अछि; संगहि प्रत्येक उपन्यासमे कोनो ने कोनो पात्रक समग्र चरित्र अथवा चरित्रांशमे लेखकक आत्मावतरण भेल अछि। ओहि पात्रक माध्यमसँ, ओकर सभक उक्ति ओ आचरणक आश्रय लैत उपन्यासकार समाज-सुधार–विषयक अपन वैचारिक अभिव्यक्ति कयलनि अछि।

रमाकान्त ठाकुर, रमाकान्त ठाकुरक स्त्री (सती सर्वस्व); ज्योतिषी चिन्तामणिझा अयोध्यानाथझा, घटक घूटरठाकुर (निर्दयी सासु); पण्डित गंगेश्वरझा (शशिकला); कलाधरझा ओ दिवाकरझा (पुनर्विवाह); घटक भिखारीझा ओ परेखमनि पिउसि (द्विरागम रहस्य) एहने पात्र सब छथि जनिक समग्र चरित्र अथवा आंशिक चरित्रमे उपन्यासकारकेँ स्वयं अवतरित होइत देखल जा सकैत अछि।

Scanned by CamScanner

कथा

पाश्चात्य, विशेष कऽ अंगरेजी साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण ओ लोकप्रिय गद्य-विधा शॉर्ट स्टोरी, जकरा हम सब 'कथा' कहैत छिऐक, तकर कोनो स्पष्ट अवधारणा आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालक लेखक लोकनिमे नहि छलनि। कवीश्वर चन्दाझा उनैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा' नामक संस्कृत कथा-संग्रहक मैथिली गद्य-पद्यमे अनुवाद कयने छलाह जकर गद्यक स्वरूप संस्कृतानुसारी मध्यकालीन छल। समसामयिक स्वाभाविक गद्यक बड़ अल्प स्पर्श ओहिमे देखि पड़ैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यक सर्वप्रथम कथात्मक गद्य-रचना होइतो ओहिमे आधुनिकता नहि अछि।

बीसम शताब्दीक प्रथम हुइ दशकमे 'मिथिला-मोद' ओ 'मिथिला-मिहिर'क माध्यमसँ हितोपदेश, पञ्चतन्त्र, पुराण, महाभारत आदिक कथा वा कथांशक अनुवाद, अनुलेखन वा सारांश-लेखन कयल जाइत रहल। ओहि अवधिमे ईसपक फेबुलक किछु कथा सभक सेहो अनुवाद वा छायानुवाद भेल छल। ओहि सबमे नीति, उपदेश, सदाचार, धार्मिक विश्वास इत्यादिक प्रतिपादन मुख्य रूपसँ भेल करैत छल। गद्य शैली मध्यकालीन गद्यक छाप लेने पण्डिताम ओ गरिष्ठ-संश्लिष्ट रहैत छल। समसामयिकता ओ यथार्थ-मूलकताक आधार रूप सामाजिक सन्दर्भक सर्वथा अभाव रहैत छल। अतः कथा-साहित्यक प्रति बौद्धिक बुभुक्षाक हेतु ओहन कथा सबकेँ अल्पाहार मात्र कहल जा सकैत अछि।

भारतक विभिन्न भाषामे आधुनिक कथा-साहित्यक आविर्भाव पाश्चात्य ओ मुख्य रूपमे अंगरेजी साहित्यक प्रेरणा ओ प्रभावसँ भेल। आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भिक कालक लेखक लोकनिकेँ अंगरेजी साहित्यसँ ओतेक गम्भीर परिचय नहि छलनि। किन्तु बंगला साहित्यक नवीनतम गतिविधिसँ ओ लोकनि निकटसँ परिचित छलाह। बंगलामे शॉर्ट स्टोरी वा कथा वेश परिमाणमे लिखल ओ पढ़ल जाइत छल जे मैथिलीमे कथा-लेखनक हेतु आधार भूमि बनल। अतः कहि सकैत छी जे मैथिलीमे

Scanned by CamScanner

कथा-साहित्यक आविर्भाव अंगरेजीक परोक्ष ओ बंगलाक प्रत्यक्ष प्रेरणा ओ प्रभाव सँ भेल ।

समसामयिक सामाजिक घटनासँ पात्र ओ कथानक ग्रहण कऽ आधुनिक कोटिक कथा-लेखन आधुनिक मैथिली साहित्यमे बड़ विलम्बसँ आरम्भ भेल । डा० जयकान्त मिश्रक 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर'क द्वितीय खण्डमे प्रदत्त सूचनाक अनुसार मैथिलीक प्रथम कथा थिक कालीकुमारदास द्वारा रचित कथा 'भीषण अन्याय' जे मिथिला-मिहिर'मे १९२३मे प्रकाशित भेल छल । एमहर 'मैथिलीक आरम्भिक कथा' नामसँ एक गोट कथा-संग्रह प्रकाशित भेल अछि । ऐतिहासिक दृष्टिएँ एहिमे महत्त्वपूर्ण कथा सभक संचयन अवश्य अछि, प्रयास प्रशंसनीय, परन्तु एहिमे संकलित कथा सभ तेसर दशकसँ पूर्वक नहि अछि ।

अद्यतन अनुसन्धानसँ आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक सम्बन्धमे कतिपय नवीन तथ्यक उद्घाटन भेल अछि जकरा आलोकमे मैथिली कथा-साहित्यक उद्‌भव ओ प्रथम कथाक सम्बन्धमे पुनर्विचार आवश्यक भऽ जाइत अछि ।

ज्ञातव्य जे १९१५मे सामाजिक जीवनक घटनापर आधृत उत्पाद्य कथानक, पात्र ओ अभिनव विचारधारासँ संबलित, यदुनाथझा'यदुवर'क एक गोट कथा 'श्री शंकरक विवाह' मिथिला-मोदमे प्रकाशित भेल छल । यैह कथा पुनः १९२६मे 'श्री मैथिली'मे सेहो प्रकाशित भेल । एहि कथामे वरक प्रति व्यवस्था वा तिलकक प्रथाक विरोध करैत नायक शंकरक चारित्रिक उत्कर्ष देखाओल गेल अछि । परन्तु यदुवरक ई कथा मौलिक नहि अपितु 'अभ्युदय' नामक पत्रिकासँ अनुवाद कयल गेल छल, जकर सूचना मिथिला-मोदहिमे प्रदत्त अछि । अवश्ये अनुवाद रहितो ई कथा मैथिलीमे मौलिक ओ आधुनिक प्रकृतिक कथा-लेखनक प्रति एकटा लेखकीय सजगताक उद्‌बोधनमे सहायक सिद्ध भेल ।

पूर्वक अध्यायमे देखल गेल अछि जे जनार्दनझा'जनसीदन' आधुनिक कोटिक सामाजिक उपन्यासक लेखन १९१२मे आरम्भ कऽ देने छलाह आ १९१५-१६ धरि हुनक 'सती सर्वस्व', 'निर्दयी सासु' ओ 'शशिकला' नामक तीन गोट उपन्यास प्रकाशित ओ वेश चर्चित भऽ गेल छलनि । से, जनार्दनझा कथा-लेखन दिस सेहो प्रवृत्त भेलाह। हिनक एक गोट कथा 'ताराक वैधव्य' १९१७ इ.मे 'मिथिला-मिहिर'क ३० जून ओ ७ जुलाइक अंकमे प्रकाशित भेलनि क्रमिक रूपमे । यद्यपि एखन धरि जनार्दनझाक एकमात्र कथा 'ताराक वैधव्य' अभिज्ञात अछि, तथापि आधुनिक मैथिली कथा-साहित्यक सर्वप्रथम कथा होयबाक श्रेय एही कथाकेँ प्राप्त छैक ।

'ताराक वैघव्य' कथा आरम्भ होइत अछि आषाढ़ मासक अमावास्याक अन्धकार-पूर्ण विकट वर्षारात्रिक रोमांचक ओ रोमांटिक वर्णनसँ । एहनमे ऊभड़-खाभड़ एकपैरिया

Scanned by CamScanner

बाट पर आतुरतापूर्बक झटकल चल जाइत चारि गोटेक परिचय ओ प्रयोजनक प्रति उत्सुकता जगबैत चारू व्यक्तिक परिधान, स्वरूप, वयस ओ प्रकृतिक विवरण देल जाइत अछि । तदुपरि ओहि चारू व्यक्तिक बाट चलैत परस्पर प्रासंगिक वार्त्तालापक माध्यमे प्रत्येकक यथार्थ परिचय ओ एहन अन्हार रातिमे दुर्गम पथपर आतुरतापूर्वक जयबाक कारण स्पष्ट होइत अछि । एहि चारूमे पहिल छथि पचास वर्षक विख्या बटुकनाथझा । दोसर छथि साठि वर्षक कन्यागत भैरवठाकुर जनिका अपन भतीजीक कन्यादान करबाक छनि । तेसर छथि पचीस वर्षक युवक जे अविवाहित छात्र छथि । ओ बटुकनाथक ममियौत भाइ थिकथिन आ हुनक समाङ्क रूपमे जाइत छथिन । चारिम थिक तीस वर्षक स्वस्थ मटरू खवास जकरा माथपर भरिगर मोटा छैक ।

एहि चारू व्यक्तिक वार्त्तालाप ओ अग्रिम घटनासँ अभिज्ञात होइत अछि जे एहि कथाक नायिका थिक सात वर्षक कन्या तारा । पिता नहि छथिन । माय मधुरमणि ओ पाँच वर्षक छोट भाइ गणेश छैक । घरक अभिभावक छथिन पित्ती भैरवठाकुर जनिक दुनू कन्याक विवाह-द्विरागमन भऽ गेल छनि । एकटा बालक छथिन जकरा लऽ कऽ पत्नी बेसी काल नैहरेमे रहैत छथिन । शुद्धशेष भैयो गेलापर भैरवठाकुर सभागाछीसँ ताराक हेतु एकटा वयसाहु विधुर वर बटुकनाथकेँ कन्याक प्रति दू सय टाका गनाय लऽ अनैत छथि ।

गाम अबैत-अबैत बहुत राति बीति गेल रहैछ । सौंसे गाम सूतल रहैत अछि। भैरवठाकुरक आङनमे भाउजि मधुरमणि, भतीजी तारा, भातिज गणेश आ ओकरा सबकेँ अगोरि कऽ सुतनिहारि खवासिनी सकली माय घरमे बिलैया ठोकि निश्चिंत सूतल रहैछ । भैरवठाकुर भाउजिकेँ जगाय कन्यादानक ओरिआओन करऽ कहैत छथिन । मधुरमणि अकचकाइत भितरेसँ विरोध करैत छथिन जे 'शुद्ध समाप्त भऽ गेल । आइ अमावास्या तिथि, शनि दिन कन्यादान कोना हैत आ हमरा एखन कन्यादान आवश्यको नहि ।' ओ कानऽ लगैत छथि । हुनका संग तारा ओ गणेश सेहो कानऽ लगैत छथि।

सकलीमाय दीप दऽ अयबाक बहाना कऽ दलानपर जाय वरकेँ देखि अबैत अछि । मधुरमणिकेँ आबि कऽ कहैत छनि—ऐ दाइ ! की कहू ? अहाँक देवर नहि जानि कोन प्रकृतिक मनुष्य छथि जे एहन खोड़नाठ सन कारी दिवरखौक वर उठाय लायल छथि । वयसो नव नहि, सकलीक बापक वयसें ऐ । छिया ! हमरो लोकनि राड़िन छी, तैयो बेटीक प्रसङ्ग एहन वर नहि करितहुं ।'

एहिपर मधुरमणि केवाड़ बन्द कऽ घेओना कऽ कानऽ लगैत छथि । हुनका संग तारा, गणेश ओ सकली माय सेहो कानऽ लगैत अछि । घेओनाक स्वर दलान पर धरि जाइत अछि । विवाहक प्रति कन्याक मायक विरोध ओ विद्रोहक आभास

Scanned by CamScanner

भेला पर भैरवठाकुर अपन तीन गोट ग्रामीण सहायक भंगी, धतूरी ओ फोचाइकेँ बजाय, बटुकनाथसँ दुइ दुइ टाका दर्शनी देयाय आङन लऽ जाइत छथिन । आङनमे जाय सब गोटे मधुरमणिकेँ भाँति-भाँतिक प्रलोभन सूचक गप्प द्वारा बुझबैत केबाड़ फोलऽ कहैत छथिन । मुदा मधुरमणि दुःखकातर भऽ केबाड़ फोलबाक हेतु राजी नहि होइत छथिन ।

भैरवठाकुरकेँ दू सय टाका हाथसँ जा रहल छलनि । तेँ ओ तीनू सहायककेँ बलप्रयोगक संकेत दैत छथिन । तीनू सहायक केबाड़केँ बलात् खोलि ताराकेँ मधुरमणिक पाँजसँ जबरदस्ती घीचि कऽ बाहर लऽ अनैत अछि । मधुरमणिकेँ घरमे बन्द कऽ बाहरसँ ताला लगा देल जाइत अछि । बाहरमे धड़फड़ कऽ सात वर्षक अबोध ताराक विवाह ओकरासँ सतगुन वयसस्थ विधुर पुरुषसँ करा देल जाइत छैक ।

भैरवठाकुर प्रसन्न होइत छथि । घरक ताला खोलल जाइछ । लोक देखैत अछि जे मधुरमणि अचैतन्य पड़लि छथि । सकलीमाय पानिक छिच्चा दऽ होसमे अनैत छनि मुदा ओ फेर कनैत-कनैत अचेत भऽ जाइत छथि । ओ तीन दिन तीन राति अन्न-जल ग्रहण नहि करैत छथि । मुदा एहिसँ की होइत ?

तेस रा वर्ष नओ वर्षक अबोध बालिका ताराक द्विरागमन होइत छैक । ओ सासुर पहुँचैत अछि । सासुरमे ओकरा भेटैत छैक विधवा ननदि, पन्द्रह वर्षक जेठ सतधी सुनयना जकर गत वर्ष विवाह भेल छलैक, बारह वर्षक सतौत कमलनाथ ओ सात वर्षक समवयस्क छोट सतधी.। विधवा ननदिसँ ताराकेँ सासु आ मायक स्नेह भेटैत छैक। किन्तु ओ किछु समयक पश्चात् सासुर चल जाइत छथिन । कमलनाथ हाजीपुरमे पढ़ैत अछि । जेठ सतधी वयसमे जेठ भेलासँ सासु जकाँ रोआब देखबैत अशेष यन्त्रणा देबऽ लगैत छैक । कतोक दिन मिथ्या दोष पिताकेँ सुनाय हुनकासँ मारि खोअबैत छैक ।

जावत ननदि छलथिन तावत भरसाहा छलैक । हुनका गेलाक बाद तारा एकदम निस्सहाया भऽ जाइछ । जेना-तेना समय बितैत छैक । तेसरे वर्षे सतधी सुनयनाक द्विरागमन भऽ जाइछ । ताराक कष्ट किछु कम होइत छैक । ओ गृहिणीक व्यवहारो सबसँ परिचित होमऽ लगैत अछि । कोनहुना तीन वर्ष बितैत छैक ।

एही क्रममे बटुकनाथ वातव्याधिसँ ग्रस्त भऽ जाइत छथि । बारह वर्षक तारा छप्पन वर्षक पतिक सेवामे निरन्तर लागल रहैछ । बटुकनाथकेँ कविराजी आ डाक्टरी औषधसँ कोनो लाभ नहि होइत छनि । ओ बारह वर्षक अबोध पत्नी ताराकेँ अनाथ विधवा बना कऽ संसारसँ विदा भऽ जाइत छथि । तारा जीवन ओ दाम्पत्य-जीवनक अर्थ बूझऽसँ पूर्वे बाल-विधवा भऽ जाइत अछि ।

आधुनिक कथाक कतिपय अनिवार्य तत्त्वक संकेत यद्यपि प्राचीन भारतीय कथा-

Scanned by CamScanner

साहित्यमे सेहो देखल जाइत अछि तथापि वस्तु, शैली, उद्देश्य इत्यादिमे जे अभिनवत्व अछि से आधुनिक कथाकेँ प्राचीन कथासँ भिन्न स्वरूप प्रदान करैत अछि । आधुनिक कथा-विधाक सबसँ महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक सामाजिक जीवनक यथार्थ स्वरूप ओ ताहि मध्य घटित घटना, जीबैत व्यक्ति-समुदाय, व्यक्ति-व्यक्तिक मध्य बहुविध सम्बन्ध इत्यादिकेँ कथा-संरचनाक उपादनक रूपमे उपयोग करबाक प्रवृत्ति । आधुनिक कथामे, आधुनिक कथाक रचना-प्रक्रियामे कथाकारक वैयक्ति अनुभूति ओ संवेदना अन्तर्निहित रहैत अछि । वैयक्तिक वा सामाजिक जीवनक कोनो प्रवृत्ति, कोनो परिस्थिति, कोनो घटना, कोनो व्यक्ति, कोनो वाक्य कथाकारक मर्म पर अंकित भऽ ओकर संवेदना केँ उद्वेलित-उद्बोधित कऽ दैत अछि । ओकरहि केन्द्रबिन्दु मानि अनुभव ओ कल्पनाक संयोगसँ कथाकार कथानकक विश्वसनीय स्वरूप ठाढ़ करैत अछि, जाहिमे परिवेश, चरित्र, संवाद, औत्सुक्य इत्यादिक विन्यास कऽ, कथाकेँ समग्रता प्रदान करैत अछि। एही कारणे आधुनिक कथा पाठककेँ अपन परिवेशक, अपन जीवनक, अपन कथा बूझि पड़ैत छैक । पाठककेँ ओहि कथाक कोनो ने कोनो अंशसँ अपनाकेँ सम्बद्ध होयबाक प्रतीति होइत छैक ।

एहि आधारपर जनार्दनझाक साहित्यिक वयक्तित्वक विश्लेषण कयलापर प्रतीत हैत जे हुनका अन्तस्मे एकटा सुशक्त कथाकार विद्यमान छल । यद्यपि कथा-शिल्पक दृष्टिएँ बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणक कथा ओ साम्प्रतिक कथामे महान् अन्तर अछि ओ आरम्भिक चरणक कथाक मूल्यांकन अन्तिम दशकक कथाक मानदण्डक आधारपर करब समीचीन नहि होयत, तथापि जनार्दनझाक 'ताराक वैधव्य' कथामे आधुनिक कथाक लक्षण सभ सम्यक् रूपमे विद्यमान अछि । सुगठित कथानक, चरित्र-चिरत्रणमे वैशिष्ट्य, सन्तुलित संवाद, वातावरण ओ परिवेशक रोचकता, चरम परिणतिक अभिज्ञानक औत्सुक्य, प्राञ्जल ओ स्वाभाविक भाषा-शैलीसँ ई कथा संबलित अछि जे कथामे स्थित कतिपय दुर्बलहु बिन्दुकेँ आवृत कऽ दैत अछि ।

सबसँ महत्त्वपूर्ण अछि कथाक सोद्देश्यता । लेखक सामाजिक विकृति ओ नारी वर्ग पर होइत विविध रूपक अत्याचारक प्रति भर्त्सनागर्भित विरोधी दृष्टिकोणकेँ कथाक माध्यमे प्रकट कयलनि अछि । 'ताराक वैधव्य' कथामे देखैत छी जे मिथिलाक समाजमे व्याप्त जाहि विकृति, कुरीति, गर्हित आचार ओ स्वयंसिद्ध दोषकेँ गौरवास्पद सांस्कृतिक रिक्थ मानल जाइत रहल अछि तकरा प्रति लेखकक विरोधक स्वर मुखर रूपमे व्यंजित भेल अछि । बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बाल-वैधव्य, कन्या-विक्रय, विवाह-प्रकरणमे उभय पक्षक सर्वथा मिथ्या कथन द्वारा एक-दोसराकेँ ठकबाक निर्लज्ज प्रयास, जाति-पाँजि-कुलीनताक मिथ्याभिमान, समाजक हाथसँ होइत अत्याचार ओ पारिवारिक उत्पीड़नकेँ सहैत नारीक विवशता जेना लेखककेँ उद्वेलित करैत रहलनि अछि, जकर

Scanned by CamScanner

सभक अभिव्यक्ति एहि कथामे कतहु प्रत्यक्ष वर्णन रूपमे, कतहु परोक्ष रूपमे; कतहु संकेत रूपमे ओ कतहु व्यंग्य रूपमे; कतहु व्यथापूर्वक ओ कतहु उपहास पूर्वक भेल अछि। लेखकक वैचारिक अभिव्यक्ति जयदेव नामक युवकक स्वगत कथनमे भेले अछि मुदा एहि सामाजिक व्यवस्थाक प्रति नारीवर्गमे सुषुप्त विरोध-भावक, खवासिनी सकलीमाय सन अपढ़ निम्न वर्गक पात्रक कथनमे सेहो अत्यन्त प्रभावी अभिव्यंजना भेल अछि। विरोध ओ विवशताक स्थिति नारीवर्गमे कोन रूपक छल तकर ज्वलन्त रूप ताराक माय मधुरमणिक एहि उक्तिमे— 'हम टाकाकें आगिमे डाहि देबैक। सात वर्षक बेटीक गरमे जानि बूझि कय हम फाँसी लगबय नहि देब' तथा समस्त शक्ति लगाय निष्फल प्रतिरोध करबामे भेटैत अछि। आधुनिक मैथिलीक एहि प्रथम कथामे जनार्दनझा सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति द्वारा पाठकमे करुणा जगाय सामाजिक मनोवृत्तिमे परिवर्त्तन अनबाक हेतु प्रेरित करबाक सफल प्रयास कयलनि अछि।

Scanned by CamScanner

निबन्ध

जनार्दनझा'जनसीदन' कवि-उपन्यासकारक संगहि एकटा सफल निबन्धकारो छलाह। मैथिली साहित्यमे हिनक पदार्पण निबन्ध-रचनहिसँ भेल छल। हिनक मैथिलीमे पहिल प्रकाशित निबन्ध छल 'मैथिल समाजसँ निवेदन'। एहि निबन्धपर पूर्वहि विस्तारसँ चर्चा कयल गेल अछि।

परवर्त्ती कालमे अनेकशः निबन्ध सब लिखैत रहलाह जे समसामयिक पत्रिका सभमे प्रकाशित होइत रहल। पुस्तकाकारमे संकलित नहि भेलाक कारणे ओ जतेक निबन्ध लिखलनि से पत्रिके सबमे प्रकाशित भऽ कऽ विस्मृत भऽ गेल। परवर्त्ती सामान्य पाठकक हेतु ओ सब दुर्लभ भऽ गेल। अतः कतेक निबन्ध ओ लिखलनि तकर परिगणन करब संभव नहि अछि। अवश्ये हुनक कतिपय विशिष्ट निबन्ध सब बेर-बेर विभिन्न गद्य-संग्रह सबमे संकलित कयल जाइत रहल अछि।

पुरान पत्र-पत्रिकाक फाइलसँ जनार्दनझाक कतोक निबन्ध सभक सन्धान भऽ सकल अछि, यथा-मिथिलामे स्त्री शिक्षा (मिथिला-मिहिर, ६ नवम्बर, १९१५), रसज्ञान (मिथिला-मिहिर, ४ अक्टूबर, १९१६), मिथिला-महत्त्व (मिथिला, वर्ष-१, अंक-२, १९२९), स्त्रीक अनादरक दुष्परिणाम (मिथिला, वर्ष-१, अंक-५, १९२९), समयानुकूल नियमक पालन (मिथिला, वर्ष-१, अंक-९, १९२९), सामयिक वसन्त वर्णन (मिथिला-मिहिर, १७ मइ, १९४७) ओ प्रेम-विवेचन (मिथिला-ज्योति, सितम्बर-अक्टूबर, १९४८) इत्यादि। ई निवन्ध सब जनसीदनजीक निबन्ध-रचना-सामर्थ्यक प्रबल साक्षी अछि।

जनसीदनजीक निबन्ध सबमे पौराणिकताक संग समसामयिक समस्या ओ विचार-प्रवाहक पूर्ण प्रतिपन्नता देखल जाइछ। एहि निबन्ध सभक केन्द्र बिन्दु विशेष रूपैँ मिथिलाक प्रसंग रहल अछि। जनार्दनझा'जनसीदन' उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे साहित्य-क्षेत्रमे प्रवेश कयने छलाह। ओहि समयमे सामान्यतः भारतीय ओ विशेषतः मिथिलाक नारीवर्गक हीन ओ दुर्दशापूर्ण अवस्थाक अवलोकन एवं अनुभव ओ निकटसँ कयने छलाह। बीसम शतीक आरम्भमे मिथिलाक नारीवर्गकेँ नियमित शिक्षा देबाक दिशामे समाज ने केवल उदासीने छल अपितु बहुतो जन एकर घोर विरोधियो छलाह।

Scanned by CamScanner

जनसीदन ओहि कालक सामाजिक रूढ़ विचार-धारासँ फराक, नारी-शिक्षाकेँ समाजक विकासक महत्त्वपूर्ण उपादान मानैत ओकर प्रबल समर्थक छलाह जकर झलक हुनक उपन्यास सभक विभिन्न नारीपात्रमे अन्वय-व्यतिरेकसँ देखल जाइत अछि। मिथिलांक अशिक्षिता नारीवर्गक सामाजिक दुरवस्थाक निवारण नारी-शिक्षाक सौलभ्यहिसँ विशेष सम्भावित छल। एहि दृष्टिएँ जनरीदनजीक निबन्ध 'मिथिलामे स्त्री-शिक्षा' ऐतिहासिक महत्त्वक मानल जा सकैछ। नारी-शिक्षाक प्रबल विरोधक अछैतो जनार्दनझाक निर्भीकताक संग अपन प्रगतिकामी विचारकेँ समाजक समक्ष रखबाक साहस ओहि कालक वातावरणक परिप्रेक्ष्यमे अत्यन्त महत्त्वक मानल जा सकैत अछि।

वास्तवमे नारी-समस्या जनार्दनझाक चिन्तनक प्रमुख विषय छलनि। अपन विभिन्न निबन्धमे नारी-समस्याक विभिन्न पक्षक सम्बन्धमे अपन सुचिन्तित विचार प्रकट कयलनि अछि। 'स्त्रीक अनादरक दुष्परिणाम' शीर्षक निबन्धमे नारी-पुरुषक शाश्वत सम्बन्धक विश्लेषण करैत नारी-समस्याक सम्बन्धमे लेखक द्वारा गम्भीरतासँ विचार कयल गेल अछि। लेखक समाजक बहुतो समस्याक कारण, समाजमे व्याप्त नारीवर्गक उपेक्षा, प्रताड़ना, अशिक्षा, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह इत्यादिक निराकरणक दिशामे समाजक प्रबुद्धवर्गकेँ उद्‌बोधित करबाक प्रयत्न कयलनि अछि।

मनुसमृतिमे नारी-जातिकेँ कतेक आदर ओ प्रतिष्ठाक स्थान देल गेल अछि तकर विस्तारसँ विवेचन करैत, लेखक पति-पत्नीक नैसर्गिक सम्बन्धक पवित्र स्वरूपक वर्णन ओ पतिक प्रति नारीक सर्वात्मसमर्पणक स्वभावक मुक्तकंठसँ प्रशंसा करैत छथि। ओ नारीक दाम्पत्य जीवनक प्राचीनकालीन स्थितिक सम्बन्धमे कहैत छथि— 'स्त्री अपनाकेँ दासिये किएक ने बूझथु, परन्तु पति हुनका दासी नहि बूझि प्रियतमा बूझैत छलथिन आओर प्रियतमाक संग जेहन व्यवहार करब उचित थिक, वैह करैत छलाह।'

परन्तु पश्चात्‌काल क्रमहि पति-पत्नीक मध्य पवित्र-स्नेहिल सम्बन्धक क्षरण होमऽ लागल। प्रियतम-प्रियतमाक सम्बन्ध नहि रहि गेल जाहिसँ समाज अधःपतन दिस बढ़ऽ लागल। लेखक एहि प्रसंगक सम्बन्धमे कहैत छथि 'जहियासँ स्त्री प्रियतमा नहि बूझलि जा कय केवल विषयोपभोग्या बूझलि जाय लगलीहै, पतिक अर्द्धाङ्गिनी भेलोपर तुच्छ दृष्टिसँ देखलि जाय लगलीह, दासियोसँ नीच दशामे रहै लगलीहै, तहियेसँ एहि देशक अवनति होमै लागल अछि। आओर दिन-दिन दुर्बल सन्तानक संख्या बढ़ल जा रहल अछि।'

वास्तवमे 'जाहि स्त्रीक शरीर स्वस्थ नहि, मन प्रसन्न नहि, तकरा गर्भसँ जे सन्तान उत्पन्न होएत से केहन होएत ?'

एतऽ ई स्मरणीय जे जाहि समयमे ई निबन्ध लिखल गेल छल, ताहि समयमे भारतमे बाल-मृत्युक संख्या अत्यधिक छल ओ भारतक औसत आयु २६-२७ वर्ष मात्र

Scanned by CamScanner

छल ।

ग्राम्य परिवेशमे पालित-पोषित जनार्दनझा अपन मैथिल समाज एवं ओहिमे नारी-यन्त्रणाक स्थितिकेँ अत्यन्त निकटसँ देखने छलाह, से नारीक गर्हापूर्ण जीवनक प्रति क्षोभ व्यक्त करैत प्रश्न उठबैत छथि— 'पति-प्रेमादि सुखक कोन कथा, शरीर-रक्षोपयोगी नित्य व्यवहार्य वस्तुओ स्त्रीक हेतु मैथिल समाजमे अव्यवहार्य बूझल जाइत अछि। स्त्रीकैं पनही, खड़ाओं पहिरब, छाता लगा कय रौदमे चलब, शीतनिवारणार्थ गंजी आदि पहिरब, खाट पर सूतब आओर कुरसीपर बैसब आदि निषेध अछि। जे केओ एकर व्यवहार करैत छथि से समाजमे निन्दिता होइत छथि। कोन अपराधक हेतु स्त्रीक ई सब अधिकार छीनि लेल गेल छन्हि, ई हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि। अर्द्धाङ्गिनी स्त्रीक एहि आवश्यक सुखोपभोग्यकैं अनुचित आओर ओकरा प्रति निष्ठुर आचरण करबहिमे अपन प्रतिष्ठा बूझब युक्त वा अयुक्त ई विचारबाक थिक। की एहि सब दुर्व्यवहारसँ स्त्रीक अनादर प्रकट नहि होइत अछि ?'

जे नारी गृहलक्ष्मी ओ गृहदेवीक रूपमे प्रतिष्ठिता छलि तकरा प्रति मैथिल समाजक पारिवारिक स्तरपर निकृष्ट दृष्टिकोण ओ व्यवहारपर व्यंग्यात्मक चोट करैत लेखक अपन मानसिक व्यथाकेँ एहि रूपेँ व्यक्त करैत छथि— 'दु:खक विषय तँ ई जे गृहकार्य मे कोनो तरहक साधरणो त्रुटि भेलापर ओ ससुर आदि गुरुजन द्वारा राक्षसी, दरिद्रा, हड़ासँखिनी आदि मधुर सम्बोधनसँ सत्कृता होइत अछि। हा ! बड खेदक विषय थिक, जाहि कुलबधूकैं मनुजी लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी शब्द व्यवहृत कैलन्हि अछि, जे कुलाङ्गना लोक-परलोक, दुनूकैं सुधारैवाली थीकि, जकर अस्तित्व पर संसारक अस्तित्व निर्भर अछि, से गृहदेवी, देखि रहल छी, किछु दिनसँ मैथिल समाजमे अनादृता भय पद-दलित आओर बात-बातमे लाञ्छित कैल जा रहलि छथि। आदरक स्थानमे ओ निन्दाक पात्र बुझल जा रहल छथि। अपन एहि तरहक दारुण दुर्दशा देखि हुनक आँखिक नोर सुखाएब कठिन भय गेल छैन्ह।'

सामाजिक स्तर पर नारीवर्ग पर होइत परम्परा-पोषित अत्याचारपर कठोर प्रहार करैत लेखक अपन विचार-धाराकेँ अधोलिखित रूपमे प्रस्तुत करैत छथि—

'जाहिमे समाजमे कन्याकैं शिक्षा देब अनुचित बूझल जाइत अछि, कन्याकैं शारीरिक आओर मानसिक उन्नति करब महापाप बूझल जाइत अछि, अयोग्य पतिक हाथमे दै सर्वदाक हेतु आओर माँटिमे मिला देल जाइत अछि आओर बहिकिरनीओ सँ बढ़ि नीच दशामे राखल जाइत अछि, से समाज कदापि उन्नत नहि भय सकैत अछि। जाहि समाजक कन्या योग्य वर नहि पाबि सतत खिन्न रहैत अछि, जाहि समाजमे बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदि दूषित प्रथा प्रचलित अछि, से समाज सभ्य मण्डली मे कथमपि आदृत नहि भै सकैत अछि आओर ने ओहि समाजक सन्तान देशोन्नतिक

Scanned by CamScanner

पथमे अग्रसर भै सकैत अछि ।'

एहि विचारोत्तेजक निबन्धमे जनार्दनझा'जनसीदन'क सुधारवादी चेतनाक अभिव्यक्ति स्पष्टता, निर्भीकता, प्रखरता ओ मुखरताक संग भेल अछि । परिमार्जित ओ प्रवाहपूर्ण भाषा-शैलीक संग लेखकक वैयक्तिक संवेदनशीलता पाठककेँ अतिशय प्रभावित करैत अछि ।

जनार्दनझाक एही कोटिक एक गोट और निबन्ध प्रकाशित भेल छलनि 'समयानुकूल नियमक पालन' । मिथिलामे वैवाहिक कुरीति ततबा गम्भीर, विस्तृत ओ जड़िआयल रहल अछि जे ओ समस्त समाज-व्यवस्थाकेँ आक्रान्त कयने रहल अछि। ओहूमे एकटा भयंकर पक्ष छल बाल-विवाह ओ अनमेल विवाहक । यद्यपि ई प्रथा भारत-व्यापी छल परन्तु मिथिलामे एकर रूप अतिशय विकृत छल । देशक बहुतो समाज-सुधारक लोकनि एकरा रोकबाक हेतु प्रयत्नशील छलाह । अजमेर निवासी तथा भारतक व्यवस्थापिका-सभाक सदस्य रायसाहेब हरविलास शारदाक अथक प्रयाससँ दिसम्बर १९२९ मे 'बाल-विवाह-निषेध कानून' पास कयल गेल । अतः एकरा 'शारदा बिल' 'शारदा एक्ट' सेहो कहल जाय लागल छल । एहि बिलक विशेषतः मिथिलामे घनघोर विरोध भेल छल । कहल जाइछ जे मिथिलामे बिल पास होयबासँ पूर्व न्यूनतम चारि-पाँच वर्षक हजारो बाल-बोध कन्याक विवाह करा देल गेल छल । परम्परान्ध व्यक्तिक द्वारा शारदा बिलक विरोध भेलहु पर भोलालालदास सदृश बहुतो आधुनिक विचारक बुद्धिजीवी शारदा बिलक समर्थक छलाह । जनार्दनझा सेहो एही कोटिक व्यक्ति छलाह । जनार्दनझा साहित्यकारक रूपमे बाल-विवाह ओ अनमेल विवाहक दुष्परिणाम, विशेषतः विधवा-समस्या ओ नारीक दुर्गति-प्रताड़नाक प्रति अत्यधिक संवेदनशील छलाह । एही संवेदनाक तार्किक अभिव्यक्ति भेल छनि हिनक निबन्ध 'समयानुकूल नियमक पालन'मे ।

लेखक बाल-विवाहक समस्याकेँ रेखांकित करैत कहैत छथि— 'मैथिल समाजमे पाँच वर्षक कन्यासँ लै क दश वर्षक कन्याक विवाह, प्रायः सैकड़े नब्बे होइत अछि। वरक अवस्था अधिकतर २० वर्षसँ ऊपर ५० वर्षक भीतर ।'

एहिसँ उत्पन्न अनेकानेक सामाजिक विकृति ओ ओकर दुष्परिणामसँ सन्तप्त नारी वर्गक दिस समाजक प्रबुद्ध जनक ध्यान लेखक एहि निबन्धक माध्यमसँ आकृष्ट करऽ चाहैत छथि । ओ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे मिथिलामे अतीतकालमे बाल-विवाहक प्रचलनपर विचार करैत आधुनिक कालमे तदुद्भूत दुष्परिणामक परिहारक सन्देश देबाक प्रयास कयलनि अछि । अतः जनार्दनझा शारदा बिलक समर्थन करैत कहैत छथि—

'जाहि समाजमे विधवा-विवाहक प्रचार छलैक वा छैक तकरा अल्प वयस्क बालिकाक विवाह करबहुमे कोनो आपत्ति नहि परंच जाहि समाजमे विधवा-विवाह निषेध अछि ओहि समाजमे बाल-विवाहक प्रथा प्रचलित भेलासँ बाल-विधवाक संख्या बढ़ै

Scanned by CamScanner

लागल और दुःसंगमे पड़ि अनेको विधवाक चरित्र कलङ्कित होमै लागल और समाजक भयसँ भ्रूणहत्या सदृश महापापक अधिकारिणी ओ सब होमै लागलि । एहि तरहक घोर प्रत्यवाय देखि बाल-विधवाक दुर्दशापर दया कय पं. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर विधवा-विवाहकैं शास्त्र-सम्मत सिद्ध कय अपना समाजमे विधवा-विवाह चला देल ; परन्तु जाहि समाजमे विधवा-विवाह एखन धरि दोषावह बूझल जाइ अछि ओहि समाजमे बाल-विवाहक दुष्परिणाम दिश दृष्टि देलासँ ककर हृदय सन्तप्त नहि होएतैक ? बाल-विवाहसँ जे नाना प्रकारक हानि भै रहल अछि ओहि दिश लक्ष्य राखिए कय शारदा बिलक निर्माण भेल और जे बहुमतसँ पास भय गेल । थोड़ वयसमे कन्या-बालकक विवाह भेलासँ जे हानि भै रहल अछि से प्रत्यक्ष देखनहुँ कतौक अदूरदर्शी सनातन धर्मध्वजी लोकनि एहि समाज-सुधारक और आयुर्बल-बर्द्धक बिलक स्वीकृति पर हाहाकार मचा रहल छथि तथा वर्त्तमान समयक हेतु महा अनर्थकारी बाल-विवाहक हृदयसँ अनुमोदन कै रहल छथि और शारदा बिलक समर्थन कैनिहार व्यक्ति सब पर वचन-पुष्पक वर्षा कै रहल छथि । सहनहि कुशल । हुनका लोकनि जँ पूर्वापर समय पर विचार कय प्रकृति प्रवाह दिश ध्यान दितथि तँ सहसा एहि बिलक स्वीकृति पर एतेक क्रोध वा खेद प्रकट नहि करितथि । जाहि कालक बाल-विवाहक प्रथा लै क ओ लोकनि शारदा बिलकैं धर्म विरुद्ध कहि रहल छथि हुनका ओहि कालक स्थितिसँ एहि कालक स्थितिकैं सर्वप्रथम मिलान करब उचित छैन्ह ।'

एहि ठाम लक्ष्य करबाक थिक जे लेखक जाहि रूपमे बाल-विधवाक कारुण्यपूर्ण स्थितिक वर्णन कयलनि अछि तथा ईश्वरचनद्र विद्यासागरक विधवा-विवाहकेँ शास्त्र-सम्मत सिद्ध कऽ ओकर प्रचलन करबाक कृत्यकेँ कृतज्ञता पूर्वक उल्लेख कयलनि अछि ताहिसँ परोक्ष रूपेँ विधवा-विवाहक प्रति लेखकक हार्दिक समर्थने व्यंजित होइत अछि।

समाजिक सन्दर्भसँ फराक जनार्दनझाक एक गोट निबन्ध छनि 'मिथिला-महत्त्व' । ई निवन्ध विभिन्न गद्य-ग्रन्थमे उद्धृत कयल जाइत रहल अछि । मिथिलावासी, मैथिलीभाषी ओ मैथिल होयबाक कारणे एकर गौरवबोध सहज रूपसँ जनार्दनझाक मन, वचन ओ कर्ममे गहल-गसल छलनि । मिथिलाक गौरवमय इतिहासक प्रति यदि हुनक शीश सतत श्रद्धानत ओ गर्वसँ उन्नत रहैत छलनि तँ मिथिलाक प्रति कोनो प्रकारक अवमानना वा निर्मूल आक्षेपसँ प्रतिक्रियाशील भऽ उठैत छलाह । अतः कोनहु मैथिलहि द्वारा मिथिला-मैथिलीक गरिमा ओ अस्तित्वपर कयल गेल आक्षेपक प्रत्युत्तरमे 'मिथिला-महत्त्व' निबन्धक रचना भेल छल । एहि निबन्धमे पुराण ओ इतिहासक मिथिला विषयक विभिन्न घटना, प्रेरक प्रसंग ओ माहात्म्यक वर्णन करैत मिथिलाक महत्त्व ओ अस्तित्व प्रमाणित कयल गेल अछि । मिथिला- मैथिलीक विरोधमे अनर्गल प्रलाप कयनिहारकैँ तोड़ल जबाब दैत लेखक कहैत छथि—'मिथिलाक अस्तित्व और महत्त्वक उल्लेख

Scanned by CamScanner

पुराणादिमे पौलहुं सन्ता मिथिला, मिथिलाभाषा और मैथिल जातिक अस्तित्वमे सन्देह करब ताहूमे मैथिल कहैबाक दाबी रखनिहार व्यक्तिक हेतु केहन घृणित, कलङ्क और अनर्गल विषय थिक। ई कहबाक प्रयोजन नहिं, जे मिथिलादेशक इतिहाससँ परिचित छथि, जानि सकै छथि। जे संसारक अस्तित्वकैं नहिं मानैत होथि, जे अपनाकैं कुकुर-बिलाड़िक आत्मासँ भिन्नकँ नहिं बुझैत होथि, हुनक मिथिलहुंक अस्तित्व नहिं मानब कोनहुं अंशमे तादृश अनर्गल नहिं जतय अन्यदेशीय अपन दूषित देशहुं कैं निर्दूषित करबाक पूर्ण प्रयत्न कै रहल अछि, ततय मैथिल सन्तान जँ चिरप्रशंसित, सर्वसम्मानित मिथिलाक प्रति कुठाराघात करय तँ ई अवश्य अधःपतनक लक्षण थिक।'

निबन्धक अन्तमे निबन्धकार अपन विचारक सारांश ओ सन्देश स्वरचित पद्यमे दैत छथि जाहिसँ निबन्धक समापन होइत अछि।

उपर्युक्त निबन्ध सबमे जनार्दनझाक स्वरूप एकटा विचारक एवं समाज-सुधारकक प्रकट होइत अछि। विषयोक चयन तेहन अछि जाहिमे हुनक साहित्यकार पक्षक अभिव्यक्तिक अवसरे बड़ अल्प भेटैत छनि। परन्तु 'सामयिक वसन्त वर्णन' शीर्षक निबन्ध साहित्यिक ओ प्रकृति - वर्णन-परक अछि। निबन्ध आरम्भ होइत अछि काव्य-शास्त्रीय शब्दावलीमे वसन्त ऋतुक प्रशंसासँ—

'वियोगिनी वा वियोगीकैँ छोड़ि ई वसन्त ककरा सुखद नहि? शृंगार रसक उद्दीप्तिवर्द्धक उद्दीपन विभावक सर्वश्रेष्ठ सामग्री कुसुमाकरे अछि। सत्कवि लोकनि कैँ स्वराज्यक सुख वसन्त ऋतु लै कऽ।'

आगाँ संस्कृत ओ ब्रजभाषामे वर्णित सरस वसन्त-प्रसंगक उद्धरण दैत वसन्तक सौन्दर्यकैँ उद्घाटित कयल गेल अछि। परन्तु वसन्तक ई मादक सौन्दर्य समसामयिक परिस्थितिमे उन्मत्तता नहि, उन्मनता उत्पन्न करैत अछि। अतीत कालक वसन्त-वर्णनक सरसता समसामयिक वसन्त ऋतुमे कहाँ? वर्त्तमानकालक कठोर यथार्थ वसन्तक सरसताक अनुभूति कहाँ होमऽ दैत छैक! लेखक स्वयं समकालिक परिप्रेक्ष्यमे वसन्तकैँ कोन रूपमे देखलनि तकर अभिव्यक्ति निबन्धान्तक स्वरचित पाँच गोट दोहामे कयलनि अछि जाहिमे वसन्तक मलयानिलक व्याजेँ देशमे सरकार द्वारा चलाओल असुविधाजनक राशन-व्यवस्थापर व्यंग्य, कांग्रेसक राजनीतिक शक्ति-प्राप्ति, भारतक आर्त्त स्थिति ओ देशक असंख्य अन्न-वस्त्र- विहीन, कातर जनसमुदाय दिस संकेत करैत छथि—

लहि रैशन ऋतुराजसँ रत्ती तीन अमंद।
मलयानिल नेपाल दिस चलल क्षुधित गतिमंद॥
तजल न चंदन तरु पवन कैल गेल तैँ बंद।
कांग्रेस देल विमुक्त कय भयबस आबथि मंद॥
अति स्वतंत्रगति वायु कैं के अछि रोकनिहार।

Scanned by CamScanner

आबि रहल अछि मंदगति लै सुगंध सिरभार ।।
भारतकैँ आरत निरखि मंदमंद गति वात ।
पशुपतिसँ देशक दशा कहै चलल उठि प्रात ।।
अर्ध दिगम्बर वेषमे अछि देशक बहु लोक ।
ई लखि मारुत मंदगति भेल पाबि अति शोक ।।

एहि ठाम 'अति स्वतंत्र गति वायुकैं के अछि रोकनिहार' सन उक्तिमे भारतक स्वातन्त्र्य-चेतनाक अव्याहत प्रवाहक भाव व्यंजित होइत अछि । एही प्रकारक भाव-राशिक कारणेँ निबन्धक शीर्षकमे 'सामयिक' विशेषण सार्थक भऽ जाइत अछि ।

जीवनक अन्तिम चरण, वयसक चरमावस्थामे जनार्दनझा'जनसीदन' सांसारिकतासँ निवृत्त ओ आध्यात्मिकता दिस प्रवृत्त भऽ गेल छलाह । एही मानसिकतामे गहन विचार ओ दार्शनिक भावसँ परिपूर्ण 'प्रेम' अथवा 'प्रेम-विवेचन' शीर्षक निबन्धक रचना कयने छलाह । अतः आत्मबोध ओ चिरन्तन प्रेमक अभिव्यंजन अत्यन्त मर्मस्पर्शी भऽ उठल छनि । निबन्धक आरम्भ होइत अछि स्वरचित चौपाइमे प्रेमक स्वरूप-निरूपणसँ—

क्यो क्यो जानथि प्रेमक मर्म ।
अछि ई परम अलौकिक धर्म ।।
प्रेम पवित्र सुमंगल धाम ।
प्रेमी प्रेम करथि निष्काम ।।

आगाँ प्रेमक विश्लेषण करैत लेखक मन्तव्य दैत छथि जे साधारणतः कोनो व्यक्ति वा वस्तुक प्रति आसक्ति, इच्छा, आकांक्षा वा अभिलाषाकैँ प्रेम कहि देल जाइत अछि । किन्तु निबन्धकारक विचारमे 'ओ प्रेम स्वार्थ-साधन निमित्तक भेल तँ निरवधिक नहि सावधिक थिक । जतय प्रेमी प्रेमास्पद व्यक्तिसँ सुख पैबाक अभिलाषा रखैत हो ओ प्रेम नहि किन्तु काम-मूलक क्षणिक अनुराग थिक ।'

एहिमे ईप्सित सुख नहि भेटने ओ भाव उपेक्षा, क्रोध, प्रतिशोध वा शत्रुतामे परिणत भऽ जाइछ । यथार्थ प्रेमक एहन परिणति कथमपि नहि भऽ सकैत अछि । एहन प्रेमकैँ निबन्धकार 'इच्छा' वा 'अभिलाषा' कहब समीचीन मानैत छथि । अतः यदि प्रेमहि शब्दक प्रयोग कयल जाय तँ ई दुइ कोटिक होइत अछि—काम-जनित वा सकाम प्रेम ओ निष्काम वा निर्हेतुक प्रेम । निबन्धकारहिक शब्दमे 'सकाम प्रेम चाहैत अछि अनका द्वारा अपना सुख भेटओ आओर निष्काम प्रेम चाहैत अछि अपना द्वारा प्रेमास्पद व्यक्ति कैँ सुख भेटौन्ह ।'

एहि प्रकारक प्रेमक सर्वश्रेष्ठ निदर्शन भेटैत अछि ब्रज-वासिनी गोपी लोकनिमे । 'ब्रजवनितागण एहि परम पवित्र प्रेम-सुखक सौभाग्य प्राप्त कैने छलीहि । ...अपन सर्वस्व

Scanned by CamScanner

श्रीकृष्ण-रूप-माधुरी पर समर्पित कए देने छलीहि। अपन तन, मन, प्राण, बुद्धि, रूप, यौवन, जीवन आदि सभ किछु हुनका सुखी करबाक हेतु अर्पण कए देने छलीहि। जाहि व्यवहार वा आचरणसँ प्रेमास्पद श्रीकृष्ण सुखी रहथि, तदर्थ ओ सभ सतत उद्यत रहैत छलीहि। श्रीकृष्णकैँ सुखी देखि हुनका सभकैँ परम सुखक अनुभव होइत छलैन्ह। किन्तु प्रेमास्पद द्वारा विषय-सुख-प्राप्तिक दिस ककरो लक्ष्य नहि छलैन्ह।'

निबन्धकार अपन मतक समर्थनमे श्रीमद्‌भागवत, चैतन्य-चरितामृत ओ सूरदासक प्रासंगिक उद्धरण दैत प्रेमक उदात्त ओ चिरन्तन स्वरूपक प्रतिपादन करैत छथि।

जनसीदनजीक एहि निबन्धमे भाषा-शैली विषयानुरूपक गम्भीर होइतो पारिभाषिक शब्दावलीक अल्पतम प्रयोग द्वारा प्रतिपाद्य विषयकैँ ताहि रूपेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि जे सामान्य पाठककैँ विषय-बोधमे कोनहुँ प्रकारक अवरोध ठाढ़ नहि होइत छैक। निबन्धमे आत्मनिष्ठताक संग विषयक शाश्वत स्वरूप विशेषरूपसँ निखरल अछि जाहिसँ कतबो कालातीत भेलहु पर निबन्धक पुरनयबाक सम्भावना नहि।

जनार्दनझाक आरम्भिक निबन्धक गद्यमे आलंकारिकताक प्रचुर प्रयोग देखल जाइत अछि। अपन पहिल निबन्ध 'मैथिल समाजसँ निवेदन'मे रूपकालंकारक झड़ी लगा देने छथि। ओकर किछु अंश एहि दृष्टिएँ द्रष्टव्य अछि, यथा—

'वैमनस्य विषलता सभक हृदयमेँ मतभेद रूपी जलकणसँ संसिक्त कै रहलि अछि।'

'सोपहासनिन्दारूपी पान-सुपारीकैँ लोक मुखरञ्जनक मुख्य सामग्री मानि पूर्ण रूपैँ सेवन कै रहल अछि।'

'हिंसा राक्षसी सभैक हृदयक रक्तपान कै दिन-२ पुष्टता प्राप्त कै रहलि अछि।'

'ईर्ष्या पिशाचिनी घर घरमेँ सभक (अधिकतया स्त्रीगणक) माथ चढ़ि जे नहिँ बजबाक से बका रहलि अछि।'

'दम्भ हाथी बनि अपना दुनू दाँत मध्य सम्पूर्ण मैथिल-समाजकैँ दबौने जाइत अछि।'

'दारिद्र्य राहु मिथिलाकैँ अर्धाधिक ग्रास कै सर्वग्रास करै पर लागल अछि।'

'कपट रूपी आमिलक प्रिय व्यक्तिमात्र भै रहल छथि। स्वार्थताक भाङ घर घरमेँ छानल जाय रहल अछि।' इत्यादि।

परन्तु परवर्ती कालक हिनक निबन्धक गद्य क्रमशः अलंकारक व्यामोहसँ मुक्त होइत गेल। पाछाँ जनार्दनझा सहज ओ सरल गद्यमे अपन कथ्यकैँ प्रस्तुत करऽ लगलाह। परन्तु हिनक उपन्यास ओ कथाक गद्यसँ निबन्धक गद्यमे बड़ पार्थक्य अछि। उपन्यासमे अत्यन्त छोट छोट सरल वाक्य, वार्त्तालापक स्वाभाविक भाषा, उपलक्षण ओ लोकोक्तिक सहज प्रयोग देखल जाइत अछि। परन्तु निबन्धक गद्यमे सरल वाक्यक प्रयोग बड़

Scanned by CamScanner

अल्प अछि। विशेषतः पैघ-पैघ मिश्रवाक्यक प्रति लेखकक रुझान देखि पड़ैत अछि। परवर्त्ती कतिपय निबन्धमे तँ गद्यक संगहि पद्यहुक प्रयोग कऽ दैत छथि।

जनार्दनझाक निबन्ध सभमे सामान्यतः वस्तुनिष्ठता आ समसामयिकता कोनो ने कोनो रूपमे सन्निविष्ट रहितहि छनि। आलोचनात्मक दृष्टिकोणक संगहि प्रमाण-पुरस्सर तार्किक प्रतिपादन हिनक निबन्धक वैशिष्ट्य थिकनि।

Scanned by CamScanner

काव्य

जनार्दनझा'जनसीदन'क प्रसिद्धि कवि रूपमे विशेष छलनि । ओ आशु कवि छलाह। आरम्भिके कालसँ हुनक अभिरुचि समस्या-पूर्त्तिक पद्य-रचनामे अधिक छलनि । किन्तु हुनक ओ समस्या-पूर्त्तिक पद्य सब कतहु सुरक्षित नहि रहि सकलनि । तथापि कोनो कोनो कविसम्मेलनक प्रकाशित विवरण सबमे हुनक समस्या-पूर्त्ति विषयक पद्य सब उद्धरण रूपमे भेटि जाइत अछि। १९३६मे मुजफ्फरपुरमे मैथिली साहित्य-परिषद्क अधिवेशनक अवसर पर एक गोट विराट कविसम्मेलनक आयोजन भेल छल। ओहिमे ओहि कालक मैथिलीक बहुतो विशिष्ट कवि सब तथा एहन नवीनो कवि लोकनि भाग लेने छलाह जे आगाँ आबि मैथिली काव्य-जगत्मे मूर्धन्य कविक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। ओहि अवसरपर 'विराजथु', 'नैहरकैं पुनि देखू', 'मोतिक कण झहरि गेल' इत्यादि अनेक समस्या सब देल गेल छल जकर सद्यःपूर्त्ति कऽ कवि लोकनि पाठ कयने छलाह । अच्युतानन्ददत्त, काशीनाथठाकुर, पुलकितलालदास मधुर, जनार्दनझा'जनसीदन' ओ श्रीवल्लभझाक सदृश वरिष्ठ कविक समस्यापूर्त्तिकैं उत्तम रचना मानल गेल छल। जनार्दनझा'जनसीदन'क 'नैहरकैं पुनि देखू' समस्याक पूर्त्ति निम्नरूपक छलनि—

की छल नैहर देश अहाँक सुखी, गुनआगर से अवरेखू ।
गौरव सौं जनसीदन जे छल भूषित विश्व-प्रशंसित लेखू ।।
से मिथिला शिथिलाक्रम सौं निज अक्षर साहित हीन परेखू ।
की चुप बैसलि छी एक बेरि दयामयि ! नैहरकैं पुनि देखू ।।

जनार्दनझा आरम्भेसँ कवि रूपमे यशस्वी छलाह तथा जीवनक अन्तिम चारि दशकमे हुनक कवि ओ वरिष्ठ साहित्यकारक रूपमे अतिशय आदर ओ सम्मान कयल जाइत रहलनि । कोनहु साहित्यिक आयोजन हुनक उपस्थिति मात्रसँ गौरवान्वित भऽ उठैत छल। ओ अनेक अवसरपर आयोजित ऐतिहासिक महत्त्वक विराट कवि सम्मेलन सभक सभापतित्व सेहो कयने छलाह ।

महान् साहित्य-सम्पोषक आचार्य रामलोचनशरण द्वारा स्थापित विद्यापति-प्रेस ओ

Scanned by CamScanner

पुस्तक-भण्डार नामक प्रकाशन-संस्थाक लहेरियासराय (दरभंगा)मे १९४२मे २३-२४ जूनकँ रजत-जयन्ती समारोह वृहत् स्तरपर मनाओल गेल छल जाहिमे ओहि समयक मिथिला, बिहार ओ भारतक विशिष्ट पुरुष ओ प्रख्यात साहित्यकार गणक पदार्पण वा सहभागिता भेल छल। ओहि अवसरपर एक विराट कविसम्मेलन भेल छल जाहिमे बिहारक प्रायः सब प्रमुख साहित्य-सेवी ओ कवि लोकनि सम्मिलित भेल छलाह। ओहि कविसम्मेलनक सभापतित्व कैनिहार छलाह वयोवृद्ध कवि जनार्दनझा'जनसीदन'।

तहिना १९४६मे मधुबनीमे मैथिली-साहित्य-परिषद्क दशम अधिवेशनक अवसर पर वृहत् मैथिली कविसम्मेलन आयोजित भेल छल। ओहि कविसम्मेलनक सभापतिक रूपमे जनार्दनझाक पद्यमय भाषण भेल छल जाहिमे ओ मैथिलीक युवा साहित्यकारकँ सत्साहित्य-सर्जन हेतु प्रोत्साहनपूर्वक आह्वान कयने छलाह।

जनसीदनजी अपना समयक साहित्यिक समाजमे कवि रूपमे प्रतिष्ठित स्थान रखितो मैथिलीमे कोनो महाकाव्य वा खण्डकाव्यक रचना नहि कऽ सकलाह। जे काव्य रचलनि से मुक्तकहिक रूपमे। अवश्ये एहिमे कतोक कविता दीर्घ आकारक वा कथाकाव्य कोटिक अछि जाहिमे यत्किंचित् प्रबन्धात्मकताक छाया देखि पड़ैत अछि।

ब्रजभाषा ओ हिन्दीमे हिनक अनेक गोट काव्य-संग्रह सब प्रकाशित भेल छलनि। परन्तु मैथिलीमे एकहि गोट काव्य-संग्रह 'मैथिली नीति-पद्यावली' नामसँ प्रकाशित भऽ सकलनि। शेष कविता पत्र-पत्रिका सबमे प्रकाशित रूपमे विकीर्ण छनि किंवा अप्रकाशित पाण्डुलिपिक रूपमे हिनक उत्तराधिकारीक लगमे पड़ल छनि। हिनक कतोक पद्य सब पाठ्यग्रन्थक पद्य-ग्रन्थ सबमे संकलित होइत रहलनि।

वर्ण्यवस्तुक दृष्टिएँ जनार्दनझा'जनसीदन'क कविता सबकँ निम्न प्रकारक पाँच वर्गमे राखल जा सकैत अछि :

१. भक्ति-भाव विषयक
२. नीति-उपदेश विषयक
३. भूमि-भाषा विषयक
४. समाज-सुधार विषयक
५. सामाजिक व्यंग्य ओ देशदशा विषयक

१. भक्ति-भाव विषयक

जनसीदनजी प्रकृत्या आस्तिक व्यक्ति छलाह। अतः हुनक कवितामे आस्तिकता एकटा सामान्य प्रवृत्तिक रूपमे देखल जाइत अछि अवश्य, किन्तु भक्ति-भाव, अन्य समकालिक कवि सदृश हुनक कविताक उल्लेख्य धारा नहि बनि सकल। कोनो कोनो रचनाक आरम्भमे, विषय-वर्णनमे प्रसंगतः वा क्वचित् स्वतन्त्रो कवितामे, तथापि अपन भक्ति-भावना अभिव्यक्त करैत छथि। 'मैथिली-नीति पद्यावली'क मंगलाचरणमे कृष्णक

Scanned by CamScanner

स्तुति कयल गेल अछि जाहिमे कृष्णक प्रति कविक निवेदन अछि—

गीता-ज्ञान विधायक नायक अनुपम नन्द किशोर।
बसथु निरन्तर हृदय बीचमे प्रेम-रसिक चितचोर ॥

एहि संग्रहक पहिल कविता अछि 'ईश्वर भक्ति'। एहिमे कवि मनुष्यक सबसँ बढ़ि कर्त्तव्य 'हरिपद-अनुराग' ओ 'भगवद्-भजन' कहैत छथि। हुनका विचारेँ—

मानव-जन्म सफल निज बूझब तैखन जीवन धन्य।
उपजए हृदय बीच निर्हेतुक हरिपद भक्ति अनन्य ॥

'मंगल कामना' शीर्षक कविताक आरम्भमे जनकनन्दिनी सीताक स्तुति एहि रूपेँ कयने छथि—

जय जगदीश्वरि जनकनन्दिनी असुरनिकन्दिनि देवी।
इन्द्रादिक वृन्दारक गण छथि जनिक चरणयुग सेवी ॥

'दुर्गाक स्तुति' शीर्षक कवितामे, दुर्गा-सप्तशतीमे वर्णित देवीक कृत्य ओ महिमाक वर्णन सूत्र रूपमे कयल गेल अछि।

२. नीति-उपदेश विषयक

आचार्य मम्मट छओ गोट काव्य-प्रयोजन कहने छथि, ताहिमे दुइ गोट प्रयोजन व्यवहार-शिक्षा ओ कान्तासम्मित उपदेश सेहो अछि। से एहि दुहू प्रयोजनक सम्पोषक नीति-उपदेश विषयक काव्य थिक जनसीदनजी द्वारा विरचित 'मैथिली नीति पद्यावली'। एहि संग्रहक कविता सब दीर्घकालिक रचना-प्रक्रियाक परिणाम थिक। 'मैथिली नीति पद्यावली'क कविता सभक रचना १९३७ इ०सँ प्रायः पूर्वहि सम्पन्न भऽ गेल छल। एहि धारणाक आधार ई जे 'भारती' पत्रिकाक आठम अंक (सितम्बर, १९३७)सँ ई संग्रह 'मैथिली सुभाषित निबन्ध'क शीर्षकसँ प्रकाशित होयब आरम्भ भेल छल। एहि अंकमे मंगल-पद्य, 'सुयोग्य राजा'क चारि पद्य 'इत्यादि' कहैत, 'सज्जन वर्णन'क दुइ गोट पद्य ओ 'दुष्टजन-वर्णन'क एक गोट पद्य इत्यादि कहि प्रकाशित भेल छल। 'भारती'मे पुनः एहिसँ आगाँ प्रकाशित नहि भऽ सकल। पुनः एक वर्ष बाद मिथिलामोदक चौबीसम उद्‌गार (नवीनक्रम, आश्विन, १९३८)मे 'मैथिली सुभाषित निबन्ध'हिक शीर्षकसँ प्रकाशन भेल जाहिमे 'मंगलाचरण', 'ईश्वर भक्ति', 'सुयोग्य राजा' ओ 'अयोग्य राजा'क किछु पद्य क्रमशः प्रकाशनक सूचनाक संग प्रकाशित भेल। मिथिलामोदक उद्‌गार २७ (माघ, १९३९)मे शीर्षक परिवर्त्तित भऽ गेल। से, 'मैथिली नीति-निबन्ध' शीर्षकक अन्तर्गत पूर्व अंकक आंशिक कविता 'अयोग्य राजा'क शेष पद्य, 'सुप्रजा', 'दुष्प्रजा', 'सज्जन', 'दुर्जन', 'पण्डित', तथा 'मूर्ख' शीर्षक पद्य प्रकाशित भेल छल। एहिठाम क्रमशः प्रकाशित होइत रहबाक सूचना तँ अछि किन्तु आगाँ प्रकाशित भेल नहि।

Scanned by CamScanner

जखन पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ विश्वविद्यालयक पाठ्यचर्याक विषयक रूपमे स्वीकृति भेटल, तँ तदर्थ पाठ्य-ग्रन्थक रूपमे प्रायः १९४१-४२मे पुस्तक-भण्डार, लहेरिया खरायसँ ई काव्य-संग्रह सम्पूर्ण रूपमे प्रकाशित भऽ सकल। संग्रहक अन्तमे कवि एहि संग्रहक नाम 'लघु नीति निबन्ध' कहने छथि, मुदा अन्ततः संग्रहक नाम 'मैथिली नीति पद्यावली' निर्धारित भेल।

काव्य-संग्रहक प्रयोजनक सम्बन्धमे ग्रन्थान्तमे अपन विचार प्रकट कयने छथि—

बिन शिक्षा पौने नहिं जानथि मानव नीति अनीति।
की अधर्म की धर्म ककर थिक की शुभ रीति कुरीति॥
तैं छात्रक उपकार हेतु हम, ई लघु नीति निबन्ध।
लिखल सुधारि लेथि सज्जनगण हो जे त्रुटि अनुबन्ध॥

'मैथिली नीति पद्यावली'क ओहन कविता जे पूर्वमे 'भारती' अथवा 'मिथिलामोद'मे अथवा दुनू ठाम प्रकाशित भऽ चुकल छल तकर सभक तुलनात्मक पाठालोचन कयला पर देखल जाइत अछि जे कवि पद-पाठ, चरण, चरणक्रम इत्यादिमे स्वैच्छिक परिवर्त्तन करैत रहलाह अछि। किछु कवितामे अभिनव चरण सेहो जोड़ि देल गेल अछि। एहि सब पर विस्तारसँ विचार कऽ ओकर गुण-दोषक सम्बन्धमे विशेष कहबाक एतऽ अवकाश नहि अछि।

'मैथिली नीति पद्यावली'मे कुल छेयालिस गोट शीर्षक-बद्ध कविता संकलित अछि। आरम्भक कतिपय कविताकेँ छोड़ि अवशिष्ट समस्त कवितामे, प्रत्येकमे पाँच-पाँच गोट चतुष्पदी अछि। अतः सब मिलाय २२६ गोट चतुष्पदी अछि। सोलह गोट युग्मक (अर्थात् बत्तिस गोट) कवितामे व्यक्ति, परिवार ओ समाजक वर्गीय चरित्रक उत्तम ओ अधम, ग्राह्य ओ त्याज्य, श्रेय ओ हेय, अनुकरणीय ओ तिरस्करणीय स्वरूपक समानान्तर वर्णन कयल गेल अछि। प्रत्येक युग्मक कवितामे पहिलमे आदर्श ओ ग्राह्य पक्षक वर्णन अछि, तँ लगले दोसर कवितामे पूर्वपक्षक विपरीत यथार्थ परन्तु त्याज्य पक्षक सेहो वर्णन कऽ देल गेल अछि। एहि तरहेँ देखैत छी जे सुयोग्य राजा-अयोग्य राजा, सुप्रजा-दुष्प्रजा, सज्जन-दुर्ज्जन, पण्डित-मूर्ख, साधु-असाधु, सद्गुरु-असद्गुरु, सुशिष्य-कुशिष्य, सेव्य स्वामी-असेव्य स्वामी, सुसेवक-कुसेवक, योग्य पति-अयोग्य पति, योग्य पत्नी-अयोग्य पत्नी, योग्य पिता-अयोग्य पिता, सुपुत्र-कुपुत्र, सुमित्र-कुमित्र, मितव्यय-अमितव्यय, सुबुद्धि-कुबुद्धिक समानान्तर परन्तु विपरीत धर्मी स्वरूपक विवरण दऽ अन्वय ओ व्यतिरेकसँ नीति-उपदेशक शिक्षा देबाक प्रयत्न कयल गेल अछि। अर्थात् प्राचीन उक्तिकेँ प्रकारान्तरसँ स्मरण कराओल गेल अछि जे 'रामादिवत् आचरणीय, नहि रावणादिवत्'।

आलोच्य काव्य-संग्रहमे कवि कोनो वर्गक आदर्श ओ श्रेयस् रूपक वर्णनमे यदि

Scanned by CamScanner

शास्त्रीय परम्पराक अनुसरण करैत देखल जाइत छथि तँ ओकर विपरीत हेय रूपक वर्णनमे परम्परित विचारक संगहि अनुभूत यथार्थकेँ सेहो कुशलतापूर्वक समाहित कऽ दैत छथि, जाहिसँ कविक सामाजिक यथार्थक प्रति सजगताक परिचय भेटैत अछि। उदाहरणार्थ दुष्प्रजा-वर्णनमे पारम्परिक अवधारणाक संगहि अभिनव सत्य सेहो कहैत छथि—

आनक वस्तु नीक जँ देखथि लेबक करथि उपाय ।
खेतक आड़ि तोड़ि अपनामे आनक लेथि मिलाय ।।

सेवा ओ समर्पण साधुक चरित्रक वैशिष्ट्य थिक । परोपकारे ओकर जीवनक लक्ष्य रहैछ । एहि हेतु ओ अपन सब सुख-स्वार्थक परित्याग कऽ दैत अछि—

दीन अनाथ जनक सेवामे करथि समर्पित देह ।
आनक दुःख निवारण कारण त्यागथि धन जन गेह ।।

दोसर दिस असाधुक चरित्र केहन होइछ, तँ 'कपट रूप धारण कए वञ्चक विहरथि विषयानन्द' । ओकर कपट रूपक वर्णनमे कविक अनुभूत यथार्थ एहि रूपमे अभिव्यक्त भेल अछि—

तुम्बा दहिन हाथमे झोड़ा बाम कान्ह पर लेथि ।
आसन चिहुटा आदि वस्तु कैं स्थान काँखतर देथि ।।
चलथि याचना हेतु गृहस्थक घर बनि सिद्ध फकीर ।
देथि विभूति कहथि मनवाञ्छित सफल हैत धरु धीर ।।

एहि वर्णन सबमे यत्र-तत्र कविक समाज-सुधारक दृष्टिकोण सेहो झलकि उठैत अछि । योग्य पिताक गुणमे बेटा-बेटी दुहूक प्रति समदृष्टि ओ समान उत्तरदायित्त्वक भाव रहब आवश्यक बुझैत कवि कहैत छथि —

सन्तानक शिक्षा-रक्षापर हो न विभेद-ज्ञान ।
की कन्या की पुत्र दुहू पर राखथि दृष्टि समान ।।

दोसर दिस अयोग्य पिताक आलोचना करैत कहैत छथि—

'शिक्षा देथि न निज सन्ततिकैँ करथि समय अभिघात ।'

अथवा

'बाल्य अवस्थहिमे बच्चाकैं देथि विवाह कराय ।'

उपर्युक्त सद्-असद् व्यंजक युग्मक कवितासँ भिन्न बारह गोट एहन कविता अछि जकर वर्ण्य विषय वस्तुपरक नहि भऽ कऽ भावपरक ओ अपना-अपनामे स्वतन्त्र अछि । 'अहङ्कार' ओ 'धन' शीर्षक कवितासँ इतर कविता सब विषयक दृष्टिएँ अत्यन्त महत्त्वक अछि । कोनहु धर्मक आधर-भूत तत्त्व, देश-काल-निरपेक्ष, मानवमात्रक हेतु आत्मस्थ करबाक योग्य शाश्वत सद्गुण—क्षमा, अक्रोध, सत्य, शौच, सन्तोष, दया, धैर्य, विद्या,

Scanned by CamScanner

विनय ओ धर्ममे प्रत्येककेँ फराक-फराक कविताक मुख्य वर्ण्यवस्तु बनाय ओकर महत्ता प्रतिपादित कयल गेल अछि। एहि सब विषयपर भारतीय वाङ्मयमे पारम्परिक रूपमे ततबा किछु गम्भीर ओ सूक्ष्म चिन्तन सब देल गेल अछि जे आबक कविकेँ अभिनव कहबाक हेतु किछु उच्छिष्ट नहि रहि गेल छनि। तथापि आलोच्य कविताक विशेषता थिक विषयकेँ सरलतम रूपमे पाठककेँ हृदयंगम करा देब। क्वचित्, कवि कोनो प्रतीक, उपमान वा निदर्शनक प्रयोग करितहुँ छथि तँ सेहो सर्वथा स्पष्ट रहैत अछि, जेना दुर्जनकेँ सर्पसँ अधिक विषी कहैत छथि तँ दुर्जनक खलत्वक गुरुता ओ भयावहताक बोध सहज रूपमे भऽ जाइत अछि—

साँपहु सँ बढ़ि विषी दुष्ट थिक वचन सत्य ई मानू।
सर्पक डसने एक कदाचित मृत ह्वै अछि ई जानू ॥
किन्तु डसए जँ खल श्रुति एकक सभहिक खीचै प्राण।
मन्त्र-तन्त्र उपचार अनेको कैनहु नहि हो त्राण ।

अहङ्कारक मादकता मदिरासँ अधिक कोना होइछ, तकरा स्पष्ट करैत कवि कहैत छथि—

जे मादकता मदमे अछि से मदिरामे न रहैछ,
मद्यक नशा उतरि जाइछ अभिमानक नित्य बढ़ैछ॥

क्षमाकेँ शस्त्रसँ उपमित करैत ओकर विशेषताक वर्णन करबाक क्रममे दुष्टक विरोधकेँ अग्नि ओ क्षमाकेँ 'तृण विरहित धरती' एवं 'प्रवहमान नदी'सँ उपमित करैत छथि—

क्षमा-शस्त्रधारीकेँ की कए सकथि दुष्ट दुर्द्दान्त ।
तृण विरहित धरतीमे खसने अग्नि स्वयं हो शान्त ॥
जतय प्रवाहित क्षमा-नदी अछि ततय विरोधक आगि।
की कदापि भए सकै प्रज्वलित जाए रसातल भागि ॥

कहबाक आशय ई जे 'मैथिली नीति पद्यावली'मे अलंकारक प्रयोग बड़ अल्प भेल अछि। सहज भावसँ अलंकारक प्रयोग भेलो अछि तँ ओ अर्थबोधमे बाधक नहि, साधके सिद्ध होइत अछि।

'मैथिली नीति पद्यावाली'मे कविक कतोक एहन उक्ति सब देखि पड़ैछ जे सूक्ति कोटिमे परिगणनीय भऽ सकैत अछि। एहि उक्ति सबमे एहन शाश्वत सत्यक अभिव्यंजना भेल अछि जे कोनहु काल, कोनहु देश ओ कोनहु समाजमे अव्यर्थ मानल जा सकैछ। एहन सूक्तिमे सँ किछु एतऽ उद्धृत कऽ देब अनुपयुक्त नहि होयत—

'सेवा वृत्ति कठिन यद्यपि ई थिक तरुआरिक धार ।'
'नहि सौन्दर्य चिरस्थायी थिक अछि से क्षणिक अनूप ।'

Scanned by CamScanner

'विद्या विनय विवेक बुद्धि बल बढ़ए बापहिक धर्म ।'
'नीकक संग नीक हो नीचक संगति नीच स्वभाव ।'
'जे किछु आय अपन हो से लए करी नित्य निर्वाह ।'
'ततबे पैर पसारी जतबे अपन क्षेत्र हो नाम ।'
'बुद्धिमान नरकैं जगमे अछि दुर्लभ कोन पदार्थ ।'
'बुद्धि बिगड़ने मन बिगड़ै अछि चञ्चल अबल अशक्त ।'
'कए न सकथि उपकार अपन, से आनक की करताह ।'
'विनय विना गुण अछि सभ तेहने जेहन लवण विन व्यंजन ।'
'जे कैने तन मन जनकैं हो सुख से धर्म समृद्ध ।' इत्यादि

३. भूमि-भाषा विषयक

जनार्दनझा'जनसीदन'क हृदयमे अपन मातृभूमि मिथिला ओ मातृभाषा मैथिलीक प्रति अजस्र श्रद्धा छलनि । ओ अपन कतोक कवितामे मिथिलाक महिमामय अतीत, गौरवमय इतिहास, अद्वितीय सारस्वत परम्परा, मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्य इत्यादिक वर्णन सहित मिथिलाक वर्त्तमान दुर्दशा पर खेद प्रकट करैत ओकर उत्थानक कामना करैत छथि ।

'तीरभुक्ति' (स्वदेश, १/५,१९४८) कवितामे मिथिलाक नदीमातृक अभिधानक अन्वर्थक प्रतिपादन करैत गंगा, गण्डकी, कौशिकी, कमला, वागमती, जीबछ इत्यादिक वैशिष्ट्य, महत्त्व ओ प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन कयल गेल अछि। तीरभुक्ति नामे प्रसिद्ध मिथिलाक प्राकृतिक छवि ओ सीमाक वर्णन करैत कवि कहैत छथि—

तीरभुक्ति नामेँ प्रसिद्ध अछि जगमे मिथिला देश ।
सुजला सुफला शस्य श्यामला जे यथार्थ अक्लेश ॥
जकर पूर्व दिशि नदी कौशिकी दुस्तर जकर प्रवाह ।
भागीरथी बहथि दक्षिण दिशि हरथि दुरित दुखदाह ॥
नदी गण्डकी पश्चिम दिश मे जकर विमल बह धार ।
उत्तर दिशि अति उच्च हिमालय गिरि अछि दीर्घाकार ॥

विभिन्न छोट-पैघ नदीक जलप्रवाहसँ संसिक्त ओ रमणीय बनल मिथिलाक धरतीकेँ नदी-भूमि कहब सर्वथा सार्थक—

अछि मिथिला विख्यात देश ई नदी-भूमि अति रम्य ।

कविताक अन्तमे कवि 'तीरभुक्ति' नामक अन्वर्थ प्रतिपादित करैत कहैत छथि—

छल सुरमुनि सम्मानित, आबहु पूजित अछि सब ठाम ।
मिथिला देश जकर अन्वर्थक 'तीरभुक्ति' अछि नाम ॥

Scanned by CamScanner

भारतक इतिहासमे विद्याक क्षेत्रमे मिथिलाक स्थान अत्यन्त उच्च ओ श्रद्धास्पद रहल अछि। मिथिलाक गौरव युद्ध ओ विजय अथवा भौतिक धन-समृद्धिसँ नहि, अपितु सारस्वत साधनाहिक बल पर। तैँ प्रसिद्धो अछि 'मैथिलक धन विद्या'। विभिन्न ऐतिहासिक घात-प्रतिघात सहितो, आर्थिक विपन्नता-ग्रस्त रहितो मिथिलाक विद्या-परम्परा अक्षुण्ण रहलैक अछि। एही तथ्यकेँ प्रतिपादित करैत अछि जनसीदनक एकटा दीर्घ कविता 'मिथिला-महत्त्व-वर्णन : मैथिल-पण्डित-गुणगौरव-चर्चा' (मिथिला-मिहिर, ३१ जुलाइ, ७ अगस्त एवं १४ अगस्त, १९४८)। एहि कवितामे उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धक एक शताब्दीमे उत्पन्न परन्तु दिवंगत लगभग गोटेक सच मिथिलाक विभिन्न शास्त्रक मूर्धन्य ओ विख्यात विद्वानूक वर्णन कयल गेल अछि। कवि आरम्भमे अपन संकल्प कहैत छथि—

जे सय वर्षक मध्य भेल छथि पण्डित स्वर्ग निवासी।
निज विद्याबल सौं जे देशक भेला कीर्त्ति प्रकाशी॥
हुनका सभक नाम हम यद्यपि नहि सर्वथा जनै छी।
जे अछि हमरा ज्ञात हुनक हम परिचय एतय लिखै छी॥

एकरा पश्चात् एक-एक मैथिल विद्वानक नाम, ग्राम ओ वृत्तिस्थानक सूचना दैत हुनक वैशिष्ट्य, कृति, उपलब्धि ओ महत्त्वक वर्णन सूत्र रूपमे कयल गेल अछि। उदाहरणार्थ पण्डित खुद्दीझाक परिचय द्रष्टव्य अछि—

पण्डित खुद्दीझा शाब्दिकवर छला परम विद्वान्।
लौकिक व्यवहारहुमे सुचतुर निज कृतिकुशल महान्॥
क्वैलख-वासी बुध समाजमे आदृत महामनस्वी।
विविध विषय ज्ञाता मेधावी कलिकालज्ञ यशस्वी॥
काशीमे रहि किछु दिन कैलन्हि से अध्यापन वृत्ति।
श्रीनगरेश नृपाश्रित भए तजि देलन्हि पाठनवृत्ति॥
काव्यकलामे कुशल मनोहर गल्प जनिक श्रवणीय।
नागेशोक्ति प्रकाश बनाओल ग्रन्थ छात्र पठनीय॥
कलकत्ता-विद्यालयमे रहि अध्यापन गछि लेलन्हि।
मिथिला भाषा ग्रन्थ पढ़ाबक भार पाबि अपनौलन्हि॥
हिनक भाए सोदर अपूछझा ज्योतिष शास्त्र प्रवीण।
भेला अति प्रसिद्ध मिथिलामे दए शिक्षा सुनवीन॥

कवि एहि दीर्घ कविताक अन्तमे पाठकसँ ओहन विद्वानक परिचय सूचित करबाक निवेदन करैत छथि जे कविकेँ ज्ञात नहि रहबाक कारणे छूटि गेलाह। उपसंहार रूपमे कवि त्रुटि हेतु क्षमायाचना-पूर्वक कहैत छथि—

Scanned by CamScanner

विविध शास्त्रज्ञाता मिथिलामे भेला जे उत्पन्न ।
वर्त्तमान कालहुमे छथि द्विज मैथिल गुण सम्पन्न ।।
विद्या विनय विवेक बुद्धियुत वक्ता बहु विषयज्ञ ।
अध्यापक सद्ग्रन्थ रचयिता न्याय नीति समयज्ञ ।।
शास्त्र पठन-पाठनमे चिर दिन सौं ई मिथिला देश ।
अछि विख्यात जकर रक्षक छथि सब दिन सौं मिथिलेश।

वास्तवमे जनार्दनझा'जनसीदन'क ई कविता मिथिलाक समकालिक सांस्कृतिक इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज कहल जा सकैछ ।

मैथिली भाषा-साहित्यक अभ्युन्नति, सम्मान-संरक्षण ओ अधिकार-प्राप्तिक उत्कट अभिलाषी जनार्दनझा'जनसीदन' विभिन्न पत्र-पत्रिकाकेँ देल गेल पद्य-बद्ध शुभकामना, कविसम्मेलनमे पठित पद्यमय भाषण ओ अन्यान्य स्फुट काव्यमे मातृभाषा मैथिलीक समृद्ध साहित्यिक अतीतक बखान, महिमाक गान ओ काम्य उत्थानक संग नव साहित्य-सृजन हेतु नवीन पीढ़ीक आह्वान करैत छथि । ओ उद्‌बोधन ओ प्रोत्साहनक भावक संग कहैत छथि—

वर्त्तमान नवयुवक वृन्द जे छथि भाषा अनुरागी ।
करथु काव्य मिथिला भाषामे होथु सुकवि यशभागी ।।
रचि उत्तम कविता-कलापसँ साहित्यक भंडार ।
भरथु, लेथु यश चिरकालिक से कय देशक उपकार ।।

अभिभावक साहित्यकारक रूपमे ओ अनुभव करैत छथि जे काव्य-सृष्टि हेतु प्रतिभाक संग व्युत्पत्ति ओ अभ्यास सेहो नितान्त अपेक्षित । अतः ओ सावधानो करैत छथि जे—

जनिका नहि साहित्य बोध किछु पढ़ल न काव्य-ग्रन्थ ।
ह्रस्व दीर्घहुक ज्ञान न जनिका ज्ञात न कविता पन्थ ।।
से दूषित रचना कय करथु न साहित्यक अपमान ।
अपन बोध बूझथि नहि अक्षरकट्टू हठी महान ।

बीसम शताब्दीक आरम्भिक चरणमे देशमे एहनो बुद्धिजीवी वर्ग उत्पन्न भऽ गेल छल जकरा अपन देश, अपन भाषाक प्रति हीन ओ उपेक्षाक भावना छलैक । ओ सभ एकर उत्थान कहाँ धरि करितय, जे, अवसर भेटला पर विरोधभाव प्रकट करबासँ नहि चूकैत छल । एहन वर्गक भर्त्सना करैत कवि कहने छलाह —

जे निज देशक ज्ञान न रखलन्हि, नहि किछु उन्नति कैलन्हि ।
निज भाषा-प्रचार दिशि कहियो ध्यान कनेको देलन्हि ।।
उनटे निज देशक निन्दा कै अयश भार सिर लेलन्हि ।

Scanned by CamScanner

'जनसीदन' से वृथा जन्म लै माताकैं दुख देलन्हि ॥

एही परिप्रेक्ष्यमे मिथिलावासीकैँ निज देश ओ निज भाषाक उत्थान हेतु उद्‌बोधन करैत कहने छलाह—

जौँ मिथिलावासी चाहथि निज देश-महत्त्वक रक्षा ।
जौँ चाहथि हो उच्च सबहिसौँ अपन समाजक कक्षा ॥
जौँ निज भाषा भेष भाव पर राखथि अनुदिन ध्यान ।
'जनसीदन' तैखन बूझक थिक निज देशक उत्थान ॥

४. समाज-सुधार विषयक

समाज-सुधार जनसीदनक साहित्य-सर्जनक मुख्य भावधारा छल । ओ भावधारा हुनक कवितहु सबमे दृष्टि गोचर होइत अछि । समाज-सुधारक मानसिकता ओ काव्य-रूपक दृष्टिएँ जनसीदनजीक 'विधवा-विलाप' (मिथिला-मिहिर, १ जनवरी, १९४९) कथा-काव्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि ।

१९२९-३०मे जखन बाल-विवाह निरोध हेतु प्रस्तुत शारदा-बिलक समर्थन ओ विरोध चरम बिन्दु पर छल आ जनार्दनझा'जनसीदन' अपन निबन्ध 'समयानुकूल नियमक पालन' लिखने छलाह, जाहिमे बाल-विवाह ओ अनमेल विवाहक कारणे उत्पन्न अनेक समस्याक संग बाल-विधवा-समस्याक विस्तारसँ चर्चा कयने छलाह, ओही परिवेशमे ओ 'विधवा-विलाप' कथा-काव्यक रचना कयने छलाह । परन्तु ओ प्रकाशमे आयल बहुत पश्चात्, हुनक मृत्युसँ अढाइ वर्ष पूर्व, जनवरी, १९४९मे । अतः एहि रचनाक मूल्यांकन प्रकाशन-काल नहि, प्रत्युत रचना-कालहिक परिप्रेक्ष्यमे करब समीचीन अछि ।

आत्मकथनक शैलीमे रचित विधवा-विलाप कथा-काव्यमे नायिका अछि तारा । ओ अपन व्यथा-पूर्ण जीवनक कथा कहैत अपन वैधव्यक कारुण्यमय वर्णन करैत अछि । पिता छलथिन उच्चकुलक सनातन धर्मी मुदा आर्थिक दशा अत्यन्त विपन्न छलनि । दस वर्षक वयसमे अठारह वर्षक शिशिक्षु वरसँ ओकर विवाह करा देल जाइत छैक । अल्पवयसक निरक्षर ताराकैँ ओकर वर वर्णज्ञान करयबाक प्रयास करैत छैक । अबोध तारा विवाहक अर्थसँ अनभिज्ञ रहबाक कारणे वरसँ कहियो कोनो सरस कथा वा कोनो अनुरोध नहि करैत छैक । मधुश्रावणीमे वर सासुर आबि नओ दिन मात्र रहैत छैक आ एहि अवधिमे आन कोनो कथा नहि कहि केवल शिक्षा-ग्रहण ओ पढ़बाक निर्देश दऽ चल जाइछ ।

बीसम वर्षक अवस्थामे वर बी.ए. पास करैछ । तेसरेँ वर्षें ताराक द्विरागमन होइत छैक । चौदहम वर्ष चढ़ैत तारामे युवत्व ओ रूप-सौन्दर्यक विकास होइत छैक मुदा तथापि ताराकैँ मूर्खा जानि ओकर वर ओकरा संग कोनो रस-परिहास नहि करैत

Scanned by CamScanner

छैक । गुनआगर नागर पति पाबि तारा अपन भाग्य सराहैत अछि मुदा अपना प्रति पतिक कोनो आसक्ति-अनुरक्ति नहि देखि सतत सीदित रहैत अछि ।

ओमहर ताराक पतिकेँ कालेजक एक सहपाठिनीसँ प्रेम भऽ जाइत छैक । दुहुक परस्पर मन मिललासँ दुहू विवाहो करबाक निश्चय कऽ लैत अछि । प्रेमी ओ प्रेमिका दुहू दू जातिक छल तेँ विवाह नहि भऽ पबैत छैक । दुहू घरसँ पड़ाय कतहु अन्यत्र जाय गान्धर्व विवाह कऽ लियऽ चाहैत अछि । ई बात सहपाठिनीक घरक लोककेँ ज्ञात भऽ जाइत छैक । सहपाठिनीक पिता शहरक नामी धनवान् सेठ छल । ओ अपन कन्याक प्रेम-व्यापारसँ अवगत भेला पर त्वरित ओकर विवाह स्वजातीय युवक सँ करा दैत छैक ।

ताराक पति एहिसँ मर्माहत भऽ जाइछ । ओ दुस्सह विरह-व्यथासँ अन्न-पानि त्यागि रोग-ग्रस्त भऽ मरणासन्न भऽ जाइछ । कतबहु उपचार भेला पर ओकर प्राण-वियोग भऽ जाइत छैक ।

यद्यपि सधबहु अवस्थामे ताराकेँ दाम्पत्य जीवनक सुख नहि भेटल छलैक मुदा पतिक मृत्युक पश्चात् ओकर जीवनक स्थिति आओर दारुण भऽ उठैत छैक—

'विपति बाल-वैधव्यक दुस्सह हमरा पड़ल कपार'

ससुर अपन पुत्रक अकाल मृत्युक सब दोष ताराक माथपर थोपैत अपमानित करैत छथिन जे 'ई अलच्छि, अधलाहि, अभागलि, सिंहिनि, पिशाचिनी हमरा घरकेँ उजाड़ि देलक ।'

आ ओमहर—

सासु कहै छथि यैह राक्षसी बच्चाकेँ खा गेलि ।
अबितहिँ घरक मसाल मिझौलक केहन अभागलि भेलि ।।

भैंसुर मुँह फुलौने चुपे रहैत छथिन । छोट देओर खेलहिमे मस्त रहैत छैक । सधबा ननदि तँ ताराक लग अबितहु ने छैक । बेचारी छोटकी कुमारि ननदि मायक आँखि बचाय कौखन लगमे आबि बोल-भरोस दऽ जाइत छैक ।

चारू दिससँ दुरदुराओल जाइत, अपमानक हालाहल पिबैत एकाकिनी तारा की करओ ? ओकरा अपन जीवन-यापन ओ प्रताड़ना-मुक्तिक कोनो उपाय नहि सूझैत छैक । कोन अपराधक दण्ड ताराकेँ भेटैत छैक, से ज्वलन्त प्रश्न ओ समाजसँ पूछैत अछि—

हमर दोष की अछि से पाठक, मन मे लेथु विचारि ।
जौँ किछु हो अपराध हमर तँ देथु दण्ड निरधारि ।।
अछि पन्द्रहम वर्ष हमरा ई कोना रहू एहि ठाम ।
सुनि सुनि वचन जरल सन सबहिक हृदय भेल अछि झाम ।।

Scanned by CamScanner

सपनहुँमे पति-सुख नहि पाओल, जन्म वृथा हम लेल ।
पूर्वजन्म कृत पापहि सौँ ई दुःख विधाता देल ॥
माता-पिता विदा भए गेला छथि केवल सतमाय ।
कोनहु तरहैं गुजर करै छथि, छोट हमर एक भाय ॥
खोज करत के हमर, भेल छी हम अबला असहाय ।
नीक वचन क्यो कहनिहार नहि के परबोधत हाय !!
जीवन भार भेल अछि हमरा, सूझय किछु न उपाय ।
डूबि मरी पोखरिमे किंवा, तनमे आगि लगाय ॥
हाथ जोड़ि हम विनय करै छी, सुनू सुजन समुदाय ।
हो निर्वाह कोन विधि से पथ, हमरा देथु देखाय ॥

समाजमे असहाया अबला विधवा स्त्रीकैँ कोन-कोन दुर्वृत्ति करबाक हेतु विवश होमऽ पड़ैत छैक तकर विवरण दैत, ओ दुर्वृत्ति कथमपि नहि करबाक संकल्प करैत ताराक कथन अछि—

करब न हम व्यभिचार-वृत्ति बरु मरब शीघ्र विष खाय ।
सहब कतेक दुःख जगमे हम, छी दुखिया निरुपाय ॥
भीख न माङ्ब, नहि काशी जा करब टहलनिक काज ।
नहि हम धनी कुटुम्बक वश भय साजब सधबा साज ॥

एहि संकल्पमे ताराक चारित्रिक दृढ़ता तँ सन्निहित अछिहे, संगहि नारी-मानसिकतामे परिवर्त्तनक शुभ संकेत सेहो परिलक्षित होइत अछि । तारा एही दृढ़ संकल्पक संग सभ्य मैथिल समाजसँ अपन अर्थात् बाल-विधवा लोकनिक उचित व्यवस्था करबाक माङ अधिकारपूर्वक करैत अछि—

विनती हमर श्रवण कए राखथु, विधवा नारिक लाज ।
करथु हमर किछु उचित व्यवस्था, मैथिल सभ्य समाज ॥

कवि काव्यक अन्तमे उपसंहारक रूपमे कहैत छथि—

विधवा नारि एहन मिथिलामे, छथि असहाय अनेक ।
जे दुख संगतिमे पड़ि बहुतो, करथि न धर्म विवेक ।

'विधवा-विलाप' कथा-काव्य वास्तवमे जनार्दनझाक कथा 'ताराक वैधव्य'सँ विषयगत साम्य रखैत अछि । दुहूक नायिकाक नाम एकहि अछि । दुहूमे बाल-वैधव्यक समस्याकैँ उजागर कयल गेल अछि । दुहूक समस्याक मूल कारण अछि बाल-विवाह ओ अनमेल विवाह । तथापि दुहू कृतिमे मौलिक अन्तर सेहो अछि । 'ताराक वैधव्य' मे अल्प वयसक कन्या ताराक विवाह ओकर मायक इच्छाक विरुद्ध जबर्दस्ती वृद्धक संग करा देल जाइत छैक तथा वैधव्यक तात्कालिक कारण होइत छैक पतिक वार्द्धक्य

Scanned by CamScanner

ओ असाध्य रोगसँ मृत्यु । नायिका जीवन भरि नियतिक भोग भोगैत रहि जाइत अछि ।

'विधवा-विलाप'मे दस वर्षक ताराक विवाह अठारह वर्षक किशोरसँ होइत छैक। वयसक बहुत बेसी अन्तर नहियों रहैत पाँच ओ नओ केर अनुपातसँ अनमेल वयस तँ भैए जाइत छैक। एहि ठाम अनमेल विवाहक सबसँ पैघ हेतु छैक शिक्षामे अन्तर। वर सुबोध छैक, बी.ए.मे पढ़ैत छैक मुदा तारा अबोध अछि, निरक्षर अछि। ओ चौदहम वर्षमे प्रविष्ट भेला पर, युवप्व जन्य सौन्दर्य-सम्पन्न भेलो पर अशिक्षाक कारण पति-प्रेम पयबासँ वंचित रहि जाइत अछि। ओकर पति अपन अपढ़ पत्नीसँ विमुख भऽ एक सहपाठिनीक प्रति आकृष्ट होइत छैक तथा ओकरा संग विवाहेतर प्रेम विकसित होइछ। असवर्णताक कारणे दुहूक विवाह संभव नहि भेलासँ पति गम्भीर प्रेमाघातसँ रोगग्रस्त भऽ मृत्युकेँ प्राप्त करैत अछि। आ तखन आरम्भ होइत छैक ताराक बाल-वैधव्यक संत्रास ।

परन्तु 'ताराक वैधव्य'क नायिकाक तुलनामे 'विधवा-विलाप'क नायिका तारा अधिक सबला, संकल्पशीला ओ मुखर अछि । ओ समाजक सोझाँ बाल-विधवाक समस्याक उचित समाधान एवं सम्मानपूर्ण जीवन जीबाक हेतु 'उचित व्यवस्था' करबाक माङ करबाक साहस देखबैत अछि। ई माङ सामाजिक सोचमे अबैत परिवर्त्तनक परोक्ष संकेत थिक ।

कवि एहि कथा-काव्यक माध्यमसँ विधवा-विवाहक समर्थन करऽ चाहैत छथि। हम देखैत छी जे लेखक अपन निबन्ध 'समयानुकूल नियमक पालन'मे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा बंगालमे विधवा-विवाह-प्रचलनक सफल प्रयत्नक प्रति हार्दिक सहानुभूति ओ प्रशंसा-भाव प्रकट कऽ प्रच्छन्न रूपमे ओकर समर्थन करैत छथि। परन्तु कट्टरपन्थी सनातनी हिन्दू समाजक सोझाँ मुक्तकण्ठेँ विधवा-विवाहक समर्थन करबाक साहस नहि कऽ पबैत छथि। मुक्त स्वरमे विधवा-विलापहुमे ई बात कहल नहि गेल अछि तथापि प्रकारान्तरसँ बोध करा देल गेल अछि जे कविक इष्ट की छनि । ताराक आग्रह जे 'करथु हमर किछु उचित व्यवस्था मैथिल सभ्य समाज'मे जे 'किछु उचित व्यवस्था' अछि से विधवा-विवाहक अनुमतिक अतिरिक्त और की भऽ सकैत छैक ? 'सभ्य' शब्दहुक प्रयोगमे एकटा व्यंग्य सन्निहित अछि जे वैधव्यक कारणे गर्हित, कलंकित कालुष्यपूर्ण जीवन बितबैत नारी-समूहक अछैत, मैथिल समाज, की कोनहु समाज 'सभ्य' कोना भऽ सकैत अछि !

जनसीदनजीक ई कथा-काव्य सोझ कथानक ओ सरल वर्णन-शैलीमे करुणा ओ विचारोत्तेजना उत्पन्न करबामे पूर्ण समर्थ अछि। नारी जातिक स्थितिक व्याख्या ओ ओकर सामाजिक समस्याक विधि-निषेध उभय पक्षकेँ अत्यधिक विलक्षणताक संग

Scanned by CamScanner

व्यंजित कयल गेल अछि। यैह व्यंजना अनलंकृत होइतहु एहि कविताकेँ उत्तम काव्यक श्रेणीमे प्रतिष्ठित कऽ दैत अछि। एहि ठाम, प्रोफेसर रमानाथझा मैथिलीक वर्त्तमान युगक आरम्भिक मैथिली कविताक सामान्य प्रवृत्ति नीति, देश-दशा ओ समाज-सुधारक उल्लेख करैत विधवा-विलापक सम्बन्धमे जे टिप्पणी कयने छथि से उल्लेख योग्य अछि जे–'एहूमे एक गोट विधवाक करुण कथा अछि जाहिसँ समाजकेँ एहि समस्याक दिशि ध्यान आकृष्ट होइक। कथा अत्यन्त स्वाभाविक रीतिसँ कहल गेल अछि, ओ अत्यन्त साधारण अछि जकर अनुभव प्रायः प्रत्येक व्यक्तिकाँ होएत। परन्तु एहि कथासँ समाजक विशेषतः वर्त्तमान समाजक कतेको दुर्गुण दिशि ध्यान बिनु आकृष्ट भेलेँ नहि रहि सकत।'

'सबसँ विलक्षण हिनक भाषा अछि जाहिमे कोनो आडम्बर नहि अछि, कोनो अलङ्कार नहि अछि, विशुद्ध बजबाक भाषा अछि परन्तु तेँ हृदयक भाव ओ भावनाकेँ अभिव्यक्त करबाक सामर्थ्य नहि छैक से नहि कहि सकैत छी। वस्तुतः एहनहि भाषा मे कथाकाव्यमे प्रभावोत्पादकता विशेष होइत छैक।'

(मैथिली काव्य संग्रह, द्वितीय खण्ड, कथा काव्य, पृ० ८७)

५. सामाजिक व्यंग्य ओ देश-दशा विषयक

जनार्दनझा'जनसीदनक' उपन्यास, कथा ओ निबन्ध सदृश हुनक काव्यहुमे समाज-सापेक्षता व्यापक रूपमे देखल जाइत अछि। देश ओ समाज, शासन ओ अनुशासन, प्रगति-दुर्गति इत्यादिक सम्बन्धमे ओ जाहि रूपक अनुभव करैत रहलाह तकरा काव्य-निबद्ध करैत रहबाक प्रयास करैत रहलाह। हुनक वर्णनक रीति रहलनि कखनहुँ व्यंग्यात्मक, कखनहुँ हास्यावृत व्यंग्य ओ कखनहुँ नग्न यथार्थ-परक।

समाजक विसंगति-विरूपता, बाह्याडम्बरसँ आवृत दोहरा चरित्र, झूठ-फरेब, निकृष्टतम मनोवृत्ति ओ मिथ्याचारमे निमग्न सिद्धान्तहीन व्यक्तिक नग्न स्वरूपक हास्यमिश्रित व्यंग्यक माध्यमे उद्घाटन करबाक प्रवृत्ति जनसीदनजीक अनेक रचनासँ प्रकट होइत अछि। हिनक ब्रजभाषा ओ हिन्दीयोक कविता सबमे ई बात देखल जाइत अछि। हिनक 'अन्योक्ति मणिमाला' ओ 'कलिकाल कुतूहल' नामक काव्य-संग्रहमे निहित व्यंग्यक तीक्ष्णताकेँ लक्ष्य कऽ महावीरप्रसाद द्विवेदी कहने छलथिन—

'अहाँक कविता-पुस्तक देखि सबहि पुरान बात नव भऽ गेल। अन्योक्ति बड़े सुन्दर अछि। (कलिकाल)कुतूहलमे आलोचना सेहो बेस बेधैत अछि।'

काल-परिवर्त्तनक कारणे समाजमे उत्पन्न विसंगति-विरूपताक आलोचना ओ उपहास करैत जनसीदनजी कहने छलाह—

सच्चे की कुछ कदर नहीं है, झूठे को सर चढ़ते देखा।
पंडित को पीछे ढकेलकर, पाखंडी को बढ़ते देखा॥

Scanned by CamScanner

होटल बोतल वारवधू विन, जिनका काम न चलते देखा।
उन्हे जाति औ देश सुधारक बनकर सबको छलते देखा ।।

मैथिलीमे सेहो एहि रूपक उपहास मूलक हास्य-मिश्रित व्यंग्य-कविताक रचना जनसीदनजी कयने छलाह। एहि दृष्टिएँ एकटा उल्लेखनीय कविता छनि 'स्वनामधन्य स्तोत्र' (श्रीमैथिली, १/६, १९२५) जाहिमे प्रतीक पात्र 'चकमकचन्द'क आत्मोक्तिक व्याजेँ समाजमे व्यापक रूपमे प्रतिष्ठित दोहरा चरित्रक धृष्ट-पाषण्डी लोकक विकृत चेहरा, भ्रष्ट मनोवृत्ति, अधम आचार-विचार एवं अन्यान्य विविध कुकर्म-कदाचारक व्याख्यान ताहि रूपमे कयल गेल अछि जे कविक अन्तर्निहित व्यंग्य ओ उपहास, कौचर्य ओ कुचेष्टाक भाव स्वतः अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

चकमकचन्दक मुँहसँ कहाओल जाइत अछि—

नाम हमर थिक चकमकचन्द
छी हम कपट कौशलानन्द
मुख प्रसन्न राखी सब काल
बाजी सविनय कथा रसाल

एहन लोक समाजमे अधिक होइछ जकर कथनी आ करनी सर्वथा एक दोसराक विपरीत रहैत छैक—

जे हम कही करी नहि एक
ई थिक हमरा जन्मक टेक

देखबामे बाहरसँ ज्ञानी मुदा भीतरसँ अभिमानी, कलह करयबामे नारद, स्वार्थ-साधनमे विशारद, माया पसारि पुजयबामे चतुर शिरोमणि, कोनहु नीच वृत्तिसँ टका अरजनिहार, सत्यव्रतीक आडम्बर कयनिहार लोक सभक भंडाफोड़ करैत कवि कहैत छथि—

लोक बुझै अछि छथि बड़ ज्ञानी
यद्यपि छी हम अति अभिमानी
कलह बढ़ाबयमे छी नारद
स्वार्थ-साधना मध्य विशारद
माया कय सभसँ पुजबै छी
नीच वृत्तिसँ टका पबै छी
राखी आडम्बर बड़ भारी
बूझय लोक सत्यव्रतधारी

क्वचित् दमड़ीमात्र दान कऽ अपनाकेँ दानी कर्ण बूझि गर्व कयनिहार लोकक उपहास एहि रूपेँ कयल गेल अछि—

Scanned by CamScanner

दी जौं कहिओ दमड़ी दान
करी तकर अतिशय अभिमान
कहि अपनाकेँ कर्ण समान
दाता बनि पाबी सम्मान

एहि तरहेँ समाजमे विविध रूपमे विराजमान पिशुन-समाजी, कृत्रिम सहानुभूति देखौनिहार, छिद्रान्वेषी, परनिन्दक, वञ्चक-सरदार, विषक पयोमुख घैल, विश्वासघाती, अपकर्मी, निर्लज्ज इत्यादि विविध मनुष्यक चरित्र (वा दुश्चरित्र)क उद्‌घाटन एकहि प्रतीक पात्रक माध्यमसँ करैत जतबा कवि कहि पबैत छथि तकरा अत्यल्प मानि अन्तमे एहि रूपेँ काव्यक उपसंहार करैत छथि—

'जनसीदन' मैथिल कवि मित्र
जानथि किछु किछु हमर चरित्र

देश-दशा-वर्णन जनसीदन जीक काव्यक एकटा महत्त्वपूर्ण उपादान रहलनि अछि। राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक ओ अन्य राष्ट्रिय-अन्तरराष्ट्रिय घटनाचक्रक भारत ओ भारतीय समाजपर पड़ैत प्रभाव ओ परिणतिक प्रति कवि सदा संवेदनशील रहलाह अछि। समाजमे व्याप्त अनीति-अनाचार, अन्याय-अत्याचार, अभाव-अभियोग, भूख-गरीबी, दमन-दुर्दशा आदिक अनुभूत पीड़ाकेँ अभिव्यक्त करबामे कवि संकोच नहि कयलन अछि। एहि रूपक देश-दशा-वर्णनमे राष्ट्रवाद ओ राष्ट्रमुक्ति-चेतना स्वभावतः समाहित अछि।

अतः जनार्दनझा'जनसीदन' पर समकालीन विचार-प्रवाह एवं युगक धाहसँ असम्पृक्त, उदासीन अथवा निरपेक्ष रहबाक आक्षेप सर्वथा भ्रान्त ओ असमीचीन थिक जे कविकेँ समग्रतामे नहि देखबाक त्रुटिक परिणाम कहल जायत।

१९११ इ०मे सम्राट पंचम जार्ज ओ महारानी मेरीक भारत-आगमनक अवसर पर जनार्दनझा हिन्दीमे एकटा कविता 'स्वागताष्टक' लिखने छलाह ताहि हेतु एकटा आलोचक हुनका कठघरामे ठाढ़ करैत एहि रूपक गम्भीर आक्षेप कयलनि अछि जे—

'बंगला, हिन्दी एवं मैथिलीक गतिविधिसँ पूर्ण परिचित जनार्दनझा'जनसीदन' राष्ट्रिय संग्रामक पजरैत पसाहीमे एकोटा काठी नहि देलनि। तात्पर्य जे विदेशी शासन-व्यवस्थाकेँ छाउर बनएबा लेल जेना आगि पजरि गेल छल, तकर कनिको ऊष्णता जनसीदनजीक रचनामे नहि भेटैछ।'

'शोषण ओ अत्याचार किंवा सामाजिक अन्यायक विरोधमे कलम उठेबाक साहस ओ नहि जुटा सकलाह। तात्पर्य जे जनसीदनजीक व्यक्तित्वमे अन्यायक विरोधमे ठाढ़ होयबा लेल आवश्यक प्रखरताक अभाव छल।'

एहि प्रकारक आरोप-आक्षेपक निस्सारता देखयबासँ पूर्व जनार्दनझा'जनसीदन'क

Scanned by CamScanner

रचनाकालक समसामयिक राष्ट्रवादक अवधारणाक स्वरूपसँ परिचित भऽ जायब अधिक उपयुक्त होयत ।

उनैसम शताब्दीमे राष्ट्रचेतना ओ विदेशी शासनसँ मुक्तिक लोक-आकांक्षाक अभ्युदय भऽ चुकल छल । एकर दुइ गोट धारा छल— सांस्कृतिक-सामाजिक राष्ट्रवाद ओ राजनीतिक राष्ट्रवाद । प्रथम धारा भारतक जनमानसमे राष्ट्रिय अस्मिताक भाव जगबैत विभिन्न प्रकारक समाज-सुधारक हेतु प्रयत्नशील छल, तँ दोसर धारा राजनीतिक चेतना-जागरण, शासनिक सुधार, औपनिवेशिक स्वराज्य ओ अन्ततः पूर्ण स्वतन्त्रताक हेतु आन्दोलन-रत छल । प्रथम धाराक प्रतिनिधित्व करैत छलाह राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती जे 'समाज' नामधारी विभिन्न संस्था-संघटनक माध्यमसँ क्रियाशील छलाह, तँ दोसर धाराक पुरोधा छलाह दादाभाइ नौरोजी, गोपालकृष्ण गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष ओ अन्ततः महात्मा गान्धी जे मुख्यतः राष्ट्रिय कांग्रेस ओ अन्य राजनीतिक संघटनक माध्यमे उद्देश्यक सिद्धि हेतु प्रयत्नशील छलाह ।

राजनीतिक राष्ट्रवादक तीन गोट वैचारिक धारा छल—उदारवाद, उग्रवाद ओ क्रान्तिवाद । उदारवादी लोकनि अंगरेजी सत्ताक प्रति निष्ठा अथच अविरोध भाव रखैत भारतक हेतु राजनीतिक ओ प्रशासनिक सुधार एवं अधिकारक संग औपनिवेशिक स्वराज्यक प्राप्तिकामी छलाह । उग्रवादी लोकनि 'स्वतन्त्रताकेँ जन्मसिद्ध अधिकार' मानैत पूर्ण स्वतन्त्रताक पक्षधर छलाह । ओहिसँ कम किछु नहि । क्रान्तिवादी लोकनि शस्त्र ओ युद्धसँ पूर्ण स्वतन्त्रता-प्राप्तिमे विश्वास रखैत छलाह आ तेँ हुनका लोकनिक गतिविधि सर्वथा प्रच्छन्न रूपमे चलैत छल ।

बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे कट्टर साम्राज्यवादी लार्ड कर्जन वायसरायक रूपमे भारतमे बेस कुख्याति अर्जित कयलक । एकसँ एक दमनात्मक क्रिया-कलाप ओ भारतीय जनविरोधी कानून बनाय भारतक व्यापक हित ओ भावनापर निष्ठुर कुठाराघात करैत रहल आ अन्ततः १९०५मे बंगालक विभाजन कऽ देलक । एहि कृत्यक विरोधमे जन-भावनाक उग्र विस्फोट भेल । बंग-भंग-विरोधी जनान्दोलन ततेक व्यापक ओ घनघोर भेल जे ओ राष्ट्रिय उन्मादक रूप धारणा कऽ लेलक ।

एहि ठाम स्मरणीय जे मोहनदास करमचन्द गान्धीक भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर उदयसँ पूर्व राष्ट्रवाद ओ राष्ट्रिय आन्दोलन ग्रामीण स्तर धरिक सामान्य जनान्दोलनक रूप धारण नहि कऽ सकल छल । ओ नगर-महानगर, बुद्धिजीवी वर्ग अथवा पढ़ल-लिखल लोक धरि सीमित छल ।

विभिन्न छोट-पैघ राजनीतिक संस्था सभक अछैतो मुख्य राजनीतिक राष्ट्रिय

Scanned by CamScanner

आन्दोलनक नेतृत्व राष्ट्रिय कांग्रेस करैत छल। १९०७मे सूरतमे भेल कांग्रेस अधिवेशनमे उदारवादी ओ उग्रवादी लोकनिमे तीव्रतम मतभेदसँ कांग्रेसक विभाजन भऽ गेल।

एकरा पश्चाते उग्रराष्ट्रवादक पुरोधा लाल-बाल-पाल, अरविन्द घोष राजनीतिक मंचसँ अनुपस्थित भऽ गेलाह। १९०७ मे लाला लाजपतरायकेँ देश-निर्वासनक दण्डक कारणे अमेरिका जाय पड़लनि। १९०८ मे बालगंगाधर तिलककेँ राजद्रोहक अपराधमे छओ वर्षक कारावासक दण्ड दऽ वर्माक माण्डले जेलमे पठा देल गेलनि। एही वर्ष विपिनचन्द्र पाल न्यायालयक अवमाननाक अपराधमे छओ मासक कारा-भोग कऽ विदेश चल गेलाह। १९१०मे अरविन्द घोष पाण्डिचेरी जा कऽ संन्यास लऽ देलनि। तेँ १९०८ सँ १९१७ धरिक अवधिकेँ भारतक राष्ट्रिय आन्दोलनक शान्तिकाल मानल जाइत अछि जे वास्तवमे राष्ट्रवादक सुषुप्ति काल कहल जा सकैत अछि।

उग्र राष्ट्रवादी नेतृत्वक अभावमे देशक राष्ट्रिय आन्दोलनक नेतृत्व कांग्रेसक उदारवादी सभक हाथमे चल आयल। बंग-भंगक घोर विरोध, उग्र राष्ट्रवादीनेतृत्वक अनुपस्थिति, कांग्रेसक उदारवादी नेतृत्वक प्रभाव-विस्तार, ओ लार्ड कर्जनक भारत-विरोधी नीतिसँ उत्पन्न असन्तोष-आक्रोशक परिस्थितिमे कर्जनक प्रकृतिक विपरीत उदारवादी दृष्टि-सम्पन्न लार्ड हार्डिंज भारतक वायसराय भऽ कऽ आयल। ओ कर्जनक दुर्नीति सँ भारतीय जनमे उत्पन्न असन्तोष, आक्रोश ओ घोर विरोधकेँ शान्त कऽ सौहार्द्र उत्पन्न करबाक पक्षपाती छल। ओ ब्रिटिश सम्राट एवं भारतीय प्रजाक मध्य प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करबाक दृष्टिएँ सम्राट पंचम जॉर्ज ओ महारानी मेरीक भारत आगमन ओ दिल्ली दरबारक आयोजन कयल ओ ओही अवसर पर सम्राट द्वारा बंग-भंग-समाप्ति तथा अन्य जनोपकारी नीतिक घोषणा करबाक आश्वासन देल। एहिसँ भारतीय जनतामे ब्रिटिश शासनक प्रति कटुताक भाव कम भेलैक, सम्राटक प्रति कृतज्ञताक भाव सेहो जगलैक जे सम्राटक स्वागत हेतु प्रेरक बनल। सम्राट पंचम जॉर्जक दिल्ली-दरबार दिसम्बर, १९११मे भेल जाहिमे बंग-भंग-समाप्ति ओ अन्यान्य नीतिगत घोषणा सब भेल।

बंगाल-विभाजन-विरोधी आन्दोलनमे अग्रणी रहनिहार ओ ओहि कालमे प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्धि-प्राप्त महान् कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर्यन्त सम्राट पंचम जॉर्जक भारत आगमन पर हुनक स्वागत-अभिनन्दनमे प्रशस्ति गान कयलनि। हुनका 'जन गण मन अधिनायक' ओ 'भारत भाग्य विधाता' कहि हुनक जयकामना कयलनि। रवीन्द्रनाथ ठाकुर एतेक धरि कहि गेलाह जे—

तव करुणासन रागे,
निद्रित भारत जागे,
तव चरणे नत माथा।

जय जय जय जय हे राजेश्वर !
भारत भाग्य विधाता ।

एहन-एहन स्वागत-अभिनन्दन गान सब भारतक अन्यान्यो भाषामे लिखल गेल ओ समकालिक पत्र-पत्रिकामे छपल छल । मिथिला सहित बिहार ओहि समयमे बंगालहि प्रान्तक अन्तर्गत छल आ मिथिला-मैथिली बंगालक विचार-धारा एवं साहित्यिक प्रवृत्ति सँ अत्यधिक प्रभावित होइत छल । अतः रवीन्द्रनाथ ठाकुरक अनुसरणमे मिथिलोक कवि लोकनि सम्राट पंचम जॉर्ज ओ महारानीक स्वागतमे काव्य-रचना कयल तँ ओकरा अस्वाभाविक नहि कहल जा सकैछ । यदुनाथझा 'यदुवर' मैथिलीमे राष्ट्रिय चेतना-प्रधान काव्य-रचना कयनिहारमे अग्रणी छलाह । बंगला, हिन्दी ओ उर्दूक ओजपूर्ण राष्ट्रभक्तिक गीत सभक मैथिली रूपान्तरो कयने छलाह । से, यदुवर ओ अन्यहु कवि सम्राटक स्वागतमे कतोक मुक्तक पद्य-रचना कयने छलाह (मिथिलामोद, उद्गार-५८,१३३९साल) एहने समसामयिक परिस्थितिमे. जनार्दनझा'जनसीदन' सेहो हिन्दीमे 'स्वागताष्टक' केर रचना कयने छलाह ।

एहि ठाम स्मरणीयजे रवीन्द्रनाथठाकुर द्वारा सम्राट पंचम जॉर्जक स्वागत-अभिनन्दन हेतु रचित गान 'जन गन मन अधिनायक' स्वतन्त्र भारतक राष्ट्रगानक रूपमे स्वीकृत अछि । अतः सम्राटक स्वागत गानक कारणे यदि विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक राष्ट्र-चेतना पर प्रश्नचिह्न नहि लगाओल गेल तखन जनार्दनझा पर अंगरेजक पृष्ठपोषकताक आक्षेप किएक ? हुनक राष्ट्रभक्ति पर सन्देह किएक ?

जनार्दनझा'जनसीदन' यदि सम्राटक हेतु 'स्वागताष्टक' लिखने छलाह तँ दोसर दिस इहो कहबामे संकोच नहि कयलनि जे—

जिन्हे खेत की उपज नहीं है, अन्न मोल ले खाते
कैसे होगी जीवन रक्षा, युक्ति नहीं लख पाते
कन्ट्रोली अन्नों से इतने ग्रामीणों के प्राण
कैसे बच सकते प्रभु ! कीजै भारत का अब त्राण
बुरी परिस्थिति सता रही है भारतवासीजन को
जला रही है असन-वसनकी चिन्ता सबके मन को
जनसीदन हो प्रकट करैं प्रभु ! दुखियों का उपकार
अन्यायी को दूर भगाकर हरैं भूमिका भार

भारतक त्राणक चिन्ता ओ अन्यायीकेँ दूर भगयबाक प्रार्थनाक निहितार्थ बुझबामे भाङठ नहि रहि जाइछ । अतः जनसीदन पर समकालीन विचार-प्रवाह, युगक धाह वा सामान्यजनक यातना ओ पीड़ासँ असम्पृक्त, उदासीन वा निरपेक्ष रहबाक ओ विरोधक साहस नहि रहबाक आरोप-आक्षेप सर्वथा तथ्यहीन, असमीचीन ओ

Scanned by CamScanner

भ्रान्तिमूलक अछि। यदि कोनो समालोचक कविक समग्र रचना देखि पयवामे असमर्थ होथि तँ ताहिमे कविक कोन अपराध ?

कविक समकालिक भारतक दुरवस्था, भूख, गरीबी, अन्न-वस्त्रक अभावजन्य कष्टमे डूवल जनताक मनोव्यथा, परतन्त्रताजन्य विवशताक अत्यन्त मार्मिक वर्णनक संग विदेशी शासनक दुर्व्यवस्था ओ अन्यायपर कठोर प्रहार जनसीदनक वहुतो कविता मे देखल जाइत अछि। 'सामयिक वसन्त वर्णन'क समापन पद्य, 'वर्त्तमान देशदशा वर्णन' 'आधुनिक समय' इत्यादि कविता एहि दृष्टिएँ सर्वथा उल्लेखनीय अछि। कवि 'वर्त्तमान देशदशा वर्णन' कवितामे अन्न-वस्त्रक अभावक व्यथा कहैत क्षोभ व्यक्त करैत छथि जे नोन सन पूर्वमे सर्वसुलभ ओ सस्त वस्तु सोन सन दुर्लभ भऽ गेल—

बस न चलै अछि वसन पर दुर्लभ भेल दुकूल।
अस न असन अप्राप्य छल छल भारत सुखमूल ॥
दसन देखौनहुँ दुःख सौं दस नकार दस ठाम।
भेटत, भेटत कतहु नहि भोजन सुख विश्राम ॥
रसनामे रस नहि रहल विन रस रसना व्यर्थ।
रामनाम रस चाखि कय तकरा करू सदर्थ ॥
सस्त भेटै छल रामरस 'जनसीदन' सब ठाम।
नोन सोन भै गेल तैँ नहि लै अछि क्यो नाम ॥
दालि खेसारीकैँ न क्यो पहिने छलय पुछैत।
तकर वढ़ल आदर अधिक राहरि मूंग अछैत ॥

पूर्वहि देखल अछि जे जनार्दनझा अपन निबन्ध 'सामयिक वसन्त वर्णन'मे वसन्तक मादक परिवेशहुमे भारतक सामयिक परिस्थितिक अनुभूतिकैँ अभिव्यक्त कयनिहार, आर्त्त भारतक दुरवस्था ओ अर्द्ध-दिगम्बरत्वक वर्णन-युक्त पद्यसँ निबन्धक समापन कयने छथि, जकरा पुनः एहि ठाम दोहरायव उपयुक्त नहि। हम एहि ठाम विशेष रूपसँ चर्चा करऽ चाहव हुनक एक गोट दीर्घ कविता 'आधुनिक समय'क जे आधुनिक मैथिली काव्य-जगतक ओहन विरल कोटिक कवितामे अबैत अछि जाहिमे प्रथम विश्वयुद्धक विश्वक मानव समुदाय, विशेषतः भारत पर पड़ल दुष्प्रभाव ओ दारुण परिणामक मार्मिक वर्णन कयल गेल हो।

विश्वयुद्ध यद्यपि यूरोपमे लड़ल गेल किन्तु ओकर विभीषिकाक अशुभछाया भारतपर गम्भीर रूपेँ पड़ल। प्रथम विश्वयुद्धक पश्चातूसँ भारतीय जनसमुदायक जीवन-यापनक परिस्थिति दिनानुदिन अधलाहे होइत गेल जकरा दोसर विश्वयुद्ध चरम बिन्दुपर पहुँचा देलक। सामान्य जन जीवनोपयोगी एक-एक अदनो वस्तुक हेतु लालायित भऽ उठल। एहि परिस्थितिकैँ अंगरेज सरकारक विभिन्न प्रकारक नियन्त्रण-कानून और

Scanned by CamScanner

विकट बनबैत गेल। एहिसँ अंगरेज सरकार ओ ओकर शासन-व्यवस्थाक प्रति जन सामान्यमे रोष ओ विरोधक भावना उग्रसँ उग्रतर होइत गेल, विदेशी-शासनसँ मुक्ति-प्राप्तिक आवेग बढ़ैत गेल। ओहि परिस्थितिमे जनताक की पीड़ा छलैक, की मानसिकता छलैक तकर सभक यथार्थ ओ विश्वसनीय प्रतिबिम्ब देखि पड़ैत अछि जनसीदनक कविता 'आधुनिक समय'मे।

कविताक आरम्भमे कवि कहैत छथि—

ई अपूर्व कलिकाल ! एहन आएल अछि सम्प्रति।
जे नहि हो आश्चर्य ! विकट संकट दुरन्त अति॥
दुख-दावानल विपुल विश्वमे व्याप्त भेल अछि।
झुलसि रहल अछि लोक, शोक सन्तप्त भेल अछि॥
विश्वव्यापी युद्ध प्रथम सभकाँ उकछौलक।
अति महार्घ सभ वस्तु, लोक दारुण दुख पौलक॥

जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तु सभक नितान्त अभाव भेलासँ सरकार द्वारा नियन्त्रणक हेतु कानून लागू होइत गेल।' 'कण्ट्रोल', 'राशन', 'परमिट इत्यादिक व्यवस्था लागू भेलासँ जे परिस्थिति बनि गेल ताहि पर कवि कहैत छथि—

कहल जाय नहि वसन कष्ट जे लोक सहैत'छि।
युग कहियो नहि एहन भेल से वृद्ध कहैत'छि॥
यदपि विचारि परिस्थितिवश भारत हितकारी।
वस्त्र नियन्त्रण कैल देश रक्षा-व्रतधारी॥
एक दिगम्बर छला पूर्वमे ईश तपस्वी।
आब दिगम्बर विविध विना तप भेल मनस्वी॥

राशन व्यवस्थाक कारणे लोककेँ एक साँझ आध पेट खा कऽ रहऽ पड़ैत छलैक, एहन सन जेना भारतवासी पराधीनताक प्रायश्चित्त करैत होथि। किसानक उपजाओल अन्न पर सरकारक अधिकार भऽ गेलासँ किसानक ओतऽ ततबो अन्न नहि रहि जाइत छलैक जे ओ कोनो अतिथि-बन्धुकेँ खुआ सकय। ई सब जेना सरकार जानि-बूझि कऽ, कऽ रहल छल, जे लोक नित्य परिमित अल्पाहार करैत-करैत स्वतः दुर्बल भऽ जायत आ कोनो रोध-निरोध नहि कऽ स्वतः शान्त रहल करत। एहि स्थितिक वर्णन द्रष्टव्य अछि—

लै राशन नव कार्ड अन्न डीलर सौं आनथि।
तंडुल तीन छटांक सभहि प्रतिव्यक्तिक पाबथि॥
प्रायश्चित नित करथि खाथि लघु भारतवासी।
पराधीनता परम पाप सभ सुखक विनाशी॥

Scanned by CamScanner

उपजाबथु भरि पोख अन्न घरमे नहि राखथु ।
अपना लै किछु राखि शेष हाकिमकैँ सौंपथु ॥
घर आबथि जौं अतिथि-बन्धु अपने नहि खाइअ ।
अपन अंश दै अशन ताहि, अपने सहि जाइअ ॥
लघु भोजन सौं लोक अबल दिन दिन भय जायत ।
शान्त भाव सौं रहत अन्न परिमित नित खायत ॥

कवि सरकारक दयालुताक मुखौटाकैँ उघारैत देसी अफसर लोकनि पर प्रहार करैत छथि जे अपनहि बन्धुपर अत्याचार करबामे संकोच नहि करैत अछि—

अति दयालु सरकार ! देश दुख देखि रहल छथि ।
क्यो अफसर लै ढेप प्रजा पर फेकि रहल छथि ॥
छथि अपनहु से प्रजा तदपि किछु चेत न हुनका ।
केवल आनक दुःख देखि उपजै सुख जनिकाँ ॥
जाति-धर्म नहि बचत आब ककरो किछु दिन मे ।
बदलि रहल अछि नीति नियम देशक छन-छन मे ॥
वस्त्र नियंत्रण एहन कतहु कहियो नहि देखल ।
नहि भारत इतिहास मध्य घटना ई पेखल ॥

अतीत कालमे भेल अत्याचारी शासकक संग समकालीन विदेशी शासकक तुलना करैत कहल गेल अछि—

प्रजा-प्रपीड़क निठुर भेल सम्राट अनेको ।
किन्तु एहन कानून बनल कहियो नहि एको ॥
बात बातमे रोक छैछ वस्तुक निष्कारण ।
शासक नाशक जतय, दुःख के करत निवारण ॥
रक्षक भक्षक होथि, कोन उपचार ततय अछि ।
नहि संभव कल्याण, धर्म आघात जतय अछि ॥

समकालीन शासक अर्थात् अंगरेज सरकारकैँ प्रपीड़क, नाशक ओ भक्षक पर्यन्त कहबाक साहस देखबैत, ओकर कुकृत्यक परिणामसँ विवश भेल जनताक की स्थिति छल, से कवि निम्नरूपमे व्यक्त करैत छथि—

की नारी की पुरुष वस्त्र विन भेल विकल अछि ।
लाज निवारण कठिन शोचवश लोक सकल अछि ॥
अन्न-वस्त्र बिन व्यथित प्रजा निरुपाय करत की ।
अवसर पर व्यवहार्य वस्तु विन धैर्य धरत की ॥

देशमे कागतक नोटक प्रचलनसँ सरकारक अर्थ-व्यवस्थामे जे सुविधा भेल होउक,

Scanned by CamScanner

मुदा जनताकेँ विजिलेन्स कमीटी, सेक्रेटरी, डीलर इत्यादिक नियन्त्रणकारी व्यवस्था-तंत्रसँ ब्लैक मार्केट, भ्रष्टाचार इत्यादिक संग वस्तुक महगी ओ दुर्लभता उपहारमे भेटलैक। ओहि व्यवस्था-तंत्रक विभिन्न पुर्जा सभ बैमानीसँ अपन घर भरऽ लागल—

जहियासँ ई चलल कागतक टका देशमे ।
वस्तुमात्र भय गेल महग दुष्प्राप्य शेषमे ॥
ब्लैक मारकेट वेश चलल तहियासँ भारी ।
जहिया सौं भिजिलेन्स कमीटी भेल'छि जारी ॥
डीलर सेक्रेटरी दुहू मिलि मुद्रा टानथि ।
सफल होथि धनवान वसन विन निर्धन कानथि ॥

धन-धान्यसँ समृद्ध भारतवर्ष विदेशी शासनक शोषणसँ दरिद्र भऽ गेल। फल-फूलसँ झबरल भारत रूपी तरुवरमे आब काँटमात्र रहि गेल अछि। सुख-चैन चल गेल। अपन खेतहुक उपजाक उपभोग करबाक अधिकार नहि रहि गेल। एहि परिस्थिति पर कवि अपन खेद ओ विक्षोभ व्यक्त करैत कहैत छथि—

तहस नहस भै गेल देश जे पूर्व बसल छल ।
फल सभटा झड़ि गेल मधुर जे एतय फड़ल छल ॥
रहि गेल केवल काँट भव्य भारत-तरुवरमे ।
सुखक निन्द चलि गेल बढ़ल चिन्ता घर-घरमे ॥
नहि स्वतंत्रता रहल आब खेतक उपजापर ।
की की उठत उपाधि कहल नहि जाय प्रजापर ॥

अंगरेजी शासन कालमे सैकड़ो देशी राज्य छल। किन्तु ओकरहु शासक लोकनि अपन भारतीय परम्पराकेँ बिसरि अपन अंगरेज प्रभुहिक अनुसरण करैत छलाह। कवि भारतीय राजतन्त्रक गौरवमय इतिहासक स्मरण दिअबैत भारतक समकालीन राजा लोकनिक मनोवृत्ति, शासन-तन्त्र, आचार-विचार ओ व्यवहारक विकृतिक कटु आलोचना करैत देशोन्नति, विद्याप्रचार, राष्ट्रमुक्ति ओ सद्व्यय दिश उन्मुख होयबाक सन्देश दैत छथि—

विक्रम भोजक समय प्रचुर विद्या प्रचार छल ।
ककर केहन हो मान सभामे से विचार छल ॥
होथि स्वयं साहित्यविज्ञ नृप नीति निपुण अति।
गुणीगणक सम्मान करथि गुणवान महीपति ॥
दै विशेष धन धान्य गुणीजनकैँ सनमानथि ।
कै संस्कृतक प्रचार सफल जीवनकै मानथि ॥
छथि आबहु बहु भूप ध्यान समयक नहि राखथि ।

करथि अपव्यय नित्य कृत्य तजि यश अभिलाषथि ॥
दै चिर संचित वित्त अन्य जातिक घर भरता ।
निज देशोन्नति हेतु खर्च कौड़ी नहि करता ॥
बिगड़ल सब व्यवहार विदेशी जनक संग सौं ।
बिसरि गेल कर्त्तव्य उचित नित नियम भंग सौं ॥
अछि भारत परतन्त्र तकर किछु खेद न मानथि ।
घरमे बनल स्वतन्त्र मन्त्र मनमे नहि आनथि ॥
त्यागि सनातन धर्म कर्म कर्त्तव्य करथि नहि ।
कय अनुचित नित काज उचित पर ध्यान धरथि नहि ॥
फँसि विलासिता मध्य भाग अवगुनक लेथि सब ।
बिसरि शास्त्र आदेश भेस निज बदलि देथि सब ॥
की करता विद्वान् दुःख सौं समय बिताबथि ।
रहथि सदा सन्तप्त उचित आदर नहि पाबथि ॥
साहित्यिक सत्कार नाम मात्रक रहि गेलय ।
निज साहित्यक वृद्धि एहन स्थितिमे की भेलय ॥
मुक्त हस्त भै भूप करथि जौं सुकविक आदर ।
पूर्ण रूप सौं हैत उदित साहित्य-सुधाकर ॥

अन्तमे कवि कहैत छथि जे साम्प्रतिक शासन-व्यवस्था देखि लोक चकित अछि जे एहि शासनमे हाकिम न्याय नहि करैत छथि आ निरीह जनता दुख सहैत अछि। बुद्धिजीवी वर्गमे प्रजा-राज ओ परतंत्र व्यवस्थापर तर्क-वितर्क भऽ रहल अछि। स्वतन्त्रता गमा देबाक ग्लानिसँ लोक पश्चात्ताप करैत अछि—

आबक शासन देखि चकित चित के न रहै अछि ।
हाकिम करथि न न्याय दीन जन दुःख सहै अछि ॥
राज-प्रजा परतंत्र बीच नित बहस चलै अछि ।
देलहुँ स्वत्व गमाय सोचि सब हाथ मलै अछि ॥

उपसंहारक रूपमे कवि अपन अनुभव कहैत छथि जे निश्चये जगत् परिवर्त्तनशील अछि, प्रकृति एक रूपमे कहियो ने रहैत अछि। परिवर्त्तनक एही आशामे पराधीन भारतक दुखी जनता धैर्य धारणा कऽ (स्वतन्त्रताक) गीत गबैत अछि। कवि आत्मविश्वास पूर्वक आश्वस्त करैत छथि जे आब ओ समय आबि रहल अछि जखन शीघ्रे स्वराज्य-प्राप्ति होयत आ एहि रूपमे आशाक एकटा सन्देश दैत छथि—

भेटत शीघ्र स्वराज्य आब से समय अबै अछि ।
पराधीन जन दुखी धैर्य धय गीत गबै अछि ॥

Scanned by CamScanner

अछि परिवर्त्तन शील जगत ई निश्चय जानू ।
एक रूपमे प्रकृति रहय नहि से ध्रुव मानू ।।[1]

सामाजिक व्यंग्य ओ देश-दशा वर्णन विषयक कविता सबमे जनार्दनझा 'जनसीदन'क समसामयिक परिस्थितिक प्रति की दृष्टिकोण छलनि तकर स्पष्ट अभिव्यक्ति भेल छनि । ओ अन्न-वस्त्रक दुर्लभता, यातना सहबा लेल अभिशप्त भूखल-नाङ्ट लोक, समाजमे बैमान लोककें भ्रष्टाचरण, शासन-व्यवस्था द्वारा कयल जाइत अन्याय-अत्याचार, शोषण-उत्पीड़नक निर्भीकतापूर्वक वर्णन करैत छथि । देशी नरेश, जमीन्दार ओ धनी लोकक विलासिता, देशोन्नति-विमुखता, विदेशीजनक अनुव्रजन देखि क्षुब्ध होइत छथि । देशी हाकिम लोकनिक न्याय नहि करबाक ओ अपनहि बन्धु भारतीय जन पर अत्याचारक प्रति आक्रोश व्यक्त करैत छथि । विदेशी सरकारक शासन-व्यवस्था ओ जनविरोधी कानूनक आलोचना करैत व्यंग्यात्मक प्रहार करैत छथि । जखन कखनो सरकारकेँ दयालु, देश -रक्षा-हितकारी विशेषण दैत छथि तँ ओहिमे प्रशंसा नहि अपितु विपरीत लक्षणासँ विपरीतार्थक निन्दाक भाव व्यक्त करैत छथि । विदेशी सरकारकेँ अतीत कालमे भेल प्रजा-प्रपीड़क निष्ठुर सम्राटहुसँ अधिक निष्ठुर प्रजा-प्रपीड़क, शासकक रूपमे नाशक ओ रक्षकक रूपमे भक्षक कहबामे तारतम्य नहि करैत छथि । भारतक अधःपतनपर वेदना ओ स्वत्व-क्षय पर अपसोच व्यक्त करैत छथि । परन्तु शीघ्रहि स्वराज्य प्राप्तिक बलवती आशासँ देशवासीकेँ आश्वस्त सेहो कहैत छथि ।

जनार्दनझा 'जनसीदन'क एहि कोटिक कविता सभक अवलोकन कयलाक बाद के कहि सकैत अछि जे शोषण आ अत्याचार किंवा सामाजिक अन्यायक विरोधमे ओ कलम उठयबाक साहस नहि जुटा सकलाह ? अंगरेजी शासन-व्यवस्थाकेँ जरयबाक लेल पजरल आगिमे जनसीदनक कविता सब काठी सदृश नहि, प्रत्युत प्रदाहकतामे पेट्रोलक सामर्थ्य रखैत छल । जनसीदनमे परतन्त्रताक पीड़ा ओ स्वतन्त्रताक प्रति केहन ऊष्मा विद्यमान छलनि तकर अनुभूति उपरिविवेचित कवितासँ नीक जकाँ होइत अछि ।

समग्रतामे देखला उत्तर निष्कर्षक रूपमे कहि सकैत छी जे जनार्दनझा 'जनसीदन'क कविता वस्तुनिष्ठ ओ वर्णनात्मक होइत छनि । हिनक कवितामे सम-सामयिकताक रंग विशेष गाढ़ रहैत छनि । समसामयिक परिस्थिति ओ परिवेश, जाहिमे संवेदनाक तत्त्व रहैत अछि, से हिनक काव्यक मुख्य उपादान रहैत छनि । एहिसँ कविताक दीर्घजीविताक क्षति होइत छैक अवश्य किन्तु ओकर रचनाकालक परिप्रेक्ष्यमे देखला उत्तर ओकर जीवन्तता ओ महत्त्वकेँ स्वीकार करऽ पड़ैछ ।

---

१. 'आधुनिक समय' कविताक विवेचनमे प्रकाशित रूपक संगहि ओकर संयोगसँ उपलब्ध कविक स्वहस्तलिखित प्रतिक सेहो उपयोग कयल गेल अछि जकर कतोक तीक्ष्णतर अंश प्रकाशित रूपमे नहि देखल जाइछ ।

Scanned by CamScanner

जनसीदनक कवितामे भावुकता ओ कल्पनाक संस्पर्श बड़ अल्प देखना जाइत अछि। जतऽ कतहु अछि तँ तेहन सन जेना एँड़ी अलगा कऽ ओ हाथ नमरा कऽ कोनो ऊँच डारिकेँ लिबा कऽ फूल तोड़बाक प्रयास कयल जाइत हो। अलंकारक प्रति जेना कविकेँ कोनो आकर्षण नहि तेँ एकर प्रयोग क्वचित्-कदाचित् करैत छथि। जीवनक कटुतिक्त अनुभवकेँ सोझ ओ सरल शब्द एवं भाषामे वर्णन कऽ दैत छथि। परन्तु एहि सोझ-सरल शब्द एवं भाषामे व्यंग्य-वक्रता विशेष ठाम देखल जाइत अछि जकर वेधकताक अनुभूति किंचितो बौद्धिक प्रयाससँ भऽ सकैत अछि।

भाषा-प्रयोगमे जनसीदनजी कोनो पूर्वाग्रह वा दुराग्रहसँ मुक्त छथि। एहि दृष्टिएँ ई विशेष उदार छथि। सामान्य प्रचलित भाषाक आश्रयण करैत अंगरेजी, अरबी-फारसी अथवा हिन्दीयोक प्रचलित शब्दक प्रयोग प्रसंगानुकूल करबामे संकोच नहि करैत छथि। परिणामतः हिनक भाषा अनायासे स्वाभाविक ओ प्रसादगुण सम्पन्न भऽ जाइत छनि, जाहि माध्यमसँ कविक अभिव्यक्त भाव ओ विचार पाठक-श्रोतामे ईप्सित प्रभाव, संवेदना ओ सहानुभूति सहज रूपमे उत्पन्न करबामे समर्थ होइत अछि। अवश्ये जनार्दनझाक उपन्यास ओ कथाक भाषा-शिल्पक तुलना कविताक भाषासँ कयल जाय तँ कविताक भाषा किंचित् श्लथ बुझना जाइत अछि।

Scanned by CamScanner

उपसंहार

जनार्दनझा 'जनसीदन' सर्वात्मना साहित्यकार छलाह। आजीवन साहित्य-साधना मे संलग्न रहि प्रभूत साहित्यक संवर्द्धन करैत रहलाह। हुनक साहित्य-सर्जनसँ मैथिली ओ हिन्दी दुहू भाषाक समानान्तर समृद्धि भेल। संस्कृतहुमे काव्य-रचना कयलनि। तथापि जनसीदन आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महान् स्तम्भ मानल जाइत छथि। मैथिलीमे उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ कविताक रचना कयलनि। जनार्दनझा 'जनसीदन'क काव्य-प्रतिभाक किरण उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे प्रस्फुटित भऽ गेल छलनि, बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे ब्रजभाषाक निविष्ट कवि ओ हिन्दीक गद्यकारक रूपमे अग्रगण्य भऽ गेल छलाह, परन्तु मैथिली साहित्यमे हुनक अवतरण भऽ सकल बीसम शताब्दीक प्रथम दशकक अन्तिम वर्षमे। ई ओ समय छल, जखन मैथिली अपन आधुनिक साहित्यक निर्माण, पद्य ओ गद्यक स्वरूप-निर्धारण, अभिनव वर्ण्य विषयक आहरण एवं आधुनिकताकेँ आत्मसात करबामे व्यग्रता-पूर्वक दिशा-सन्धानमे लागल छल। एहन समयमे जनसीदन आधुनिक युगानुरूप मैथिलीमे कथा, उपन्यास ओ व्यंग्यपूर्ण काव्य विधाक संग प्रसाद गुण सम्पन्न परिमार्जित ओ ललित गद्यशैलीक अधिष्ठाता बनलाह। उपन्यास ओ कथा, कथाकाव्य ओ मुक्तक काव्यमे समाज-सुधार विषयक विचारधाराक सन्निवेश कऽ ओ मैथिली साहित्यकेँ सोद्देश्यता एवं सार्थक दिशा प्रदान कयलनि।

पारिवारिक विपद्ग्रस्तता एवं निरन्तर आर्थिक व्यवधानक अछैतो अपन दृढ़ संकल्प, स्वावलम्बन ओ स्वाध्यायक बल पर संस्कृत,ब्रज भाषा, खड़ी बोली हिन्दी, बंगलाक पारंगत ज्ञान ओ अंगरेजीक सामान्य ज्ञानक संग बहुविषयज्ञता अर्जित कऽ ओकर उपयोग साहित्य-समृद्धिमे करैत रहलाह। सबसँ अधिक गौरवास्पद बात ई अछि जे मैथिलीमे ने केवल गद्य ओ उपन्यास-कथा विधाक परम्पराक आदिपुरुष बनलाह अपितु ओ मैथिली भाषाकेँ, मिथिलाकेँ, भारतीय साहित्यकेँ साहित्य-स्रष्टाक एकटा एहन आनुवंशिक परम्परा प्रदान कयलनि जे साहित्य-जगत्क एक विरल उदाहरण मानल

Scanned by CamScanner

जा सकैत अछि ।

एहन महान् साहित्य-मनीषी जनार्दनझा'जनसीदन'क जीवन ओ कृति विषयक एहि विनिबन्धक उपसंहार रूपमे हम 'मिथिला-मिहिर' साप्ताहिक (जकर पूर्वमे ओ कतोक वर्ष धरि सम्पादक छलाह) केर ओ सम्पादकीय श्रद्धांजलि उद्धृत करऽ चाहब जे हुनक स्वर्गारोहणक पश्चात् २३ जून,१९५१क अंकमे मुखपृष्ठपर अर्पित कयल गेल छल । ओ सम्पादकीय एहि रूपक अछि :

'जनिक साहित्यिक तपस्या ६० वर्षसँ मिथिलाक एक शान्त ग्रामाञ्चलमे निरन्तर चालित छल, जे अपन ८०म वर्षक जीर्ण अवस्थहुमे रोगशय्या पर पड़ल लेखनी हाथमे नेने प्रौढ़तासँ सरस्वतीक अर्चनामे सुवर्ण वर्णावलीक उपहार चढ़बैत ऐलाह, जनिक नाम लितहिं साहित्यसेवाक दिव्य आदर्श हृदयमे आलोकित भै उठैछ ओ ऋषिकल्प वयोवृद्ध साहित्यसेवी पण्डित जनार्दनझाजी'जनसीदन' गत २१ जून (वृहस्पति)केँ नश्वर शरीर त्यागि अमरत्व लाभ कैलन्हि !'

'जनसीदनजी मिथिलाक रत्न तँ छलाहे, मैथिलीक विभूति तँ छलाहे, किन्तु प्रान्त भरिक ओ साहित्यिक मर्यादाक रक्षक छलाह । जे हिन्दी आइ राष्ट्रभाषा बनल अछि तकर ओ गढ़निहार अलङ्कृत कैनिहारमे छलाह । ५० वर्ष पूर्व विहार प्रान्तमे हिन्दी साहित्यक जे क्षीण रेखामात्र आँकल गेल छल, जाहि पर सम्प्रति साहित्यिक गण रंग-टीप दै कलाक शृंगार कै रहल छथि, ओकरा अंकित कैनिहार यैह लोकनि छलाह । द्विवेदीयुगमे विहारक प्रतिनिधित्व कैनिहार, बंगला ओ मैथिलीक रससँ हिन्दीकेँ सम्भृत बनौनिहारक रूपमे 'जनसीदन'जीक नाम हिन्दी साहित्यक इतिहासमे गौरवास्पद रहत। विद्यापतिक पुरुष-परीक्षासँ हिन्दी भाषीकेँ प्रथम परिचय हिनके द्वारा प्राप्त भेल । जहिया प्रेमचन्द ओ प्रसादक अवतारणा नहि भेल छल, तहिया 'चन्द्रकान्ता-भूतनाथ'क जासूसी-तिलस्मी कथा-पिहानीमे मग्न हिन्दी-भाषीकेँ बंकिम ओ रवीन्द्र, रमेशचन्द्र ओ प्रभातक विश्रुत रचनासँ रुचि परिष्कृत करौनिहार यैह छलाह । पुनः हिन्दीक कथा-चटोर जिह्वापर ग्रहनक्षत्र समुद्रीय जन्तु प्रभृति विज्ञानात्मक ग्रन्थसँ एवं सम्राट अकबर, नेपोलियन प्रभृति ऐतिहासिक रचनासँ तथा मनुस्मृति काव्यनिर्णयक टीकासँ हिन्दीक भंडारकेँ भरबामे हिनक सेवा अविस्मरणीय रहत । साहित्यसरोज राजा कमलानन्द सिंहजीक सम्पर्कमे रहि ई हिन्दीक सेवामे जे विहारक प्रतिनिधित्व कैलन्हि से ओही युग हेतु नहि प्रत्युत भविष्यहुक हेतु सम्मानवर्धक रहत ।'

'मिथिला मिहिर'क जाहि योग्यतासँ वर्ष दशेक ई सम्पादन कैलन्हि से 'मिहिर'क इतिहासमे अत्यन्त गौरवास्पद रहत । मातृभाषा मैथिलीक पुनर्निर्माणमे हिनक योगदान स्वर्णाक्षरेँ अंकनीय रहत । मृत्यु समय धरि हिनक लेखनी ओ श्वास दुहु संग संग हिनकासँ परित्यक्त भेल । ६० वर्ष धरि कलमक श्रमिक एहि महारथीक स्मरण कै, के साहित्यिक अपनाकेँ धन्य नहि मानत ।'

Scanned by CamScanner

'एही साहित्य साधनाक फल थीक जे कुमरबाजितपुरक एकान्त ग्राम मिथिलाक साहित्यिक इतिहासमे तीर्थकल्प भै गेल अछि। मैथिली साहित्यालंकार उपन्यास-सम्राट प्रो- (श्री) हरिमोहनझा सदृश पुत्र रत्नक जनक भै, ई अपन कौलिक साहित्य-परम्पराकेँ चिरकालक हेतु पूजनीय बना गेल छथि। एहेन भाग्यवान साहित्यिकक अर्चा जतेक हो, थोर थीक। एहेन साहित्य योगीक जतेक चर्चा हो, अल्प थीक।'

एहन आजीवन मसिजीविताक व्रतानुष्ठानी अक्षर पुरुष जनार्दनझा'जनसीदन'क जीवन ओ कृति भावी पीढ़ीक साहित्य-सर्जनक पथमे प्रेरणादर्श ओ मार्गदर्शक बनल रहत।

Scanned by CamScanner

परिशिष्टः

ताराक वैधव्य

आषाढ़ मासक अमावास्याक घोर अन्धकार राति अछि । हाथ हाथ नहि सुझै अछि । मेघ सं आकाश फाटय फाटय पर अछि । विद्युल्लता रहि रहि स्वप्नक साम्राज्य जकां अपन प्रकाश देखाय आलोप भय जाइ अछि । तकरा संगहि संग मेघ अपन धीर ध्वनिसं धरतीकें कंपाय दै अछि । जे क्षण जे घड़ी पानि नहि बरिसल अछि, सैह आश्चर्य । बसात कनैको नहि बहै अछि । गर्मी सं सभक जी आकुल-व्याकुल छैक।

पहरेक राति बीतल होयत । गृहस्थ लोकनि दिनहिसं मेघाडम्बर देखि साँझे भोजन कय सूति रहलाह । परन्तु जागल छथि दीर्घ निश्वास लैति अपना दौर्भाग्यकें वारंवार धिक्कार दैति केवल एक वियोगिनी । संयोगिनिअहुक आंखिमे निद्रा नहि । ओ अपना स्वामीक हृदयसँ संलग्न भेलोपर मेघक गर्जब सुनि रहि रहि चौंकि उठै छथि । कृत्रिम भयक अभिनय कय आलस्यमे भरल अर्धनिद्रित स्वामिअहुक निद्रामे बाधा दय रहल छैन्हि ।

एहन दुर्गम्य दुर्घट समयमे ई के चारि बटोही शीघ्र पैर उठबैत जा रहल छथि । बूझि पड़ै अछि कोनो एहने आवश्यक कार्य होएतैन्हि । जाहि अवसरमे घरसँ बाहर होयबाक ककरो साहस नहि ताहि अवसरमे विकट मार्गक सन्तरण करबे आवश्यक कार्यक सूचना दय रहल अछि ।

एहि चारू व्यक्तिमे तीन गोट ब्राह्मण छथि । तीनू गोटाक हाथमे छड़ी छैन्हि । अंगरखा पहिरने छथि । माथ पर पाग छैन्हि । डोपटा डांड़मे बान्हि लेने छथि । भड़कछ भिड़ने छथि ।

एहिमे एक गोटा जनिका पहिरनामे लाल धोती छैन्हि और कांखतर नव छाता छैन्हि, हिनक वयस पचास वर्षसं न्यून नहि होएतैन्हि । श्याम वर्ण, नाट, शरीर स्थूल, मुंहमे गोटीक चेन्ह, पढ़ल लिखल बहुत सामान्य । पुरहितिया ब्राह्मण थिकाह ।

द्वितीय व्यक्ति, जनिक वयस पचीस वर्ष सं अधिक नहि होएतैन्हि, गौर वर्ण, दीर्घ आकारक छथि । ओ हिनक पिसिऔत भाय होइथिन्ह । व्याकरण पढ़ै छथि ।

Scanned by CamScanner

ग्रन्थ समाप्त-प्राय छैन्हि । ई एखन अविवाहित छथि । जा व्याकरणतीर्थ नहि होएताह, ता विवाह नहि करताह, ई संकल्प कैने छथि ।

तृतीय व्यक्तिक वयस साठिक समीप होएतैन्हि । ई शरीर सं खिन्न मध्यम आकारक छथि । नीलकण्ठी धरि ज्योतिष पढ़ल छैन्हि ।

संगमे जे शूद्र छैन्हि तकर वयस तीस करीब । वेश चकैठ, कारी धुधुर । ओकरा माथ पर जौर सं कसि कय बान्हल एक पैघ कम्वलक मोटा छैक ।

अन्हार मे ककर पैर कतय पड़ै छैक तकर ठेकान नहि । परन्तु अपनामे सबहि गोटें बतिआइत जा रहल छथि ।

नटरू खवास— औ बाबू, भारिक लेल माथ फाटल जाइ अछि । कहू आब अपनेक गाम एहि ठाम सं कतेक दूर होएत ?'

भैरवठाकुर—आब ऐलह । एहि ठाम सं हमर गाम हलकी दू कोस होएत । द्वि प्रहर रातिक पूर्वहि गाम पहुंचि जायब ।

जयदेवझा— 'मधुबनी सं चारि कोस तं आएल होएब ।'

भैरवठाकुर— हं, ताहिमे कोन सन्देह । हमरा तं आब चलि नहि होइत अछि । वृद्ध भेलहुं, ताहूमे अन्हार रातिमे बचाय बचाय चलय पड़ै अछि । ऊंच नीचमे पैर पड़ने हाड़ पांजर टुटबाक संभावना । गुण ततबे जे बाट ठेकनाओल अछि । शुद्ध सैतालिसे दण्ड धरि छैक । ताहि सं पूर्व मातृका पूजो धरि भय जैबाक चाही ।

जयदेवझा— हमरा मैथिलमे ई बड़ दोष छैन्हि । लेने लेने शुद्ध शेष दिन कार्य करताह । अपने तं ज्योतिषी छी । नीक मुहूर्तक विचार कय कार्य कैल जाइत से उत्तम छल ।

भैरवठाकुर— (मनहि मन) मुहुर्त्त की उत्तम होएत दैवक कपार ! आइ अमावास्या तिथि, शनि दिन, आर्द्रा नक्षत्र, सभ तं अधलाहे । तारा नाड़ी-गण आदिक तं कोनो कथे नहि । शुद्ध समयोमे कार्य होएत वा नहि, ताहूमे सन्देह ।

प्रकाश्यतः बजलाह 'दिन वड़ उत्तम छैक । ब्राह्मणकें सबसँ बढ़ि नक्षत्रहिक विचार प्रशस्त छैक ।' 'ऋक्ष गुणैरपि भूदेवानाम्', सभागाछीमे जखन सिद्धान्त लिखाओल तखन मृगशिरा नक्षत्र बितै छलैक । आब केवल शुद्ध समयमे कार्य आरम्भ भय जाय तकरे चिन्ता अछि । अहां लोकनि तं नव छी । हमरा चलि नहि होइ अछि । आवश्यक वस्तु सभ कीनय लगलहुं तैं मधुबनी मे विलम्ब भय गेल । एक्का कय लितहुं परंच अन्हार रातिमे चलब क्यो एकवान स्वीकार नहि कैलक । बाटो तेहन नीक नहि । ऊभड़-खाभड़ । हमरा गाम ऐबाक पकियो सड़क छैक, एहि बाटें झट गाम पहुँचब तें एकपैरिए बाट धयल ।

जयदेवझा— हमरा तं चलबामे कोनो तेहन श्रम नहि । परंच बटुक भाइ कें

Scanned by CamScanner

पैदल चलबाक हिसख नहि छैन्हि, ई अधिक थाकि गेल होएताह ।

बटुकनाथझा मनमे कहलन्हि, गाम पर कोन एहन दिन होइत होएत जाहि दिन बटुकनाथ तीन चारि कोस पुरोहिती करक हेतु यजमनिकामे नहि जाइत होएताह । तथापि अपन सुकुमारताक वर्णन करैत कहलथिन्ह—'वास्तव मे हमरा पैदल चलबाक ई पहिले पहिल संयोग भय पड़ल अछि । विन सवारियें हम गाम पर दुइयो एक कोस नहि चलै छलहुं ।

भैरवठाकुर— ई कथा तँ परसू सं उपस्थित छल । परञ्च अपने उचित व्यवस्था देबमे घिसिर फिसिर करय लगलहुं तैं काल्हि ई कथा नहि पटल । जौं एतबा टाका अपने काल्हि गनि दितहुं तं ई काज काल्हिये भय जाइत ।

जयदेवझा— डेढ़ सय टाका तं काल्हि हम दितहिं रही । अपने दू सय सं कम पर स्वीकृत नहि होइ छलहुं । एक वंशक कन्यामे उचित व्यवस्था अपनेक कतबा हो से तं अपनहुं बुझितहिं होएब । तखन अपन व्यग्रतावशें अपन व्यवस्थाक द्विगुण मंगै छलहुं से कोना देल जाइत । बटुक भाइकें लोकक असौकर्य छलैन्हि । अपने ओतेक ब्राह्मणक बीचमे शपथ कैल जे कन्या दश वर्षक छथि, वेश सुबुद्धि, आश्रमक सभ काज करय योग्य । तैं हम पचीस टाका और अहां कें देआय देल ।'

भैरव— औ बाबू, जौं हमरा ई काज आवश्यक नहि रहैत तं हम एहि वर्ष अनठाय दितहुं । डेढ़ वर्ष अतिचारक संभावना तैं ई काज कय लेल । ओझाजी कें आस्था पात नीक छैन्हि । शीलो स्वभाव वड़ दिव्य तैं विचारल जे टका नहिओ अधिक भेटै अछि तं कन्या तं सुखमे रहति ।'

जयदेवझा—(मन मे) कन्याक जेहन भाग्य होएतैन्हि ।' प्रकाशमे कहलथिन्ह—अपनेक कन्याकें कोनो तरहक क्लेश नहि होएतैन्हि । जैतहि घरक मालकिनी भय बैसतीह । वटुक भाइ कें आश्रम मे क्यो नहि छैन्हि । विधवा बहिन कें लेआओन कय लै आएल छथि, वैह एखन हिनका घरक काज चलाय रहल छथिन्ह । जौं ओ नहि रहितथिन्ह तं तीनू नेना बिलटि जइतैन्हि । पितिऔत लोकनि छथिन से सदिखन मुंहे फुलौने रहै छथिन । बटुकू भाइक सम्पत्ति देखि ओ लोकनि दग्ध होइत रहै छथि ।'

भैरव ठाकुर— हिनका नेना लोकनिक की वयस छैन्हि ?

—कन्या बारह तेरह वर्षक होइथिन्ह । एहि वर्ष जौं अपन विवाह करब आवश्यक नहि रहितैन्हि तं कन्यादान अवश्ये करितथि । बालकक ई दशम वर्ष छैन्हि । छोटि कन्याक पांचम वा छठम वर्ष होएतैन्हि । जेठ बालक सत्रह वर्षक छलथिन्ह से वेश सुबोध छलथिन्ह । ओ गत वर्षमे शान्त भय गेलथिन्ह, हुनका शोकसं पीड़ित भय हमर भाउजिओ गत आश्विन मे शान्त भय गेलीह । बटुकू भाइक घर एक तरहें उजड़ि गेलैन्हि ।'

Scanned by CamScanner

वृद्ध भैरवठाकुर मने मन प्रसन्न भय बजलाह 'भगवान् करथिन्ह तं फेर घर बसि जयतैन्हि ।' प्रकटमे कहलथिन्ह जखनहि चर्चा करताह तखनहि हम द्विरागमनक दिन मानि लेबैन्हि । नहि होएतैन्हि तं किछु दिनक हेतु हमर भाउजि सेहो कन्याक संग रहि आश्रमक काज देखाय सुनाय औथिन्ह ।'

जयदेवझा— मनमे कहलन्हि 'बटुकू भाइ जखन बुढ़ापामे विवाह करय चलल छथि, तखन सब सुख भोगताहे ।' प्रकाश्यमे कहलथिन्ह— अपनहुँ किछु दिन जाय ओतय रही सेहौ भय सकै अछि ।

भैरवठाकुर— किछु दिन किऐक ? हम आब बूढ़ भेलहुँ । हमरा दुइ कन्या । दुहूक विवाह द्विरागमन भय गेल छैन्हि । एक बालक छथि । ओ अपना माइक संग अधिक काल मातृके रहै छथि । हमर अछियो के ? ओझाजीक और कोनो काज हमरासं नहि चलतैन्हि तं दरवाजा अगोड़ने बैसल रहबैन्हि ततबा तं होएत । हमरा एक भातिजि और एक भातिज छथि, हुनक माय छथिन्ह । हिनके लोकनिकें लय कय हमर आश्रम । हमर भाइ भवानीदत्तठाकुर जखन संसार सं विदा होमय लगलाह तखन अपना बालकक हाथ धराय गेलाह । जं हम हुनका परोक्षमे अन्यथा करी तं हमरा सं बाढ़ि पापिष्ठ के ? तैं जाहिमे हुनका लोकनिक मनमे दुःख नहि होइन्ह तकर सतत यत्न करैत रहै छी ।'

एहि तरहें गपशप करैत जखन भैरवठाकुर अपना गामक लग पहुंचलाह तखन मुसलाधार वृष्टि होमय लागल । घरक लग आबि भैरवठाकुर पिछड़ि खसि पड़लाह । डांड़मे बड़ चोट लगलैन्हि । नटरू खवास हुनक हाथ पकड़ि दरवाजा पर लै गेलैन्हि ।

गाममे सभलोक सूतल छल । भैरवठाकुर अपना भातिजक नाम लै कतेको बेर सोर कैलथिन्ह परन्तु किछु उत्तर नहि अयलैन्हि । तखन बूढ़ा आङ्गन गेलाह । जाहि घरमे भाउजि सूतलि रहथिन्हि ताहि घरक केबाड़ बाहरसं ढकढकौलन्हि । भाउजिक निन्द टुटलैन्ह । राड़िन जे घरमे अगोरि कय सूतलि रहैन्हि तकरा उठौलथिन्ह । कहलथिन्ह— बाहरसं के केबाड ढकढकबै अछि ; पुछिऔक के थीक ।'

भैरवठाकुर कहलथिन—भौजी ! हम थिकहुं । दीप लेसू । विख्या लाएल छी ।'

भाउजि अकचकाय कहलथिन्हि—शुद्ध तं बीति गेलैक । अशुद्ध मे कन्यादान कोना होएत ? एखन कन्यादान तेहन आवश्यको नहि अछि ।'

भैरवठाकुर कहलथिन्ह—के कहैत अछि जे शुद्ध बीति गेल ? आइ भरि राति शुद्ध छैक ।'

भाउजि कहलथिन्ह— अमावास्या तिथि, शनि दिन कोना कन्यादान करब ?'

भैरवठाकुर—मैथिलकें ई सभ नहि लगै छैक । मैथिलक कोन एहन गाम होयत जतय आइ दू एक कन्यादान नहि होयत ।'

Scanned by CamScanner

भाउजि— होउक। अनका लय हम की करबैक। हमरा एखन कोनो अगुताइ अछि !'

भैरवठाकुर—घर वर पसन्द भै गेल। आस्था पूर्ण छैन्हि, वयस किछु अधिक छैहि। तैं की ? कन्या सुख मे रहति ई सोचि हम कार्य कै लेल। व्यवस्था सेहो पूर्ण देलैन्हि अछि। हिनका आब फिराएब से उचित नहि। लोकमे बड़े अयश होयत।'

भाउजि कें वयसस्थ वरक नाम सुनितहिं सर्वाङ्ग प्रज्वलित भै गेलैन्हि। कहलथिन्हि—हम टाका कें आगिमे डाहि देबैक। सात वर्षक बेटीक गरमे जानि बूझि कय हम फांसी लगबय नहि देब। अहांकें ई कथा कोना कैल गेल। जैखन एहि अभागलिक बाप मुइलैक तैखन ने ई सभ भेलैक।'

ई कहि ओ कानय लगलीह।

भैरवठाकुर बड़े अवग्रहमे पड़लाह। दू सय टाका हाथसं बेहाथ होमय चाहै छैन्ह। जखन कतबो कहला पर भाउजि केबाड़ नहि फोललथिन्ह, तखन ओ खिसिआय हुनका बुझाबक हेतु अपन दू एक अपेक्षित व्यक्तिकें बजाबय गेलाह। ता पानि बरिसब थोड़ भै गेलैक।

२

माइक कानब सूनि पाँच वर्षक बालक गणेश तथा सात वर्षक कन्या ताराक निन्द टूटि गेलैक। दूनू भाय बहिनि मायकें कनैत देखि कानय लागलि। राड़िन जे रहैन्हि से बहुत बुझौलकैन्हि। कहलकैन्हि—ऐ दाइ ! एना जुनि कानी। नेना हहरि जायत। कन्या अहांक थिक। जौं वर नहि पसन्द पड़त, नहि करब। एहि लय कनै छी किऐक ? धैर्य धरू। हम एकटा दीप लेसि दालान पर दै आबय जाइ छी। जं हमरा वर पसन्द पड़त तं विचार देब। हमर अहां मुद्दइ नहि छी जे अधलाह वर करय कहब। हम तारा दाइ कें जन्म सं एही लय पोसलैक अछि ?

सकलिक माइक ई कथा सूनि मधुरमणि दियासलाइ बहार कै दीप लेसलन्हि। सकलीमाय दोसर दीप लेसि दालान पर देमय गेलि। मधुरमणि गाल पर हाथ दै आकाश पातालक बात सोचय लगलीह।

सकलीमाय बाहर जाय दिअठ पर दीप राखि ओसाराक नीचा ठाढ़ि भय खवासक दिस ताकि पुछलकैन्हि—औ खवास ! ई बाबू लोकनि कतै रहै छथि ?'

जयदेवझा कहलथिन्ह—हम पोखरौनी रहै छी। विवाह करक हेतु जे आयल छथि से हमरा पिसिऔत भाइ होएताह। हिनक घर सलेमपुर सं किछु दूर दक्षिण शाहपुर छैन्हि। बेस धनाढ्य छथि।'

सकली माय वरक दिस बहुत काल धरि ध्यानपूर्वक देखि जयदेव झाकें कहलकैन्हि— ऐ बाबू ! अहांक भाइ तं बहुत वयसस्थ बूझि पड़ै छथि ! कनेक इम्हर

तं पठा दिऔन्ह ।'

ई सूनि बटुकनाथझा पाँच सात डेग आगा बढ़ि ठाढ़ भै रहलाह । सकलिक माय झट दिअठसं दीप उतारि हुनक मुंहक लग लय जा कय नीक जकां देखि दीपकें पुनः दिअठ पर राखि चुपचाप विदा भय मधुरमणि लग गेलि । मधुरमणि साहस कै पुछलथिन्ह—कहू, सकली माय, की देखल ?'

सकली माय—ऐ दाइ ! की कहू ? अहांक देवर नहि जानि कोन प्रकृतिक मनुष्य छथि जे एहन खोड़नाठ सन कारी दिवरखौक वर उठाय लायल छथि । वयसो नव नहि, सकलिक बापक वयसें ऐ । छिया ! हमरा लोकनि राड़िन छी, तैओ बेटीक प्रसङ्ग एहन वर नहि करितहुं ।'

ई सुनि कन्याक माय केबाड़ बन्द कय पुनः घेओना उठाओल । सङ्गहि सङ्ग हुनक कन्या बालक सेहौ कानय लगलैन्हि । सुसुकि सुसुकि सकलियो माय कानय लागलि ।

आंगन मे एहि तरहें कन्नारोहट होइत देखि जयदेवझा मेंही स्वरमे बटुकनाथ झा सं कहलथिन्ह— बटुकभाइ ! गीतक अवसरमे ई कन्नारोहट किएक ? लक्षण नीक नहि बूझि पड़ै अछि ।'

बटुकनाथ— एकर की कारण ?'

जयदेवझा— (मन मे) अपन दोष लोककें अपना नहि सुझै छैक ।'

प्रकाश्यमे कहलथिन्ह— हमरा अनुभव मे दू बात अबै अछि । एक तं ई जे कन्या वयसें छोटि छैक । दोसर शुद्ध शेष भय गेलैक तैं कन्याक माइक मनमे विषाद होइक से संभव ।'

बटुकनाथ— ई अहांक अनुभव यथार्थ. बुझना जाइ अछि ।'

एतबामे भैरवठाकुर अपन सहायक भङ्गी, धतूरी और फोचाइ झाकें लय कय अपना दलान पर पहुंचलाह । भैरवठाकुर जयदेवझाकें मन्द स्वरें कहलथिन्ह— ई लोकनि बड़ पैघ कुलशीलक थिकाह । अपने कां हिनक उचित सत्कार करय बुझ ।'

जयदेवझा हुनक कथाक आशय और क्रन्दन ध्वनिक स्मरण कय बटुकनाथझाक कानमे किछु कहलथिन्ह ।

बटुकनाथ झट पनबट्टी मे दू दू टाका राखि तीनू गोटाक आगां दर्शनी समर्पण कैल । तीनू गोटें हुनक मर्यादा और धनाढ्यताक बहुतो प्रशंसा करय लगलाह । पश्चात् भैरवठाकुर भङ्गीझाक दिश देखि कहलथिन्ह जे—अहां लोकनि एक बेरि आंगन चलू। शुद्धक समय बहुत थोड़ बांचि गेल अछि । सैंतालिसे दण्ड शुद्ध छैक । जाहिमे काज शीघ्र सम्पन्न हो से कर्त्तव्य थिक । ओझाजी पुरोहित अपना संगहि लाएल छथि । जलपादत्त कें बजैबाक किछु प्रयोजन नहि ।'

ई कहि भैरवठाकुर तीनू गोटाकें संग लय जाहि घरमे भाउजि छलथिन्ह, ताहि

Scanned by CamScanner

घरक ओसारा पर गेलाह। भैरवठाकुर भाउजिकें सोर कय कहलथिन्ह— भौजी केबाड़ फोलू।'

भाउजि किछु उत्तर नहि देलथिन्ह। तखन धतूरीझा कहलथिन्ह—भौजी, ई सब करब उचित नहि। केबाड़ फोलू। आब समय नहि छैक। झट कन्यादान भय जाय से नीक थिक। वर घर हमरा लोकनि कें खूब पसिन्द भेल।'

मधुरमणि कहलथिन्ह—ऐ बाबू! आब पहरेक राति होएत। शुद्ध दुइए पहर राति धरि छलैक। अशुद्ध मे हम बेटीक विवाह नहि करब।'

भंगीझा—हौ धतूरी, ई की कहथुन्हि? हिनका केओ कहि देलकैन्ह अछि जे वर वयसस्थ छथि, देखबामे नीक नहि, तैं ई केबाड़ बन्द कैने छथुन्ह। हिनके इच्छामे एहि वर सं कन्याक विवाह नहि हो। लाख बुधियारि छथि, छथि तं फेर स्त्रिगणे। एहन धनिक वर एहि गाममे एखन धरि ककरो नहि भेल छलैक। पूर्वमे लोक एहि वयसें विवाह करै छल। हिनका वयसस्थ के कहतैन्हि? तीस वर्ष सं ऊपर चालीसक भीतर होएताह। सम्बन्ध भेला पर एकर गुण बूझि पड़तैन्हि। कन्या जखन रानी भय बैसतैन्हि तखन भैरव भाइ हित बूझि पड़थिन्ह।'

एहि पर धतूरी कहलथिन्ह—बूझि पड़ै अछि, सकलीमाय एहि घरमे अछि। ओकरे ई सब रचना थिक। ओकरा एहि ठाम सं हटाउ।'

सकलीमाय—हम किऐक किछु कहबैन्हि। हम अपनहि एहि ठामसं जाइ छी! भैरव बाबू जे भखलथिन्ह से कैलथिन्ह।'

एहि पर भंगी दू एक अवाच्य कथा कहि केबाड़ फोलय हेतु धमकौलथिन्ह। ओ वेचारी डरि कय केबाड़ खोलय चललि। कन्याक माय ओकरा भरि पांज पकड़ि कानय लगलीह।

भंगीझा कहलथिन्ह— भैरव भाइ, स्त्रीगणक लटारम्हमे पड़ब तं एको काज नहि होएत। भिनसर भय जायत। कही तं बाहर सं केबाड़ खोलबाक यत्न कैल जाय।'

भैरवठाकुर— जखन भीतर सं केओ केबाड़ नहि खोलै अछि तखन आब जेना खुलय से यत्न करू।

एतबा कथा सुनैत भंगीझा जे शरीरें किछु बलिष्ठ छलाह, केबाड़ मे एहन धक्का मारल जे केबाड़क दूनू पट्टा दू दिश भय गेल। चारू क्रव्याद घरमे प्रवेश कैलन्हि। भैरवठाकुरक संकेत पाबि धतूरीझा ताराक हाथ पकड़ि बाहर लय जाय चाहलथिन्हि। ई देखि मधुरमणि अपना कन्याकें भरि पांज पकड़ि क्रन्दन करय लगलीह।

भंगीझा— एहना स्थिति मे कन्यादान कोना हो?'

भैरवठाकुर— आब जानी अहां लोकनि, जेना जे करी। जाहिमे गामक प्रतिष्ठा रहय से कर्त्तव्य थिक।

Scanned by CamScanner

ई सुनि भंगीझा फोचाइ बाबूकें कहलथिन्ह— अहां अपना और हमरा आंगन सं दू चारि टा आइ-माइ कें बजा लबिऔन्ह, जे एतय विध-वाध करथि । हम कन्याकें कोबरा घरमे लय जाइ छी ।'

रङ्ग नीक नहि देखि सकलीमाय चुपचाप घसकि गेलि ।

भंगीझा जबरदस्ती कन्याक मायक कोर सं कन्या के छीनि कन्याक मायकें बाहर सं केबाड़ बन्द कय ताला लगाय देल । मधुरमणि मूर्च्छितावस्थामे भूमि पर खसि पड़लीह। ओहि शून्य घरमे कंओ हुनक सुननिहार नहि छल ।

३

सूर्योदय सं किछु काल पूर्व भैरवठाकुरक अदम्य उत्साह और यत्नसं कोनो कोनो तरहें कन्यादान भय गेल । विवाह काल मे कन्याक अल्पवयस्कता पर बटुकनाथझाक हृदय द्रवित भय गेलैन्हि । जयदेवोझा भैरवठाकुरक मिथ्यावादिता पर बहुत खेद प्रकट कैल । परन्तु भंगीझा और धतूरीझाक आग्रहवश वर अगत्या स्वीकृत भेलाह । वर कन्या दुहू कोबर घरकें सुशोभित कैल । गीतगाइन लोकनि अपना अपना घर गेलीह । तखन मधुरमणिक घरक ताला खोलल गेल । भैरवठाकुर घर मे जा कय देखथि तं मधुरमणि अचैतन्य अवस्था मे पड़लि । हुनक ई दशा देखि भैरवठाकुरक कठोर हृदयमे करुणाक संचार भय गेलैन्हि । आंखि सं टपटप नोर खसय लगलैन्हि ।

सकलीमाय हुनक माथ पर पानि ढारि तथा पंखा हूंकि होश करौलकैन्हि। मधुरमणि पुनः कानय लगलीह । भैरवठाकुर हुनका बहुतो तरहें बुझाय सुझाय स्थिर कैल । तथापि हुनका जमाइक मुंह देखबाक साहस नहि भेलैन्हि । तीन दिन तीन राति, ओ अन्न-जल ग्रहण नहि कैलन्हि । ताराकें जखन लोक कहलकै जे तोहरे लय तोहर माय अन्न-पानि छोड़ने छथुन्हि, तखन ओकर छाती टूक टूक भय फाटय लगलैक। माइक ठेहुन लागि कानय लागलि । माय की करथिन्ह । अन्तमे नेना लोकनिक ममता सं अन्न-जल कय अपना कन्या-बालकक प्रसन्न मुख देखि धैर्य धारण कैलन्हि ।

माइक इच्छा छलैन्हि जे पांचम वर्ष कन्याक द्विरागमन हो । परन्तु भैरवठाकुरक उत्कट आग्रहें हुनका विवश भय कन्याकें तेसर वर्ष मे विदा करय पड़लैन्हि । बटुकनाथ नव वर्षक अवोध बालिका कें अपना घर लय गेलाह ।

गत वर्ष मे जे ओ अपन कन्यादान कैने छलाह तकर द्विरागमन नहि भेल छैक। सोझे वर्षे दिन मानि लितथिन्ह परंच सतमायसं भेट नहि होइतैक ई सोचि दिन नहि मानलथिन्ह । परंच एहि अपेक्षा बुद्धिक फल विपरीते भेलैन्हि । सतमाय वयसमे छोटि भेलाक कारण पन्द्रह वर्षक सतधी द्वारा सतत शासित होमय लगलीह । बात बात मे सतधी ओकरा सासु जकां आंखि देखाबय लगलैक । ओ बेचारी दबेलि भय कोनो तरहें दुःख सं समय बिताबय लागलि ।

Scanned by CamScanner

जा बटुकनाथझाक बहिन आश्रम मे छलथिन्ह, ता तारा हुनका अपना माय जकां बूझि सतत हुनक मुंह धैने रहैन्हि। हुनका चल गेला पर ओ एकदम निःसहाया भय गेलि। संकोचवश पतिकें किछु कहय नहि। सतधीक स्वभाव बड़ उद्धत रहैक। ओ ताराकें अशेष यन्त्रणा देमय लगलैक। अपना पिता सं ओकर मिथ्या दोष सुनाय कइएक दिन पिताक हाथें ओकरा मारि खोआबैक।

तेसर वर्ष सतधी सुनयनाक द्विरागमन भेला पर ताराक दुःखक बोझ किछु हलुक भेलैक। आब ओ किछु किछु गृहिणीक व्यवहारो सं परिचित होमय लागलि। छोटि सतधी सं एकरा बड़ स्नेह रहैक। सतौत कमलनाथक स्वभाव बड़ उत्तम छलैन्हि। हाजीपुरक संस्कृत पाठशाला मे व्याकरण पढ़ै छलाह। ओ अपना सतमायक बातकें अपन माय सँ कनैको भिन्न कय नहि बूझथि। कहियो कोनो दुर्वचन नहि कहलन्हि। वरंच जखन हुनक बहिन सतमायकें कटुवचन कहैक तखन ओकरा बहुत डांटथि। एहि सं ताराक मनमे बहुत सन्तोष होइन्ह।

बटुकनाथक द्विरागमन कैना तीन वर्ष भेलैन्हि। दिन तीसेकसं ओ वातव्याधि सं ग्रस्त भय गेल छथि। कविराजी और डाक्टरी औषध सेवन कय रहल छथि। परंच एको औषध गुण नहि करै छैन्हि। बारह वर्षक तारा छप्पन वर्षक वृद्ध पतिक सेवामे सतत तत्पर रहै अछि।

पतिक अवस्था दिनानुदिन मन्द होइत देखि ओ एक पत्र अपना सतौत कमलनाथ कें ओ एक पत्र अपन पित्ती भैरवठाकुर कें लिखि हुनका लोकनिकें बजौलकन्हि। दुहू गोटे एक दिन आगं पाछां पहुंचलाह। अनेक उपचार कैलो पर बटुकनाथक रोग निवृत्त नहि भेलैन्हि। ओ एक बारह वर्षक अबोध पत्नी कें अनाथ कय संसार सं विदा भय गेलाह।

भैरवठाकुर ई हृदयविदारक घटनासं मृयमाण भय गेलाह। अपना दुष्कृति पर पश्चात्ताप करैत तीन दिनक बाद ओहो हृदयशूलक यन्त्रणा सं ओत्तहि शरीर त्याग कैलैन्हि। ताराक मायकें ई सब अशुभ संवाद सुनि जे पीड़ा भेलैन्हि तकर वर्णन लेखनी द्वारा नहि भय सकै अछि। पाठक गण स्वयं अनुभव कय लेथि। ताराक बाल वैधव्य पर के एहन पाषाण हृदय होएत जकरा आंखि सं दू ठोप नोर नहि खसतैक।

(मिथिला मिहिर, ३० जून एवं ७ जुलाइ, १९१७)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जनार्दनझा 'जनसीदन' (१८७२-१९५१) आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहासमे एक शलाका पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठित छथि, अभिनव कथा-शिल्प, वास्तविक जीवनक वर्ण्यवस्तु, रोचक-विन्यस्त वर्णन, मनोरम गद्य-शैली, गहन अन्तर्दृष्टि, नारीवर्गक उत्पीडनक प्रति संवेदना, यथार्थवादी सामाजिक चेतना, सुधारवादी विचारधारा इत्यादिसँ सम्पन्न उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ तीक्ष्ण व्यंग्याघातपूर्ण काव्यक सर्जनक संगहि कौलिक साहित्य-सर्जक-परम्पराक अनुपम अवदानक कारणे । मातृभाषा मैथिलीक सेवाक अतिरिक्त हिनक राष्ट्रभाषा-सेवा सर्वथा अविस्मरणीय अछि । हिन्दीक समृद्धि, संस्कार-परिष्कारमे आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदीक अनन्य सहयोगी; द्विवेदी-युगक ब्रजभाषा ओ हिन्दी साहित्यक प्रसिद्ध-प्रतिष्ठित कवि-लेखक-अनुवादक जनार्दन झा जनसीदन'क कतेको दर्जन ग्रन्थ हिन्दीओहुमे प्रकाशित भेल छलनि । उनैसम शताब्दीक अन्तिम दशकसँ आरम्भ कऽ बीसम शताब्दीक मध्य पर्यन्त, साठि वर्ष धरि संघर्षमय जीवन जिबितहु अविराम गतिसँ साहित्य-सर्जनमे निरत रहि भारतीय साहित्यकें ई जे सेवा कयल से भावी साहित्य-स्रष्टाक हेतु चिरकालिक प्रेरणा-स्रोत बनल रहत ।

एहि विनिबन्धक रचयिता, साहित्य अकादेमी पुरस्कार ओ साहित्य अकादेमीक अनुवाद-पुरस्कारसँ सम्मानित डा. रामदेवझा, पूर्व विश्वविद्यालय-प्राचार्य, मैथिली-विभाग, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा; मैथिली भाषा-साहित्यक वरिष्ठ ओ यशस्वी अध्यापक एवं विशिष्ट विद्वाने नहि, आलोचक-गवेषकक संगहि प्रतिष्ठित कथाकार, नाटककार, निबन्धकार, कवि ओ अनुवादक सेहो छथि । मैथिली क्षेत्रमे सव्यसाची साहित्यकारक रूपमे विश्रुत डा. झाक *एक खीरा: तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरतीमाता, इजोती रानी*-कथा-संकलन; पसिझैत पाथर-नाट्य-संग्रह; *मैथिली शैव साहित्य, मैथिली शैवसाहित्यक भूमिका, उमापति, जगत्प्रकाशमल्ल, जगज्ज्योतिर्मल्ल*-अनुसंधान-आलोचना; सगाइ ('एक चादर मैली सी'क मैथिली अनुवाद) इत्यादि ग्रन्थ; अन्यान्य बहुश: शोध-निबन्ध ओ सम्पादित ग्रन्थ प्रकाशित छनि ।

ISBN 81-260-0464-9

पचीस टाका

Scanned by CamScanner